।। श्री जिनदत्त-कुशल गुरुभ्योनम ।।

।। सुखसागर सद्गुरुभ्योनमः ।।

卐 प्रेम तेज पुष्प 卐

स्वाध्याय स्तोत्र सरिता

卐

प्रेरिका—

आर्या सुलोचनाश्री

卐

वीर सं० २५०७] मूल्य [प्रथमावृत्ति
वि० सं० २०३७] सप्रेम भेंट [१०००

मुद्रक—गौतम आर्ट प्रिन्टर्स, ब्यावर (राज)

द्रव्य दाताओं की नामावली

२०००) श्री गुमानमलजी वैद की धर्मपत्नी
लाडबाई के श्री वीशस्थानक
तपाराधनाके उपलक्ष में। —फलोदी

१५००) श्री कुन्दलमलजी मेहता की
धर्मपत्नी रतनबाई के
श्री वीसस्थानक तपाराधना के
उपलक्ष में। —आवीं

५००) एक गुप्त भक्त श्राविका तरफ से।

५००) श्री टीकमचंदजी सिंघी की स्मृति में
उनके सुपुत्र रमेशकुमारजी के
तरफ से। —ब्यावर

५००) श्री चेतनदासजी पंजाबी की
धमपत्नी रतनबाई —ब्यावर

५००) श्री राजमलजी सकलेचा की स्मृति
में उनकी धर्मपत्नी कस्तूरीबाई
के तरफ से। –

५००) मेघराजजी डाकलिका की
धर्मपत्नी सुगनीबाई के तरफ से —ब्या

* प्राक्कथन *

स्वाध्याय स्तोत्र सरिता पाठको के कॅर कमलो मे अर्पित करते हुए मेरा तन मन हर्ष से मयूर की भाँति नाच रहा है।

मान्यवर ! प्रिय मुमुक्षु वृन्द !

आज समाज की अपेक्षा क्या है ? व भावी पीढि को किस ओर अग्रसर होना है ? इसके लिये सर्व प्रथम अपने सिद्धान्तो का ज्ञान करो और अपने जीवन को सुधारो अकेला ज्ञान या अकेली क्रिया कभी फलदायक नहीं हो सकता।

सम्यग् ज्ञान क्रियाभ्याम् मोक्षः

और भी कहा है —

पढमं नाणं तओ दया ।

ज्ञान तो पहले होना ही चाहिए परन्तु ज्ञान के साथ क्रिया होगी तभी जीवन का सुधार

हो सकेगा, ज्ञान रहित क्रिया और क्रिया रहित ज्ञान का कोई महत्व नहीं होता।

सूत्र ज्ञान के अभाव में ही आज हमारे समाज में धार्मिक शिथिलता दृष्टिगोचर हो रही है अधिकांश लोक प्रवाह में बह जाते हैं और सच्चे धर्म के प्रति अरुचि प्रकट करने लग जाते हैं इन सबके मूल में सम्यक् ज्ञान का अभाव ही मुख्य कारण होता है।

अतः आज सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यही है कि हम अपने जीवन में सूत्र ज्ञान को बढावे जिससे समाज मे आज जो धार्मिक शिथिलता और अनादर भाव की विषम वृत्ति घर कर गई है उसे दूर हटाने में सहायक बन सकेंगे अगर प्रतिदिन भी एक घंटा स्वाध्याय करने की प्रवृति समाज में नियमित रूप से प्रारम्भ हो जाय तो धीरे-धीरे समाज का काया

पलट हो सकता है और धर्म की मधुर सुगन्ध जीवन को सुगन्धमय बना सकती है। हमारे उपाश्रयो मे स्वाध्याय करने की प्रवृति को प्रोत्साहन मिल सके ऐसा प्रयत्न अवश्य करना चाहिए।

यद्यपि बहुत सावधानी रखने पर भी नेत्र दृष्टि की चचलता व असावधानी से यदा कदा अशुद्धिया रह गई है यदि कोई प्रेस सबधि त्रुटि रह गई हो तो पाठक जन मनन कर अध्ययन करें एव साथ ही जीवन मे हृदयङ्गम करें।

गुरु सुलोचना चरण रज
सुलक्षणाश्री

-: समर्पण :-

परम पूज्या ! सद्ज्ञान सरिता ! तत्वज्ञान रसिका ! अनेक गुण रत्न मंजुषा ! परमोपकारिणी प्रवर्तिनी महोदया श्री प्रेमश्रीजी महाराज साहिबा की शिष्या सेवाभाविका तेजश्रीजी म० सा० ने अपने अनुपम प्रभावशाली सदुपदेशों द्वारा मेरी जेसी अबोध आत्मा को चारित्ररूपी नौका प्रदान कर जो अवर्णनीय उपकार किया उस महान् उपकार से जन्म जन्मान्तरों में भी उऋण नहीं हो सकती, आपके अलौकिक विशद् गुण पुञ्ज से हृदय आकर्षित होता है और शिर चरण-सरोज मे स्वतः ही नतमस्तक हो जाता है।

मेरी परम पूज्या गुरुवर्य्या आपके गुणों से आकृष्ट होकर स्वाध्याय स्तोत्र सरिता सादर सानुनय सेवा में समर्पित है।

आपकी चरण श्रीता

सुलोचनाश्री, सुलक्षणाश्री

-: विषय-सूचि :-

विषय	पृष्ठ
बृहद्-अजितशांति स्मरणम्	१
लघु-अजितशांति स्मरणम्	१०
नमिऊणनामक स्मरणम्	१४
गणधरदेवस्तुतिनामक स्मरणम्	१७
गुरुपारतन्त्र्यनामक स्मरणम्	२१
सिग्घमवहरउ नामक स्मरणम्	२४
उवसग्गहरं नामकं स्मरणम्	२६
भक्तामर स्तोत्रम्	२८
कल्याणमंदिर स्तोत्रम्	३६
बृहच्छान्ति	४५
जिनपंजर स्तोत्रम्	५१
ऋषिमण्डल स्तोत्रम्	५६
तिजयपहुत्त स्तोत्रम्	६४
संतिकरं स्तवनम्	६६
जय तिहुयण स्तोत्रम्	६८

विषय		पृष्ठ
आत्मरक्षा स्तोत्रम्	....	७५
श्री गौतमाष्टकम्	....	७७
गौतमस्वामीनो रास	...	७८
शत्रुञ्जयनो रास	....	९०
श्री विषहर पार्श्वनाथ का महामन्त्र		१०७
श्री घंटाकर्ण महामन्त्र	....	१ ८
श्री शारदा स्तुति	....	१०९
श्री सरस्वती देवी स्तुति	....	१११
उवसग्गहरं महाप्राभाविक स्तोत्रम्		१११
श्री पार्श्वनाथ मंत्राधिराज स्तोत्रम्		११६
आत्मरक्षक श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम्		११७
श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथनो छन्द		११७
षोडश विद्यादेवी स्तोत्र	....	१२१
श्री जीवविचारप्रकरणम्	....	१२३
श्री नवतत्त्व प्रकरणम्	....	१३०
श्री दंडक प्रकरणम्	....	१३८

विषय

श्री लघुसंग्रहणी प्रकरणम् पृष्ठ
श्री चैत्यवंदन भाष्यम् — १४४
श्री गुरुवंदन भाष्यम् — १४८
श्री पच्चक्खाण भाष्यम् — १५३
कर्मविपाकनामा प्रथम कर्मग्रन्थ से — १६२
षष्ठ कर्मग्रन्थ
श्री बृहत् संग्रहणी — १७०-२०४
श्री वैराग्यशतकम् — २२५
श्री वीतराग स्तोत्र — २६२
श्री तत्त्वार्थाधिगम सूत्रम् — २८३
श्री दशवैकालिकसूत्र मूल पाठः— — ३१०
१ द्रुमपुष्पिकाध्ययनम्
२ श्रामण्यपूर्विकाध्ययनम् — ३३१
३ क्षुल्लकाचाराध्ययनम् — ३३२
४. षड्जीवनिकाध्ययनम् — ३३५
अथ पगामसिज्जा — ३३५
— ३५४

विषय		पृष्ठ
छट्ठं महाचारकथाध्ययनम्	....	३७३
सुवाक्यशुद्धाख्यं सप्तमं अध्ययनम्	....	३८३
आचारप्रणिधिनामकमध्ययनम्	....	३९१
विनयसमाधिनामाध्ययने प्रथमोद्देशक से चतुर्थ उद्देश		४००-४१५
सभिक्षु अध्ययनम्	....	४१५
श्री दशवैकालिके प्रथमा चूलिका	....	४१९
साधु-साध्वी योग्य आवश्यक क्रियानां सूत्रो		४२५
पाक्षिक अतिचार	....	४३६
पाक्षिक सूत्र	....	४४४
श्री पाक्षिक खामणां	....	४७७
गोडी पार्श्वजिन वृद्ध स्तवन	....	४८०
ईश प्रार्थना	....	४८९
संकट मोचन इकतीसा	....	४९०
सकलार्हत् चैत्यवंदन	....	४९६
लघुशान्ति	....	५०१

गरुल भुयगवइ पयय पणिवइअ । अजिअ महमवि-
अं सुनय नय निउण मभयकर, सरण मुवसरिअ
भुवि दिविज महिअ सयय मुवणमे ॥७॥ सगयय ॥
त च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधर, अज्जव
मद्दव खंति विमुत्ति समाहि निहिं । संतिकर
पणमामि दमुत्तम तित्थयर, संतिमुणी मम संति
समाहिवर दिसऊ ॥ ८ ॥ सोवाणय ॥ सावत्थि
पुव्वपत्थिव च वरहत्थि मत्थय पसत्थ विच्छिन्न
संथिअ, थिर सरिच्छ वच्छ मयगल लीलायमाण-
वर गंधहत्थि पत्थाण पत्थिय संथवारिहं । हत्थि-
हत्थबाहु धंतकणग रुअग निरुवहय पिंजर पवर
लक्खणोवचिअ सोमचारुरूव, सुइसुह मणाभि-
राम परम रमणिज्जवर देवदुंदुहि निनाय महुर-
यर सुहगिर ॥९॥ वेड्डुओ ॥ अजिअं जिआरि-
गणं जिअ सव्वभयं भवोहरिउ । पणमामि अहं
पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ रासा-
लुद्धओ ॥ कुरु जणवय हत्थिणाउर नरीसरो

१८मं तत्रो महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो, जो बावत्तरि पुरवर सहस्स वर नगर निगम जणवई बत्तीसा रायवर सहस्साणुयाय मग्गो। चउद्दस वर रयण नव महानिहि चउसट्ठि सहस्स पवर जुवईण सुंदरवई, चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी छन्नवइ गामकोडि सामी आसी जो भारहंमि भयवं ॥ ११ ॥ वेड्डओ ॥ तं संति संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया। संति थुणामि जिणं संति विहेउ मे ॥१२॥ रासानंदिअयं ॥ इक्खाग विदेह नरीसर, नरवसहा मुणिवसहा। नव सारय ससि सकलाणण, विगयतमा विहुअरया। अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय बला विउल कुला। पणमामि ते भवभय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हट्ठ तुट्ठ जिट्ठ परम, लट्ठ रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल। दंत-पंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर,

ठित्त तेअ वद येअ सव्वलोअ भाविअप्पभायणेय पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायओ ॥ विमलससि कलाइरेअ सोम, वितिमिरसूर कराइरेअ तेअ । तियसवइ गणाइरेअ रूव, धरणिधरप्पवराइरेम सार ॥१५॥ कुसुमलया ॥ सत्ते य सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं । तव संजमे य अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ भुअगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरय रवी । रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवर पवत्तयं तमरय रहिअं, धीरजण थुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं । संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयओ, संतिमहं महामुणि सरणं उवणमे । १८ ॥ ललिअयं ॥ विणओणय सिरि रइअ अंजलि रिसिगण, संथुअं थिमिअं । विबुहाहिव धणवइनरवइ थुअमहिअ, अच्चिअं

बहुसो । अइरुग्गय सरय दिवायर समहिअ, सप्पभं तवसा । गयणंगण वियरण समुइयचारण, वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसिअं । देव-कोडि सयसंथुअं, समणसंघ परिवंदिअं ॥२०॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं, अरयं अरुयं । अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥२१॥ विज्जुविलसिअं ॥ आगया वरविमाण, दिव्वकणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं । ससंभमो अरण खुभिअ, लुलिअ चलकुंडलंगय तिरीड सोहंत मउलिमाला ॥२२॥ वेड्ढओ ॥ जं सुरसंघा सासुरसंघा, वेर विउत्ता भत्ति सुजुत्ता । आयर भूसिय संभम पिंडिअ, सुट्ठु सुविम्हिअ, सव्व बलोघा । उत्तम कंचण रयण परूविअ, भासुर भूसण भासुरिअंगा । गाय समोणय भत्ति वसागय, पंजलि पेसिअ सीस पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं । पणमि-

ऊण य जिण सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइ तो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणि महंपि पंजली राग दोस भय मोह वज्जिअं । देवदाणव नरिंद वंदिअं, संतिमुत्तमं महातवं नमे । २५॥ खित्तयं ॥ अंबरंतर विआरणिआहिं, ललिअ हंसवहु गामिणिआहिं । पीण सोणिथण सालिणिआहिं, सकल कमल दल लोअणिआहिं ॥२६॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणभर विणमिय, गाय लयाहिं । मणिकंचण पसिढिल मेहल सोहिअ, सोणि तडाहिं । वरखिंखिणि नेउर सतिलय वलय, विभूसणियाहिं रइकर चउर मणोहर सुंदर, दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देव-सुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणो-डुणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि । अवंग तिलय-पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं, भत्ति संनिविट्ठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिया पुणो

रणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालं पि अजिअ संतिथयं। न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना वि नासंति ॥३९। जइ इच्छह परम पयं, अहवा कित्ति सुवित्थडं भुवणे। ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥

—:o:—

२ लघु–अजितशांति–स्मरणम् ॥

उल्लासिक्कम नक्ख निग्गयपहा दंडच्छलेणं-गिणं, वंदारूण दिसंत इव्व पयडं निव्वाण मग्गावलि। कुंदिंदुज्जल दंतकंति मिसओ नीहंत नाणंकुरु क्करे दोवि दुइज्ज सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १। चरम जलहिनीरं जो मिणिज्जंजलीहिं, खय समय समीरं जो जिणिज्जा गईए। सयल नहयलं व लंघए जो

पएहिं, अजिय महव संति सो समत्थो थुणेउ॥२॥
तहवि हु बहुमाणुल्लास भत्तिभरेण, गुणकणमवि
कित्तिहामि चिंतामणिव्व । अलमहव अचिंताणंत
सामत्थओसि, फलिहइ लहु सव्व वंछिअ
णिच्छिअ मे ॥ ३ ॥ सयल जय हिआण नाम-
मित्तेण जाण, विहडइ लहु दुट्ठा निट्ठ दोघट्ट
घट्ट । नमिर सुर किरीडुग्घिट्ठ पायारविंदे,
सयय अजिअ संती ते जिणिंदेऽभिवंदे ॥ ४ ॥
पसरइ वरकित्ती वड्डए देहदित्ती, विलसइ भुवि
मित्ती जायए सुप्पवित्ती । फुरइ परमतित्ती होइ
संमारछित्ती, जिणजुअ पयभत्ती ही अचिंतोरु
सत्ती ॥५॥ ललिअ पय पयार भूरिदिव्वंग हार,
फुड घण रसभावो दार सिंगार सार । अणि
मिम रमणी-जइ सणच्छेअ भीया, इव पुणमणि
मदा कामि नट्टोवयार ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंति
ते कया सेस संति कणय रय पिमगा छज्जए
जाण मुत्ती । सरभस परिरंभा रंभि निव्वाण

लच्छी घण थण घुसिणंकुप्पंक पिंगीकयव्व ॥७॥ बहुविह नयभंगं वत्थु णिच्चं अणिच्चं, सदसदण- भिलप्पा लप्पमेगं अणेगं। इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं, वयण मवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तियलोए ताव मोहंधयारं, भमइ जग मसन्नं ताव मिच्छत्त छन्नं। फुरइ फुड फलंताणंत णाणंसुपूरो, पयड मजियसंती झाण सूरो न जाव ॥ ९ ॥ अरि करि हरि तिण्हूण्हंबु चोराहि वाहो, समर डमर मारी रुद्द खुद्दोवसग्गा। पलय मजिअ संती कित्तणे झंत्ति जंती, निविड तर तमोहा भक्खरा लुं खिअव्व ॥१०॥ निचिअ दुरिअ दारूदित्त झाणग्गि जाला, परिगय मिव गोर चितिअं जाण रूवं। कणय निहस रेहा कंति चोरं करिज्जा, चिर थिरमिह लच्छि गाढ संथंभि अव्व ॥११॥ अडवि निवडियाणं पत्थिवुत्तासिआणं जलहि लहरि हारं ताण गुत्ति ट्ठियाणं। जलिअ जलण जाला लिंगिआणं

च झाण, जणग्रइ लहु संति संतिनाहाजिग्राणं । १२ हरि करि परिकिण्ण पक्क पाइक्क पुण्ण, सयर पुहवि रज्ज छड्डिउप्राणमज्ज । तणमिव पडि लग्ग जे जिणा मुत्तिमग्ग चरण मगु'पवन्ना हुतु ते मे पसन्ना ॥ १३ ॥ छण ससि वयणाहिं फुल्ल नित्त,प्पलाहि, थणभर नमिरीहिं मुट्ठि गिज्झोदरीहि । ललिग्र भुग'लयाहिं पीण सो ण-त्थलाहि, सय सुर रमणीहिं वंदिया जेसि पाया ॥१४॥ अरिस किडिभं कुट्ठ गंठि कासाइसार, खय जर वण लूग्रा सास सोसोदराणि । नह मुह दसणच्छी कुच्छि कण्णाइरोगे, मह जिणजुग्र पाया सुप्पसाया हरन्तु ।१५॥ इग्र गुरु दुह तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर दुग थुत्त वच्छरे वा पवित्त । पढह सुणह सिज्झाएह झाएह चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण घाएह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तु पुत्त सिरि अजिय जिणेसर, तह अइराविससेण तणय, पचम चक्कीसर ।

॥१२॥ पणयससंभम पत्थिव, नहमणि माणिक्क पडिअ पडिमस्स। तुह वयण पहरण धरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंत मुसलं दीह करुल्लाल वुड्डिउच्छाहं। महुपिंग नयण जुअलं, ससलिल नवजलहरारावं ॥१४॥ भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति। जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ! तुंगं समल्लीणा ॥१५॥ समरम्मि तिक्ख खग्गा, भिघाय पविद्ध उद्धु य कबंधे। कुंतविणिभिन्न करि कलह, मुक्क सिक्कारपउरम्मि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धु र रिउ, नरिंद निवहा भडा जसं धवलं। पावंति पाव पसमिण, पासजिण! तुहप्पभावेण ॥१७॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारिमइंद गय रण भयाइं। पास जिण नामसंकि-त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महा भयहरं, पास जिणिंदस्स संथव मुआरं। भविय जणाणंदयरं, कल्लाणपरंपर निहाणं ॥१९॥ राय भय जक्ख-

रक्खस, कुसुमिण दुस्सउण रिक्खपीडासु । सझासु दोसु पथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥२०॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताण कइणो य माणतु गस्स । पासो पाव पसमेउ, सयल भुवणच्चिअ चलणो ॥२१॥ उवसग्गते कमठा-सुरम्मि झाणाओ जो न सचलिओ । सुरनरकिन्नरजुवईहिं, सथुओ जयउ पासजिणो ॥ २२ ॥ एअस्स मज्झयारे, अट्ठारसअक्खरेहिं जो मतो । जो जाणइ सो झायइ, परमपयत्थ फुड पास ॥ २३ ॥ पासह समरण जो कुणइ, सतुट्ठे हियएण । अट्ठुत्तरसयवाहिभय, नासइ तस्स दूरेण ॥२४॥

---

४ गणधरदेवस्तुतिनामकं स्मरणम् ।

स जयउ जए तित्थ, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण । सम्म पवत्तिय भव्व, सत्त सताण सुह जणय ॥ १ ॥ नासिय सयल किलेसा,. निहय

कुलेसा पसत्थसुहलेसा । सिरि वद्धमाण तित्थस्स, मंगलं दितु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्मबीआ, बीआ परमेट्ठिणो गुणसमिद्धा । सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु दुत्थाणि तित्थस्स ॥३॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता । आयरिआ तह तित्थं, निहय कुतित्थं पयासतु ॥४॥ सम्म-सुअ वायगा, वायगा य सिअवाय वायगा वाए । पवयण पडिणीय कए, वणितु सव्वस्स संघस्स ॥५॥ निव्वाण साहणुज्जुय, साहूणं जणिअसव्व साहज्जा । तित्थप्पभावगा ते, हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥६॥ जेणाणुगयं णाणं, निव्वाण फल च चरण मवि हवइ । तित्थस्स दसणं तं, मंगुल मवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निच्छम्मो सुयधम्मो, समग्ग भव्वंगि वग्ग कयसम्मो । गुणसुट्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्तधम्मो, संपाविअ भव्व सत्त सिवसम्मो । नीसेस-किलेस हरो; हवउ सया सयल संघस्स

॥ ९ ॥ गुणगण गुरुणो गुरुणो, सिवसुह मइणो कुणतु तित्थस्स। सिरि वद्धमाण पहुपय-डिअस्स कुसल समग्गस्स ॥१०॥ जिय पडिवक्खा जक्खा, गोमुह मायग गयमुह पमुक्खा। सिरि बभसति सहिआ, कय नयरक्खा सिव दितु ॥११॥ अबा पडिहय डिबा, सिद्धा सिद्धाइया पवयणस्स। चक्केसरि वइरुट्टा, सतिसुरा दिसउ सुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवीओ, दितु सघस्स मगल विउल। अच्छुत्ता सहिआओ, विस्सुअ सुयदेवयाउ सम ॥१३॥ जिणसासण कयरक्खा, जक्खा चउवीस सासणसुरा वि। सुहभावा सतत्ताव, तित्थस्स सया पणासंतु ॥ १४ । जिण-पवयणम्मि निरया, विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे। वेयावच्च करा वि अ, तित्थस्स हवतु सतिकरा ॥१५॥ जिणसमय सुद्ध समग्ग, विहिय भव्वाण जणिय साहज्जो। गीयरई गीअजसो, सपरिवारो सिव दिसउ ॥१६॥ गिह गुत्त निरत

जलथल, वण पव्वय वासि देव देविओ। जिण सासण ट्ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥१७। दस दिसिपाला सखित्त-पालया नवग्गहा सनक्खत्ता। जोइणिराहुग्गह काल-पास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥ सह कालकंटएहिं, सविट्ठि वच्छेहिं कालवेलाहिं। सव्वे सव्वत्थ सुहं दिसंतु सव्वस्स संघस्स ॥ १९ ॥ भवणवइ वाणमंतर, जोइस वेमाणिआ य जे देवा। धरणिंद सक्क सहिआ, दलंतु दुरिआइं तित्थस्स। २०॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरओ पणासिय तमोहं। तं तित्थस्स भगवओ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्सऽज्जवि सासणं जए जयइ। सिद्धिपहसासणं कुपह, नासणं सव्वभय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसभसेण-पमुहा, हय-भय निवहा दिसंतु तित्थस्स। सव्व जिणाणं गणहा-रिणोऽणहं वंछियं सव्वं ॥२३॥ सिरि वद्धमाण तित्था-हिवेण तित्थं समप्पियं

जस्स। सम्म सुहम्मसामी, दिसउ सुह सयल सघस्स ॥ २४ ॥ पयइए भद्दिया जे, भद्दाणि दिसतु सयल-सघस्स। इयर सुरावि हु सम्म, जिण गणहर कहिय कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो पढइ तिसंझ, दुस्सज्झ तस्स नत्थि किंपि जए। जिणदत्ताणाए ठिओ, सु निट्ठिअट्ठो सुही होई॥२६॥

— 卐 —

५ गुरुपारतंत्र्यनामकं स्मरणम्

मयरहिय गुणगण रयण, सायर सायरं पणमिऊण। सुगुरुजण पारतंत, उवहिव्व थुणामि त चेव ॥ १ ॥ निम्महिय मोह जोहा, निहय विरोहा पणट्ठ सदेहा। पणयगि वग्ग दाविअ, सुह सदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्त सुजइत्त सोहा, समत्त परतित्थ जणिअ सखोहा। पडिभग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहत्थ सत्थोहा ॥३॥ परिहरिअ सयत्वाहा, हयदुहदाहा सिव-तरु-

साहा । संपाविअ सुहलाहा, खीरोदहिणुव्व अगाहा ।।४।। सुगुणजण जणिय पुज्जा, सज्जो निरवज्ज गहिअ पव्वज्जा । सिवसुह साहण सज्जा. भवगुरु गिरि चूरणे वज्जा ।।५।। अज्ज सुहम्म प्पमुहा, गुणगण निवहा सुरिंद विहिअ महा । ताण तिसंभ नामं, नामं न पणासइ जियाणं ।। ६ ।। पडिवज्जिय जिणदेवो, देवाय-रिओ दुरंत भवहारी । सिरि नेमिचंदसूरी, उज्जोअण सूरिणो सुगुरु ।।७।। सिरि वद्धमाण सूरी, पयडीकय सूरिमंत माहप्पो । पडिहय कसाय पसरो, सरय ससंकुव्व सुह जणओ ।।८।। सुहसील चोर चप्परण, पच्चलो निच्चलो जिण-मयंमि । जुगपवर-सुद्ध सिद्धंत, जाणओ पणय सुगुण जणओ ।। ९ ।। पुरओ दुल्लह महि व-ल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयडं । मुक्ख विआरि-ऊणं, सीहेण व दव्वलिंगि गया ।।१०।। दसमच्छे-रय निसिवि-प्फुरंत सच्छंद सूरिमय तिमिरं ।

सूरेणव सूरिजिणेसरेण हयमहिअ दोसेण ॥११॥
सुकइत्तपत्त कित्ती, पयडिअ गुत्तो पसंत सुहमुत्ती।
पहय परवाइ दित्ती, जिणचंदजईसरो मंती ॥१२॥
पयडिय नवंगसुत्तत्थ रयणकोसो पणासिअ
पओसो। भवभीय भविअ जणमण, कयसंतोसो
विगयदोसो ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, परू-
वणा करण बंधुरो धणिअं। सिरि अभयदेव सूरी,
मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय सावय
संतासो, हरिव्व सारंग भग्ग संदेहो। गय समय
दप्प दलणो, आसाइअ पवर कव्वरसो ॥ १५ ॥
भीम भव काणणंमि अ, दंसिअ गुरुवयण रयण
संदेहो। नीसेस सत्त गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो
जयइ ॥१६॥ उवरिट्ठिअ सच्चरणो, चउरणुओ-
गप्पहाण सच्चरणो। असम मयराय महणो,
उड्ढमुहो सहइ जस्स करो ॥१७॥ दंसिअ निम्मल
निच्चल, दंतगणो गणिय सावओत्थ भओ। गुरु-
गिरि गरुओ सरहुव्व, सूरि जिणवल्लहो होत्था

वल्लहो पहु मं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो णेसरुव्व हयतिमिरो । जिणचंदाभय-देवा, पहुणो जिणवल्लहा जे अ ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए-ऽभवदेव पहुत्तदायगे वंदे । जिणचंद जिणेसर-वद्धमाण तित्थस्स वुड्ढिकए ॥१२॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जे य कारंति । मणसा वयसा वउसा, जयंतु साम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्त गुणे नाणा-इणो सया जे य धरंति धारिति । दंसिअ सिअवाय पए, नमामि साहम्मिआ तेवि ॥१४॥



७ उवसग्गहरं नामकं स्मरणम् ।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं । विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥ विसहरफुलिग मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गह, रोग मारी, दुठ्ठ जरा

जंति उवसाम ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोहग्ग ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेण, जीवा अयरामर ठाण ॥४॥ इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भर निब्भरेण हिअ-एण। ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ! ॥ ५ ॥

॥ इति सप्त स्मरणानि ॥



ऽऽश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥ दृष्ट्वा भवंत मनिमेष विलोकनीयं, नान्यत्र तोपमुपयाति जनस्य चक्षुः। पीत्वा पयः शशिकर द्युति दुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधे रशितु क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणु-भिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ! । तावंत एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समा-नमपरं न हि रूपमस्ति ।१२॥ वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग नेत्रहारि, निःशेषनिर्जित जगत्त्रितयोप-मानं। बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडु पलाश कल्पं ॥१३॥ संपूर्ण-मंडलशशांक कलाकलाप-शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयति। ये संश्रिता स्त्रिजगदीश्वर ! नाथ-मेकं. कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टं ॥१४॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-र्नीतं मना-गपि मनो न विकारमार्गं। कल्पांतकाल मरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रि शिखरं चलितं कदा-

चित् ॥१७॥ निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूर कृत्स्न जगत्त्रयमिद प्रगटीकरोपि। गम्यो न जातु मरुता चलिताचलाना, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाश ॥१६॥ नास्त कदाचि दुपयासि न राहुगम्य, स्पष्टीकरोपि सहसा युगपज्जगति। नाभोधरो दरनिरुद्ध महाप्रभाव, सूर्यातिशायि महिमाऽसि मुनीद्र! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदय दलित मोहमहाधकार, गम्य न राहु वदनस्य न वारिदाना। विभ्राजते तव मुखाब्ज मनल्पकाति, विद्योतय ज्जगदपूर्व शशाकबिंब ॥ १८ ॥ किं शर्वरीपु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदु दलितेपु तमस्सु नाथ! । निष्पन्नशालि वन-शालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरै-र्जल-भारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञान यथा त्वयि विभाति कृतावकाश, नैव तथा हरिहरादिपु नायकेपु। तेज स्फुरन्मणिपु याति यथा महत्त्व, नैव तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वर

हरिहरादय एव दृष्टा दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति। किं? वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवांतरेऽपि ॥२१॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता। सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मि, प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालं ॥२२॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस-मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात्। त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र! पंथाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभुमचिंत्य मसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंत मनंगकेतुं। योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥ बुद्ध-स्त्वमेव विबुधार्चित बुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात्। धातासि धीर शिवमार्ग-विधेर्विधानाद्, व्यक्तं त्वमेव भगवन! पुरुषो-त्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय

नाथ ! तुभ्य नम क्षितितलामलभूपणाय । तुभ्य नमस्त्रिजगत परमेश्वराय, तुभ्य नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-स्त्व सश्रितो निरवकाशतया मनीश ! । दोषैरुपात्त विविधाश्रयजातगर्वै, स्वप्नातरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसश्रितमुन्मयूख-माभाति रूपममल भवतो नितात । स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितान, बिब रवेरिव पयोधर पार्श्ववर्त्ति ॥२८॥ सिंहासने मणिमयूख शिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वपु कनकावदात । बिब वियद्विलसदशुलतावितान, तु गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मे. ॥२९॥ कु दावदातचलचामर चारुशोभ, विभ्राजते तव वपु कलधौतकात । उद्यच्छशाकशुचि-निर्भरवारिधार-मुच्चैस्तट सुरगिरेरिव शातकौभ ॥३०॥ छत्रत्रय तव विभाति शशाककात-मुच्चै स्थित स्थगितभानुकरप्रताप । मुक्ताफल

प्रकरजाल विवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वं ॥२१॥ उन्निद्र हेम नवपंकज पुञ्ज-कान्ती, पर्युल्लसन्नखमयूख शिखाभिरामौ। पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूति रभूज्जिनेन्द्र!, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य। यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥३३॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-मत्त-भ्रमद्-भ्रमरनाद विवृद्धकोपं। ऐरावताभ मिभ-मुद्धत मापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदा-श्रितानां ॥३४॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणि-ताक्त-मुक्ताफल प्रकरभूषित भूमिभागः। बद्ध-क्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रम-युगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकाल पवनो-द्धतवह्निकल्पं, दावानलं ज्वलित मुज्ज्वलमुत्स्फु-लिंगं। विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतंतं,

त्वन्नामकीर्तनजल शमयत्यशेष ॥३६॥ रक्तेक्षण समद कोकिल कठनील, क्रोधोद्धत फणिन मुत्फण मापतत । आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशक-स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुस ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरग गजगर्जित भीमनाद-माजौ बल बलवतामपि भूपतीना । उद्यद्दिवाकरमयूख शिखापविद्ध, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥३८॥ कुन्ताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह-वेगा-वतार तरणातुर योधभीमे । युद्धे जय विजित-दुर्जयजेयपक्षा-स्त्वत्पादपकज वनाश्रयिणो लभते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभित भीषण-नक्रचक्र-पाठीनपीठ भयदोल्वण वाडवाग्नौ । रगत्तरग शिखरस्थित यानपात्रा-स्त्रास विहाय भवत. स्मरणाद्व्रजति ॥४०॥ उद्भूतभीषण जलोधर भारभुग्ना, शोच्या दशा मुपगता श्च्युतजीवि-ताशा । त्वत्पादपकजरजोऽमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवति मकरध्वजतुल्यरूपा ॥४१॥ आपादकठ

मुरुशृङ्खल वेष्टितांगाः, गाढं वृहन्निगडकोटि निघृष्टजंघाः। त्वन्नाममंत्र मनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विगतवंधभया भवंति ॥४२॥ मत्त-द्विपेन्द्र मृगराज दवानलाहि-संग्राम वारिधि महोदर वंधनोत्थं। तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां। धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

—:★:—

कल्याणमंदिर-स्तोत्रम्।

कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभय प्रदमनिंदितमंघ्रिपद्मं। संसारसागरनिमज्जद-शेषजंतु-पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सु-

विस्तृतमतिर्न विभुर्विधातु । तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-स्तस्याहमेष किल संस्तवन करिष्ये ॥ २ ॥ (युग्मम्) । सामान्यतोऽपि तव वर्णयितु स्वरूप-मस्मादृशा कथमधीश ! भव-त्यधीशा । धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो, रूप प्ररूपयति ? किं किल धर्मरश्मे ॥३॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो, नून गुणान् गणयितु न तव क्षमेत । कल्पान्तवात-पयस प्रकटोऽपि यस्मात्, मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशि ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तव लसदसख्यगुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निजबाहुयुग वितत्य, विस्तीर्णता कथयति स्वधियाम्बुराशे ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश, वक्तु कथ भवति तेषु ममावकाश । जाता तदेवमसमीक्षित कारितेय, जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते, नामापि

पाति भवतो भवतो जगंति । तीव्रातपोपहतपां-
थजनन्निदाघे, प्रीणाति पद्मपरसः सरसोऽनिलो-
ऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिली-
भवंति, जंतोः क्षणेन निवीडा अपि कर्मबंधाः ।
सद्यो भुजंगममया इव मध्यभाग-मभ्यागते वन-
शिखंडिनि चदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः
सहसा जिनेन्द्र !, रौद्रै रुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षि-
तेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरित तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वं
तारको जिन ! कथं ? भविनां त एव, त्वामुद्व-
हंति हृदयेन यदुत्तरतः । यद्वा दृतिस्तरति यज्ज-
लमेप नून-मंतर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः
॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः.
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन । विध्या-
पिता हुतभुजः पयसाऽथ येन, पीतं ? न किं
तदपि दुर्द्धर वाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्प
गरिमाणमपि प्रपन्ना-स्त्वां जंतवः कथमहो

हृदये दधाना । जन्मोदधिं लघुतरत्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हृत महता यदि वा प्रभाव ॥ १२ ॥
क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथम निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा बत कथ ? किल कर्मचौरा ।
प्लोपत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके, नीलद्रु-
माणि विपनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वा
योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप-मन्वेषयन्ति
हृदयाबुजकोशदेशे । पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा
किमन्य-दक्षस्य सभवि पद ननु कर्णिकाया.
॥१४॥ ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविन क्षणेन,
देह विहाय परमात्मदशा व्रजन्ति । तीव्रानला
दुपलभाव मपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव
धातुभेदा ॥ १५ ॥ अत सदैव जिन ! यस्य
विभाव्यसे त्व, भव्यै कथ तदपि नाशयसे ?
शरीर । एतत् स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि,
यद्विग्रह प्रशमयन्ति महानुभावा ॥ १६ ॥ आत्मा
मनीषिभिरय त्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेन्द्र !

भवतीह भवत्प्रभाव:। पानीयमप्यमृत मित्यनु चिंत्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति? ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्ना:। किं काच-कामलिभिरीश ! सितोऽपि शंखो, नो गृह्यते ? विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-दास्तां जनो भवति ते तरुरप्य-शोक: अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि, किं वा विबोधमुपयाति ? न जीवलोक: ॥ १९ ॥ चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुख वृन्तमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टि:। त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !, गच्छंति नूनमध एव हि वंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गंभीर हृदयोदधि-संभवाया:, पीयूषतां तव गिर:समुदीरयति। पीत्वा यत: परम संमद संगभाजो, भव्या व्रजंति तरसाऽप्यजरामरत्वं ॥ २१ ॥ स्वामिन् ! सुदूर-मवनम्य क्षमुत्पतंतो मन्ये वदंति शुचय: सुर-

चामरौघा। येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय, ते नूनमूर्ध्वगतय खलु शुद्धभावा ॥२२॥ श्याम गभीरगिर मुज्ज्वलहेमरत्न – सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वा। आलोकयंति रभसेन नदन्त-मुच्चै-श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाह ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन, लुप्तच्छदच्छ-विरशोक तरुर्बभूव। सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग! नीरागतां व्रजति? को न सचेतनो-ऽपि ॥ २४ ॥ भो भो! प्रमादमवधूय भजध्व-मेन-मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाह। एत-न्निवेदयति देव! जगत्त्रयाय मन्ये नदन्नभिनभ सुरदुन्दुभिस्ते॥२५॥ उद्द्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकार। मुक्ताकलाप कलितोच्छ्वसितातपत्र व्याजात् त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेत ॥२६॥ स्वेन प्रपूरित जगत्त्रय पिण्डितेन, कान्तिप्रताप यशसामिव सञ्चयेन। माणिक्यहेमरजत प्रविनिर्मितेन, साल-

त्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥ २७॥ दिव्यस्रजो जिन ! नमत्त्रिदशाधिपाना–मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान । पादौ श्रयंति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंत एव ॥२८॥ त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपरांगमुखोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् । युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥२७॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक! दुर्गतस्त्वं, किं वाऽक्षर प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश । अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भार संभृत नभांसि रजांसि रोषा–दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि । छायाऽपि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१॥ यद्गर्जदूर्जित घनौघ मदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुशल मांसलघोरधारं । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन ! दुस्तर-

वारिकृत्य ।। ३२ ।। ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृति मर्त्यमुण्ड-प्रालम्बभृद्भयद वक्त्रविनिर्यदग्नि । प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो य, सोऽस्याभवत् प्रतिभव भवदु:खहेतु ।। ३३ ।। धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य-माराधयन्ति विधिवद्वि-धुतान्यकृत्या । भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेह-देशाः, पादद्वय तव विभो ! भुवि जन्मभाज ।। ३४ ।। अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !, मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्र मन्त्रे किं वा विपद्विषधरी सविध समेति ? ।। ३५ ।। जन्मान्तरेऽपि तव पादयुग न देव !, मन्ये मया महित मोहित दानदक्ष । तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवाना, जातो निकेतनमहं मथिताशयाना ।। ३६ ।। नून न मोह तिमिरावृत लोचनेन, पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि । मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनार्था, प्रोद्यत्प्रबन्धगतय कथमन्यथैते ?

॥३७॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या । जातोऽस्मि तेन जनबांधव ! दुःखपात्रं, यस्मात् क्रियाः प्रतिफलंति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !, कारुण्यपुण्यवसते ! वशिनां वरेण्य ! । भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय, दुःखांकुरोद्दलन तत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्यमासाद्य सादितरिपु प्रथितावदातं । त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधान वंध्यो, वंध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥४०॥ देवेंद्रवंद्य ! विदिता खिलवस्तुसार !, संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! । त्रायस्व देव ! करुणाह्रद ! मां पुनीहि, सीदंतमद्य भयद व्यसनाम्बुराशे- ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ ! भवदंघ्रि सरोरुहाणां, भक्तेः फल किमपि संतति संचितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः,

स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवांतरेपि ॥४२॥ इत्थ समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !, सान्द्रोल्लसत्-पुलक कचुकितागभागा । त्वद्विवनिर्मल मुखाबुज बद्धलक्ष्या, ये सस्तव तव विभो ! रचयति भव्या ॥४३॥ जननयन कुमुदचद्र !, प्रभास्वरा स्वर्गसपदो भुक्त्वा । ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्ष प्रपद्यन्ते ॥४४॥

— ★ —

बृद्धशान्ति ।

भो भो भव्या ! शृणुत वचन प्रस्तुत सर्वमेतद्, ये यात्राया त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाज । तेषा शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वसहेतु ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका ! इह हि भरतैरावतविदेहसभवाना, समस्ततीर्थकृता जन्मन्यासनप्रकम्पानतरमवधिना विज्ञाय, सौधर्माधि-

पतिः सुघोषा घंटा चाचनानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः शांतिमुद्घोषयति । ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा "महाजनो येन गतः स पंथाः" इति भव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शांतिमुद्घोषयामि । तत्पूजा यात्रा स्नात्रादि महोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यतां २ स्वाहा ।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां भगवंतोऽर्हंतः, सर्वज्ञाः, सर्वदर्शिनः । त्रैलोक्यनाथाः, त्रैलोक्यमहिताः, त्रैलोक्यपूज्याः, त्रैलोक्येश्वराः, त्रैलोक्योद्योतकराः । ॐ श्री केवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८. दामोदर, ९, सुतेजा १०, स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताघ १५, नमीश्वर १६,

अनिल १७ यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यदन २३, सम्प्रति २४, एते अतीतचतुर्विंशतितीर्थंकरा ।

ॐ श्री ऋषभ १, अजित २, सभव ३, अभिनदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयास ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनत १४, धर्म १५, शाति १६, कुन्थु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्धमान २४, एते वर्तमानजिना ।

ॐ श्री पद्मनाभ १, सूरदेव, सुपार्श्व ३, स्वयप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल९, शतकीर्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगु(प्ति)प्त १६, समाधि १७, सवर १८, यशोधर १९, विजय २०, म(ल्लि)ल्ल २१, देव २२, अनतवीर्य २३, भद्रङ्कर २४, एते

भावितीर्थंकरा जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु ।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजय दुर्भिक्ष कांतारेपु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं ।

ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारी ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महासेन-नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढरथ १०, विष्णु ११, वसुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सुमित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४, इति वर्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ।

ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सुव्रता १५,

अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा २०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४, इति वर्तमानजिनजनन्य ।

ॐ श्रीगोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ इति वर्तमानजिनयक्षा ।

ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबाला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंडा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२,

पद्मावती २३, सिद्धायिक २४, इति वर्तमानचतुर्विंशतितीर्थकरशासनदेव्यः।

ॐ ह्री श्रीं धृति-मति-कीर्ति-कांति-बुद्धि लक्ष्मी-मेधा-विद्या-साधन-प्रवेशनि-वेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेद्राः। ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गोरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३ अच्छुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६, एताः षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु। ॐ ग्रहाश्चन्द्र सूर्यांगारक बुधवृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कुबेर वासवादित्यस्कंदविनायकोपेता, ये चान्येऽपि ग्रामनगर क्षेत्रदेव-

तादयस्ते सर्वे प्रीयतां प्रीयतां । अक्षीणकोश-कोष्ठागारा नरपतयश्च भवतु स्वाहा ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत् स्वजन संबन्धि बंधुवर्गसहिता नित्यं चामोद प्रमोद कारिणो भवतु । अस्मिंश्च भूमंडले आयतन निवासिनां साधुसाध्वी श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु । ॐ तुष्टिपुष्टिऋद्धिवृद्धिमांगल्योत्सवा भवतु । सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा भवतु स्वाहा । श्रीमते शांतिनाथाय नमः शांतिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश–मुकुटाभ्यर्चितांह्रये ॥ १ ॥ शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः । शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्टदुष्ट ग्रहगतिदुःस्वप्न-दुर्निमित्तादि । संपादितहितसंपद्, नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद-राजाधिपराजसंनिवेशानां । गोष्ठिकपुरमुख्यानां,

व्याहरणैर्व्याहरेच्छांति ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु, श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु, श्रीराजसंनिवेशानां शांतिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु श्रीपौर मुख्यानां शांतिर्भवतु । ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा. ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शांतिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्रा (द्य) वसानेषु शांतिकलशं गृहीत्वा, कुंकुमचंदनकर्पूरागुरु धूपवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचिवपुः, पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृतः, चंदनतिलकं विधाय पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्-घोषयित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति । नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायति च मगलनि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥ अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी । अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असुहोवसमं सिवं भवतु स्वाहा

॥१॥ शिवमस्तु सर्वजगत, परहितनिरता भवतु भूतगणा । दोषा प्रयातु नाश, सर्वत्र सुखी भवंतु लोका ॥२॥ उपसर्गा क्षय याति, छिद्य ते विघ्न-वल्लय । मन प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥



जिनपंजर-स्तोत्रम् ।

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ अर्हद्भ्यो नमो नम । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ सिद्धेभ्यो नमो नम । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ आचार्येभ्यो नमो नम । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ उपाध्यायेभ्यो नमो नम । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ श्रीगौतमस्वामिप्रमुखसर्व-साधुभ्यो नमो नम ॥ १ ॥ एष पंचनमस्कार सर्वपापक्षयकर । मंगलाना च सर्वेषा, प्रथम भवति मगल ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जये विजये, अर्हँ परमात्मने नम । कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते

जिनपंजरं ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं । मनोऽभिलषितं सर्व, फलं स लभते ध्रुवं ॥४॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः । देवताग्रे पवित्रात्मा षण्मासैर्लभते फलं ॥५॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके, आचार्य श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥६॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं विधाय च । सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥७॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः । अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥८॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षेदाग्नेयीं विजितेन्द्रियः । दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः । उत्तरां तीर्थकृत् सर्वा मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥११॥ ऋषभो मस्तकं रक्षेदजितोऽपि विलोचने । संभवः कर्णयुगलं,

नासिका चाभिनंदन ॥ १२ ॥ ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेद्, दंतान् पद्मप्रभो विभु । जिह्वा सुपार्श्व-देवोऽयं, तालु चन्द्रप्रभो विभु ॥ १३ ॥ कंठं श्री-सुविधी रक्षेद्, हृदयं श्रीसुशीतलं । श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्य करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुली-विमलो रक्षे-दनंतोऽसौ स्तनावपि । सुधर्मोऽप्यु-दरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंडलं ॥ १५ ॥ श्री-कुन्थुर्गुह्यकं रक्षे-दरो रोमकटीतटं । मल्लिरूरू पृष्ठिवंशं, जंघे च मुनिसुव्रत ॥ १६ ॥ पादा-गुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयं । श्रीपार्श्व-नाथं सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥१७ पृथिवी-जलतेजस्कवाय्वाकाशमयं जगत् । रक्षेदशेष-पापेभ्यो, वीतरागो निरंजनं ॥ १८ । राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे । व्याघ्रचौराग्नि-सर्पादि-भूतप्रेतभयाश्रिते ।। १९ ॥ अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते । अपुत्रत्वे महा-दोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनी-

शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते । नद्युत्तारेऽव्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ।। २१ ।। प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं । तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लभते सुखसंपदं ।।२२।। जिनपंजरनामेदं, यः स्मरत्यनुवासरं । कमलप्रभराजेन्द्र-श्रियं स लभते नरः ।।२३।। प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं । आसादयेत्स कमलप्रभाख्यां. लक्ष्मीं मनोवांछितपूरणाय ।।२४।। श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः । वादींद्रचूडामणिरेष जैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ।।२५।।

—०—

ऋषिमण्डल-स्तोत्रम् ।

आद्यन्ताक्षरसंलक्ष्य-मक्षरं व्याप्य यत् स्थितं । अग्निज्वालासमं नाद-बिंदुरेखासमन्वितं ।।१।। अग्निज्वालासमाक्रांतं, मनोमलविशोधकं ।

देदीप्यमान हृत्पद्मे, तत्पद नौमि निर्मल ॥२॥ अर्हमित्यक्षर ब्रह्म-वाचक परमेष्ठिन । सिद्ध-चक्रस्य सद्बीज, सर्वत प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्यो नमो नम । ॐ नम सर्वसूरिभ्य, उपाध्यायेभ्य ॐ नम ॥४ ॐ नम सर्वसाधुभ्य, ॐ ज्ञानेभ्यो नमो नम । ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्य-श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नम ॥ ५ ॥ श्रेयसेऽस्तु श्रियस्त्वेत-दर्हदाद्यष्टक शुभ । स्थानेष्वष्टसु विन्यस्त, पृथग्बीजसमन्वित ॥ ६ ॥ आद्य पद शिखा रक्षेत्, पर रक्षेतु मस्तक । तृतीय रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्य रक्षेच्च नासिका ॥ ७ ॥ पचम तु मुख रक्षेत्, षष्ठ रक्षेच्च घटिका । नाभ्यत सप्तम रक्षेद्, रक्षेत्पादान्त-मष्टम ॥८॥ पूर्वप्रणवत सात, सरेफा द्व्यब्धि-पचपान् । सप्ताष्टदशसूर्यांकान्, श्रितो बिन्दुस्वरान् पृथक् ॥९॥ पूज्यनामाक्षरा आद्या, पचैते ज्ञान-दर्शने । चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीँ सान

समलंकृत: ।। १० ।। ॐ ह्लाँ ह्लीँ ह्लुँ ह्लूँ ह्लेँ ह्लैँ ह्लौँ ह्लः, असिआउसासम्यग् ज्ञानदर्शन-चारित्रभ्यो ह्लीँ नमः । जंवूवृक्षधरो द्वीप:, क्षारोदधिसमावृत: । अर्हदाद्यष्टकैरष्ट-काष्ठाधिष्ठेरलंकृत: ।।११।। तन्मध्ये संगतो मेरु:, कूट-लक्षैरलंकृत: । उच्चैरुच्चैस्तरस्तार-स्तारामंडल-मंडित: ।। १२ ।। तस्योपरि सकारांतं, वीज-मध्यास्य सर्वगं । नमामि विबमार्हन्त्यं, ललाटस्थं निरंजनं ।। १३ ।। अक्षयं निर्मलं षांतं, बहुलं जाड्यतोज्झितं । निरीह निरहंकारं, सारं सार-तरं घनं ।। १४ ।। अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्त्विकं राजसं मतं । तामसं चिरसंबुद्ध, तैजसं शर्वरी-समं ।।१५।। साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परं । परापर परातीतं, परंपर परापरं ।।१६।। एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं । पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ।।१७।। सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रांतिवर्जितं । निरंजनं निराकारं

निर्लेप वीतसश्रय ॥ १८ ॥ ईश्वर ब्रह्मनबुद्ध, वृद्ध सिद्ध मत गुरु । ज्योतीरूप महादेव, लोकालोकप्रकाशक ॥१६। अर्हदाख्यस्तु वर्णांत, सरेफो बिंदुमडित । तुर्यस्वर समायुक्तो, बहुधा नादमालित ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिता सर्वे, वृषभाद्या जिनोत्तमा. । वर्णैनिजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र सगता ॥ २१ ॥ नादश्चन्द्रसमाकारो, बिंदुर्नीलसमप्रभ कलारुणसमासात, स्वर्णाभ सर्वतोमुख ॥ २२ ॥ शिर सलीन ईकारो, विनीलो वर्णत स्मृत । वर्णानुसार-सलीन, तीर्थकृन्मडल स्तुम ॥ २३ ॥ चद्रप्रभ पुष्पदतौ, नादस्थिति समाश्रितौ । बिंदुमध्यगतौ नेमि-सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ । पद्मप्रभवासुपूज्यौ. कलापद मधिष्ठितौ । शिरईस्थिति-सलीनौ पार्श्वमल्ली जिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थंकृत सर्वे, हरस्थाने नियोजिता । माया-बीजाक्षर प्राप्ताश्चतुर्विंशतिरर्हता ।।२६।। गतराग-

संतिकरं स्तवनम्

[तृतीय स्मरणम्]

संतिकरं संतिजिणं, जग-सरणं जयसिरीइ दायारं। समरामि भत्त-पालग-निव्वाणी-गरुड-कय-सेवं ॥ १ ॥ ॐ सनमो विप्पोसहि-पत्ताणं संतिसामि-पायाणं। झ्रौं स्वाहा मंतेणं, सव्वासिव-दुरिअ-हरणाणं ॥२॥ ॐ संति नमुक्कारो, खेलो सहिमाईलद्धिपत्ताणं। सौह्रीँ नमो सव्वो-सहि-पत्ताणं च देइ सिरिं ॥ ३ ॥ वाणी-तिहुअण-सामिणि-सिरिदेवी जक्खराय-गणिपिडगा। गह-दिसिपाल-सुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते ॥४॥ रक्खंतु मम रोहिणि-पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया। वज्जंकुसि चक्केसरी-नरदत्ता-काली-महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा। अच्छुत्ता माणसिआ, महमाणसिआ उ देवीओ ॥६॥ जक्खा गोमुह-मह-

जक्ख तिमुह-जक्खेस-तु बरु कुसुमो । मायग-
विजय-अजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो ॥७॥
छम्मुह पयाल-किन्नर, गरुलो गंधव्व तह य
जक्खिदो । कूबर-वरुणो भिउडी, गोमेहो पास-
मायगा ॥८॥ देवीओ चक्केसरी, अजिआ दुरि-
आरि कालि महाकाली । अच्चुअ-संता-जाला,
सुता-रयाऽसोय-सिरिवच्छा ॥९॥ चंडा विजय-
कुसि, पन्नइत्ति-निव्वाणि-अच्चुआ धरणी ।
वइरुट्ट-छुत्त गंधारि, अंब-पउमावई-सिद्धा ॥१०॥
इअ तित्थ-रक्खणरया, अन्नेऽवि सुरा सुरी य
चउहावि । वंतर-जोईणि-पमुहा, कुणंतु रक्खं
सया अम्ह ॥११॥ एव सुदिट्ठिसुर-गण-सहिओ,
संघस्स संति-जिणचंदो । मज्झ वि करेउ रक्खं,
मुणिसुंदरसूरि-थुअ-महिमा ॥ १२ ॥ इअ संति-
नाह-सम्म-द्दिट्ठि रक्खं सरइ तिकाल जो ।
सव्वोवद्दवरहिओ, स लहइ सुहसंपयं परम ॥१३॥
तवगच्छ-गयण-दिणयर-जुगवर-सिरिसोमसुन्दर

गुरुणं । सुपसाय-लद्ध-गणहर-विज्झासिद्धी भणइ सीसो ॥ १४ ॥



जय तिहुअण-स्तोत्रम् ।

जय तिहुअण वर कप्परुक्ख ! जय जिण धन्नंतरि !, जय तिहुअण कल्लणकोस ! दुरिअक्करिकेसरि ! तिहुअण जणअविलंघियाण ! भुवणत्तय सामिअ !, कुणसु सुहाइ जिसेण पास थंभणयपुरट्ठिअ ॥ १ ॥ तइ समरंत लहंति झत्ति वर पुत्तकलत्तइ, धण्ण सुवण्ण हिरण्ण पुण्ण जण भुञ्जइ रज्जइ । पिक्खइ मुक्ख असंख सुक्ख तुह पास ! पसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्ख ! सुक्खइ कुण मह जिण ! ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण, चक्खुक्खीण खएण खुण्ण नर सल्लिअ सूलिण । तुह जिण ! सरण रसायणेण लहु हुंति पुणण्णव, जय धन्नं-

तरिपास ! मह वि तुहु रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मततत सिद्धिउ अपयत्तिण, भुवणब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झइ तुह नामिण । तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ, त तिहुअण कल्लाणकोस !, तुह पास ! निरुत्तउ ॥४॥ खुद्दपउइ मत तत जताइ विसुत्तइ, अरथिर गरल गहुग्ग खग्ग रिउवग्ग विगजइ । दुत्थिय सत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइ दय करि, दुरियइ हरउ स पासदेउ दुरियक्क रिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणा थभेइ भीम दप्पुद्धुर सुरवर-रक्खस जक्ख फणिंदविंद चोरा नल जलहर । जल थल चारि रउद्द-खुद्द पसु जोइणि जोइअ, इय तिहुअण अविलंघिआण, जय पास ! सुसामिय ! ॥६॥ पत्थिय अत्थ अणत्थ तत्थ भत्तिब्भर निब्भर, रोमचचिअ चारुकाय किन्नर नरसुरवर । जसु सेवहि कमकमल जुअल पक्खालिअ कलिमलु, सो भुवणत्तय सामि पास ! मह मद्दउ रिउबलु

॥ ७ ॥ जय जोइअ मण कमल भसल भयपंजर कुञ्जर !, तिहुअण जण आणंदचंद । भुवणत्तय दिणयर ! जय मइमेइणि वारिवाहा ! जयजंतु पियामह !, थंभणयट्ठिअ पासनाह ! नाहत्तण कुण मह ॥ ८ ॥ बहुविहु वण्णु अवण्णु सुन्नु वण्णिउ छप्पन्निहि, मुक्खधम्म कामत्थकाम नर नियनिय सत्थिहि । जं झायइ बहु दरिसणत्थ बहुनाम पसिद्धउ, सो जोइअ मण कमल भसल सुहु पास ! पावद्धउ ॥ ९ ॥ भयविब्भल रण-झणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तरलिअ नयण विसण्णु सुन्नु गग्गरगिर करुणय । तइ सहसत्ति सरंत हुंति नर नासिअ गुरुदर, मह विज्झवि सज्झसइ पास ! भयपंजर कुञ्जर ! ॥१०॥ पइं पासि विअसंत नित्तपत्तंत पवित्तिय-बाहपवाह पवूढरूढ दुहदाह सुपुलइय । मन्नइ मन्नु सउन्नु पुन्न अप्पाणं सुरनर, इय तिहुअण आणंदचंद ! जय पास जिणेसर ! ॥ ११ ॥ तुह कल्लाण महेसु

घटटकारव पिल्लिअ, वल्लिर मल्ल महल्ल भत्ति सुरअर गजुल्लिअ। हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति भुवणे वि महूसव, इय तिहुअण आणदचद जय पास! सुहुब्भव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरण नियर विहुरिअ तमपहयर, दसिअ सयल पयत्थ-सत्थ वित्थरिअ पहाभर। कलिरलुसिय जण घूअलोय लोयणह अगोयर, तिमिरइ निरुहय पासनाह! भुवणत्तयदिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरण जलवरिससित्त माणव मइमेइणि, अवरावर सुहुमत्थ बोह कदल दलरेहणि। जायइ फल भरभरिय हरिय दुहदाह अणोवम, इय मइमेइणि वारिवाह दिस पास मइ मम ॥१४॥ कय अविकल कल्लाणवल्लि उल्लुरिय दुहवणु, दाविय सग पवग मग्ग दुग्गइ गम वारणु। जय जतुह जणएण तुल्ल ज जणिय हियावहु, रम्मु धम्मु सो जयउ पासु जयजतु पियामहु ॥१५॥ भुवणारण्ण निवास दरिय परदरिसणदेवय, जोइणि पूयण

खित्तवाल खुद्दासुरपसुवय । तुह उत्तट्ठ सुनट्ठ सुट्ठु अविसंठुलु चिट्ठहि, इय तिहुअण वणसीह ! पास ! पावाइ पणासहि ॥ १६ ॥ फणिफणफार फुरंत रयण कररंजिय नहयल, फलिणी कंदलदल तमाल नीलुप्पल सामल । कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग अगंजिअ, जय पच्चक्ख जिणेस ! पास ! थंभणयं पुरट्ठिअ ॥ १७ ॥ मह मणु तरलु पमाणु नेय वायावि विसंठुलु, नय तणुरवि अविणय-सवाहु आलस विहलंघलु । तुह माहप्पु पमाणु देव ! कारुण्ण पवित्तउ, इय मइ मा अवहीरि पास ! पालिहि विलवंतउ ॥ १८ ॥ किं किं कप्पिउ णे य कलुणु किं किं व न जंपिउ, किं व न चिट्ठिउ किट्ठु देव ! दीणय मवलंबिउ । कासु न किय निप्फल्ल लल्लि अम्हेहि दुहत्तिहि, तहवि न पत्तउ ताणु किंपि पइ पहुपरिचत्तिहि ॥ १९ ॥ तुहु सामिउ तुहु माय-बप्पु तुहु मित्त पियंकरु, तुहु गइ तुहु मइ तुहु जिताणु तुहु गुरु खेमंकरु ।

हउ दुहभरभारिउ वराउ राउल । निब्भगगह,
लीणउ तुह कम कमल सरणु जिण ! पालहि !
चगह ॥२०॥ पइ किवि कय नीरोय लोय किवि
पाविय सुहसय, किवि मइमत महत केवि किवि
साहिय सिवपय । किवि गजिय-रिउवग्ग केवि
जसधवलिय-भूयल, मइ अवहीरहि ? केण पास !
सरणागय वच्छल ! ॥ २१॥ पच्चुवयार निरीह
नाह ! निप्पन्नपओयण !, तुह जिण पास !
परोवयार करणिक्क-परायण ! सत्तु मित्त सम
चित्तवित्ति ! नयनिदय सममण !, मा अवहीरि
अजुग्गओ वि मइ पास ! निरजण ॥ २२ ॥ हउ
बहुविह दुह तरागत्त, तुह दुहनासणपरु हउ
सुयणह करुणिक्कठाणु तुह निरु करुणापरु । हउं
जिण पास असामिसालु तुहु तिहुअण सामिअ,
ज अवहीरहि मइ झखत इय पास ! न सोहिय
॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्ग विभाग नाह !-नहु जोयहि
तुह सम, भुवणुवयार सहावभाव-करुणा रस

सत्ताम। समविसमइं किं घणु नियइ? भुवि दाह समंतउ इय दुहिबंधव! पासनाह! मइ पाल थुणंतउ ॥२४॥ न य दीणह मुयवि अन्नुवि किवि जुग्गय, जं जोइवि उवयारु करहि उवयारसमुज्जय। दीणह दीणु निहीणु जेणतइ नाहिण चत्ताउ, तो जुग्गउ अहमेव पास! पालहि मइ चंगउ॥ २५॥ अह अन्नुवि जुग्गय विसेसु किवि मन्नहि दीणह, सं पासिवि उवयारु करइ तुह नाह! समग्गह। सुच्चिय किल कल्लाणु जेण जिण तुम्ह पसीयह, किं अन्निण तं चेव देव! मा मइ अवहीरह॥ २६॥ तुह पत्थण नहु होइ विहलु जिण! जाणउ किं पुण, हउं दुक्खिउ निरु सत्तचत्त दुक्कहु उस्सुयमण। त मन्नउ निमिसेण एउ एउ वि जइ लब्भइ, सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ? ॥२७॥ तिहुअण सामिअ पासनाह! मइ अप्पु पयासिउ, किज्जउ जं नियरूव सरिसु न मुणउ बहु जंपिउ।

अन्नु न जिण ! जगि तुह समो वि दक्खिण्ण दयासउ जइ अवगण्णसि तुह जि अहह !! कह होसु ? इयासउ ॥२८॥ जइ तुह रूविण किणवि पेयपाइण वेलवियउ, तुवि जाणउ जिण पास ! तुम्हि हउ अंगीकिरिउ। इय मह इच्छिउ ज न होइ सा तुह ओहवणु, रक्खतह नियकित्ति णेय जुज्जइ अवहीरणु ॥ २९ ॥ एह महारिय जत्त देव ! इहु न्हवण महूसउ ज अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजण अणिसिद्धउ। एम पसीह सुपास-नाह ! थंभणयपुरट्ठिय, इय मुणिवरु सिरिअ-भयदेउ विण्णवइ अणिंदिय ॥ ३० ॥

—o—

आत्मरक्षास्तोत्रम् ।

ॐ परमेष्ठि नमस्कार, सार नवपदात्मक ।
आत्मरक्षाकरं वज्र पंजराभ स्मराम्यहं ॥ १ ॥
ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितं ।

ॐ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुखपट वरं ॥ २ ॥
ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षाऽतिशायिनी ।
ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढं ॥३॥
ॐ नमो सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे ।
एसो पंच नमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥४॥
सव्वपावप्पणासणो वप्रो वज्रमयो बहिः ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगारखातिका ॥५॥
स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं । वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥६॥ महाप्रभावा रक्षेय, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्ठि पदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा । तस्य न स्याद्भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥८॥

श्रीगौतमाष्टकम् ।

श्रीइन्द्रभूतिं वसुभूतिपुत्रं, पृथ्वीभवं गौतमगोत्ररत्नं । स्तुवन्ति देवासुरमानवेन्द्रा, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ १॥ श्रीवर्द्धमानात् त्रिपदीमवाप्य, मुहूर्त्तमात्रेण कृतानि येन । अङ्गानि पूर्वाणि चतुर्दशापि, स गौ० ॥२॥ श्रीवीरनाथेन पुरा प्रणीतं, मन्त्रं महानंदसुखाय यस्य । ध्यायन्त्यमी सूरिवराः समग्राः, स गौ० ॥ ३ ॥ यस्याभिधानं मुनयोऽपि सर्वे, गृह्णन्ति भिक्षाभ्रमणस्य काले । मिष्टान्नपानाम्बरपूर्णकामाः, स गौ० ॥४॥ अष्टापदाद्रौ गगने स्वशक्त्या, ययौ जिनानां पदवन्दनाय । निशम्य तीर्थातिशयं सुरेभ्यः, स गौ० ॥ ५ ॥ त्रिपञ्चसंख्याशततापसानां, तपःकृशानामपुनर्भवाय । अक्षीणलब्ध्या परमान्नदाता, स गौ० ॥ ६ ॥ सदक्षिणं भोजनमेव देयं, साधर्मिकं सङ्घसपर्ययेव । कैवल्यवस्त्रं प्रददौ मुनीनां,

स गौ० ॥ ७ ॥ शिवं गते भर्त्तरि वीरनाथे, युग-प्रधानत्वमिहैव मत्वा । पट्टाभिषेको विदधे सुरेंद्रैः, स गौ० ॥ ८ ॥ श्रीगौतमस्याष्टकमादरेण, प्रबोधकाले मुनिपुंगवा ये । पठंति ते सूरिपदं सदैवा-नंदं लभते नितरां क्रमेण ॥९॥

—:o:—

गौतमस्वामीनो रास ।

वीर जिणेसर चरण कमल, कमलाकय वासो । पणमवि पभणिशुं सामी साल, गायम गुरु रासो ॥ मण तणु वयण एकत करवि, निसुणो भो भविया ! । जिम निवसे तुम देह गेह, गुण-गण गहगहिया ॥१॥ जंबूदीव सिरि भरहखित्त, खोणीतल मंडण । मगह देस सेणिय नरेस, रिउ-दल बल खंडण ॥ धणवर गुव्वर गाम नाम, जिहां गुणगण सज्जा । विप्प वस वसुभूइ तत्थ, तसु पुवही भज्जा ॥२॥ ताण पुत्त सिरि इंदभूइ,

भूवलय पसिद्धो। चउदह विज्जा विविह रूव, नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर। सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिणवि, पंकज जले पाडिय। तेजहि तारा चंद सूर आकाश भमाडिय॥ रूवहि मयण अनंग करवि, मेल्यो निरधाडिय। धीरमे मेरु गंभीर सिंधु, चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण जंपे किंचिय। एकाकी कलि भीत इत्य, गुण मेल्या संचिय ॥ अहवा निच्छय पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिय रंभा पउमा गौरी गंग रति हा विधि वंचिय ॥५॥ नवि बुध नवि गुरु कवि न कोय, जसु आगल रहिआ। पंच सया गुणपात्र छात्र, हींडे परिवरयो॥ करे निरंतर यज्ञ कर्म, मिथ्या मति मोहिय। अचिचल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥६॥ वस्तु छन्द–जंबूदीवह धवूदीवह भरह वासंमि॥

खोणीतल मंडण मगह देस, सेणिय नरेसर। वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुंदर॥ तसु भज्जा पुहवी सयल, गुणगण रूव निहाणं। ताण पुत्त विज्जा निलम्रो, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ भास–चरम जिणेसर केवलनाणी, चउ-व्विह संघ पइट्ठा जाणी। पावापुरी सामी संपत्तो, चउव्विह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देव समव-सरण तिहां कोजे, जिण दीठे मिथ्यामति छीजे। त्रिभुवन गुरु सिंहासन बेठा, ततखिण मोह दिगंत पइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा। देव दुंदुभि आकाशे वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुम वृष्टि विरचे तिहां देवा, चोसठ इन्द्र जसु मागे सेवा। चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिणवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उवसम रसभर भर वरसंता, जोजन वाणी वखाण करंता। जाणवि वर्द्धमाणा जिण पाया, सुर नर किन्नर

आवइ राया ॥१२॥ कांति समूहे झलझलकता, गयण विमाणहिं रणरणकता। पेखवि इन्दभूइ मन चिंते सुर आवे अम यज्ञ हुवते ॥१३॥ तीर तरङक जिम ते वहता, समवसरण पहुता गहगहता। तो अभिमाने गोयम जंपे, इण अवसर कोप तणु कंपे ॥ ४॥ मूढा लोक अजाण्यु बोले, सुर जाणता इम काइ डोले ? । मू आगल को जाण भणीजे ?, मेरु अवर किम उपमा दीजे ? ॥१५॥ वस्तु छन्द–वीर जिणवर वीर जिणवर, नाण संपन्न । पावापुरी सुरमहिय पत्त, नाह -संसार तारण। तिहिं देवेहिं निम्मविय, समवसरण बहु सुक्ख कारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहिं करी दिनकार। सिंहासण सामी ठव्यो, हुओ सुजय जयकार ॥ १६ ॥ भास–तो चढियो घण माण गेज, इन्दभूइ भूदेव तो। हुंकारो करी संचरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन भूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारंभ तो।

दहदिसि देखे विबुध वधू, आवंती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरणदंड ध्वज, कोसोसे नव घाट तो । वैर विवर्जित जंतुगणः प्रातिहारज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इन्द्र इन्द्राणी राय तो । चित्त चमक्किय चितवे ए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ । सहस्रकिरण सम वीरजिण, पेखिअ रूप विशाल तो । एह असंभव सभवे ए, साचो ए इन्द्रजाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजगगुरु, इंदभूइ नामेण तो । श्रीमुख संशय सामि सवे, फेडे वेद पएण तो ॥१९॥ मान मेली मद ठेली करी, भगते नाम्यो सीस तो । पंच-सयांसुं व्रत लियो ए. गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करी, अगनिभूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥२०॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर अग्यार तो । तो उपदेशे भुवन गुरु, संयमसुं व्रत बार तो ॥ बिहुं उपवासे पारणुं ए, आपणे

विहरत तो । गोयम सयम जग सयल, जयजयकार करत तो ॥ २१ ॥ वस्तु छन्द–इदभूइ इदभूइ, चढियो बहु मान ॥ हुकारो करी सचरिश्रो, समवसरण पहुतो तुरत । जे जे ससा सामि सवे, चरम नाह फेडे फुरत ॥ बोधि बीज सजाय मनें, गोयम भवह विरत्त । दिक्ख लेइ सिक्खा सहिय, गणहर पय सपत्त ॥२२॥ भास–श्राज हुश्रो सुविहाण, श्राज पचेलिमा पुण्य भरो। दीठा गोयम सामि, जो निय नयणे श्रमिय झरो ॥ सिरि गोयम गणहर, पच सया मुनि परिवरिय । भूमिय करिय विहार, भवियण जन पडिबोह करे । समवसरण मझार, जे जे ससा उपजे ए । ते ते परउपगार, कारण पूछे मुनिपवरो ॥२३॥ जिहा जिहा दीजे दीक्स, तिहा तिहा केवल ऊपजे ए । श्राप कने श्रणहुत, गोयम दीजे दान इम ॥ गुरु ऊपर गुरु भक्ति, सामि गोयम उपनिय । इण छल केवलनाण, रागज

राखे रंगभरे ॥२४॥ जो अष्टापद शैल, वंदे वढी चउवीस जिण। आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोअ मुणि ॥ इय देसण निसुणेइ, गोयम गणहर संचलियो। तापस पन्नर सएण, जो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तप सासिय निय अंग, अम्ह सगति न ऊपजे ए। किम चडसे दृढकाय, गय जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुओ एणे अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए। तो मुनि चढियो वेग, आलंववि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंड कलस धज वड सहिय। पेखवि परमाणंद, जिणहर भरहेसर महिय ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि सठिय जिणह बिंब। पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥२७॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यग्जृंभक देव तिहां। प्रतिबोधे पुंडरीक, कंडरीक अध्ययन भणो ॥ चलतां गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे। लेई आपण साथ,

चाले जिम जूथाधिपति ॥२८॥ खीर खाड घृत आणी, असीय वूठ अगुठ्ठ ठवे । गोयम एकण पात्र, करावे पारणु सवे ॥ पच सया शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे । साचा गुरु सजोग, कवल ते केवलरूप हुआ ॥२९॥ पच सया जिण-नाह, समवसरण प्रकार त्रय । पेखवी केवलनाण उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणवि पीयूष, गाजती घण मेघ जिम । जिणवाणी निसुणेह, नाणी हुआ पचसया ॥३०॥ वस्तु छन्द-इणे अनुक्रमे इणे अनुक्रमे, नाण सपन्न ॥ पन्नरह सय परिवरिय, हरिय दुरिय जिणनाह वदइ । जाणेवि जगगुरु वयण, तिह नाण अप्पाण निदइ ॥ चरम जिनेसर इम भणे, गोयम म करिस खेउ । छेही जइ आपण सही, होस्या तुल्ला बेउ ॥३१॥ भास-सामिओ ए वीर जिणद, पूनम चद जिम उल्लसिय । विहरिओ ए भरह-वासमि, वरस बहुत्तर सवसिय ॥ ठवतो ए कणय पउमेसु, पायकमल

संघहि सहिय। आवियो ए नयणाणंद, नयर पावापुरी सुरमहिय ।। ३२ ।। पेखिओ ए गोयम सामि, देवशर्मा प्रतिवोध करे। आपणो ए त्रिशलादेवी-नंदन पहुतो परम पए ।। वलतो ए देव आकास, पेखवि जाणिय जिण समे ए। तो मुनि ए मन विखवाद, नादभेद जिम ऊपनो ए ।।३३।। इण समे ए सामिय देखि, आप कनासु टालियो ए। जाणतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ।। अति भलु ए कीधलु सामि, जाण्यु केवल मागसे ए। चितवीयु ए बालक जिम, अहवा केडे लागसे ए ।। ३४ ।। हं किम ए वीर जिणंद, भगतिहि भोलो भोलव्यो ए। आपणो ए अविहड नेह, नाह! न संपे साचव्यो ए॥ साचो ए तुंहि वीतराग, नेह न जेणे लालियो ए। तिण समे ए गोयम चित्त, राग वेरागे वालियो ए ॥३५॥ आवतो ए जो उल्लट्ट, रहितो रागे साहियो ए। केवल ए नाण उप्पन्न,

गोयम सहिज उमाहियो ए ।। तिहुयण ए जय जयकार, केवलमहिमा सुर करे ए । गणधरु ए करय वखाण, भवियण भव इम निस्तरे ए ।। ३६ ।। वस्तु छन्द-पढम गणहर पढम गणहर, वरस पचास ।। गिहवासे संवसिय, तीस वरिस संजम विभूसिय । सिरि केवलनाण पुण बार, वरिस तिहुयण नमसिय ।। राजगिहि नयरीहि ठव्यो, बाणवइ वरिसाऊ । सामी गोयम गुण-निलो होसे सिवपुर ठाऊ ।। ३७ । भास-जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमवने परिमल महके, जिम चंदन सुगंध निधि ।। जिम गंगाजल लहिर्यां लहके, जिम कणयाचल तेजे भलके, तिम गोयम सोभाग निधि ।। ३८ ।। जिम मानसरोवर निवसे हंसा जिम सुरवर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीव वने ।। जिम रयणायर रयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुण केलि वने ।। ३९ ।। पूनम निसि

जिम ससहर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनिपवरो ॥ ४० ॥ जिम सुरतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकी महमहे ए ॥ जिम भूमीपति भुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गोयम लब्धे गहगह्यो ए । ४१॥ चिंतामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंच्छित काज, कामकुंभ सहु वश हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन कामिय, अष्ट महा सिद्धि आवे धामिय, सामिय गोयम अणुसरे ए ॥ ४२ ॥ पणवक्खर पहिलो पभणीजे, मायाबीज श्रवण निसुणीजे ॥ श्रीमती शोभा संभवे ए ॥ देवह धुरि अरिहंत नमीजे, [1]विणयपहु उवझाय

---

१ इस पद में रासकारने अपना नाम 'विनयप्रभोपाध्याय' ऐसा दर्शाया है, जो दादा

थुणीजे, इण मत्रे गोयम नमा ए ॥ ४३ ॥ परघर वसता काइ करीजे देश देशातर काइ भमीजे, कवण काज आयास करो। प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समग्गल ततखिण सीझे, नवनिधि विलसे तिहा घरे ए ॥ ४४ ॥ चउदह सय बारोत्तर वरसे गोयम गणहर केवल दिवसे, कीयो कवित्त उपगार परो। आदहिं मगल ए पभणीजे, परव महोच्छव पहिलो दीजे, ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन्य माता जिणे उयरे धरिया, धन्य पिता जिण कुल अवतरिया, धन्य सुगुरु जिणे दिक्खिया ए। विनयवत विद्या भडार, तसु गुण पुहवी न लब्भे पार, वड जिम शाखा विस्तरो ए। गोयम स्वामीनो रास

श्रीजिनकुशलसूरिजी महाराज के शिष्य थे उन्होंने अपना ससारी भाई जो दरिद्र था उसके लिये यह रास बनाया है इसके प्रभाव से वह धनवान् हुआ था।

भणीजे, चउविह संघ रलियायत कीजे, ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छडो दिवरावो, माणक मोतिना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेसणो ए । तिहां बेसी गुरु देशना देसी, भविक जीवनां काज सरेसी, नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥



शत्रुञ्जयनो रास ।

॥ दोहा ॥ श्रीरिसहेसर पाय नामी, आणी मन आणंद । रास भणुं रलियामणो, शत्रुञ्जय सुखकंद ॥ १ ॥ संवत् चार सत्योत्तमे, हुवा धनेसर सूर । तिणे शत्रुञ्जय महातम कह्युं, शीलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिणंद समोसर्या, शत्रुञ्जय ऊपर जेम । इन्द्रादिक आगल कह्युं, शत्रुञ्जय महातम एम ॥ ३ ॥ शत्रुञ्जय तीरथ सारिखुं, नहिं छे तीरथ कोय । स्वर्ग मृत्यु

पातालमे, तीरथ सघला जोय ॥४॥ नामे नव निधि सपजे, दीठे दुरित पलाय । भेटता भवभय टले, सेवता सुख थाय ॥ ५ ॥ जबूनामे द्वीप ए, दक्षिण भरत मझार । सोरठ देश सोहामणो, तिहा छे तीरथ सार ॥६॥

ढाल पहेली. राग रामग्री

"नयरी द्वारामती" ए देशी

शत्रुञ्जय ने श्रीपुडरीक, सिद्धक्षेत्र कहु तहकीक । विमलाचलने करु प्रणाम, ए शत्रुञ्जयना एकवीश नाम ॥१॥ (ए आकणी) ॥ सुरगिरि महागिरि ने पुण्यराशि, श्रीपद पर्वतेंद्र प्रकाश । महातीरथ पूरवे सुखकाम ए शत्रुञ्जयनां एकवीश नाम ॥२॥ शास्वतपर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो तेणे कीजे भक्ति । पुष्पदत महापद्म सुठाम, ए शत्रुञ्जयना एकवीश नाम ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र कैलाश, पातालमूल

अकर्मक तास । सर्वकाम कीजे गुणग्राम, ए शत्रुञ्जयनां एकवीश नाम ॥४॥ शत्रुञ्जयनां एकवीश नाम, जपे जे वेठा आपण ठाम । शत्रुञ्जय यात्रानु फल लहे, महावीर भगवंत एम कहे ॥५॥

दोहा–शत्रुञ्जय पहेले अरे, एसी जोयण परिमाण । पिहुलो मूले उंचपणे, छव्वीश जोयण जाण ॥ १ ॥ सीत्तोरे जोयण जाणवो, बीजे अरे विशाल । वीश जोयण उंचो कह्यो, मुज वंदन त्रण काल ॥२॥ साठ जोयण त्रीजे अरे, पिहुलो तीरथराय । सोल योजन उंचो सही, ध्यान धरु चित्त लाय ॥३॥ पचास जोयण पहोलपणे, चोथे अरे मभार । उंचो दश जोयण अचल, नित्य प्रणमे नर नार ॥ ४ ॥ बार योजन पंचम अरे, मूल तणो विस्तार । दोय योजन उंचो कह्यो, शत्रुञ्जय तीरथ सार ॥५॥ सात हाथ छट्ठे अरे, पहोलो पर्वत एह । उंचो होशे सो धनुष, शाश्वतुं तीरथ एह ॥ ६ ॥

ढाल बीजी राग आशावरी.

"जिनवरशु मेरो मन लीनो" ए देशी

केवलज्ञानी प्रथम तीर्थङ्कर, अनत सिद्धा इण ठाम रे। अनत वली सिद्धशे इण ठामे, तिणे करु नित्य प्रणाम रे ॥१॥ शत्रुञ्जय साधु अनता सिद्धा, सिद्धशे वलीय अनत रे। जेणे शत्रुञ्जय तीरथ नहि भेट्यो, ते गर्भावास लहत रे श० ॥ २ ॥ फागण सुदि आठमते दिवसे. ऋषभदेव सुखकार रे। रायण रुख समोसर्या स्वामी, पूरव नवाणु वार रे श० ॥३॥ भरत पुत्र चैत्री पूनम दिन, इण शत्रुञ्जय गिरि आय रे। पाच कोडिशु पुडरीक सिद्धा, तेणे पुडरीक कहाय रे, श० ॥४॥ नमि विनमि राजा विद्याधर वे वे कोडी सघात रे। फागण सुदि दशमी दिन सिद्धा, तेणे प्रणमु प्रभात रे श० ॥५॥ चत्र मास वदि चौदशने दिन, नमिपुत्री चोसठ

रे। अणसण करी शत्रुञ्जय गिरि उपर, ए सहु सिद्धा एकठ्ठ रे. श० ॥५॥ पोतरा प्रथम तीर्थङ्कर केरा, द्राविड ने वारिखिल्ल रे। कार्तिक सुदि पूनम दिन सिद्धा, दश कोडी मुनि निस्सल रे. श० ॥ ७ ॥ पांचे पांडव इण गिरि सिद्धा, नव नारद ऋषिराय रे। शांब प्रद्युम्न गया तिहां मुक्ते, आठे कार्म खपाय रे. श० ॥ ८ ॥ नेम विना त्रेवीश तीर्थङ्कर, समवसर्या गिरिशृङ्ग रे। अजित शांति तीर्थङ्कर वेहु, रह्या चोमासुं रंग रे श० ॥ ६ ॥ सहस्स साधु परिवार संघाते, थावचासुत साध रे। पांचशे साधुसुं सेलग मुनिवर, शत्रुञ्जये शिवसुख लाध रे. श० ॥१०॥ असंख्याता मुनि शत्रुञ्जय सिद्धा, भरतेसरने पाट रे। राम अने भरतादिक सिद्धा, मुक्ति तणो ए वाट रे. श० ॥११॥ जालि मयालि ने उवयालि, प्रमुख साधुनी कोडि रे। साधु अनंता शत्रुञ्जय सिद्धा, प्रणमुं बे कर जोडी रे. श० ॥१२॥

ढाल त्रीजी. चोपाइनी देशी

शत्रुञ्जयना कहु सोल उद्धार, ते सुणजो सहु को सुविचार। सुणता आनंद अंग न माय, जन्म जन्मना पातक जाय ॥ १ ॥ ऋषभदेव अयोध्यापुरी, समवसर्या स्वामी हित करी। भरत गयो वंदनने काज, ए उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमा महोटो अरिहंत देव, चोसठ इन्द्र करे जसु सेव। तेहथी महोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमे जिनवर राय ॥३॥ तेहथी महोटो संघवी कह्यो, भरत सुणीने मन गहगह्यो। भरत कहे ते किम पामीये, प्रभु कहे शत्रुञ्जय यात्रा किये ॥४॥ भरत कहे संघवी पद मुज्झ, ते आपो हु अंगज तुज्झ। इन्द्रे आण्या अक्षत वास, प्रभु आपे संघवी पद तास ॥ ५ ॥ इन्द्रे तेणी वेला तत्काल, भरत सुभद्रा वेहुये माल। पहेरावी घर संप्रेडिया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥६॥

ऋषभदेवनी प्रतिमा वली, रत्न तणी कीधी मन रली । भरते गणधर घर तेडीया, शांतिक पुष्टिक सहु तीहां किया ॥ ७ ॥ कंकोतरो मूकी सहु देश, भरते तेड्यो संघ अशेष । आव्यो संघ अयोध्यापूरी, प्रथम तीर्थङ्कर यात्रा करी ॥८॥ सघभक्ति कीधी अति घणी, संघ चलायो शत्रुञ्जय भणी । गणधर बाहुबलि केवली, मुनिवर कोडीं साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्तीनी सघली ऋद्धि, भरते साथे लीधी सिद्धि । हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहेतां नावे पार ॥ १० ॥ भरतेश्वर संघवी कहेवाय, मार्गे चैत्य उद्धारतो जाय । संघ आव्यो शत्रुञ्जय पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥११॥ नयणे निरख्यो शत्रुञ्जय राय, मणि माणिक मोतीशु वधाय । तीणे ठामे रही महोत्सव कियो, भरते आनंदपुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ शत्रुञ्जय उपर चड्यो, फरसंतां पातक जडपड्यो । केवलज्ञानी पगला

तिहां, प्रणम्या रायण रूख छे जिहा ॥ १३ ॥
केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेन्द्रे आणी
सुपवित्त । नदी शत्रुञ्जी सोहामणी, भरते दीठी
कौतुक भणी ॥ १४ ॥ गणधर देव तणे उपदेश,
इन्द्रे वली दीधो आदेश । आदिनाथ तणो
देहरो, भरते कराव्यो गिरि सेहरो ॥ १५ ॥
सोनानो प्रासाद उत्तुङ्ग, रत्न तणी प्रतिमा
मनरग । भरते श्रीआदीश्वर तणी, प्रतिमा
स्थापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवीनी प्रतिमा
वली, माही पूनम थापी रली । ब्राह्मी सुन्दरी
प्रमुख प्रासाद, भरते थाप्या नवले नाद ॥१७॥
एम अनेक प्रतिमा प्रासाद, भरते कराव्या गुरु
प्रसाद । एह भण्यो पहलो -उद्धार, सघलो ही
जाणे ससार ॥१८॥

ढाल चोथी. राग आशावरी.

भरत तणे पाटे आठमे, दण्डवीरज थयो
रायो जी । भरत तणी परे सघ कीयो, शत्रुञ्जय

संघवी कहायो जी ॥१॥ शत्रुञ्जय उद्धार सांभलो, सोले महोटा श्रीकारो जी । असंख्य'ता बीजा वली, ते न कहुं अधिकारो जी. श० ॥२॥ चैत्य कराव्युं रूपा तणुं सोनानां बिंब सारो जी । मूलगा बिंब भंडारीया पश्चिम दिशि तेणी वारो जी. श० ॥ ३ ॥ शत्रुञ्जयनी यात्रा करी, सफल कियो अवतारो जी । दंडवीरज राजा तणो, ए बीजो उद्धारो जी. श० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरजथी जेवारो जी । ईशानेन्द्रे कराविया, ए त्रीजो उद्धारो जी. श० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारो जी । तिणे शत्रुंञ्जयनो कराविया, ए चोथो उद्धारो जी श० ॥६॥ पांचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंद्र समकित धारो जी । तिणे शत्रुञ्जयनो कराविया, ए पांचमो उद्धारो जी. ॥ ७ ॥ भवनपति इन्द्र तणो कियो, ए छट्ठो उद्धारो जी । चक्रवर्ती सगर तणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी. श० ॥ ८ ॥

अभिनंदन पासे सुण्यो, शत्रुञ्जयनो अधिकारो जी । व्यतरेंद्रे कराविओ, ए आठमो उद्धारो जी. श० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभ स्वामीनो पोतरो, चंद्रशेखर नाम मल्हारो जी । चंद्रयश राये कराविओ, ए नवमो उद्धारो जी श० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना, शांतिनाथ सुत वारो जी । चक्रधर राये कराविओ, ए दशमो उद्धारो जी श०॥११॥ दशरथ सुत जग दीपतो, मुनिसुव्रत सुवारो जी । श्रीरामचंद्रे कराविओ, ए इग्यारमो उद्धारो जी. श०॥१२॥ पांडव कहे अमे पापिया, किम छूटां मोरो माणो जी । कहे कुंती शत्रुञ्जय तणी, जात्रा किया पाप जाणो जी. श० ॥ १३ ॥ पांचे पांडव संघ करी, शत्रुञ्जय भेट्यो अपारो जी । काष्ठ चैत्य बिंब लेपनो, ए बारमो उद्धारो जी. श० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाषाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी । श्रीशत्रुञ्जयनो संघ करी, स्थापी सकल सरूपो जी श० ॥ १५ ॥ अष्टोत्तर सो

वरसां गयां, विक्रम नृपथी जेवारो जी । पोरवाड जावड करावियो, ए तेरमो उद्धारो जी. श० ॥१६॥ संवत बार तेरोत्तरे, श्रीमाली सुविचारो जी । बाहडदे मुहूते करावियो, ए चौदमो उद्धारो जी. श० ॥ १७ ॥ संवत तेर एकोत्तरे, देसलहर अधिकारो जी । समराशाहे करावियो, ए पंदरमो उद्धारो जी. श० ॥१८॥ संवत पन्नर सत्याशीये, वेशाख वदि शुभ वारो जी । करमे दोषी करावियो, ए सोलमो उद्धारो जी. श० ॥ १९ ॥ सांप्रत काले सोलमो ए, वरते छे उद्धारो जी । नित्य नित्य कीजे वंदना ने, पामीजे भव, पारो जी. श० ॥२०॥

दोहा—वली शत्रुञ्जय महातम कहुं, सांभलो जिम छे तेम । सूरि धनेसर इम कहे, महावीरे कह्यु एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, शत्रुंजे पूजनीक । भगवंतनो भेख मानतां, लाभ होवे तहकीक ॥ २ ॥ श्रीशत्रुञ्जय उपरे, चैत्य करावे

जेह । फल परिणाम समु लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ शत्रुञ्जय उपर देहरु, नवु नीपावे कोय । जीर्णोद्धार करावता, आठ गणु फल होय ॥ ४ ॥ शिर उपर गागर धरो, स्नात्र करावे नार । चक्रवर्तीनी स्त्री थइ, शिवसुख पामे सार ॥५॥ कार्त्तिक पूनम शत्रुञ्जये, चढीने करे उपवास । नारकी सो सागर तणो, करे कर्मनो नाश ॥६॥ कार्त्तिक पर्व महोट्ठ कह्यु, जिहा सिद्धा दश कोडी । ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे छोडी ॥ ७ ॥ सहस्र लाख श्रावक भणी, भोजन पुण्य विशेष । शत्रुञ्जय साधु पडिलाभता, अधिको तेहथी देख ॥८॥

ढाल पांचमी.

"धन्य धन्य गजसुकुमारने" ए देशी

शत्रुंजे गया पाप छूटिये, लीजे आलो, यण एमा जी । तप जप कीजे तिहा रही, तार्थ-

कर कह्यु तेमो जी. श० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी । चैत्री दिन शत्रुञ्जय चडी, एक करे उपवासो जी. श० ॥२॥ रत्नहरणी चोरी करी, सात आंबिल शुद्ध थायो जी । काती सात दिन तप कियां, रत्नहरण पाप जायो जी. श० ॥ ३ ॥ कांसा पीत्तल तांबा रजतनी, चोरी कीधी जेणो जी । सात दिवस पुरिमड्ढ करे, तो छूटे गिरि एणो जी. श० ॥४॥ मोती प्रवालां मुगिया, जेणे चोर्या नर नारो जी । आंबिल करी पूजा करे, त्रण टंक शुद्ध आचारो जी. श० ॥ ५ ॥ धान्य पाणी रस चोरीयां, जे भेटे सिद्धक्षेत्रो जी । शत्रुञ्जय तलहटी साधुने, पडि-लाभे शुद्ध चित्तो जी. श० ॥ ६ ॥ वस्त्राभरण जेणे हर्यां, ते छूटे इणे मेलो जी । आदिनाथनी पूजा करे प्रह ऊठी बहु वहेलो जी. श० ॥७॥ देवगुरुनुं धन जे हरे, ते शुद्ध थाये एमो जी । अधिकुं द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहु प्रेमो

जी श० ॥ ८ ॥ गाय भेस गोधा मही, गय ग्रह चोरणहारो जी । द्ये ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी श० ॥ ९ ॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहा लखे आपणो नामो जी, छूटे छमासी तप किया, सामायिक तिणे ठामो जी श० ॥१०॥ कु वारी परिव्राजिका, सधव विधव गुरुनारो जी । व्रत भाज तेहने कह्यु, छमासि तप सारो जी श० ॥ ११ ॥ गो विप्र बालक ऋषि, एहना घातक जेहो जी । प्रतिमा आगे आलोचता, छूटे तप करी एहो जी श० ॥१२॥

ढाल छट्ठी. "ऋषभ प्रभुजी ए" ए देशी.

सप्रति काले सोलमो ए, वरते छे उद्धार । शत्रुञ्जय यात्रा करु ए सफल करु अवतार श० ॥१॥ छह रि पालता चालीये ए, शत्रुञ्जय केरी वाट । पालीताणा पहोचीये ए, सघ मल्या बहु थाट श० ॥२॥ ललित सरोवर देखीये ए, वला

चैत्यप्रवाडी इणी परे करी ए, सीध्यां वांछित काम. श० ॥ १६ ॥ जात्रा करी [1]शत्रुञ्जा तणी ए, सफल कियो अवतार । कुशल खेमसु आवीया ए, संघ सहु परिवार. श० ॥१७॥ शत्रुञ्जय रास सोहामणो ए, सांभलजो सहु कोय । घर बेठां भणे भावशु ए, तसु जात्रा फल होय. श० ॥१८॥ संवत सोल छयासिये ए, श्रावण सुदि सुखकार । रास भण्यो शत्रुंजा तणो ए. नगर नागोर मझार. श० ॥१९॥ गिरुओ गच्छ खरतर

[1] शत्रुंजय महातम सांभली ए, रास रच्यो अनुसार। जे भवि गावे भावशु ए, आनंद होय अपार ।।श०॥

[2] भणसाली थिरु आत भलो ए, दयावंत दातार । शत्रुंजय संघ करावियो ए, जेसलमेर मझार ।।श०।। शत्रुंजय महातम ग्रन्थथी ए, रास रच्यो अनुसार । भाव भक्ते भणतां थकां ए, पामीजे भवपार ।।श०॥

इति प्रत्यन्तरेऽधिकः पाठः ।

तणां ए, श्रीजिनचद सूरीश । प्रथम शिष्य श्री पूज्यना ए, सकलचद सुजगीश, श० ॥२०॥ तास शिष्य जग जाणीये ए, समयसुदर उवभाय । रास रच्यो तेणे रुअडो ए, सुणतां आनद थाय श० ॥२१॥

卐 卐

श्री विषहर पार्श्वनाथ का महामंत्र ।

ॐ जितु ॐ जितु ॐ जिउपसम धरी, ॐ ह्रीं पाश्व अक्षर जपते । भूतने प्रेत जोतिग व्यतर सुरा, उपसमे वार एकवीस गुणते ॥१॥ दुष्ट ग्रह रोग शोक जरा जतुने, ताव एकांतरो दिन तपते । गर्भबध निवारण सर्प वीछी, विष वालिका बालनी व्याधि हते ॥ ॐ २ ॥ शायणी डायणी राहणा राधणो, फोटीका मोटीका दुष्ट हात । दाढ उदार तणी कोल नोला तणी, श्वान

शीयाला वीकराल दंति ॥ ॐ ३ ॥ धरण पद्मा-
वती समरी शोभावति, वाट अघाट अटवी
अटंते । लक्ष्मी लुंदो मले सुजश वेला वले, सयल
आशा फले मन हसंते ॥ ॐ ४ ॥ अष्ट महा भय
हरे कान पीडा टलो, उत्तरे शूल शाशक भणते ।
वदति वर प्रीतस्युं प्रीति विमल प्रभो, पाश्व-
जिन नाम अभिराम मंते ॥ ॐ ५ ॥

श्री घंटाकर्ण महामन्त्र ।

ॐ घंटाकर्णो महावीर सर्व व्याधिविनाशकः ।
विस्फोटकभये प्राप्ते रक्ष रक्ष महाबल ! ॥१॥
यत्र त्वं तिष्ठसे देव ! लिखितोऽक्षर पंक्तिभिः ।
रोगास्तत्र प्रणस्यन्ति, वात पित्त कफोद्भवाः ॥२॥
तत्र राजभयं नास्ति, यान्ति कर्णेजपात् क्षयम ।
शाकिनी भूतवेतालाः राक्षसाः प्रभवन्ति न ॥३॥
नाऽकाले मरण तस्य, न च सर्पेण दस्यते ।
अग्नि चोर भयं नास्ति, नास्ति तस्यापरि भयम् ॥४॥
ॐ ह्रीं घंटाकर्णो नमोस्तुते ठ. ठः ठः स्वाहा ॥

श्री शारदा-स्तुति ।

ॐ ह्रीँ अर्हन मुखाम्भोज वासिनी पापनाशिनी ।
सरस्वती मह स्तोमि, श्रुतसागर पारदाम् ॥१॥
रमाबीजाक्षर मयीं, मायाबीज समन्विता ।
त्वा नमामि जगन्मातस्त्रैलोक्यैश्वर्यदायिनी ॥२॥
सरस्वति ! वद वद वाग्वादिनि मिताक्षरे ।
येनाऽह वाङ्मय सर्वं, जानामि निजनामवत् ॥३॥
भगवती ! सरस्वति ! ह्रीँ नमोऽघ्रिद्वयेप्रगे ।
ये कुर्वंतिन ते हि स्युर्जाड्याबुधिधरा शयाः ॥४॥
त्वत्पादसेवी हसोऽपि- विवेकीति जने श्रुत ।
ब्रवीमि किं पुनस्तेषा येषा त्वच्चरणौ हृदि ।
तावकीनान् गुणान् मात , सरस्वति वदामि कान् ।
यैः स्मृतैरपि जीवाना, स्यु सौख्यानि पदे पदे ॥६॥
त्वदीय चरणाभोजे, मच्चित राजहसवत् ।
भविष्यति कदा मात सरस्वति वद स्फुटम् ॥७॥

श्वेताब्जमध्यचंद्राश्म प्रासादस्थां चतुर्भुजां ।
हंसस्कंधस्थितां चंद्रमूर्त्युज्जलतनु प्रभाम् ॥८॥

वामदक्षिण हस्ताभ्यां, बिभ्रतीं पद्मपुस्तिकां ।
तथेतराभ्यां वीणाक्षमालिकां श्वेतवाससाम् ॥९॥

ऊदगिरंतीं मुखांभोज-देनामक्षर मालिकां ।
ध्यायेद्योगस्थितां देवीं,सजडोऽपि कविर्भवेत् ॥१०॥

यद्दिच्छया सुर समूहसंस्तुता मयका स्तुता: ।
तत्तां पूरयितुं देवी, प्रसीद परमेश्वरि ! ॥११॥

श्री शारदा स्तुतिमिमां हृदये निधाय,
ये सुप्रभात समये मनुजाः स्मरंति ।
तेषां परिस्फुरति विश्वविकाश हेतु,
सज्ज्ञान केवल महो महिमा निधानम् ॥१२॥

卐 卐

श्री सरस्वती देवी स्तुति

यस्या प्रसाद परिवर्द्धित शुद्ध बोधा पार व्रजन्ति,
सुधिय श्रुततोयराशे, सानुग्रहा मम समीहित ।
सिद्धयेऽस्तु सर्वज्ञ शासनरता श्रुतदेवताऽसौ ॥१॥
निषण्णा कमले भव्या अब्जहस्ता सरस्वती ।
सम्यग्ज्ञान प्रदा भूयाद् भव्याना भक्ति शालिनाम् ॥२

जाप —ॐ ह्रीं क्लीं ब्लीं श्रीं हस कल ह्रीं
ऐं नम ॥

उवसग्गहरं महाप्राभाविक स्तोत्रम्

उवसग्गहर पास, पास वदामि कम्मघण-मुक्क । विसहर-विस-निन्नास, मगल कल्याण आवास ॥ १ ॥ विसहर-फुलिंग-मतं, कठे धारेई जोसया मणुओ । तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ-जरा जति उवसाम ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मतो, तुज्ज पणामोवि बहुफलो होई । नर तिरीएसुवि

जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥३॥ ॐ अमर-तरु-कामधेणु, चिंतामणि काम-कुंभ-माईया। सिरिपास नाह सेवा, गहाण सव्वेवि दासत्तम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं तुह दंसणेण सामिय, पणासेइ रोग-सोग-दुक्ख दोहग्गं, कप्पतरुमिव जायई, ॐ तुह दंसणेण सव्वफलहेउ स्वाहा ॥५॥ ॐ ह्रीं नमिउण विग्घनासय, मायाबीएण धरण नागिंदं। सिरि कामराज क्लीं, पास जिणंदं नमंसामि ॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिरिपास विसहर-विज्जामंतेण झाणझाएज्झा, धरण पउमावई देवी, ॐ ह्रीं क्ष्म्ल्व्र्युं स्वाहा ॥७॥ ॐ जयउ धरणिंद-पउमा-वईय नागिणी विज्जा, विमल झाण-सहियो, ॐ ह्रीं क्ष्म्ल्व्र्युं स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ थुणामि पासनाहं, ॐ ह्रीं पणमामि परमभत्तीए, अठ्क्खर-धरणेन्दो, पउमावई पयडिया कित्ती ॥९॥ जस्स पयकमलमज्जे, सया वसेई पउमा-वईय धरणिंदो। तस्स नामई सयलं, विसहर-

विस नासेई ॥१०॥ तुह समत्तो लध्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिये, पावंति अविग्घेण, जीवा अयरामर ठाण ॥ ११ ॥ ॐ नट्ठट्ट–मयठाणे, पणट्ठ-कमट्ठ-नट्ठ-ससारे, परमट्ठ-निट्ठि-अट्ठे, अट्ठ-गुणाधिसर बंदे ॥ १२ ॥ ॐ गरुडो वनितापुत्तो, नाग लक्ष्मी महाबल। तेण मुच्चंति मुसा, तेण मुच्चंति पन्नगा ॥ १३ ॥ स तुह नाम सुद्धमंत, सम्म जो जवेई सुद्धभावेण सो अयरामर ठाण, पावई न य दोग्गई दुक्ख वा ॥ १४ ॥ ॐ पंडु भगदर-दाह, कास सास च सूलमाईणि, पास पहु पभावेण नासंति सयल रोगाई ह्रीं स्वाहा ।१५। ॐ विसहर–दावानल,–साईणि - वैयाल - मारि-आयंका, सिरि निलकंठ पासस्स, स्मरण मित्तेण नासंति ॥ १६ ॥ पन्नास गोपीडा कुरग्गह, तुह दसण भयकाये, आवि न हुंति ए तह वि तिसज्ज ज गुणिज्जासो ॥१७॥ पीड जंत भगदर खास, सास सूल तह निव्वाह सिरिसामलपास महंत

नाम पऊर पऊलेण ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पास धरण संज्जुत्तं विसहर विज्जं जवेई सुद्ध मणेणं पावई ईच्छिय सुहं ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्म्ल्व्यूं स्वाहा ॥ १६ ॥ ॐ रोग-जल-जलण-विसहर चौरारि मईंद गय-रण भयाई पास जीण नामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाईं ह्रीं स्वाहा ॥ २० ॥ ॐ जयउ धरणिंद नमंसिय पउमावइ पमुह निसेविय पाया ॐ क्लीं ह्रीं महासिद्धि करेइ पास जगनाहो ॥ २१ ॥ ॐ ह्री श्रीं तं नमः पास नाहं, ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र नमसियं दुहं विणासं ॐ ह्रीं श्रीं जस्स प्रभावेण सया ॐ ह्रीं श्रीं नासंति उवद्दवा बहवे ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं तई समरताण मणे ॐ ह्रीं श्रीं न होई वाहि नतं महा दुक्खं ॐ ह्रीं श्रीं पयडं नत्थीत्थं संदेहो ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जल-जहल भय तह सप्पसिह ॐ ह्रीं श्रीं चौरारि संभवे खिप्पं ॐ ह्रीं श्रीं जो समरेइ पास पहुं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पुहावइ कयावि किं तस्स ॥२४॥

ॐ ह्री श्री क्ली ह्री इह लोगट्ठी परलोगट्ठी ॐ ह्री श्री जो समरेइ पासनाह ॐ ह्रा ह्री ह्र ग्रा ग्री ग्र॰ ग्र। त तह सिज्झई खिप्प ॥२५॥ ईह ताइ स्मरह भगवत, ॐ ह्री श्री क्ली ग्रा ग्री, ग्र ग्र, क्ली क्ली श्री कलिकु ड स्वामिने नम ॥२६॥ ईग्र सथुग्रो महायस ? भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण, ता देव दिज्ज बोहि, भवे भवे पास जिणचद ॥ २७ ॥

॥ ॐ शाति ॥ शाति. ॥ शाति ॥



:: श्री पार्श्वनाथ मंत्राधिराज स्तोत्रम् ::

ॐ ह्रीं श्रीं तं नमह पासनाहं, ॐ ह्रीं श्रीं धरणेंद्रनमंसियं दुहविणासं ॐ ह्रीं श्री जस्स पभावेण सया, ॐ ह्रीं श्री नासति-उव्वद्दवा बहवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं तई समरंताणमणे, ॐ ह्रीं श्रीं न होई वाहि नतं महादुक्खं, ॐ ह्रीं श्रीं नामंपिहि मंतसमं, ॐ ह्रीं श्रीं पयडं नत्थीत्थ संदेहो ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री जल जलण भये तह सप्पसिहं, ॐ ह्रीं श्रीं चौरारि संभवेखिप्पं, ॐ ह्रीं श्रीं जो समरई पासनाह, ॐ ह्रीं श्रीं पहवई न कयाविकि तस्सा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्ली ह्रीं ह्रीं ह्रीं इह-लोगट्ठि पर लोगट्ठि, ॐ ह्रीं श्रीं जो समरई पासनाहं तु, ॐ ह्रीं ह्रँ ह्रां गां गीं गुं ग: तह सिज्जई खिप्पं इहनाहं, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्रां ग्रीं क्लीं क्लीं कलिकुंड-स्वामिने नमः।४।

:: आत्मरक्षक श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम् ::

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय, येन मन्त्रेण समाधि क्रियते, शरीरे रक्षा कुरु कुरु, वने वा, ग्रामे वा, नगरे वा, त्रिके वा, चत्वरे वा, चतुः पथे वा, द्वारे वा, गृहे वा, वाही मुद्राणी-क्षत्रियाणी वैश्यी चंडाली-मातंगिनी, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः य क्ष मंत्र प्रसादेन मम शरीरे अवतरतु दुष्टनिग्रह कुर्वंतु हुं फुट स्वाहा ।

❀ ❀

:: श्री चिंतामणी पार्श्व नाथनो छंद ::

दोहा

कल्पवेल चिंतामणी, कामधेनु गुणखाण ।
अलख अगोचर अगम गति चिदानंद भगवान ।१।
परम ज्योती परमात्मा निराकार किरतार ।
निर्भय रूप ज्योतीस्वरू पूरण ब्रह्म अपार ।२।

अविनाशी सांइधनी चिंतामणी श्री पास ।
अरज करूं कर जोड़के पूरो वंछित आश ।३।
मन चिंतित आशा फले सकल सिद्धावे काम ।
चिंतामणी के जाप जप, चिंताहर ए नाम ।४।
तुम सम मेरे को नहीं चिंतामणी भगवान ।
चेतन की एह विनती दीजे अनुभव ज्ञान ।५।

चौपाई

प्राणत देवलोकथी आये, जन्म वणारशी नगरी पाये । अश्वसेन कुल मंडनस्वामी, त्रिहु जगके प्रभु अंतरजामी ।।६।। वामादेवी माता के जाये, लंछन नाग फणी मणी पाये । शुभ काया नव हाथ वखाणो नील वरण तनु निर्मल जाणो ।।७।। मानव जक्ष सेवे प्रभु पाय पद्मावती देवी सुख दाय । इंद्र चंद पारस गुण गावे कल्पवृक्ष चिंतामणी पावे ।। ८ ।। नित समरो चिंतामणी स्वामी आशा पूरे अंतरजामी । धन धन पारस

पुरिसा दाणी तुम सम जगमे को नहि नाणी ॥ ९ ॥ तुमारो नाम सदा सुखकारी सुख उपजे दु ख जाय विसारी । चेतन को मन तुमारे पास मनवछीत पूरो प्रभु आश ॥ १० ॥

दोहा

ॐ भगवत चिंतामणी पार्श्व प्रभु जीनराय । नमो नमो तुम नामसे रोग शोग मीट जाय ॥ ११ ॥ वात पित्त दूरे टले कफ नहि आवे पास । चिंतामणी के नामसे मीटे स्वास और कास ॥ १२ ॥ प्रथम दूसरो तीसरो ताव चोथीयो जाय । शुल बहोतेर दूरे रहे दाद खाज न रहाय ॥ १३ ॥ विस्फोटक गड गु बडा फाट अठारे दूर । नेत्र रोग सब परिहरे कठमाल चकचूर ॥ १४ ॥ चिंतामणी के जापसे रोग सोग मीट जाय । चेतन पार्श्व नाम को समरो मन चित लाय ॥ १५ ॥

चोपाई

मन शुद्धे समरो भगवान भय भंजन चिंतामणी ध्यान । भूत प्रेत भय जावे दूर जाप जपे सुख संपत्ति पूर ॥१६॥ डाकण शाकण व्यंतर-देव भय नहीं लागे पारस सेव । जलचर थलचर उर पर जीव, इनको भय नहीं समरो पीव ।१७। वाघ सिंहको भय नहीं होय, सर्प गोह आवे नहीं कोय । वाट घाटमें रक्षा करे चिंतामणी चिंता सब हरे ॥१८॥ टोणा टामण जादु करे तुमारो नाम लेतां सब डरे । ठग फांसीगर तस्कर होय द्वेषी दुश्मन दुष्ट न कोय ।।१९॥ भय सब भागे तुमारे नाम मनवंछीत पूरो सब काम । भय निवारण पूरे आश चेतन जप चिंतामणी पास ॥ २० ॥

दोहा

चिंतामणी के नामसे सकल सिद्धावे काम ।
राज ऋद्धि रमणी मले सुख संपति बहु दाम

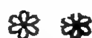
॥ २१ ॥ हय गय रथ पायक मले लक्ष्मी को नही पार । पुत्र कलत्र मगल सदा पावे शिव दरबार ॥२२॥ चेतन चिंताहरण को जाप जपे तीन काल । कर आंबिल पट मासको उपजे मगल माल ॥ २३ ॥ पारस नाम प्रभावथी वाधे वल वहु ज्ञान । मनवछीत सुख ऊपजे नित समरो भगवान ॥२४॥ सवत अढारा उपरे साडत्रीसको परिमाण । पोष शुक्ल दिन पचमी वार शनिश्चर जाण ॥ २५ ॥ पढे गुणे जो भावशु सुणे सदा चित्तलाय । चेतन सपत्ति वहु मले समरो मन वचन काय ॥२६॥



:: षोडश विद्यादेवी स्तोत्र ::

सर्व कल्याण जनक क्षुद्रापद्रव नाशकम् ।
विद्याधिष्ठायिनि देवी, स्तवन वितनोम्यहम् ॥१।

पूर्वं गौरी महादेवी महामानसिका तथा
श्री-प्रज्ञप्ती ज्ञानदात्री देवी श्री कालिकाह्वया ।२।
नरदत्ता भिधा देवी श्री वज्रश्रृङ्खला तथा
वैरुट्या मानवी देवी बुद्धि-वृद्धि विद्यायिनी ।३।
मानसी महामानसी देवी गन्धारिका तथा
महाकाली महादेवी रोहिणी वृद्धिरोहिणी ।४।
देवी वज्राङ्कुशी नाम्नी देवी चक्रेश्वरी तथा
सर्वास्त्रा य तथाऽच्छुप्ता विद्यासद्यः प्रदायिनी ।५।
विद्रावयन्तु द्रावक्षुद्रो पद्रवाना-मयानरि
विद्यादेव्यः षोडशैता वितन्वतु सुखानि नः ।६।
विद्यादेव्य भिधाबन्ध चतुर्विशत्समुद्भवः;
यन्त्रोऽयं पूज्यते येन, स स्यात् कल्याण भाजनम् ।७।
इदं यन्त्रमयं स्तोत्रं, हृद्यविद्या मतिप्रदम्;
पठयते स्मर्यते येन, तस्य शाश्वत् सुखं भवेत् ।८।



चार प्रकरणम्

:: श्रीजीवविचारप्रकरणम् ::

आर्यावृत्तम्

भुवण पइव वीर, नमिउण भणामि अबुह-बोहत्थम् । जीवसरूव किंचि वि जह भणिय पुव्वसूरीहिं ॥१॥ जीवा मुत्ता संसारिणो य तस थावरा य समारी । पुढवी-जल-जलण-वाऊ वणस्सई थावरा नेया ॥ २ ॥ फलिह-मणि-रयण-विद्दुम हिंगुल हरियाल-मण-सिल-रसोन्दा । कणगाइ-धाऊ सेढी, वन्निय-अरणेट्टय-पलेवा ।३। अब्भयतुरी ऊस, मट्टीपाहाणजाइओणेगा । सोवीरंजणलुणाई पुढवीभेयाइ इच्चाइ ॥४॥ भोमन्तरिक्खमुदग ओसा हिम करग हरितणू महिआ । हुंति घणोदहिमाई भेआणेगा य आउस्स ॥ ५ ॥ इंगाल जाल मुम्मुर, उक्कासणि कणगविज्जुमाइया । अगणिजियाण भेया नायव्वा निउणबुद्धीए ॥ ६ ॥ उब्भामग-उक्कलिया मण्डलि

महसुद्धगुञ्जवाया य। घणतणु-वायाइया भेया खलु वाउकायस्स ॥७॥ साहारण पत्तेया, वण-स्सइजीवा दुहा सुए भणिया। जेसिमणंताणं तणू, एगा साहारणा ते उ ॥ ८ ॥ कंदा अंकुर किसलय पणगा सेवाल भूमिफोड़ा य। अल्लय-तिय गज्जरमोत्थ वत्थुला थेग पल्लंका ॥ ९ ॥ कोमल फलं च सव्वं गूढ सिराइं सिणाइ पत्ताइं। थोहरि-कुंआरि-गुग्गुलि गलोयपमुहा इ छिन्न-रुहा ॥ १० ॥ इच्चाइणो अणेगे, हवंति भेया अणंत-कायाणं। तेसिं परिजाणणत्थं लक्खणमेयं सुए भणियं ॥ ११ ॥ गूढसिरसंधिपव्वं समभग-महीरुगं च छिन्नरुहं। साहारणं सरीरं तव्वि-वरियं च पत्तेयं ॥ १२ ॥ एग सरीरे एगो जीवो जेसिं तु ते य पत्तेया। फल-फूल-छल्लि-कट्ठा-मूलगपत्ताणि बीयाणि। १३॥ पत्तेयतरुं मुत्तुं पंचवि पुढवाइणो सयललोए। सुहुमा हवन्ति नियमा अंतमुहुत्ताऊ अद्दिस्सा ॥ १४ ॥ सन्न

कवड्डय गड्डुल जलोय चंदणगअलसलहुगाइ। मेहरि किमि पूयरगा बेइन्दिय माइवाहाई।१५। गोमी मंकण जूआ पिप्पीलिउद्देहिया य मकोडा। इल्लियघयमिल्लीओ सावयगोकीडजाईओ ॥१६॥ गद्दहयचोरकीडा गोमयकीडा य धन्नकीडा य। कुन्थु गोवालिय इलिया तेइन्दिय इन्दगोवाइ ॥ १७ ॥ चउरिंदिया य विच्छू ढिंकुण भमरा य भमरिया तिड्डा। मच्छिय डंसा मसगा कंसारी कविलडोलाई ॥१८॥ पंचिंदिया य चउहा नारय तिरिया मणुस्स देवा य। नेरइया सत्तविहा नायव्वा पुढवी-भेएण ॥ १९ ॥ जलयर थलयर खयरा तिविहा पंचिंदिया तिरिक्खा य। सुसुमार मच्छ कच्छ्व य गाहा मगरा य जलचारी ॥२०॥ चउप्पय उरपरिसप्पा भुय परिसप्पा य थलयरा तिविहा। गो सप्प नउल पमुहा बोधव्वा ते समासेण ॥ २१ ॥ खयरा रोमय पक्खी चम्मय-पक्खी य पायडा चेव। नरलोगाओ बाहिं

समुग्ग-पक्खी वियय-पक्खी ।। २२ ।। सव्वे जल-थल-खयरा समुच्छिमा गब्भया दुहा हुंति । कम्मा-कम्मग-भूमि अंतरदीवा मणुस्सा य ।२३। दसहा भवणाहि वई अट्ठविहा वाणमंतरा हुंति । जोइसिया पंचविहा दुविहा वेमाणिया देवा ।।२४।। सिद्धा पनरस भेया, तित्थातित्थइ सिद्ध भेएणं, एए संखेवेणं, जीवविगप्पा समक्खाया ।।२५।। एएसिं जीवाणं, सरीरमाउ ठिई सकायंमि, पाणा जोणिपमाणं, जेसिं जं अत्थि तं भणिमो ।। २६ ।। अंगुल असंख भागो सरीरमेगिं-दियाण सव्वेसिं। जोयण सहस्समहियं नवरं पत्तेय रुक्खाणं ।। २७ ।। बारस जोयण तिन्नेव गाउआ जोयणं च अणुक्कमसो । बेइन्दिय तेइन्दिय चउरिन्दिय देह मुच्चत्तं ।। २८ ।। धणु-सय पंच पमाणा नेरइया सत्तमाइ पुढवीए । तत्तो अद्धद्धूणा नेया रयणप्पहा जाव ।। २६ ।। जोयण सहस्स माणा मच्छा उरगा य गब्भया

हुति । धणुह पहुत्त पक्खीसु भुवचारी गाउअ पुहुत्त ॥३०॥ खयरा धणुह पुहुत्त भुअगा उरगा य जोयण पुहुत्त । गाउअ पुहुत्त मित्ता समुच्छिमा चउप्पया भणिया ॥ ३१ ॥ छच्चे व गाउआइं चउप्पया गब्भया मुणेयव्वा । कोसतिग च मणुस्सा उक्कोस सरीर माणेण ॥ ३२ ॥ ईसाणंत सुराण रयणीओ सत्त हुंति उच्चत्त । दुग दुग दुग चउ गेविज्ज-णुत्तरेक्किक्कपरिहाणी ॥३३॥ बावीसा पुढवीए सत्तय आउस्स तिन्नि वाउस्स । वास-सहस्सा दसतरु गणाण तेऊ तिरत्ताऊ ।३४। वासाणि बारसाऊ बेइन्दियाण तेइन्दियाण तु । अउणापन्न दिणाइं चउरिंदीण तु छम्मासा ।३५। सुर नेरइयाण ठिईउक्कोसा सागराणि तित्तीस । चउप्पय तिरिय मणुस्सा तिन्निय पलिओवमा हुंति ॥ ३६ ॥ जलयर उर भुयगाण परमाऊ होइ पुव्व कोडीउ । पक्खीण पुण भणिओ असंख भागो य पलियस्स ॥ ३७ ॥ सव्वे सुहुमा साहा-

:: श्री नवतत्त्व प्रकरणम् ::

जीवाऽजीवा पुण्णं पावाऽऽसव संवरो य निज्जरणा । बन्धो मुक्खो य तहा नवतत्ता हुंति नायव्वा ॥१॥ चउदस चउदस बायालीसा बासी अ हुंति बायाला । सत्तावन्नं बारस चउ नव भेया कमेणेसिं ॥ २ ॥ एगविह दुविह तिविहा चउ-व्विहा पंच छव्विहा जीवा । चेयणतसइयरेहिं वेय-गई-करण-काएहिं ॥३॥ एगिंदियसुहुमियरा सन्नियर पणिंदिया य सबितिचउ । अपजत्ता पज्जत्ता कमेण चऊदस जियट्ठाण ॥ ४ ॥ नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा । वीरियं उवओगो य, एवं जीवस्स लक्खणं ॥ ५ ॥ आहारसरीरिंदिय–पज्जत्ती आणपानभासमणे । चउ पञ्च पञ्च छप्पिय, इगविगलाऽसन्निसन्नीणं ॥ ६ ॥ पणिंदिअत्तिबलूसा-साउ दस पाण चउ छ सग अट्ठ । इग-दु-ति चउरिंदीणं, असन्नि-

सन्नीण नव दस य ॥ ७ ॥ धम्मा-ऽधम्मा-गासा, तिय-तिय-भेया तहेव अद्धा य। खधा देश पएसा, परमाणु अजीव चउदसहा ॥ ८ ॥ धम्मा-ऽधम्मा पुग्गल, नह कालो पञ्च हुंति अज्जीवा। चलण-सहावो धम्मो, थिरसठाणो अहम्मो य ॥ ९ ॥ अवगाहो आगास, पुग्गलजीवाण पुग्गला चउहा। खधा देस पएसा, परमाणु चेव नायव्वा ॥१०॥ सद्द धयार उज्जोअ, पभा छायातयेहि अ (इय)। वन्न गध रसा फासा, पुग्गलाण तु लक्खण ।११। एगा कोडि सत्तसट्ठि, लक्खासत्तहुत्तरी सहस्सा य। दो य सया सोलहिया, आवलिया इग-मुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥ समयावलि मुहुत्ता दीहा पक्खा य मास वरिसा य। भणिओ पलिया सागर, उस्सप्पिणी-सप्पिणी कालो ॥ १३ ॥ परिणामि जीव मुत्तं, सपएसा एग खित्तकिरिया य। णिच्च कारण कत्ता, सव्वगय इयर, अपवेसे ॥ १४ ॥ सा उच्चगोअ मणुदुग सुरदुग पंचिंदि-

जाइ पण देहा । आइतितणुवंगा आइमसङ्घ-
यणसंठाणा ॥ १५ ॥ वन्नचउक्कगुरुलहु परघा
उस्सास आयवुज्जोअं । सुभखगइनिमिणतसदस
सुरनरतिरिआउ तित्थयरं ॥ १६ ॥ तस बायर
पज्जत्तं पत्तेअं थिरं शुभं च शुभगं च । सुस्सर
आइज्ज जसं तसाइदसगं इमं होइ ॥ १७ ॥
नाणंतरायदसगं नव वीए नीअ साय मिच्छत्तं ।
थावरदस-निरयतिगं कसाय पणवीसतिरियदुगं
॥ १८ ॥ इगबितिचउजाइओ कुखगइ उवघाय
हुंति पावस्स । अपसत्थ वन्नचऊ अपढमसंघयण-
संठाणा ॥१९॥ थावर सुहुम अपज्जं साहारण-
मथिरमसुभदुभगाणि । दुस्सरणाइज्जजस थावर-
दसगं विवज्जत्थं ॥ २० ॥ इन्दिय कसाय अव्वय
जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कमा । किरियाओ
पणवीसं इमा उ ताओ अणुक्कमसो ॥ २१ ॥
काइअ अहिगरणिया पाउसिया परितावणी
किरिया । पाणाइवायारंभिय परिग्गहिया माय-

वत्ती य ॥ २२ ॥ मिच्छादमणवत्ती अपच्चक्खाणा य दिट्ठि पुट्ठि य। पाडुच्चिय सामतो-वणीअ नेसत्थि साहत्थी ॥२३॥ आणावणि विआरणिया अणाभोगा अणवक्खपच्चइया। अन्ना पओग समुदा णपिज्ज दोसरियावहिया। ॥२४॥ समिई गुत्ती पन्मिह जइधम्मो भावणा चरित्ताणि। पण-ति दुवीस दसबार पचभेएहि सगवन्ना ।२५। इरिया भासेमणादाणे ऊचारे समिईसु अ। मण-गुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती तहेव य ॥ २६ ॥ खुहा पिवासा सीउण्ह दसाचेलारइत्थिओ। चरिया निसीहिया सिज्जा अक्कोस वह जायणा ॥ २७ ॥ मलाभ रोग तणफासा मल-सक्कार-परीसहा। पन्ना अन्नाण सम्मत्त इअ बावीस परीसहा ।२८। खती मद्दव अज्जव मुत्ती तव सजमे अ बोधव्वे। सच्च सोअ आकिं-चण च बभ च जइधम्मा ॥ २९ ॥ पढममणिच्चमसरण संसारो एगया य अन्नत्त। आसुइत्त आसव सवरो य तह णिज्जरा

नवमी ।।३०।। लोगसहावो वोही-दुलहा धम्मस्स साहगा अरिहा। एआओ भावणाओ भावेअव्वा पयत्तेणं ।। ३१ ।। सामाइअत्थ पढमं छेओवट्ठावणं भवे बीअं। परिहारविशुद्धोअं सुहुमं तह संपरायं च ।। ३२ ।। तत्तो अ अहक्खायं खायं सव्वंभि जीवलोगंमि। जं चरिऊण सुविहिया वच्चंति अयरामरं ठाणं ।।३३।। बारसविहं तवो णिज्जरा य वंधो चउव्विगप्पो अ। पयइ-ट्ठिइ-अणुभाग-प्पएसभेएहिं नायव्वो ।। ३४ ।। अणसणमूणोअरिया वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ। कायकिलेसो सलीणाया य वज्झो तवो होइ ।। ३५ ।। पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ। झाणं उस्सग्गोऽवि अ अब्भिंतरओ तवो होइ ।।३६।। पयइ सहावो वुत्तो ठिई कालावहारणं। अणुभागो रसो णेओ पएसो दलसंचओ ।।३७।। पडपडिहारऽसिमज्झ हडचित्तकुलालभण्डगारीणं। जह एएसिं भावा कम्माणऽविजाण तह

भावा ॥ ३८ ॥ इह नाणदसणवरण वेयमोहा-उनामगोआणि । विग्घ च पण नव दु अट्ठवीस चउतिसय दु पणविह ॥ ३९॥ नाणे अ दसणा-वरणे वेयणिए चेव अतराए अ । तीस कोडाकोडी अयराण ठिई अ उक्कोसा ॥४०॥ सत्तरि कोडा-कोटी मोहणिए वीस नामगोएसु । तित्तीस अयराइ आउट्ठिइबध उक्कोसा ॥ ४१ ॥ बारस मुहुत्त जहन्ना वेयणिए अट्ठ नामगोएसु । सेसाणत मुहुत्त एय बधट्ठिईमाण ॥ ४२ ॥ सतपयपरू-वणया दव्वपमाण च खित्त फुसणा य । कालो अ अतर भाग भावे अप्पाबहु चेव ॥ ४३ ॥ सत सुद्धपयत्ता विज्जत खकुसुम व्व न असत । मुक्खत्ति पय तस्स उ परूवणा मग्गणाईहि ।४४। गई इदिए अ काए जोए वेए कसाय नाणे अ । सजम दसण लेसा भव सम्मे सन्नि आहारे ।४५। नरगइ पणिदि तस भव सन्नि अहक्खाय खइ-असम्मत्ते मुक्खोऽणाहार केवल दसणनाणे न

सेसेसु ॥४६॥ दव्वपमाणे सिद्धाणं जीवदव्वाणि हुंतिऽणंताणि। लोगस्स असंखिज्जे भागे इक्को य सव्वेवि ॥ ४७ ॥ फुसणा अहिया कालो इग-सिद्ध पडुच्च साइओणंतो। पडिवायाऽभावाओ सिद्धाणं अंतरं नत्थि ॥४८॥ सव्वजियाणमणंते भागे ते तेसिं दंसणं नाणं। खइए भावे परिणा-मिए अ पुण होइ जीवत्तं ॥४९॥ थोवा नपुंस-सिद्धा थी नरसिद्धा कमेण संखगुणा। इअ मुक्खतत्तमेअं नवतत्ता लेसओ भणिआ ॥५०॥ जीवाइ-नव-पयत्थे जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं। भावेण सद्दहंतो अयाणमाणेऽवि सम्मत्तं ॥ ५१ ॥ सव्वाइं जिणेसर भासियाइं वयणाइं नन्नहा हुंति। इअ बुद्धी जस्स मणे सम्मत्तं निच्चलं तस्स ॥५२॥ अंतोमुहुत्तमित्त-पि फासिअं हुज्ज जेहिं सम्मत्तं। तेसिं अवड्ढपुग्गल परियट्टो चेव संसारो ॥ ५३ ॥ उस्सप्पिणी अणंता पुग्गलपरिअट्टओ मुणेयव्वो। तेऽणंता-

ऽतिथ्रद्धा श्रणागयद्धा श्रणानगुणा ॥५४॥ जिण-श्रजिण तित्थऽतित्था गिहि अन्न सलिंग थी नर नपु सा। पत्तेय सयबुद्धा बुद्धबोहिय इक्कणिका य ॥ ५५ । जिणसिद्धा श्ररिहंता अजिणसिद्धा य पुण्डरिश्रा पमुहा। गणहारि तित्थसिद्धा श्रतित्थसिद्धा य मरुदेवी ॥ ५६ ॥ गिहिलिंगसिद्ध भरहो, वक्कलचीरी य अन्नलिंगम्मि। साहू सलिंग-सिद्धा, थीसिद्धा चंदणा पमुहा ॥ ५७ ॥ पुंसिद्धा गोयमाई, गांगेयाई नपुंसया सिद्धा। पत्तेयसय-बुद्धा, भणिया करकंडुकविलाई ॥५८॥ तह बुद्ध-बोहि गुरुबोहिया य इगसमये इगसिद्धा य। इग समयेऽवि अणेगा सिद्धा तेऽणेगसिद्धा य ॥ ५६ ॥ जइआइहोइ पुच्छा जिणाण मग्गम्मि उत्तर तइमा। इक्कस्स निगोयस्स अनन्तभागो य सिद्धिगग्रो ॥ ६० ॥

:: श्री दंडक प्रकरणम् ::

नमिउं चउवीस जिणे तस्सुत्त-वियार-लेस-देसणाओ । दंडग-पएहिं ते च्चिय थोसामि सुणेह भो ! भव्वा ! ।। १ ।। नेरइआ असुराइ पुढवाइ वेइन्दियादओ चेव । गब्भयतिरियमणुस्सा वंतर जोइसिय वेमाणी । २ ।। संखित्तयरी उ इमा सरीर-मोगाहणा य संघयणा । सन्ना संठाण कसाय लेसिंदिय दु समुग्घाया ।। ३ ।। दिट्ठी दंसण नाणे जोगु-वओगो-ववाय चवण-ठिई । पज्जत्ति किमाहारे सन्नी गई आगई वेए ।।४।। चउगब्भ-तिरिय-वाउसु मणुआणं पंच सेस तिसरीरा । थावरचउगे दुहओ अंगुलअसंखभागतणू ।।५।। सव्वेसिं पि जहन्ना साहाविय अंगुलस्सऽसंखंसो । उक्कोस पणसयधणू नेरइया सत्तहत्थ सुरा ।। ६ ।। गब्भतिरि सहसजोयण वणस्सई अहिय जोयण सहस्स । नर तेइन्दि तिगाऊ

वेइन्दिय जोयणे बार ॥ ७ ॥ जोयण मेग चउ-रिंदि-देह-मुच्चत्तण सुए भणिअ । वेउव्विअ देह पुणअगुलसखसमारम्भे ॥ ८ ॥ देव नर अहिय-लक्ख तिरियाण नव य जोयण सयाइ दुगुण तु नारयाण भणिय वेउव्वियसरीर ॥ ६ ॥ अतमुहुत्त निरए मुहुत्त चत्तारि तिरिय-मणुएसु । देवेसु अद्धमासो उक्कोस विरव्वणाकालो ॥१०॥ थावर सुर नेरइअया-असघयणा य विगल छेवट्ठा । सघयण छग गब्भय-नर-तिरिएसु वि मुणेयव्व ॥ ११ ॥ सव्वेसि चउ दह वा सन्ना सव्वे सुरा य चउरसा । नर तिरिय छ सठाणा हुडा विगलिदि नेरइया ॥ १२ ॥ नाणाविह धय सूई बुब्बुय वण वाउ तेउ अपकाया । पुढवी मसूर चन्दा-कारा सठाणओ भणिया ॥ १३ ॥ सव्वे वि चउ कसाया लेसछग्ग गब्भ तिरियमणुएसु । नारय तेऊ वाऊ विगला वेमाणिय तिलेसा य ॥ १४ ॥ जोइसिय तेउलेसा सेसा सव्वेवि

हुंति चउ लेसा । इन्दिय दारं सुगमं मणुआणं सत्त समुग्घाया ॥ १५ ॥ वेयण कसाय मरणे वेउव्विय तेयए य आहारे । केवलि य समुग्घाया सत्त इमे हुंति सन्नीणं ॥ १६ ॥ एगिंदियाण केवल तिउ आहारगविणा उ चत्तारि । ते वेउ-व्विय-वज्जा विगला सन्नीण ते चेव ॥ १७ ॥ पण गब्भ तिरि सुरेसु नारय वाऊसु चउर तिय सेसे । विगल दु दिट्ठि थावर मिच्छत्ति सेस तिय दिट्ठी ॥ १८ ॥ थावर-ति तिसु अचक्खू चउरिंदिसु तद्दुग सुए भणियं । मणुआ चउ दंसणिणो सेसेसु तिगं तिगं भणियं ॥ १९ ॥ अन्नाण नाण तिय तिय सुरतिरिनिरए थिरे अनाणदुगं । नाणन्नाण दु विगले मणुए पण नाण ति अनाणा ॥ २० ॥ सच्चेअर मीस असच्चमोस मण वय विउव्वि आहारे । उरलं मीसा कम्मण इय जोगा देसिया समये ॥२१॥ इक्कारस सुर निरए तिरिएसु तेर पन्नर मणुएसु । विगले

चउ पण वाए जोगातिय थावरे होइ ॥२२॥
ति अनाण नाण पण चउ दसण वार जिअ-
लक्खणुवओगा। इय बारस उवओगा भणिया
तेलुक्कदसीहिं ॥ २३ ॥ उवओगा मणुएसु बारस
नव निरय-तिरिय-देवेसु। विगलदुगे पण छक्क
चउरिंदिसु थावरे तियग ॥ २४ ॥ सखमसखा
समये गब्भय तिरि विगल नारय सुरा य।
मणुआ नियमा सखा वणणना थावर असखा
॥ २५ ॥ असन्नि नर असखा जह उववाए तहेव
चवणे वि। बावीस सग ति दस वास-सहस्स
उक्किट्ठ पुढवाइ ॥ २६ ॥ तिदिणग्गि तिपल्लाउ
नरतिरिसुरनिरयसागर तित्तीसा वतर पल्ल
जोइस वरिसलक्खाहिय पलिय ॥२७॥ असुराण
अहिय अयर देसूणदुपल्लय नव निकाय। बारस-
वासुण-पण-दिण-छम्मासुक्किट्ठ विगलाऊ ॥२८॥
पुढवाइ दस पयाण अतमुहुत्त जहन्नआउठिई।
दसमहस्सवरिसठिइआ भवणाहिव - निरयवत-

रिश्रा ॥२६॥ वेमाणिय जोइसिया पल्लतयट्ठ स
श्राऊश्रा हुँति । सुरनरतिरिनिरएसु छ पज्जत्ति
थावरे चउगं ॥३०॥ विगले पञ्च पज्जत्ती छद्दि-
सिश्राहार होइ सव्वेसिं । पणगाइपये भयणा
श्रह सन्नितियं भणिस्सामि ॥ ३१ ॥ चउविह-
सुर-तिरिएसु निरएसु श्र दीहकालिगी सन्ना ।
विगले हेउवएसा सन्नारहिया थिरा सव्वे ॥३२॥
मणुश्राण दीहकालिय दिट्ठिवाश्रोवएसिया के
वि । पज्ज-पण-तिरि-मणुश्रच्चिय चउविह देवेसु-
गच्छंति ॥ ३३ ॥ संखाउ-पज्ज-पणिंदि तिरियन-
रेसु तहेव पज्जत्ते । भूदग-पत्तेयवणे एएसु च्चिय
सुरागमणं ॥३४॥ पज्जत्तसङ्खगब्भय-तिरियनरा
निरयसत्तगे जंति । निरयउवट्टा एएसु उववज्जंति
न सेसेसु ॥ ३५ ॥ पुढवी-श्राउ-वणस्सई मज्झे
नारय-विवज्जिया जीवा । सव्वे उववज्जंति
निय निय कम्माणुमाणेणं ॥ ३६ ॥ पुढवाइ दस
पएसु पुढवी-श्राऊ-वणस्सई जंति । पुढवाइ दस

पएहि य तेऊ वाऊसु उववाओ ॥ ३७ ॥ तेऊ-
वाऊ गमण पुढवी-पमुहमि होई पयनवगे । पुढ-
वाइठाणदमगा विलगलाइतिय तहिं जंति ।३८।
गमणागमण गब्भयतिरियाण सयल जोवठाणेसु।
सव्वत्य जंति मणुआ तेऊवाऊहिं नो जंति ।३९।
वेयतिय तिरिनरेसु इत्थी पुरिसो य चउविह-
सुरेसु । थिरविगलनारएसु नपु सवेओ हवइ एगो
॥ ४० ॥ पज्जमण वायरग्गी वेमाणिय-भवण-
निरय-वंतरिया । जोइम-चउ पणतिरिया बे-
इदियतेइंदिय भू आऊ ॥ ४१ ॥ वाऊवणस्सइ
च्चिम अहिया अहिया कमेणिमे हुंति । सव्वेवि
इमे भावा जीवा ! मए णंतसो पत्ता ॥ ४२ ॥
सपइ तुम्ह भत्तस्स दण्डग-पय-भमण-भग्गहिय-
यस्स । दण्डतिय विरय सुलह लहु मम दिंतु
मुक्खपय । ४३॥ सिरि जिणहंस मुणीसर रज्जे
सिरिधवलचन्द सोसेण । गजसारेण लिहिया
ऐसा विन्नत्ति अप्पहिया ॥४४॥

चउरो सत्तसट्ठी य ॥ १५ ॥ चउ सत्त अट्ठ नवगे-गारस कूडेहिं गुणह जह संखं । सोलस दु दु गुणयालं दुवे य सगसट्ठी सय चउरो ॥ १६ ॥ चउतीसं विजएसु उसह-कूडा अट्ठ मेरु जंबुम्मि । अट्ठ य देवकुराए हरिकूड हरिस्सहे सट्ठी ।१७। मागह–वरदाम–पभास–तित्थ–विजएसु एरवय–भरहे । चउतीसा तिहिं गुणिया दुरुत्तरसयं तु तित्थाणं ॥ १८ ॥ विज्जाहर अभिओगिअ सेढीओ दुन्नि दुन्नि वेयड्ढे । इय चउगुण चउत्तीसा छत्तीससयं तु सेढीणं ॥ १९ ॥ चक्कीजे अव्वाइं विजयाइं इत्थ हुंति चउतीसा । महदह छ प्पउमाई कुरुसु दसगं ति सोलसगं ॥ २० ॥ गंगा सिन्धू रत्ता. रत्तवइ चउ नईओ पत्तेयं । चउदसहिं सहस्सेहिं समगं वच्चंति जलहिं मि ॥२१॥ एवं अभिंतरिया चउरो पुण अट्ठवीस-सहस्सेहिं । पुणरवि छप्पन्नेहिं सहस्सेहिं जंति चउ सलिला ॥ २२ ॥ कुरुमज्झे चउरासी सह-

स्माइ तह य विजयसोलेमेसु । वत्तोसाए नईए चउदस सहस्साइ पत्तेय ॥२३॥ चउदस सहस्स-गुणिया अडतीस नइग्रो विजयमज्झिल्ला । सीओयाए निवडति तह य सीयाइ एमेव ॥२४॥ सीया सीग्रोयावि य वत्तीस सहस्सपञ्च लक्खेहिं । सव्वे चउदस लक्खा छप्पन्न सहस्स मेलविया ॥२५॥ छज्जोयणे सकोसे गगा-सिधूण वित्थरो मूले । दसगुणिग्रो पज्जते इय दु दु गुणणेण सेसाणं ॥ २६ । जोयण सयमुच्चिट्ठा कणयमया सिहरि-चुल्ल हिमवता । रुप्पि महाहिमवता दुस उच्चा रुप्पकणयमया ॥ २७ ॥ चत्तारि जोयण स ए उच्चिट्ठो निसढ नीलवतो अ । निसढो तव-णिज्जमग्रो वेरुलिग्रो नीलवतगिरि ॥ २८ ॥ सव्वे वि पव्वयवरा समयक्खित्त मि मदर विहूणा । धरणितले उवगाढा उस्सेहचउत्थ-भायमि ॥ २९ ॥ खडाई गाहाहि दसहिं दारेहिं जबूदीवस्स । सघयणी सम्मत्ता रइया हरिभद्द-

सूरिहिं ।। ३० ।।



:: श्री चैत्यवन्दनभाष्यम् ::

वंदित्तु वंदणिज्जे सव्वे चिइ-वंदणाऽऽइ-सुवियारं । बहुवित्ति-भास-चुण्णी-सुयाऽणुसारेण वुंच्छामि ।। १ ।। दहतिग अहिगम पणगं दुदिसि तिहुग्गह तिहा उ वंदणयें । पणिवाय नमुक्कारा वन्ना सोलसय सीयाला ।। २ ।। इगसीइ सयं तु पया सगनउई संपया ओ पण दंडा । बार अहिगार चउवंदणिज्ज सरणिज्ज चउह जिणा ।।३।। चउरो थुई निमित्तट्ठ बारह हेऊ अ सोल आगारा । गुणवीस दोस उस्सग्ग माणं थुत्तं च सग वेला ।। ४ ।। दस आसायणचाओ सव्वे चिइवंदणाइ ठाणाइ । चउवीस दुवारेहिं दुसहस्सा हुंति चउसयरा ।। ५ ।। तिन्नि निसीहि

तिन्नि अ पयाहिणा तिन्नि चेव च पणामा । तिविहा पूया य तहा अवत्थतियभावणं चेव ।६। तिदिसि निरिक्खण विरई पय भूमि पमज्जणं च तिखुत्तो । वन्नाऽऽइतिय मुद्दातिय च तिविहं च पणिहाणं ।।७।। घर-जिणहर-जिणपूआ-वावार-च्चायओ निसीहि तिग । अग्गद्दारे मज्झे तइया चिइवंदणा समए ।।८।। अंजलिबद्धो अद्धो-णओ अ पंचगओ अ तिपणामा । सव्वत्थ वा तिवार सिराइनमणे पणामतियं ।। ९ ।। अंग-ऽग्ग-भाव भेया पुप्फाहारथुईहिं पूयतिगं । पंचुवयारा अट्ठो-वयार सव्वोवयारो वा ।।१०।। भाविज्ज अव-त्थतिय पिंडत्थ पयत्थ रूवरहिअत्तं । छउमत्थ केवलित्तं सिद्धत्तं चेव तस्सत्थो ।।११।। न्हवण-च्चगेहिं छउमत्थ–वत्थपडिहारगेहिं केवलियं । पलियंकुस्सग्गेहिं अ जिणस्स भाविज्ज सिद्धत्तं ।। १२ ।। उड्ढाऽहोतिरिआण तिदिसाण निरि-क्खणं चइज्जहवा । पच्छिम-दाहिण-वामाण

जिणमुहुन्नत्थ दिट्ठिजुओ ।१३। वन्नतियं वन्नत्था-ऽऽलंवणमालंवणं तु पडिमाई। जोग-जिण-मुत्त-सुत्ती-मुद्दाभेएण मुद्दतियं ।। १४ ।। अन्नुन्नन्तरि अंगुलि-कोसाऽऽगारेहिं दोहिं हत्थेहिं । पिट्टोवरि कुप्पर-संठिएहिं तह जोगमुद्दत्ति ।।१५।। चत्तारि अंगुलाइं पुरओ ऊणाइं जत्थ पच्छिमओ । पायाणं उस्सग्गो एसा पुण होइ जिणमुद्दा ।१६। मुत्तासुत्ती मुद्दा जत्थ समा दोवि गब्भिआ हत्था । ते पुण निलाडदेसे लग्गा अन्ने अलग्गत्ति ।।१७।। पंचंगो पणिवाओ थयपाठो होइ जोगमुद्दाए । वंदण जिणमुद्दाए पणिहाण मुत्तसुत्तीए ।। १८।। पणिहाणतिगं चेइअ - मुणिवदण-पत्थणासरूवं वा । मण-वय-काएगत्तं सेसतियत्थो य पयडुत्ति ।।१९।। सच्चितदव्वमुज्झण-मच्चित्तमणुज्झणं-मणेगत्तं । इगसाडि उत्तरासंगु अंजली सिरसि जिणदिट्ठे ।। २० ।। इय पंचविहाऽभिगमो अहवा मुच्चति रायचिण्हाइं । खग्गं छत्तोबाणह मउडं

चमरे अ पचमए ॥ २१ ॥ वदति जिणे दाहिण-दिसिट्ठिया पुरिस वामदिसि नारी । नवकर जहन्न सट्ठिकर जिट्ठ मज्झुग्गहो सेसो ॥ २२ ॥ नमुक्कारेण जहन्ना चिइवदण मज्झ दडथुइजुअला । पणदण्ड – थुइचउक्कग – थयपणिहाणेहि उक्कोसा ॥ २३ ॥ अन्ने बिति इगेण स कत्थएण जहन्नवदणाया । तद्दुगतिगेण मज्झा उक्कोसा चउहि पचहि वा ॥२४॥ पणिवाओ पचगो दो जाणू करदुगुत्तमग च । सुमहत्थ नमुक्कारा इग दुग तिग जाव अट्ठसय ॥२५॥ अडसट्ठि अट्ठवीसा नवनउयसय च दुसयसग नउया दो गुणतीस दुसट्ठा दु सोल अडनउअ सय दु वन्नसय ॥२६॥ इय नवकार-खमासमण इरिय-सक्कत्थयाऽऽइ दडेसु । पणिहाणेसु अ अदुरुत्त वन्न सोलसयमीयाला ॥२७॥ नव बत्तीस तित्तीसा तिचत्त अडवीस सोलवीस पया । मगल इरिया-सक्कत्थयाइसु एगसिइसय ॥२८॥ अट्ठट्ठनवट्ठ य अट्ठवीस सोलस

य वीस वीसामा । कमसो मंगल-इरिया सक्कत्थ-
याऽऽईसु सग नउई ।। २९ ।। वण्णट्ठसट्ठि नवपय
नवकारे अट्ठ सम्पया तत्थ । सगसंपय पयतुल्ला
सतरक्खर अट्ठमी दुपया ।। ३० ।।
पणिवाय अक्खराइं अट्ठावीसं तहा य इरियाए ।
नवनउयमक्खरसयं दुतीसपय संपया अट्ठ ।।३१।।
दुग दुग इग चउ इग पण इगार छग इरियसंप-
याऽऽइपया । इच्छा इरि गम पाणा जे मे एगिंदी
अभि तस्स ।। ३२ ।। अब्भुवगमो निमित्तं ओहे-
यर हेउ संगहे पञ्च । जीव-विराहण-पडिक्कमण
भेयओ तिन्नि चूलाए ।।३३।। दुतिचउ पणपण-
पण दु चउति पयसक्कत्थयसंपयाऽऽइपया । नमु
आइग पुरिसो लोगु अभय धम्मऽप्प जिण सव्वं
।। ३४ ।। थोअव्व संपया ओह इयरहेऊवओग
तद्धेऊ । सविसेसुवओग सरूव हेउ नियसमफलय
मुक्खे ।।३५।। दोसगनउया वन्ना नव संपय पय

तित्तीस सक थए । चेइयथयपट्ठसपय तिचत्तपय वन्न दुमयगुणतीसा ॥ ३६ ॥ दुछसगनव तिय छच्चउ छप्पय चिइसपया पया पढमा । अरिहं वदण सद्धा अन्न सुहुम एव जा ताव ॥ ३७ ॥ अब्भुवगमो निमित्त हेऊ इग बहुवयत आगारा । आगतुग आगारा उस्सग्गावहि सरवट्ठ ॥ ३८ ॥ नामथयाइसु सपय पयसम अडवीस सोल वीस कमा । अदुरुत्तवन्न दोसट्ठ-दुसय-सोल-ट्ठनउअ सय ॥ ३९ ॥ पणिहाणि दुवन्नसय कमेण सग-नि-चउवीस-तित्तीसा । गुणतीस अट्ठवीसा चउतीसि-ग तीस बार गुरुवन्ना ॥ ४० ॥ पण दडा सक्कत्थय चेइय नाम सुअ सिद्धत्थय इत्थ । दो इग दो दो पच य अहिगारा वारस कमेण ॥४१॥ नमु जेअ य अरिह लोग सव्व पुक्ख तम सिद्ध जो देवा । उज्जि चत्ता वेआ वच्चग अहिगारपढमपया । ४२ ॥ पढमहिगारे वदे भावजिणे बीयअमि दव्वजिणे । इगचेइय ठवणजिणे

तइय चउत्थम्मि नाम जिणे ॥ ४३ ॥ तिहुअण ठवणाजिणे पुण पंचमए विहरमाण जिण छट्ठे । सत्तमए सुअनाणं अट्ठमए सव्वसिद्धथुई ॥४४॥ तित्थाऽहिव वीरथुई नवमे दसमे य उज्जयंत थुई । अट्ठावयाइ इगदिसि सुदिट्ठिसुरसमरणा चरिमे ॥४५॥ नव अहिगारा इह ललिय वित्थरा वित्तिमाइ अणुसारा । तिन्नि सुयपरंपरया बीओ दसमो इगारसमो ॥४६॥ आवस्स य चुन्नीए जं भणियं सेसया जहिच्छाए । तेणं उज्जिताऽऽइ वि अहिगारा सुयमया चेव ॥ ४७ ॥ बीओ सुयत्थयाई (इ) अत्थओ वन्निओ तहिं चेव । सक्कथयंते पढिओ दव्वारिह वसरि पयडत्थो ॥ ४८ ॥ असढाइन्नणवज्जं गीअत्थ आवरयंति मज्झत्था । आयरणा वि हु आणत्ति वयणओ सुबहु मन्नति ॥४९॥ चउ वंदणिज्ज जिणमुणि सुय सिद्धा इह सुरा य सरणिज्जा चउह जिणा नाम-ठवण दव्वभावजिणभेएणं ॥ ५० ॥ नाम-

जिणा जिणनामा ठवणजिणा पुण जिणिंद-
पडिमाग्रो । दव्वजिणा जिणजीवा भाव जिणा
समवसरणत्था ॥ ५१ ॥ अहिगय जिण पढमथुई
बीया सव्वाण तइय नाणस्स । वेयावच्चगराण
उवओगत्थ चउत्थ थुई ॥ ५२ ॥ पाव खवणत्थ
इरियाइ वदण-व्वत्तियाइ छ निमित्ता । पवयण-
सुर सरणत्थ उस्सग्गो इअ निमित्तट्ठ ॥ ५३ ॥
चउ तस्स उत्तरीकरण पमुह सद्धाइया य पण
हेउ । वेयावच्चगरत्ताइ तिन्नि इअ हेउ बारसग
॥५४ । अन्नत्थ याइ बारस आगारा एवमाइआ
चउरो । अगणी पणिदिछिदण बोहीखो–भाइ
डवको अ ॥ ५५ ॥ घोडग लय खभाई मालु द्धी
निअल सबरि खलिण वहू लबूतर थण सजइ
भमुहंगुलि वायस कविट्ठो ॥५६॥ सिरकप मूअ
वारुणि पेहत्ति चइज्ज दोस उस्सग्गे । लबुत्तर
थणसजइ न दोस समणीण सवहु सड्ढीण ॥५७॥
इरिउस्सग्गपमाण पणवीसुस्सास अट्ठ सेसेसु ।

गंभीर महुरसद्द महत्थजुत्तं हुवइ थुत्तं ।।५८।। पडिकमणे चेइय जिमरण चरम पडिकमरण सुग्ररण पडिबोहे चिइवंदरण इय जइणो सत्त उ वेला अहोरत्तो ।।५९।। पडिकमओ गिहिणोवि हु सग-वेला पंचवेल इयरस्स । पूत्रासु तिसंझासु अ होइ तिवेला जहन्नेरणं ।। ६० ।। तंबोल पारण भोयण-वाराह मेहुन्न सुग्ररण निट्ठवणं । मुत्तुच्चारं जूअं वज्जे जिरणनाहजगईए ।।६१।। इरि नमुकार नमुत्थुरण, अरिहंता थुइ लोग सव्व थुइ पुक्ख । थुइ सिद्धा वेया थुइ, नमुत्थु जावंति थय जयवी ।।६२। सव्वोवाहिविसुद्धं, एवं जो वंदए सया देवे । देविंदविंद-महिअं, परमपेयं पावइ लहुं सो ।। ६३ ।।

:: श्री गुरुवन्दनभाष्यम् ::

गुरुवंदणमह तिविहं, तं फिट्टा छोभ वारसाऽऽवत्तं । सिरनमणाइसु पढमं, पुन्नखमासमणदुगि बीअं ॥१॥ जह दूओ रायाणं नमिउं कज्जं निवेइउं पच्छा । वीसज्जिओ वि वंदिय, गच्छइ एमेव इत्थ दुगं ॥२॥ आयारस्स उ मूलं विणओ सो गुणवओ य पडिवत्ती । सा य विहिवंदणाओ, विही इमो बारसावत्ते ॥३॥ तइयं तु छंदणदुगे, तत्थ मिहो आइमं सयलसंघे । वीयं तु दंसणीण य, पयट्ठियाणं च तइयं तु ॥ ४ ॥ वंदण चिइ किइकम्मं, पूयाकम्मं च विणयकम्मं च । कायव्व कस्स व ? केण, वावि ? काहे व कइ खुत्तो ॥ ५ ॥ कइओणयं कइसिरं, कइहिं व आवस्सएहिं परिसुद्धं । कइदोसविप्पमुक्कं किइकम्मं कीस कीरइ वा ॥ ६ ॥ पणनामपणाऽऽहरणा, अज्जुग्गपण जुग्गपण चउअदाया । चउदाय पण

निसेहा, चउ अणिसेह-ट्ठकारणया ।'७॥ आव-स्सय मुहणंतय, तणुपेहपणीस दोसबत्तीसा । छ-गुण गुरुठवण दुग्गह, दुछवीसक्खर गरुपणीसा ॥८॥ पय अडवन्न छठाणा, छगुरुवयणा आसा-यणतित्तीसं । दुविही दु-वीसदारेहिं, चउसया-बाणउइ ठाणा ॥६॥ वदणायं चियकम्मं, किइ-कम्मं पूअकम्मं विणयकम्मं । गुरुवंदणपणनामा, दव्वे भावे दुहोहेण (दुहाहरणा) ॥१०॥ सीय-लय खुड्डुए वीर, कन्ह सेवग-दु पालए सवे । पंचे ए दिट्ठन्ता, किइकम्मे दव्वभावेहिं ॥ ११ ॥ पासत्थो ओसन्नो, कुसील संसत्तओ अहाच्छंदो । दुग-दुग-ति-दु-णेगविहा, अवंदणिज्जा जिणमयंमि ॥ १२ ॥ आयरिय उवज्झाए, पवत्ति थेरे तहेव रायणिए । किइकम्मनिज्जरट्ठा, कायव्वमिमेसि पचण्हं ॥ १३ ॥ माय-पिय-जिट्ठभाया, ओमावि तहेव सव्वरायणिए । किइकम्म न कारिज्जा, चउ समणाई कुणंति पुणो ॥ १४ ॥ विक्खित्त

परावृत्तो, अ पमत्ते मा कयाइ वंदिज्जा । आहार नीहार, कुणमाणे काउ-कामे य ॥ १५ ॥ पसते आसणत्थे अ, उवसते उवट्ठिए । अणुन्नवित्तु मेहावी, किइकम्म पउजइ ॥ १६ ॥ पडिकमणे सज्झाय, काउसग्गाऽवराह-पाहुणए । आलोयण-संवरणे, उत्तमट्ठे य वंदणय ॥ १७ ॥ दोऽवण-यमहाजाय, आवत्ता बार चउसिर तिगुत्तं । दुपवेसिगनिक्खमण, पणवीसाऽऽवसय किइकम्मे ॥१८॥ किइकम्मपि कुणतो, न होइ किइकम्म-निज्जराभागी । पणवीसामन्नयर, साहू, साहू ठाण विराहतो ॥ १९ ॥ दिट्ठिपडिलेह एगा, छ उड्ढ पप्फोड तिग-तिगतरिया अक्खोड पमज्ज-णया, नव नव मुहपत्ति पणवीसा ॥ २० ॥ पायाहिणेण तिय तिय वामेयरबाहु-सीस-मुह-हियए । अंसुड्ढाहो पिट्ठे, चउ छप्पय देहपणवीसा ॥ २१ ॥ आवस्सएसु जह जह, कुणइ पयत्त अहीणमइरित्त । तिविहकरणोवउत्तो, तह तह

से निज्जरा होइ ।। २२ ।। दोस अणाढिय थड्डिय, पविद्ध परिपिंडियं च टोलगइं । अंकुस कच्छभ रिंगिय, मच्छुवत्तं मणपउट्ठं ।।२३।। वेइयवद्ध भयंतं, भयगारव मित्त कारणा तिन्नं । पडिणीय रुट्ठ तज्जिय, सढ हीलिय विपलिउंचिययं ।। २४ ।। दिट्ठमदिट्ठं सिगं, कर तम्मोअण अलिद्धणालिद्धं । ऊणं उत्तरचूलिअ मूअं ढड्ढर चुडलियं च ।। २५ ।। वत्तीसदोसपरिसुद्धं, किइकम्मं जो पउजइ गुरुणं । सो पावइ निव्वाणं, अचिरेण विमाणवासं वा ।। २६ ।। इह छच्च गुणा विणओ-वयार माणाइभग गुरुपूआ । तित्थयराण य आणा सुयधम्माऽऽराहणाकिरिया ।।२७।। गुरुगुणजुत्तं तु गुरुं, ठाविज्जा अहव तत्थ अक्खाई । अहवा नाणाइ तियं, ठविज्ज सक्ख गुरु अभावे ।।२८।। अक्खे वराडए वा कट्ठे पुत्थे अ चित्तकम्मे अ । सब्भावमसब्भावं, गुरुठवणा इत्तरावकहा ।। २६ ।। गुरुविरहमि ठवणा, गुरु-

वएसोवदमणत्य च । जिणविरहंमि जिणविंव, सेवरणामतरण स हून ।।३०।। चउदिसि गुरुग्गहो इह अहुट्ठ तेरस करे सपरपक्खे । अणणुन्नायस्स सया, न कप्पए तत्थ पविसेउ ।। ३१ ।। परण तिग बारस दुग तिग, चउरो छट्ठाण पण इगुणतीस । गुणतीस सेस आवस्सयाइ सव्वपय अडवन्ना ।। ३२ ।। इच्छा य अणुन्नवणा, अव्वाबाह च जत्त जवणा य । अवराहखामणावि अ, वदणदायस्य छट्ठाणा ।। ३३ ।। छदेणणुजाणामि तहत्ति तुब्भपि वट्टए एव । अहमवि खामेमि तुम, वयणाइ वदणऽरिहस्स ।। ३४ ।। पुरओ पक्खाऽऽसन्ने गता चिट्ठण निसीअणाऽऽयमणे । आलोअणऽपडिसुणणे पुव्वाऽऽलवणे य आलोए ।। ३५ ।। तह उवदस निमतण, खद्धायणे तहा अपडिमुणणे । खद्धत्ति य तत्थगए, कि तुम तज्जाय नो सुमणे ।। ३६ ।। नो सरसि कह छित्ता, परिसभित्ता अणुट्ठियाइ कहे ।

संथारपायघट्टण, चिट्ठुच्च समासणे आवि ॥३७॥
इरिया कुसुमिणुसग्गो, चिइवंदण पुत्ति वंदणा-ऽऽलोयं । वंदण खामण वंदण, संवर चउछोभ दुसज्झावो ॥ ३८ ॥ इरिया-चिइवंदण-पुत्ति-वंदण-चरिम-वंदणाऽऽलोयं । वंदण खामण चउछोभ, दिवसुस्सग्गो दुसज्झाओ ॥३९॥ एयं किइकम्मविहिं जुंजंता चरणकरणमाउत्ता । साहू खवंति कम्मं, अणेगभवसंचिअमणंत ४०। अप्पमइभव्वबोहऽत्थ, भासियं विवरिय च जमिह मए। तं सोहंतु गीयत्था, अणभिनिवेसी अम-च्छरिणो ॥ ४१ ॥



:: श्री पच्चक्खाणभाष्यम् ::

दस पच्चक्खाण चउविहि-आहार दुवीसगार अदुरुत्ता । दसविगइ तीसविगई,–गय दुहभगा छसुद्धि फल ॥ १ ॥ अणागय-मइक्कत, कोडीसहिय नियटि अणगार । सागार निरवसेस, परिमाणकड सके अद्धा ॥ २ ॥ नवकारसहिय पोरिसी, पुरिमड्ढे-गासणे-गठाणे य । आयंबिल अभतट्ठे, चरिमे अ अभिग्गहे विगई ॥ ३ ॥ उग्गए सूरे अ नमो, पोरिसि पच्चक्ख उग्गए सूरे । सूरे उग्गए पुरिम, अभतट्ठ पच्चक्खाइ त्ति ॥ ४ ॥ भणइ गुरु सीसो पुण, पच्चक्खामि त्ति एव वोसिरइ । उवओगित्थ पमाण, न पमाण वजणच्छलणा ॥ ५ ॥ पढमे ठाणे तेरस, बीए तिन्निउ तिगाइ तइयमि । पाणस्स चउत्थमि, देसवगासाई पञ्चमए ॥ ६ ॥ नमु पोरिसी सड्ढा पुरि-मवड्ढ अगुट्ठमाइ अड तेर । निवि विगइबिल

तिय तिय, दु इगासण एगठाणाई ॥७॥ पढमंमि चउत्थाई, तेरस वीयंमि तइयपाणस्स । देसवगासं तुरिए, चरिमे जहसंभवं नेयं ॥ ८ ॥ तह मज्झ-पच्चक्खाणेसु, न पिहु सूरुग्गयाइ वोसिरइ । करणविहि उ न भन्नइ, जहाऽऽवसीआइ, विय-छंदे ॥ ९ ॥ तह तिविह पच्चक्खाणे भन्नति य पाणगस्स आगारा । दुविहाऽऽहारे अचित्त,-भोइणो तह य फासुजले ॥ १० ॥ इत्तु च्चिय खवणंबिल-निवियाइसु फासुयं चिय जलं तु । सढ्ढा वि पियंति तहा, पच्चक्खंति य तिहाऽऽ-हारं ॥ ११ ॥ चउहाऽऽहारं तु नमो, रत्तिंपि मुणीण सेस तिह चउहा निसि पोरिसि पुरि-मेगाऽऽसणाइ सड्ढाण दुतिचउहा ॥१२॥ खुहप-सम खमेगागी, आहारि व एइ देइ वा सायं । खुहिओ व खिवइ कुट्ठे जं पंकुवमं तमाहारो ॥ १३ ॥ असणे मुग्गो-अण-सत्तु-मंड-पय-खज्ज-रब्व-कंदाई । पाणे कंजिय-जव-कयर-कक्कडोदग-

सुराइ जल ।। १४ ।। खाइमे भत्तोस फलाऽऽइ साइमे सु टि जीर अजमाई । महु गुड तंबोलाई अणहारे मोय निंबाई ।। १५ ।। दो नवकारि छ पोरिसि सग पुरमड्ढे इगासण अट्ठ । सत्तेगठाणि अबिलि अट्ठ पण चउत्थि छ प्पाणे ।।१६।। चउ चरिमे चउभिग्गहि पण पावरणे नवट्ठ निव्वीए । आगारुक्खित्तविवेग मुत्तु दवविगइ नियमिट्ठ ।।१७।। अन्नसह दु नमुक्कारे अन्नसह पच्छदिस य साहुसव्व । पोरिसि छ सड्ढपोरिसि पुरिमड्ढे सत्त समहत्तरा ।। १८ ।। अन्न सहस्सागारि अ आउटण गुरू अ पारिमहसव्व । एग-बियासणि अट्ठ उ सग इगठाणे अउट विणा ।। १९ ।। अन्न सह लेवा गिह उक्खित पडुच्च पारि महसव्व । विगई निव्विगइए नव पडुच्चविणु अंबिले अट्ठ ।।२०।। अन्न सह पारि मह सव्व पच खमणे छ पाणि लेवाई । चउ चरिमगुट्ठाइऽभिग्गहि अन्न सह मह सव्व ।। २१ ।। दुद्ध-महु-मज्ज-तिल्ल

चउरो दवविगइ चउर पिंडदवा । घय-गुल-दहियं-पिसियं मक्खण-पक्कन्न दो पिंडा ॥ २२ ॥ पोरिसि-सड्ढ-अवड्ढं दुभत्त-निव्विगइ पोरिसाइ समा । अंगुट्ठ-मुट्ठि-गंठि-सचित्तदव्वाइऽभिग्गहियं ॥ २३ ॥ विस्सरण मणाभोगो सहसागारो सयं मुहपवेसो । पच्छन्नकाल मेहाई दिसिविवज्जासु दिसिमोहो ॥ २४ ॥ साहुवयण उग्घाडा-पोरिसि तणुसुत्थया समाहित्ति । संघाइकज्ज महत्तर गिहत्थवंदाइ सागारी ॥२५॥ आउंटण-मंगाणं गुरु पाउणसाहु गुरुअब्भुट्ठाणं । परिठावण विहिगहिए जईण पावरणि कटिपट्टो ।२६। खरडिय लूहिय डोवाइ लेव संसट्ठ डुच्च मंडाइ । उक्खित्त पिंडविगईण मक्खियं अंगुलीहिं मणा ॥ २७ ॥ लेवाडं आयामाइ इयर सोवीरमच्छ-मुसिणजल । धोयण बहुल ससित्थं उस्सेइम इयर सित्थविणा ॥ २८ ॥ पण चउ चउ चउ दु दुविह छ भक्ख दुद्धाइ विगइ इगवीसं । ति दु

ति चउविह अभक्खा चउ महुमाई विगइ बार ॥२९॥ खीर घय दहिय तिल्ल गुड (ल) पक्कन्न छ भक्खविगईओ । गो-महिसि-उट्टि-अय-एल-गाण पण दुद्ध अह चउरो ॥ ३० ॥ घय दहिया उट्टिविणा तिल सरिसव अयसि लट्ट तिल्ल चऊ । दवगुड पिंडगुडादो पक्कन्न तिल्ल घयतलिय ।३१। पयसाडि-खीर-पेया-ऽवलेही दुद्धट्टि दुद्धविगइ-गया । दक्ख बहु अप्पतंदुल तच्चुन्नबिलसहिय-दुद्धे ।।३२।। निंभजण-वीसंदण-पक्कोसहितरिय किट्टि-पक्कघय । दहिए करब सिहरिणि-सलवणदहि-घोल-घोलवडा ।। ३३ ।। तिलकुट्टी निंभजण पक्कतिल पक्कुसहितरिय तिल्लमलो । सक्कर गुलवाणय पाय खंड अद्धकढि इक्खुरसो ।। ३४ ।। पूरिय तवपूआ बीअपूय तन्नेह तुरियघाणाई । गुलहाणि जललप्पसि अ पंचमो पुत्तिकयपूओ ।।३५।। दुद्ध दही चउरंगुल दवगुल घय-तिल्ल एग भत्तुवरि । पिंडगुडमक्खणाणं अद्दा-

ऽऽमलयं च संसट्ठं ॥३६॥ दव्वहया विगई विगई-
गए पुणोतेण तं हयं दव्वं। उद्धरिए तत्तंमि य
उक्किट्ठदवं इमं चन्ने ॥३७॥ तिलसक्कुली वर-
सोलाइ रायणंबाइ दक्खवाणाई। डोली तिल्लाई
इय सरसुत्तमदव्व लेवकडा ॥ ३८ ॥ विगइगया
संसट्ठा उत्तमदव्वा य निव्विगइयंमि। कारण-
जायं मुत्तुं कप्पंति न भुत्तुं जं वुत्तं ॥ ३९ ॥
विगइं विगईभीओ विगइगयं जो उ भुंजए
साहू। विगई विगइसहावा विगई विगइं बला
नेइ ॥ ४० ॥ कुत्तिय-मच्छिअ-भामर महुँ तिहा
कट्ठ पिट्ठ मज्ज दुहा। जल-थल-खगमंस तिहा
घयव्व मक्खण चउ अभक्खा ॥४१॥ मणवयण-
कायमणवय मणतणुवयतण तिजोगि सग सत्त
कर कारणमइ दुतिजुइ तिकालि सीयालभंगसयं
॥ ४२ ॥ एय च उत्तकाले सयं च मण वयण
तणूहिं पालणियं। जाणग जाणग पासित्ति
भंगचउगे तिसु अणुन्ना ॥४३॥ फासिय पालिय

सोहिय तीरिय किट्टिय आराहिय छ सुद्ध । पच्च-
क्खाण फासिय विहिणोचिय कालि ज पत्त ।४४।
पालिय पुण पुण सरिय सोहिय गुरुदत्त सेसभोय-
णओ तीरिय समहियकाला किट्टिय भोयण-
समयमरणा ॥ ४५ ॥ इय पडिअरिअ आराहिय
तु अहवा छ सुद्धि सद्दहणा । जाणण विणयऽणु-
भासण अणुपालण भावसुद्धित्ति ॥ ४६ ॥ पच्च-
क्खाणस्स फल इह परलोए य होइ दुविह तु ।
इहलोए धम्मिलाई दामनगमाइ परलोए ॥४७॥
पच्चक्खाणमिण सेविऊण भावेण जिणवरुद्दिट्ठ ।
पत्ता अणत जीवा सासयसुक्ख अणाबाह ॥४८॥

❀ ❀

:: कर्मविपाकनामा प्रथम कर्मग्रन्थ ::

सिरिवीरजिणं वंदिअ कम्मविवागं समासओ वुच्छं। कीरइ जिएण हेउहिं. जेणं तो भन्नए कम्मं ॥१॥ पयइठिइरसपएसा तं चउहा मोअगस्स दिट्ठंता। मूलपगइट्ठ उत्तरपगई अडवन्नसयभेयं ॥ २ ॥ इह नाणदंसणावरण-वेअमोहाउनामगोआणि। विग्घ च पणनवदु-अट्ठवीसचउतिसयदुपणविहं ॥ ३ ॥ मइसुअओहीमणकेवलाणि नाणाणि तत्थ मइनाण। वंजणवग्गह चउहा, मणनयणविणिंदियच्चचउक्का ॥ ४ ॥ अत्थुग्गहईहावाय-धारणा करणमणसेहि छहा। इय अट्ठवीसभेअ चउदसहा वीसहा व सुय ॥५। अक्खरसन्नीसम्मं साइअं खलु सपज्जवसिअं च। गमियं अंगपविट्ठं सत्त बि एए सपडिवक्खा।६। पज्जयअक्खरपयसंघाया पडिवत्ति तह य अणुओगो। पाहुडपाहुड पाहुड-वत्थूपुव्वा य सस-

मासा ॥ ७ ॥ अणगामिवड्ढमाणय-पडिवाइइयर-
विहा छहा ओही । रिउमइविउलमई मण-नाण
केवलमिगविहाण ॥८॥ एसि ज आवरण पडुव्व
चक्खुस्स त तयावरण । दसणचउ पणनिद्दा
वित्तिसम दसणावरण ॥ ६ ॥ चक्खुदिट्ठि अच-
क्खु सेसिदिअओहिकेवलेहि च । दसणमिह
सामन्न तस्सावरण तय चउहा ॥१०॥ सुहपडि-
बोहा निद्दा निद्दानिद्दा य दुक्खपडिबोहा । पयला
ठिओवविट्ठस्स पयलपयला उ चकमओ ॥११॥
दिणचितिअत्थकरणी थीणद्धी अद्धचक्किअद्ध-
बला । महुलित्तखग्गधारा-लिहण व दुहा उ
वेअणिअ ॥ १२ ॥ ओसन्न सुरमणुए सायमसाय
तु तिरिअनिरएसु । मज्जव मोहणीअ दुविह
दसण चरणमोहा ॥ १३ ॥ दसणमोह तिविह
सम्म मीस तहेव मिच्छत्त । सुद्ध अद्धविसुद्ध
अविसुद्ध त हवइ कमसो ॥१४॥ जीअअजिअ-
पुण्णपावा-सवसवरबधमुक्खनिज्जरणा । जेण

सद्दहइ तय सम्मं खइगाइ वहुभेअं ॥१५॥ मीसा न रागदोसो जिणधम्मे अंतमुहु जहा अन्ने। नालियरदीवमणुणो मिच्छं जिणधम्मविवरीअं ॥ १६ ॥ सोलसकसाय नवनोकसाय दुविहं चरित्तमोहणिअं । अणअपच्चक्खाणा पच्चक्खाणा य संजलणा ॥ १७ ॥ जाजीववरिसचउ-मास-पक्खगा निरयतिरिअनरअमरा । सम्माऽणुसव्वविरई-अहक्खायचरित्तघायकरा ॥ १८ ॥ जलरेणुपुढविपव्वय-राईसरिसो चउव्विहो कोहो तिणिसलयाकट्ठट्ठिय-सेलत्थंभोवमो माणो ।१९। मायावलेहिगोमुत्ति – मिंढसिंगघणवंसिमूलसमा । लोहो हलिद्दखंजणकद्दमकिमिरागसामाणो (सारिच्छो) ।। २० ।। जस्सुदया होइ जिए हास रइ अरइ सोग भय कुच्छा । सनिमित्तमन्नहा वा तं इह हासइमोहणियं ।। २१ ।। पुरिसित्थित-दुभयं पइ, अहिलासो जव्वसा हवइ सा उ। थीनरनपुवेउदओ फुंफुमतणनगरदाहसमो ।२२।

सुरनरतिरिनिरयाऊ हडिसरिस नामकम्म चित्तिसम । बायालतिनवइविह तिउत्तरमय च सत्तट्ठी ॥ २३ ॥ गइजाइतणुउवगा बंधणसंघायणाणि संघयणा । संठाणवण्णगंधरस-फासअणुपुव्वि-विहगगई ॥२४॥ पिंडपयडित्ति चउदस परघा-उस्सासआयवुज्जोय । अगुरुलहुतित्थनिमिणो-वघायमिअ अट्ठ पत्तेआ ॥२५॥ तसबायरपज्जत्त पत्तेयथिर सुभ च सुभग च । सुसराऽऽइज्जजस तस-दसग थावरदस तु इम ॥२६॥ थावरसुहुम-अपज्ज साहारणअथिरअसुभदुभगाणि । दुस्सर-ऽणाइज्जाऽजस-मिय नामे सेअरा वीस ॥२७॥ तसचउ थिरछक्क अथिर-छक्क सुहुमतिग थावर-चउक्क । सुभगतिगाइ विभासा तयाइसखाहि पयडीहि ॥२८॥ वन्नचउ अगुरुलहुचउ तसाऽऽ-इदु – ति – चउर – छक्कमिच्चाई । इअ अन्नावि विभासा तयाइसखाहि पयडीहि ॥ २९ ॥ गइ-आईण उ कमसो चउपणपणतिपणपचछछक्क ।

पणदुगपणट्ठचउदुग इअ उत्तरभेयपणसट्ठी ॥३०॥ अडवीसजुआ तिनवइ संते वा पनरबंधणे तिसयं। बंधणसघायगहो तणूसु सामण्णवण्णचऊ॥ ३१ ॥ इअ सत्तट्ठी बंधोदय य न य सम्मसोसया बंधे। बंधुदय सत्ताए वीसदुवीसट्ठवण्णसयं ॥ ३२ ॥ निरयतिरिनरसुरगई इगविअतिअचउपणिदिजाईओ। ओरालविउव्वाहारग तेअकम्मण पणसरीरा ॥ ३३ ॥ बाहूरु पिट्ठिसिर उर उयरंग उवंग अंगुलीपमुहा। सेसा अंगोवंगा पढमतणुतिगस्सुवंगाणि ॥३४॥ उरलाइ पुग्गलाणं निबद्धबज्झतयाण संबंध। जं कुणइ जउसम तं बंधणमुरलाइ तणुनामा (उरलाइ बंधण नेय)॥ ३५ ॥ जं सघायइ उरलाइपुग्गले ति (त) णगणं व दंताली। तं संघायं बधण-मिव तणुनामेण पंचविहं ॥३६॥ ओरालविउव्वाहारयाण सगतेअकम्मजुत्ताणं। नवबंधणाणि इअर दु सहियाणं तिन्नि तेसिं च

।।३७।। मघयणमट्ठिनिचग्रो त छद्धा बज्जरिसह-
नारय । तह रिसहनाराय नाराय ग्रद्धनाराय
।। ३८ ।। कीलग्र छेवट्ठ इह रिसहो पट्टो ग्र
कीलिग्रा वज्ज । उभग्रो मक्कडबधो नाराय
इममुरालगे ।। ३९ ।। समचउरम निग्गोह साइ
खुज्जाइ वामण हुड । सठाणा वण्णा किण्ह-
नीललोहिग्रहलिद्दसिग्रा ।।४०।। सुरहिदुरही रसा
पण तित्तकडुकसायअबिला महुरा । फासा गुरु-
लहुमिउखर-सीउण्हसिणिद्धरुक्खट्ठा ।४१। नील-
कसिण दुगध तित्त कडुअ गुरु खर रुक्ख ।
सीअ च ग्रसुहनवग इक्कारसग सुभ सेस ।।४२।।
चउहगइव्वणुपुव्वी गइपुव्वीदुग तिग निया ऽऽउ-
जुग्र । पुव्वीउदग्रो वक्के सुह ग्रसुह वसुट्टविहग-
गइ ।।४३।। परघाउदया पाणी परेसि बलिणपि
होई दुद्धरिसो । ऊस सण लद्धिजुत्तो हवेइ
ऊसासनामवसा ।।४४।। रविबिंबे उजिअग ताव-
जुअ ग्रायवाउ न उ जलणे । जमुसिणफासस्स

तहिं लोहिं अवण्णस्स उदउत्ति ॥ ४५ ॥ अणु-
सिणपयासरुव जिअगमुज्जोअए इहुज्जोआ ।
जइदेवुत्तरविक्किअ–जोइसखज्जोअमाइव्व ४६।
अंगं न गुरु न लहुअं जायइ जीवस्स अगुरुलहु-
उदया तित्थेण तिहुअणस्सवि पुज्जो से उदओ
केवलिणो ॥ ४७ ॥ अंगोवगनिअमणं निम्माणं
कुणइ सुत्तहारसमं । उवघाया उवहम्मइ सतणु-
वयवलविगाईहिं ॥४८॥ वितिचउपणिंदिअतसा
वायरओ बायरा जिआ थूला निअनिअपज्जत्ति-
जुआ पज्जता लद्धिकरणेहिं ॥ ४९ ॥ पत्तेअतणू
पत्ते-उदयणं दंतअट्ठिमाइ थिरं । नाभुवरि
सिराइ सुहं सुभगाओ सव्वजणइट्ठो ॥ ५० ॥
सुसरा महुरसुहझुणी आइज्जा सव्वलोअगिज्झ-
वओ । जसओ जसकित्तीओ थावरदसगं विवज्ज-
त्थं ॥५१॥ गोअं दुहुच्चनीअं कुलाल इव सुघड-
भुंभलाइअं । विग्घं दाणे लाभे भोगुवभोगेसु
वीरिए अ ॥ ५२ ॥ सिरिहरिअसमं एअं जह

पडिकूलेण तेण गयाई । न कुणइ दाणाईअ एव विग्घेण जोवो वी ॥५३॥ पडिणोगत्तणनिन्हव-उवघायपश्रोसअंतराएण । अच्चासायणयाए श्रा-वरणदुग जिश्रो जयई ॥५४॥ गुरुभत्तिखंतिक-रुणा – वयजोगकसायविजयदाणजुश्रो । दढ-धम्माइ अज्जइ सायमसाय विवज्जयश्रो ॥५५॥ उम्मग्गदेसणामग्ग – नासणादेवदव्वहरणेहि । दसणमोह जिणमुणि – चेइअसघाऽऽइपडिणोश्रो ॥ ५६॥ दुविहपि चरणमोह कसायहासाइविसय-विवसमणो । बधइ निरयाउ महा-रभपरिग्ग-हरश्रो रुद्दो ॥ ५७ ॥ तिरिश्राउ गूढहिश्रो सढो ससल्लो तहा मणुस्साउ । पयईइ तणुकसाश्रो दाणरुई मज्झिमगुणो श्र ॥ ५८ ॥ श्रविरयमाई सुराउ बालतश्रोऽकामनिज्जरो जयइ । सरलो श्रगारविल्लो सुहनाम श्रन्नहा असुह ॥ ५९ ॥ गुणपेही मयरहिश्रो श्रज्झयणज्झावणारुई निच्च । पकुणइ जिणाइभत्तो उच्च नीअ इअर-

रहा उ ॥ ६० ॥ जिणपूआविग्घकरो हिंसाइपरायणो जयइ विग्घं । इअ कम्मविवागोऽयं लिहिओ देविंदसुरीहिं ॥ ६१ ॥



:: कर्मस्तवनामा द्वितीय कर्मग्रन्थ ::

तह थुणिमो वीरजिणं जह गुणठाणेसु सयलकम्माइं । बंधुदओदीरणया-सत्तापत्ताणि खविआणि ॥ १ ॥ मिच्छे सासण मीसे अविरय देसे पमत्त अपमत्ते । निअट्टिअनिअट्टि सुहु-मुवसमखीणसजोगिअजोगिगुणा ॥२॥ अभिनवकम्मग्गहणं बंधो ओहेण तत्थ वीससयं । तित्थयराहारगदुग-वज्जंमिच्छमि सतरसयं ॥ ३ ॥ नरयतिग जाइथावर-चउ हुंडायवछिवट्ठनपुमिच्छं । सोलंतो इगहिअसय सासणि तिरिथीणदुहगतिगं ॥ ४ ॥ अणमज्झागिइसंघयण-चउनिउज्जोअकु-

सगइत्थियत्ति । पणवीसतो मीसे चउसयरि दुग्राउग्र अवधा ॥ ५ ॥ सम्मे सगसयरि जिणाउबंधि वइरनरतिग्रबिग्रकसाया । । उरलदुगतो देसे सत्तट्ठी तिग्रकसायतो ॥ ६ ॥ तेवट्ठि पमत्ते सोग अरइ अथिरदुग अजस अस्साय । वुच्छिज्ज छच्च सत्त व नेइ सुराउ जया निट्ठं ॥७॥ गुणसट्ठि अप्पमत्ते सुराउ बंधतु जइ इहागच्छे । अन्नह अट्ठावण्णा ज आहारगदुग बंधे ॥ ८ ॥ अडवन्न अपुव्वाइमि निद्दुगतो छपन्न पणभागे । सुरदुगपणिंदिसुखगइ-तसनवउरलविणुतणुवगा ॥६॥ समचउरनिमिणजिणवन्न-अगुरुलहुचउ छलंसि तीसतो । चरमे छवीसबधो हासरइकुच्छभयभेग्रो ॥१०॥ अनिअट्टिभागपणगे इगेगहीणो दुवीसवीहबंधो । पुम संजलणचउण्ह कमेण छेग्रो सतर सुहुमे ॥ ११ ॥ चउदसणुच्चजसनाण-विग्घदसगंति सोलसुच्छेग्रो । तिसु सायबंधछेग्रो सजोगि बंधतुऽणंतो अ ॥१२॥

उदओ विवागवेअण-मुदिरणामपत्ति इहदुविससयं। सतरसयं मिच्छे मीस–सम्मआहारजिणणुदया ॥१३॥ सुहमतिगायवमिच्छं मिच्छंतं मासणे इगारसयं। निरयाणुपुव्विणुदया अणथावरइगविगलअंतो ।१४। मीसे सयमणुपुव्वीऽणुदया मीसोदणए मीसंतो। चउसयमजए सम्मा-ऽणुपुव्विखेवा विअकसाया ॥ १५ ॥ मणुतिरिणुपुव्विविउवट्ठ दुहगअणाइज्जदुगसतरछेओ। सगसीइ देसितिरिगइ-आउ निउज्जोअ तिकसाया ॥१६। अट्ठच्छेओ इगसी पमत्ति आहारजुअलपक्खेवा। थीणतिगाहारगदुग–छेओ छस्सयरि अपमत्ते ॥१७॥ सम्मत्तंतिमसघयण–तिअगच्छेओ बिसत्तरि अपुव्वे। हासाइछक्कअंतो छसट्ठि अनिअट्टि वेअतिग ॥ १८ ॥ संजलणतिगं छच्छेओ सट्ठि सुहुमंमि तुरिअलोभंतो। उवसंतगुणे गुणसट्ठि रिसहनारायदुगअंतो ॥ १९ ॥ सगवन्न खीणदुचरिमि निद्दुगतो अ चरिमि पणवन्ना नाणंत-

रायदसण-चउ छेओ सजोगि बायाला ॥२०॥ तित्थुदयाउरलाथिर-खगइदुग परित्ततिग छ सठाणा । अगुरुलहुवन्नचउनिमिण-तेअकम्माइ-सघयण ॥ २१ ॥ दूसर सूसर साया-साएगयरं च तीस वुच्छेओ । बारस अजोगि सुभगाऽऽइज्ज जसऽन्नयरवेअणिअ ॥२२॥ तसतिगपणिदिमणु-आउ गइजिणुच्च ति चरिमसमयंतो । उदउव्वु दीरणापर-मपमत्ताईसगगुणेसु ॥२३॥ एसा पयडितिगूणा वेयणियाहारजुअलथीणतिग । मणु-आउ पमत्तंता अजोगि अणुदीरगो भयव ॥२४॥ सत्ता कम्माण ठिई बंधाइलद्धअत्तलाभाण । सते अडयालसय जा उवसमु विजिणु विअतइए ।२५। अपुव्वाइचउक्के अणतिरिनिरयाउविणु बियाल-सय । सम्माइचउसु सत्तग-खयमि इगचत्तसयम-हवा ॥ २६ ॥ खवगं तु पप्प चउसुवि पणयाल निरयतिरिसुराउविणा । सत्तगविणु अडतीस जा अनिअट्टीपढमभागो ॥ २७ ॥ थावरतिरिनिरया-

यव-दुग थीणतीगेग विगल साहारं । सोलखओ दुवीससयं विअसि विअत्तिअकसायंतो ॥ २८ ॥ तइआइसु चउदसतेर वारछपणचउतिहियसय-कमसो । नपुइत्थिहासछगपुंस तुरिअकोहमयमायखओ ॥ २९ ॥ सुहुमि दुसय लोहंतो खीण-दुचरिमेगसय दुनिद्दखओ । नवनवइ चरिमसमए चउदंसणनाणविग्घंतो ॥ ३० ॥ पणसीइ सजोगि अजोगि दुचरिमे देवखगइगंधदुगं । फासट्ठ वन्नरसतणु-बंधणसंघायपण निमिण ॥ ३१ ॥ संघयण अथिर संठाण-छक्क अगुरुलहुचउ अपज्जत । सायं व असायं वा परित्तुवंगतिग सुसर निअं ॥ ३२ ॥ बिसयरिखओ अ चरिमे तेरसमणुअतसतिगज-साइज्ज । सुभगजिणुच्चपणिंदिअ सायासाएगयरछेओ ॥ ३३ ॥ नरअणुपुव्वि विणा वा बारस चरिमसमयंमि जो खविउं । पत्तो सिद्धिं देविंद-वंदिअं नमह तं वीरं ॥ ३४ ॥

: बन्धस्वामित्वनामा तृतीय कर्मग्रन्थ ::

बंधविहाणविमुक्कं वंदिय सिरिवद्धमाणजिणचंदं । गइआईसु वुच्छं समासओ बंधसामित्तं ॥१॥ गइ इन्दिए य काए जोए वेए कसाए नाणे य । संजम दंसण लेसा भव सम्मे सन्निआहारे ॥ २ ॥ जिणसुरविउवाहारदु देवाउ य निरयसुहुमविगलतिगं । एगिंदि थावरायव नपु मिच्छं हुंड छेवट्ठं ॥ ३ ॥ अणमज्झागिइसंघयण कुखगइनियइत्थिदुहगथीणतिगं । उज्जोअ तिरिदुगतिरि-नराउ नरउरलदुगरिसहं ॥४॥ सुरइगुणवीसवज्जं इगसउ ओहेण बंधहिं निरया । तित्थविणा मिच्छि सयं सासणि नपुचउविणा छनुई ॥ ५ ॥ विणुअणछवीस मीसे बिसयरि सम्ममि जिणनराउजुआ । इह रयणाइसु भंगो पंकाइसु तित्थयरहीणो ॥ ६ ॥ अजिणमणुआउ ओहे सत्तमिए नरदुगुच्चविणु मिच्छे । इगनवई

सासाणे तिरिआउ नपुंसचउ वज्जं ॥ ७ ॥ अण-चउवीसविरहिआ सनरदुगुच्चा य सयरि मीस-दुगे । सतरसओ ओहि मिच्छे पज्जतिरिया विणु-जिणाहारं ॥८॥ विणुनिरयसोल सासणि सुरा-उअणएगतीसविणु मीसे । ससुराउ सयरि सम्मे-वीअकसाए विणादेसे ॥ ९ ॥ इय चउगुणेसु वि नरा परमजया सजिण ओहु देसाई । जिण-इक्कारसहीणं नवसय अपज्जत्ततिरिअनरा ॥१०॥ निरयव्व सुरा नवरं ओहे मिच्छे इगिंदितिग-सहिआ । कप्पदुगे वि य एवं जिणहीणो जोइ-भवणवणे ॥११॥ रयणुव्व सणकुमाराइ आण-याइ उज्जोयचउरहिआ । अपज्जतिरिअव्व नव-सय-मिगिंदिपुढविजलतरुविगले ॥१२॥ छनवइ सासणि विणु सुहुमतेर केइ पुण बिंति चउनवइं । तिरिअनराऊहिं विणा तणुपज्जत्तिं न जंति जओ ॥१३॥ ओहु पणिदितसे गइ-तसे जिणि-क्कारनरतिगुच्चविणा । मणवयजोगे ओहो

उरले नरभगु तम्मिस्से ॥ १४ ॥ आहारछग विणोहे चउदससउ मिच्छि जिणपणगहीण । सामणि चउनवइ विणा तिरिअनराऊ सुहुमतेर ॥ १५ ॥ अणचउवीसाइविणा जिणपणजुअ सम्मि जोगिणो साय । विणु तिरिनराउ कम्मे वि एवमाहारदुगि ओहो ॥१६॥ सुरओहो वेउव्वे तिरिअनराउरहिओ अ तम्मिस्से । वेअतिगाइम विअतिअ-कसाय नव दु चउ पच गुणा ॥१७॥ सजलणतिगे नव दस लोभे चउ अजइ दु ति अनाणतिगे । वारस अचक्खुचक्खुसु पढमा अह-क्खाय चरिमचउ ॥ १८ ॥ मणनाणि सगजयाई समइअच्छेअ चउ दुन्नि परिहारे । केवलदुगि दोचरमा ऽजयाइ नव मइसुओहिदुगे ॥१९॥ अड उवसमि चउवेअगि खइए इक्कार मिच्छतिगि देसे । सुहुमि सठाण तेरस आहारगि निअनिअ-गुणोहो ॥ २० ॥ परमुवसमि वट्टन्ता आउ न बधति तेण अजयगुणे । देवमणुआउहीणो देसाइसु

पुरा नुराउ विणा ।। २१ ।। ओहे अट्ठारसयं आहारदुगूण-माइलेमतिगे । तं तित्थोणं मिच्छे साणाइसु सव्वहि ओहो ।।२२।। तेऊ निरयनवूणा उज्जोअनउ निरयबारविणुसुक्का । विणुनिरयबार पम्हा अजिणाहारा इमा मिच्छे ।। २३ ।। सव्व-गुण भव्वसन्निसु ओहु अभव्वा असन्नि मिच्छि-समा । सासणि असन्नि सन्नि व्व कम्मणभंगो अणाहारे ।। २४ ।। तिसु दुसु सुक्का'इगुणा चउ सग तेरत्ति वंधसामित्तं । देविंदसूरिरइअं नेयं कम्मत्थयं सोउं ।। २५ ।।



:: षड़शीती चतुर्थ कर्मग्रन्थ ::

नमिअ जिणं जिअमग्गण–गुणठाणुवओग-जोगलेसाओ बधप्पबहू भावे संखिज्जाइ किमवि वुच्छ ।।१।। नमिय जिणं वत्तव्वा चउदस जिअ-ठाणएसु गुणठाणा । जोगुवओगो लेसा बंधु-

दग्रोदीरणा सत्ता ॥ १ ॥ तह मूलचउदसगण-ठाणेसु बासट्ठिउत्तरेसु च । जिअ गुण जोगुव-ओगा लेसप्पबहुं च छट्ठाणा ॥२॥ चउदसगुणेसु जिअजो-गुवओगलेसा य बधहेऊ य । बधाईचउ अप्पा-बहुं च तो भावसंखाई ॥ २ ॥ इह सुहुम-बायरेगिंदि बितिचउअसन्निसन्निपचिंदी । अप-ज्जत्ता पज्जत्ता कमेण चउदस जिअट्ठाणा ॥३॥ बायरअसन्निविगले अपज्जि पढमबिअ सन्निअप-ज्जत्ते । अजयजुअ सन्निपज्जे सव्वगुणा मिच्छ सेसेसु ॥ ३ ॥ अपजत्तछक्कि कम्मुरल मीस जोगा अपज्जसन्निसु । ते सविउव्वमीस एसु तणुपज्जेसु उरल-मन्ने ॥ ४ ॥ सव्वे सन्निपज्जत उरल सुहुमे सभासु त चउसु । बायरि सविउव्विदुग पज्ज-सन्निसु बार उवओगा ॥ ५ ॥ पज्जचउरिंदिअस-न्निसु दुदसदुअनाणदसुचक्खुविणा । सन्निअपज्जे मणनाण-चक्खुकेवलदुगविहूणा ॥ ६ ॥ सन्नि-दुगि छलेस अपज्जबायरे पढमचउ ति सेसेसु ।

सत्तट्ठ बंधुदीरण संतुदया अट्ठ तेरससु ॥ ७ ॥
सत्तट्ठ छेग बंधा संतुदया सत्त अट्ठ चत्तारि।
सत्तट्ठ छ पंच दुगं उदीरणा सन्निपज्जते ॥ ८ ॥
गइ इंदिए य काए जोए वेए कसाय नाणेसु।
संजम दंसण लेसा मव सम्मे सन्नि आहारे ॥९॥
सुरनरतिरिनिरयगई इगविअतिअचउपणिदि
छक्काय। भूजलजलणानिलवण तसा य मणवय-
णतणुजोगा ॥१०॥ वेअ नरित्थिनपुंसा कसाय
कोहमयमायलोभत्ति। मइसुअवहिमणकेवल
विभगमइसुअनाणसागारा ॥ ११ ॥ सामाइअछे-
अपरिहार सुहुमअहक्खायदेसजयअजया। चक्खु
अचक्खु ओही केवलदंसण अणागारा ॥ १२ ॥
किण्हा नीला काऊ तेऊ पम्हा य सुक्क भव्विअरा
वेअग खइगुवसम मिच्छ मीस सासाण सन्निअरे
॥१३॥ आहारेअर भेआ, सुरनिरयविभगमइसु-
ओहिदुगे। सम्मत्ततिगे पम्हा सुक्का सन्निसु
सन्निदुगं ॥१४॥ तमसन्नि अपज्जजुयं नरे सवा-

यरअपज्ज तेऊए। थावरइगिंदि पढमा चउ वार असन्नि दु दु विगले ॥ १५ ॥ दस चरिम तसे अजया हारगतिरितणुकसायदुअनाणे । पढमतिलेसा भविअर अचक्खुनपुमिच्छि सव्वेवि ।१६। पजसन्नी केवलदुगे संजममणनाणदेसमणमीसे । पण चरिम पज्ज वयणे तिय छ व पज्जिअर चक्खु मि ॥ १७ ॥ थीनरपणिंदि चरमा चउ अणहारे दुसन्नि छ अपज्जा ते सुहुमअपज्ज विणा सासणि इत्तो गुणे वुच्छ ॥ १८ ॥ पणतिरिचउसुरनिरए नरसन्निपणिंदिभव्वतसि सव्वे । इगविगलभूदगवणे दु दु एग गइतसअभव्वे ॥१९॥ वेअतिकसाय नव दस लोभे चउ अजइ दुति अनाणतिगे । बारस अचक्खुचक्खुसु पढमा अहखाइ चरिमचऊ ॥ २० ॥ मणनाणि सग जयाई समइअ छेअ चउ दुन्नि परिहारे । केवलदुगि दो चरिमा जयाइ नव मइसुओहिदुगे ॥ २१ ॥ अड उवसमि चउ वेअगि खइए इक्कार मिच्छतिगि

देसे । सुहुमे म सठाणं तेर जोग आहार सुक्काए ।। २२ ।। असन्निसु पढमदुगं पढमतिलेसासु छच्च दुसु सत्त । पढमंतिमदुग अजया अणाहारे मग्गणासु गुणा ।। २३ ।। सच्चेअर मीस असच्च मोस मण वय विउव्विआहारा उरलं मीसा कम्मण इअ जोगा कम्म अणाहारे ।।२४।। नरगइ पणिंदि तसतणु अचक्खुनरनपुकसायसम्मदुगे सन्नि छलेसाहारग भवमइसुअओहिदुगि सव्वे ।। २५ ।। तिरिइत्थिअजयसासण अनाणउवसमअभव्वमिच्छेसु तेराहारदुगूणा ते उरलदुगूण सुरनिरए ।।२६।। कम्मुरलदुगं थावरि ते सविउव्विदुग पंच इगि पवणे । छ असन्नि चरिमवइजुअ ते विउवदुगूण चउ विगले ।। २७ ।। कम्मुरलमीसविणु मण-वइसमइअछेअचक्खुमणनाणे उरलदुग कम्मपढमंतिम मणवइ केवलदुगंमि ।। २८ ।। मणवइउरला परिहारि सुहुमि नव ते उ मीसि सविउव्वा । देसे सविउव्विदुगा सकम्मुरलमीस अह-

खाए ॥ २६ ॥ तिअनाणनाणपणचउ दसणावार-
जिअलक्खणुवओगा । विणु मणनाणदुकेवल नव
सुरतिरिनिरयअजएसु ॥ ३० ॥ तस जोअ वेअ
सुक्काहारनर पणिंदि सन्नि भवि सव्वे । नयणे-
अर पणलेसा कसाय दस केवलदुगूणा ॥ ३१ ॥
चउरिंदिअसन्नि दुअन्नाण दुदस इगबितियावरि
अचक्खु । तिअनाणदसणदुग अनाणतिगि
अभवि मिच्छदुगे ॥३२॥ केवलदुगे नियदुग नव
तिअनाणविणु खइअअहक्खाए । दसणनाणतिग
देसि मीसि अन्नाणमीसं त ॥ ३३ ॥ मणनाण
चक्खुवज्जा अणहारे तिन्निदसचउनाणा । चउ
नाणसंजमोवसम वेअग ओहिदसे अ ॥ ३४ ॥
दो तेर तेर वारस मणे कमा अट्ठ दु चउ चउ
वयणे । चउ दु पण तिन्नि काए जिअगुणजोगो-
वओगन्ने ॥ ३५ ॥ छसु लेसासु सठाण एगिंदि-
असन्निभूदगवणेसु । पढमा चउरो तिन्नि उ
नारयविगलग्गिपवणेसु ॥३६॥ अहक्खायसुहुम-

केवल दुगि सुक्का छ वि सेसठाणेमु । नरनिरय-
देवतिरिआ थोवा दु असंखणंतगुणा ॥ ३७ ॥
पणचउतिदुएगिदी थोवा तिन्नि अहिआ अणंत-
गुणा । तस थोव असंखग्गी भूजलनिलअहिअ
वणणंता ॥ ३८ ॥ मणवयणकायजोगी थोवा
असंखगुण अणंतगुणा । पुरिसा थोवा इत्थी
संखगुणाणंतगुण कीवा ॥३९॥ माणी कोही माई
लोभी अहिअ मणनाणिणो थोवा । ओहि असंखा
मइसुअ अहिअ सम असंख विब्भंगा ॥ ४० ॥
केवलिणोणंतगुणा मइसुअअन्नाणिणंतगुण तुल्ला ।
सुहुमा थोवा परिहार संख अहखाय संखगुणा
॥ ४१ ॥ छेय समईय संखा देस असंखगुणा णंत-
गुणा अजया । थोव असंख दु णंता ओहि नयण
केवल अचक्खु ॥४२॥ पच्छाणुपुव्वि लेसा थोवा
दोऽसंख णंत दो अहिआ । अभविअर थोव णंता
सासण थोवोवसमसंखा ॥ ४३ ॥ मीसा संखा
वेअग असंखगुण खइअ मिच्छ दु अणंता ।

सन्निग्रर थोव णता-णहार थोवेग्रर ग्रमखा ।।४४।। सव्वजिग्रठाण मिच्छे सग सासणि पण ग्रपजसन्निदुग । सम्मे सन्नी-दुविहो सेसेसु सन्निपज्जत्तो ।। ४५ ।। मिच्छदुगि ग्रजइ जोगा हारदुगूणा ग्रपुव्वपणगे उ । मणवइउरल सवि-उव्वि मीसि सविउव्विदुग देसे ।। ४६ ।। साहार दुग पमत्ते ते विउवाहारमीस विणु इग्ररे । कम्मुरलदुगताइम मणवयण सजोगि न ग्रजोगि ।। ४७ ।। तिग्रनाण दुदसाइम दुगे ग्रजइ देसि नाणदसतिग । ते मीसि मीसा समणा-जयाइ केवलदु अतदुगे ।। ४८ ।। सासणभावे नाणं विउव्वगाहारगे उरलमिस्स । नेगिदिसु सासाणो नेहाहिगय सुयमय पि ।। ४६ ।। छसु सव्वा तेउ-तिग इगि छसु सुक्का ग्रजोगि ग्रल्लेसा । बंधस्स मिच्छ ग्रविरइ कसाय जोगत्ति चउ हेऊ ।।५०।। ग्रभिगहिग्रमणभिगहिग्रा - भिनिवेसियसंसइयम-णाभोग । पण मिच्छ बार ग्रविरइ मणकरणा-

निश्रमु छजिअवही ।। ५१ ।। नव सोल कसाय पनर जोग इअ उत्तरा उ सगवन्ना । इग चउ पण ति गुणेसु चउतिदुइगपच्चओ वंघो ।।५२।। चउमिच्छमिच्छअविरइ पच्चइआ साय सोल पणतीसा । जोगविणु तिपच्चइआ-हारगजिण-वज्जसेसाओ ।। ५३ ।। पणपन्न पन्ना तिअछहिअ चत्त गुणचत्त छचउदुगवीसा । सोलस दस नव नव सत्त हेउणो न उ अजोगिमि ।।५४।। पणपन्न मिच्छि हारग-दुगूण सासणि पन्न मिच्छविणा । मीसदुगकम्मअणु विणु तिचत्त मोसे अह छचत्ता ।। ५५ ।। सदुमीसकम्म अजए अविरइ कम्मुरल-मीस विकसाए । मुत्तु गुणचत्त देसे छवीस साहारदु पमत्ते ।। ५६ ।। अविरइइगारतिकसाय वज्ज अपमत्ति मीसदुगरहिआ । चउवीस अपुव्वे पुण दुवीस अविउव्विआहारे ।।५७।। अछहास-सोलवायरि सुहुमे दस वेअसंजलणतिविणा । खीणुवसंति अलोभा सजोगि पुव्वुत्त सग जोगा

॥ ५८ ॥ अपमत्तता सत्तट्ठ मीसअपुव्ववायरा सत्त। बधइ छस्सुहुमो एग मुवरिमाऽबन्धगाऽजोगी ॥५६॥ आसुहुम मतुदए अट्ठवि मोहविणु सत्त खिणमि। चउ चरिमदुगे अट्ठ उ सते उवसति सत्त दए॥ ६० ॥ उइरति पमत्तता सगट्ठ मीसट्ठ वेअ आउ विणा। छग अपमत्ताइ तओ छ पच सुहुमो पणुवसतो ॥ ६१ ॥ पण दो खीण दु जोगी णुदीरगु अजोगि थोव उवसता सखगुण खीण सुहुमा नियट्टिअपुव्व सम अहिआ॥६२॥ जोगि अपमत्त इअरे सखगुणा देससासणा मीसा। अविरइ अजोगिमिच्छा असखचउरो दुवेणता॥६३॥ उवसमखयमीसोदय परिणामा दु नव ट्ठार इगवीसा। तिअभेअ सन्निवाइअ सम्म चरण पढमभावे॥६४॥ बीए केवलजुअल सम्म दाणाइलद्धिपण चरण। तइए सेसुवओगा पण लद्धी सम्मविरइदुग ॥ ६५ ॥ अन्नाणमसिद्धता सजमलेसाकसायगइवेया। मिच्छ तुरिए

भव्वा भव्वत्तजिअत्त परिणामे ॥ ६६ ॥ चउ
चउगईसु मीसग परिणामु दएहिं चउ सखइएहिं ।
उवसमजुएहिं वा चउ केवलि परिणामुदयखइए
॥६७॥ खयपरिणामि सिद्धा नराण पणजोगुव-
समसेढीए । इअ पनर सन्निवाइअ भेया वीसं
असंभविणो ॥ ६८ ॥ मोहे व समो मीसो चउ-
घाइसु अट्ठकम्मसु अ सेसा । धम्माइ पारिणा-
मिअ भावे खंघा उदइए वि ॥६९॥ सम्माइचउसु
तिग चउ भावा चउ पणुवसामगुवसते । चउ
खीणापुव्वे तिन्नि सेसगुणठाणगेगजिए ॥७०॥
संखिज्जेगमसंखं परित्तजुत्तनियपयजुय तिविहं ।
एवमणंतं पि तिहा जहन्नमज्झुक्कसा सव्वे
॥७१॥ लहु संखिज्ज दुच्चिअ अओ परं मज्झिमं
तु जा गुरुअं । जंबुद्दीवपमाणय चउपल्लपरूव-
णाइ इमं ॥ ७२ ॥ पल्लाणवट्ठिअसलाग-पडिस-
लागमहासलागक्खा । जोअणसहसोगाढा सवेइ-
अंता ससिहभरिआ ॥ ७३ ॥ तो दीवुदहिसु

इक्किक्क सरिसव पिक्खिअ निट्ठिए पढमे पढमव तदत चिय पुण भरिए तमि तह खीणे ॥७४॥ खिप्पइ सलागपल्ले-गु सरिसवो इअ सलागखव-णेण पुण्णो बीओ अ तओ पुव्वंपि व तमि उद्ध-रिए ॥ ७५ ॥ खीणे सलाग तइए एव पढमेहिं बीअय भरसु। तेहिं तइअ तेहिं य तुरिअ जा किर फुडा चउरो ॥ ७६ ॥ पढमतिपल्लुद्धरिआ दीवुदही पल्लचउसरिसवा य। सव्वो वि एगरासी रूवूणो परमसंखिज्ज ॥७७॥ रूवजुअ तु परित्ता सख लहु अस्स रासिअब्भासे। जुत्तासंखिज्ज लहु आवलिआसमयपरिमाण ॥ ७८ ॥ बितिचउ-पचमगुणणे कमा सगासख पढमचउसत्ता। णता ते रूवजुआ मज्झा रूवूण गुरु पच्छा ॥ ७९ ॥ इअ सुत्तुत्त अन्ने वग्गिअमिक्कसि चउत्थयम-संख। होइ असंखासंख लहु रूवजुअ तु त मज्झ ॥ ८० ॥ रूवूणमाइम गुरु तिवग्गि उ तत्थिमे दसक्खेवे। लोगागासपएसा धम्माधम्मेगजिअ-

देसा ॥८१॥ ठिइवंधज्झवसाया अणुभागा जोग-छेअपलिभागा । दुण्ह य समाण समया पत्तेअ निगोअए खिवसु ॥८२॥ पुण तंमि तिवग्गिअए परित्तणंत लहु तस्स रासीणं । अब्भासे लहु जुत्ता–णंतं अभव्वजिअपमाणं ॥ ८३ ॥ तव्वग्गे पुण जायइ णंताणंत लहु तं च तिक्खुत्तो । वग्गसु तहवि न तं होइऽणंतखेवे खिवसु छ इमे । ॥ ८४ ॥ सिद्धा निगोअजीवा वणस्सई काल पुग्गला चेव । सव्वमलोगनहं पुण तिवग्गिउं केवलदुगंमि ॥८५॥ खित्तेऽणंताणंत हवेइ जिट्ठं तु ववहरइ मज्झं । इअ सुहुमत्थविआरो लिहिओ देविंदसूरीहिं ॥ ८६ ॥



:: शतकनामा पचम कर्मग्रन्थ ::

नमिअ जिरण धुववधो दयसता घाइपुन्न-परिअत्ता । सेअर चउहविवागा वुच्छ वधविह सामी अ ॥ १ ॥ वन्नचउतेअकम्मा-गुरुलहुनिमिणोवधायभयकुच्छा । मिच्छकसायावरणा विग्घ धुववधि सगवत्ता ॥२॥ तणुवगागिइसघयरण जाइगइखगइपुव्विजिणुमास । उज्जोआयवपरघा तसवीसा गोअवेअणिअ ॥ ३ ॥ हासाइजुअलदुगवेअ आउ तेवुत्तरी अधुववधी (घा) । भगा अरणाइसाई अरणतसतुत्तरा चउरो ॥४॥ पढमविआ धुवउदइसु धुवबधिसु तइअवज्जभगतिग । मिच्छमि तिन्नि भगा दुहावि अधुवा तुरिअभगा ॥५॥ निमिणथिरअथिरअगुरुअ सुहअसुह तेअकम्मचउवन्ना नाणतरायदसग मिच्छ धुवउदय सगवीसा ॥ ६ ॥ थिरसुभिअर विणु अधुव बधी मिच्छ विणुमोहधुवबधी । निद्दोवघाय-

मीसं सम्मं पणनवइ अधुवुदया ॥ ७ ॥ तमवन्न-
चाससगतेअ कम्म धुवबंधिसेस वेअतिगं । आगि-
इतिग वेअणिअं दुजुअल सगउरलुसासचऊ ॥८॥
खगईतिरिगदुग नीअ धुवसंता सम्म मीस मणुय-
दुग । विउव्विक्कार जिणाऊ हारसगुच्चा अधु-
वसंता ॥ ९ ॥ पढमतिगुणेसु मिच्छं निअमा
अजयाइअट्ठगे भज्जं । सासाणे खलु सम्मं संतं
मिच्छाइदसगे वा ॥ १० । सासणमीसेसु धुवं
मीसं मिच्छाइनवसु भयणाए । आइदुगे अण
निअमा भइआ मीसाइनवगमि । ११ । आहार-
सत्तगं वा सव्वगुणे वितिगुणे विणा तित्थं ।
नोभयसते मिच्छो अंतमुहुत्तं भवे तित्थे ॥१२॥
केवलजुअलावरणा पण निद्दा बारसाइमक-
साया । मिच्छं ति सव्वघाइ चउनाणतिदंसणा-
वरणा ॥ १३ ॥ संजलण नोकसाया विग्घं इअ
देसघाइ य अघाइ । पत्तेयतणुऽट्ठाऊ तसवीसा
गोअदुगवन्ना ॥ १४ ॥ सुरनरतिगुच्चसायं तसदस

तणुवग वइरचउरंस । परघासग निरियाऊ वन्न-
चउ पणिंदि सुभखगइ ॥१५॥ बायाल पुण्णपगई
अपढमसंठाणखगइसंघयणा । तिरिदुगअसायनीओ-
वघायइगविगलनिरयतिग ॥१६॥ थावरदस
वन्नचउक्क घाइ पणयाल सहिअ बासीई । पाव-
पयडि त्ति दोसु वि वन्नाइगहा सुहा असुहा ।१७।
नामधुवबंधिनवगं दंसण पणनाण विग्घ पर-
घाय । भयकुच्छमिच्छसास जिण गुणतीसा
अपरिअत्ता ॥१८॥ तणुअट्ठ वेअ दुजुअल कसाय
उज्जोअगोअदुगनिद्दा । तसवीसाउ परित्ता खित्त-
विवागऽणुपुव्वीओ ॥१९॥ घणघाइदुगोअजिणा
तसिअरतिग सुभगदुभगचउसास । जाइतिग
जिअविवागा आऊ चउरो भवविवागा ॥२०॥
नामधुवोदय चउतणु-वघायसाहारणिअरुज्जोअ-
तिग । पुग्गलविवागि बंधो पयइठिइरसपएस त्ति
॥ २१ ॥ मूलपयडीण अडसत्त-छेगबंधेसु तिन्नि
भूगारा । अप्पतरा तिअ चउरो अवट्ठिआ न हु

अवत्तव्वो ॥२२॥ एगादहिगे भूत्रो एगाई ऊण-
गमि अप्पतरो। तमत्तोऽवट्ठिपत्रो पढमे समए
अवत्तव्वो ॥ २३ ॥ नव छ चउ दंसे दु दु ति दु
मोहे दु इगवीस सत्तरस। तेरस नव पण चउ ति
दु इक्को नव अट्ठ दस दुन्नि ॥ २४ ॥ तिपणछ-
अट्ठनवहिआ वीसा तीसेगतीस इग नामे। छस्स-
गअट्ठतिबधा सेसेसु य ठाणमिक्किक्कं ॥ २५ ॥
वीसयरकोडिकोडी नामे गोए अ सत्तरी मोहे।
तीसियरचउसु उदही निरयसुराउंमि तित्तीसा
॥२६॥ मुत्तुं अकसायठिइ बार मुहुत्ता जहन्ना
वेअणिए। अट्ठट्ठ नामगोएसु सेसएसुं मुहुत्तंतो
॥ २७ ॥ विग्घावरण असाए तीसं अट्ठार सुहुम-
विगलतिगे। पढमागिइसघयणे दस दुसुवरिमेसु
दुगवुड्ढी ॥ २८ ॥ चालीस कसाएसु मिउलहुनि-
द्धुण्हसुरहिसिअमहुरे। दस दोसड्ढ समहिआ ते
हालिद्द बिलाईण ॥ २९ । दस सुहविहगइउच्चे
सुरदुगथिरछक्कपुरिसरइहासे। मिच्छे सत्तरि

मणुदुग इत्थोसाएसु पन्नरस ॥३०॥ भयकुच्छ-
अरइसोए विउव्वितिरिउरलनिरयदुगनीए ।
तेअपण अथिरछक्के तसचउ थावर इग पणिंदी
॥३१॥ नपुकुखगइसासचऊ गुरुकक्खडरुक्खसीय-
दुग्गंध । वीस कोडाकोडो एवइआबाह वाससया
॥ ३२ ॥ गुरु कोडिकोडि अतो तित्थाहाराण
भिन्नमुहु बाहा । लहु ठिइ सखगुणूणा नरतिरि-
आणाउ पल्लतिग ॥३३॥ इग विगल पुव्वकोडी
पलिआऽसखस आउचउ अमणा । निरुवकमाण
छमासा अबाह सेसाण भवतसो ॥ ३४ ॥ लहु-
ठिइबधो सजलण-लोहपणविग्घनाणदसेसु ।
भिन्नमुहुत्त ते अट्ठ जसुच्चे वारस य साए ॥३५॥
दोइगमासो पक्खो सजलणतिगे पुमट्ठ वरि-
साणि । सेसाणुक्कोसाओ मिच्छत्तठिईइ ज लद्ध
॥ ३६ ॥ अयमुक्कोसो गिदिसु पलियाऽसखसहीण
लहुबधो । कमसो पणवीसाए पन्ना सय सहस
सगुणिओ ॥३७॥ विगलअसन्निसु जिट्ठो कणि-

ट्ठओ पल्लसंखभागूणो । सुरनिरयाउ समा दस सहस्स सेसाउ खुड्डभवं ॥३८॥ सव्वाण वि लहु-बंधे भिन्नमुहु अबाह आउजिट्ठे वि । केइ सुरा-उसमं जिण मंतमुहू बिंति आहारं । ३९॥ सत्त-रस समहिया किर इगाणुपाणंमि हुंति खुड्ड-भवा । सगतीससयतिहुत्तर पाणू पुण इगमुहुत्तंमि ॥ ४० ॥ पणसट्ठिसहस पणसय-छत्तीसा इग-मुहुत्तखुड्डभवा । आवलियाणं दोसय छप्पन्ना एगखुड्डभवे ॥४१॥ अविरयसम्मो तित्थं आहार-दुगामराउ य पमत्तो । मिच्छद्दिट्ठि बंधइ जिट्ठ-ट्ठिइं सेस पयडीणं ॥ ४२ ॥ विगलसुहुमाउगतिगं तिरिमणुआ सुरविउव्विनिरयदुगं एगिंदिथावरा-यव आईसाणा सुरुक्कोसं ॥ ४३ ॥ तिरिउरल-दुगुज्जोअं छिवट्ठ सुरनिरय सेस चउगइआ आहारजिणमपुव्वो । ऽनिअट्टिसंजलणपुरिसलहुं । ४४॥ साय जसुच्चावरणा विग्घं सुहुमो विउ-व्विछ असन्नी । सन्नी वि आउ बायर पज्जेगिंदी

उ सेसाए ॥४५॥ उक्कोसजहन्नेअर भगा साई अणाइ धुव अधुवा । चउहा सग अजहन्नो सेसतिगे आउचउसु दुहा ॥४६॥ चउभेओ अजहन्नो सजलणावरणनवगविग्घाण । सेसतिगि साइ अधुवो तह चउहा सेसपयडीण ॥४७। साणाइअपुव्वते अयरतो कोडिकोडिओ न हिगो । बंधो नहु हीणो न य मिच्छे भव्विअरसन्निमि ॥४८॥ जइलहुबधो बायर पज्जअसखगुण सुहुमपज्जऽहिगो । एसि अपज्जाण लहू सुहुमेअर अपज्जपज्जगुरु ॥४९॥ लहु बिअपज्जअपज्जे अपजेअरविअगुरुऽहिगो एव । तिचउअसन्निसु नवर मखगुणो बिअअमणपज्जे ॥५०। तो जइजिट्ठो बंधो सखगुणो देसविरयहस्सिअरो । सम्मचउ सन्निचउरो ठिइबंधाणुकमसखगुणा ॥५१॥ सव्वाणवि जिट्ठठिई असुभा ज साइसकिलेसेण । इअरा विसोहिओ पुणमुत्तु नरअमरतिरिआउ ॥५२॥ सुहुमनिगोआइखण-प्पजोग बायर य विगल-

अमरणमरणा अपज्जलहु पढमदुगुरु पजहस्सिअरो असंखगुणो ।।५३।। अपजत्ततसुक्कोसो पज्जजहन्निअरु एव ठिइठाणा । अपजेअर संखगुणा परमपजविए असंखगुणा ।।५४।। पइखणमसंखगुणविरिअ अपजपइठिइमसंखलोगसमा । अज्झवसाया अहिआ सत्तसु आउसु असंखगुणा ।५५। तिरिनिरयतिजोआणं नरभवजुअ सचउपल्ल तेसट्ठं । थावरचउइगविगला-यवेसु पणसीइसयमयरा ।। ५६ ।। अपढमसंघयणागिइ–खगइअणमिच्छदुहगथीणतिग । निअनपुइत्थि दुतीसं पणिदिसु अबंधठिइ परमा ।। ५७ ।। विजयाइसु गेविज्जे तमाइ दहिसय दुतीस तेसट्ठं । पणसीइ सययबंधो पल्लतिगं सुरविउव्विदुगे ।।५८।। समयादसङ्खकाल तिरिदुगनीएसु आउ अंतमुहू । उरलि असंखपरट्टा सायठिई पुव्वकोडूणा ।।५६।। जलहिसयं पणसीअं परघुस्सासे पणिदि तसचउगे । बत्तीसं सुहविहगइ पुमसुभगतिगुच्चच-

उरसे ॥ ६० ॥ अमुखगइजाइआगिइ संह्यणा-
हारनिरयजोअदग । थिरसुभजसथावरदस नपुंइ-
त्थीदुजुअलमसाय ॥६१॥ समयादसंमुहुत्ता मणु-
दुगजिणवइरउरलुवंगेसु । तित्तीसयरा परमो
अंतमुहु लहूवि आउजिणे । ६२॥ तिव्वो असुह-
सुहाण संकेसविसोहिओ विवज्जयओ । मदरसो
गिरिमहिरय-जलरेहासरिसकसाएहिं ॥ ६३ ॥
चउठाणाई असुहो सुहऽन्नहा विग्घदेसआवरणा ।
पुमसंजलणिगदुतिचउ-ठाणरसा सेस दुगमाई
॥ ६४ ॥ निंबुच्छुरसो सहजो दुतिचउभागकढि-
इक्कभागतो । इगठाणाई असुहो असुहाण सुहो
सुहाण तु ॥ ६५ ॥ तिव्वमिगथावरायव सुर-
मिच्छा विगलसुहुमनिरयतिग । तिरिमणुआउ
तिरिनरा तिरिदुगछेवट्ठ सुरनिरया ॥६६॥ विउ-
विसुराहारदुग सुखगइवन्नचउतेअजिणसाय ।
समचउपरघातसदस पणिदिसासुच्च खवगा उ
॥६७॥ तमतमगा उज्जोअ सम्मसुरा मणुअउरल-

दुगवइरं। अपमत्तो अमराउं चउगइ मिच्छा उ सेसाणं ॥ ६८ ॥ थीणतिगं अणमिच्छं मंदरसं संजमुम्मुहो मिच्छो। बिअ तिअकसाय अविरय-देसपमत्तो अरइसोए ॥ ६९ ॥ अपमाइ हारगदुगं दुनिद्दअसुवन्नहासरइकुच्छा। भयमुवघायमपुव्वो अनिअट्टी पुरिससंजलणे ॥ ७० ॥ विग्घावरणे सुहुमो मणुतिरिआ सुहुमविगलतिगआउं। वेउ-व्विछक्कममरा निरया उज्जोअउरलदुगं ॥ ७१ ॥ तिरिदुगनिअंतमतमा जिणमविरयनिरयविणि-गथावरयं। आसुहमायव सम्मो व सायथिरसु-भजसा सिअरा ॥७२॥ तसवन्नतेअचउमगु खग-इदुगपणिदिसासपरघुच्चं। संघयणागिइनपुथी सुभगिअरतिमिच्छचउगइआ ॥ ७३ ॥ चउतेअ-वन्न वेअणिअ-नामणुक्कोस सेसधुवबंधी। घाईण अजहन्नो गोए दुविहो इमो चउहा ॥ ७४ ॥ सेसंमि दुहा इग दुग-णुगाइ जा अभवणंतगुणि-आणू। खंधा उरलोचिअवग्गणा उ तह अगहणं-

तरिश्रा ॥७५॥ एमेव विउव्वाहार तेअभासाणु-
पाणमणकम्मे । सुहुमा कमावगाहो ऊणूणगुल-
असखसो ॥७६॥ इक्किक्कहिआ सिद्धा णतसा
अतरेसु अग्गहणा । सव्वत्थ जहन्नुचिआ निअ-
णतसाहिआ जिट्ठा ॥७७॥ अतिमचउफासदुगध-
पचवन्नरसकम्मखधदल । सव्वजिअणतगुणरस
अणुजुत्तमणतयपएस ॥ ७८ ॥ एगपएसोगाढ
निअसव्वपएसओ गहेइ जिओ । थोवो आउ,
तदसो नामे गोए समो अहिओ ॥७९॥ विग्घा-
वरणे मोहे सव्वोवरि वेअणीइ जेणप्पे । तस्स
फुडत्त न हवइ ठिईविसेसेण सेसाण ॥ ८० ॥
निअजाईलद्धदलिआ-णतसो होइ सव्वघाईण ।
वज्झतीण विभज्जइ सेस सेसाण पइसमय ॥८१॥
सम्मदरसव्वविरई अणवीसजोअ दसखवगे अ ।
मोहसमसतखवगे खीणसजोगिअरगुणसेढी ॥८२॥
गुणसेढी दलरयणा-णुसमयमुदयादसखगुणणाए ।
एयगुणा पुण कमसो असखगुणनिज्जरा जीवा

॥ ८३ ॥ पलिआऽसंखंसमुहू सासणाइअरगुण अन्तरं हस्सं । गुरु मिच्छि बे छसट्ठी इयरगुणे पुग्गलद्धंतो ॥ ८४ ॥ उद्धारअद्धखित्तं पलिअ तिहा समयवाससयसमए । केसवहारो दीवो-दहिआउतसाइपरिमाणं ॥ ८५ ॥ दव्वे खित्ते काले, भावे चउह दुह बायरो सुहुमो । होइ अणंतुस्सप्पिणि परिमाणो पुग्गलपरट्टो ॥८६ । उरलाइसत्तगेणं एगजिओ मुअइ फुसिअ सव्व-अणू । जत्तिअकालि स थूलो दव्वे सुहुमो सगन्न-यरा ॥ ८७ ॥ लोगपएसोसप्पिणी-समया अणु-भागबंधठाणा य । जहतह कममरणेणं-पुट्ठा खित्ताइथूलिअरा ॥ ८८ ॥ अप्पयरपयडिबधी उक्कडजोगी अ सन्निपज्जत्तो । कुणइ पएसुक्कोसं जहन्नयं तस्स वच्चासे ॥८९॥ मिच्छअजयचउ-आऊ वितिगुणविणुमोहिसत्तमिच्छाई । छण्हं सतरस सुहुमो अजया देसा बितिकसाए ॥९०॥ पणअनिअट्टीसुखगइ नराउसुरसुभगतिगविउव्वि-

दुग । समचउरसमसाय वइर मिच्छो व सम्मो वा ॥६१॥ निद्दापयलादुजुअल–भयकुच्छातित्थ सम्मगो सुजई । आहारदुग सेसा उक्कोसपएसगा मिच्छो ॥ ९२ ॥ सुमुणी दुन्नि असन्नी निरयतिगसुराउसुरविउव्विदुग । सम्मो जिण जहन्न सुहुमनिगोआइखणि सेसा ॥९३॥ दसणछगभय-कुच्छा वितितुरिअकसायविग्घनाणाण । मूल-छगेऽणुक्कोसो, चउह दुहा सेसि सव्वत्थ ॥९४॥ सेढिअसखिज्जसे जोगट्ठाणाणि पयडिठिइभेआ । ठिइबधज्झवसाया – णुभागठाणा असखगुणा ॥९५॥ तत्तो कम्मपएसा, अणतगुणिआ तओ रसच्छेआ । जोगा पयडिपएस ठिइअणुभाग, कसायाओ ॥९६॥ चउदसरज्जू लोगो, बुद्धिकओ, सत्तरज्जुमाणघणो । तद्दीहेगपएसा सेढी पयरो अ तव्वग्गो ॥ ९७ ॥ अणदसनपु सित्थी वेअच्छक्क च पुरिसवेअ च । दो दो एगतरिए, सरिसे सरिस उवसमेइ ॥ ९८ ॥ अणमिच्छमीससम्म

तिआउइगबिगलथीणतिगुजोअं । तिरिनिरय थावरदुगं साहारायवअडनपुत्थी ।। ६६ ।। छग-पुमसंजलणा दो,–निद्दाविग्घावरणखए नाणी । देविंदसूरिलिहिअं सयगमिणं आयसरणट्ठा ।।१००।



:: सप्ततिकानामा षष्ठ कर्मग्रन्थ ::

सिद्धपएहिं महत्थं, बंधोदयसंतपयडिठा-णाणं । वुच्छं सुण संखेव नीसंदं दिट्ठिवायस्स ।।१।। कइ बंधंतो वेयई ? कइ कइ वा संतपय-डिठाणाणि । मूलूत्तरपगईसु भगविगप्पा मुणे-अव्वा ।।२।। अट्ठविहसत्तछब्बंधएसु अट्ठेव उदय-संतंसा । एगविहे तिविगप्पो एगविगप्पो अबं-धंमि ।। ३ ।। सत्तट्ठबंध अट्ठुदय संत तेरससु जीवठाणेसु । एगंमि पंच भंगा दो भंगा हुंति

केवलिणो ॥ ४ ॥ अट्ठसु एगविगप्पो छस्सुवि गुणसन्निएसु दुविगप्पो । पत्तेअं पत्तेअं बंधोदय-संतकम्माणं ॥५॥ पंचनवदुन्निअट्ठा-वीसा चउरो तहेव बायाला । दुन्नि अ पंच य भणिया पय-डीओ आणुपुव्वीए ॥६॥ बंधोदयसंतंसा नाणा-वरणंतराइए पंच । बंधोवरमेवि उदय संतंसा हुंति पंचेव ॥ ७ ॥ बंधस्स य संतस्स य पगइट्ठा-णाइ तिण्णि तुल्लाइं । उदयट्ठाणाइं दुवे चउ पणगं दंसणावरणे ॥ ८ ॥ बीआवरणे नवबंधएसु (गे) सु चउपंचउदय नवसंता । छच्चउबंधे चेव चउबंधुदय छलंसा य ॥ ९ ॥ उवरयबंधे चउ पण नवंस चउरुदय छच्चचउसंता । वेअणिआउय-गोए विभज्ज मोहं परं वुच्छं ॥ १० ॥ गोअंमि सत्त भंगा अट्ठ य भंगा हवंति वेअणिए । पण नव नव पण भंगा आउचउक्के वि कमसो उ ॥ ११ ॥ बावीस इक्कवीसा सत्तरस तेरसेव नव पंच । चउ तिग दुग य इक्कं बंधट्ठाणाणि ।

मोहस्स ॥१२॥ एगं व दो व चउरो एत्तो एगा-
हिआ दसुक्कोसा। ओहेण मोहणिज्जे उदयट्ठा-
णाणि नव हुंति ॥ १३ ॥ अट्ठ य सत्त य छ
च्चउ तिग दुग एगाहिया भवे वीसा। तेरस
बारिक्कारस इत्तो पंचाइ एगूणा ॥१४॥ संतस्स
पयडिठाणाणि ताणि मोहस्स हुंति पन्नरस।
बंधोदयसंते पुण भंगविगप्पा बहू जाण ॥ १५ ॥
छब्बावीसे चउ इगवीसे सत्तरस तेरसे दो दो।
नवबंधगे वि दुण्णि उ इक्किक्कमओ परं भंगा
॥ १६ ॥ दस बावीसे नव इगवीसे सत्ताइ उदय-
कम्मंसा। छाई नव सत्तरसे तेरे पंचाइ अट्ठेव
॥१७। चत्तारिआइ नवबंधएसु उक्कोस सत्तमुद-
यंसा। पंचविहबंधगे पुण उदओ दुण्हं मुणेअव्वो
॥ १८ ॥ इत्तो चउबंधाइ इक्किक्कुदया हवंति
सव्वेवि। बंधोवरमे वि तहा उदयाभावे वि वा
हुज्जा ॥१९॥ इक्कग छक्किक्कारस दस सत्त चउक्क
इक्कगं चेव। एए चउवीसगया बार दुगिक्कंमि

छक्कारा ॥ २० ॥ (पाठांतर-चउवीसदुगिकिमिक्कारा, एतन्मतांतर) नवतेसीइसएहिं उदयविगप्पेहिं मोहिआ जीवा । अउणुत्तरिसीआला पयविदसएहिं विन्नेआ ॥ २१ ॥ नवपंचाणउअसए उदयविगप्पेहिं मोहिआ जीवा । अउणुत्तरि एगुत्तरि पयविंदसएहिं विन्नेआ ॥ २२ ॥ तिन्नेव य बावीसे इगवीसे अट्ठवीस सत्तरसे । छच्चेव तेरनवबंध एसु पंचेव ठाणाणि ॥ २३ ॥ पंचविहचउविहेसु छछक्क सेसेसु जाण पंचेव । पत्तेअं पत्तेअं चत्तारि अ बंधवुच्छेए ॥ २४ ॥ दसनवपन्नरसाइं बंधोदयसंतपयडिठाणाणि । भणिआणि मोहणिज्जे इत्तो नाम परं वुच्छं ॥२५॥ तेवीस पण्णवीसा छव्वीसा अट्ठवीस गुणतीसा । तीसेगतीसमेगं बंधट्ठाणाणि नामस्स ॥ २६ ॥ चउपणवीसा सोलस नव बाणउईसया य अडयाला । एयालुत्तर छायाल सया इक्किक्क बंधविहि ॥ २७ ॥ वीसिगवीसा चउवी-सगा उ

एगाहिम्रा य इगतीसा । उदयट्ठाणाणि भवे नव अट्ठ य हुंति नामस्स ।। २८ ।। इक विम्रालिक्का रस तित्तीसा छस्सयाणि तित्तीसा । वारससत्तरससयाणा–हिगाणिविपंचसीईहिं ।।२६।। अउणत्तीसिक्कारस सयाणिाहिम्र सत्तरपंचसट्ठीहिं । इक्किक्कगं च वीसा दट्ठुदयंतेसु उदयविही ।३०। ति दुनउई गुणनउई, अडसी छलसी असीइ गुणसीई । अट्ठयछप्पन्नत्तरि नव अट्ठ य नामसंताणि ।। ३१ ।। अट्ठ य बारस बारस बंधोदयसतपयडिठाणाणि । ओहेणाएसेण य जत्थ जहासंभवं विभजे ।। ३२ ।। नवपणगोदयसंता तेवीसे पन्नवीस छव्वीसे । अट्ठ चउरट्ठवीसे नव सगि गुणतीस तीसमि ।। ३३ ।। एगेगमेगतीसे, एगे एगुदय अट्ठ संतंमि । उवरयबंधे दस दस, वेअगसतंमि ठाणाणि ।। ३४ ।। तिविगप्पपगइठाणेहिं जीवगुणसन्निएसु ठाणेसु । भंगा पउंजियव्वा जत्थ जहा संभवो भवइ ।। ३५ ।। तेरससु

जीवसमेवएंसु, नाणतरायतिविगप्पो । इक्कमि
तिदुविगप्पो करण पइ इत्य अविगप्पो ॥३६॥
तेरे नव चउपणग नव सतेगमि भगमिक्कारा ।
वेअणिआउयगोए विभज मोहं पर वुच्छं ॥३७॥
पज्जगसन्निअरे अट्ठ चउक्क च वेअणियभगा ।
सत्त तिग च गोए पत्तेअं जीवठाणेसु ॥३८॥
पज्जताऽपज्जतग समणे पज्जत्तअमण सेसेसु ।
अट्ठावीस दसग नवगं पणग च आउस्स ॥३९॥
अट्ठसु पचसु एगे एग दुग दस य मोहबधगए ।
तिग चउ नव उदयगए तिग तिग पन्नरस सतमि
॥ ४० ॥ पण दुग पणग पण चउ पणग पणगा
हवंति तिन्नेव पण छप्पणग छच्छ पणग
अट्ठट्ठ दसग ति ॥ ४१ ॥ सत्तेव अपज्जत्ता
सामी सुहुमा य बायरा चेव । विगलिदिआउ
तिन्निउ तह य असन्नि अ सन्नि अ ॥ ४२ ॥
नाणतराय तिविहमवि दससु दो हुंति दोसु
ठाणेसु । मिच्छासणे बीए नव चउ पण नव य

संतंसा ।। ४३ ।। मिस्साइ नियट्टिओ छ च्चउ पण नव य संतकम्मंसा। चउबंध तिगे चउ पण नवंस दुसु जुअल छस्संता ।। ४४ ।। उवसंते चउ पण नव खीणे चउरुदय छच्च चउ संता । वेअणि-आउअ गोए विभज्ज मोहं परम वुच्छं ।।४५।। चउ छस्सु दुन्नि सत्तसु एगे चउगुणिसु वेअणि-अभंगा । गोए पण चऊ दो तिसु एगट्ठसु दुन्नि इक्कमि ।।४६।। अट्ठच्छाहिगवीसा सोलस वीसं च बारस छ दोसु। दो चउसु तीसु इक्कं मिच्छा-इसु आउए भंगा ।। ४७ ।। गुणठाणएसु अट्ठसु इक्किक्कं मोहबंधठाणं तु । पच अनिअट्टिठाणे बंधोवरमो परं तत्तो ।। ४८ ।। सत्ताइ दस उ मिच्छे सासायणमीसए नवुक्कोसा । छाई नव उ अविरए देसे पंचाइ अट्ठेव ।। ४९ ।। विरए खओवममिए चउराई सत्त छच्च पुव्वमि । अणिअट्टिबायरे पुण इक्को व दुवे व उदयसा ।। ५० ।। एगं सुहुमसरागो वेएइ अवेअगा भवे

सेसा। भगाए च पमाण पुव्वुद्दिट्ठेण नायव्व ॥५१॥ इक्क छडिक्कारिक्का रसेव इक्कारसेव नव तिन्नि। एए चउवीसगया बार दुगे पच इक्कमि ॥५२॥ बारसपणसट्ठिसया उदयविगप्पेहिं मोहिआ जीवा। चुलसीई सत्तुत्तरि पयविदसएहिं विन्नेआ ॥ ५३ ॥ अट्ठग चउ चउ चउरट्ठगा य चउरो अ हुति चउवीसा मिच्छाइअपुव्वता बारस पणग च अनिअट्टी ॥ ५४ ॥ जोगोवओगलेसा-इएहिं गुणिआ हवति कायव्वा जे जत्थ गुणट्ठाणे हवति ते तत्थ गुणकारा ॥ ५५ ॥ अट्ठट्ठी बत्तीस बत्तीस सट्ठिमेव बावन्ना। चोआल दोसु बीसा विअ मिच्छमाइसु सामन्न ॥ ५६ ॥ तिन्नेगे एगेग तिग मीसे पच चउसु तिग पुव्वे। इक्कार बायरमि उ सुहुमे चउ तिन्नि उवसते ॥ ५७ ॥ छन्नव छक्क तिग सत्त दुग दुग तिग दुग ति अट्ठ चऊ। दुग छचउ दुग पण चउ चउ दुग चउ पणग एग चऊ

॥५८॥ एगेगमट्ठ एगे-गमट्ठ छउमत्थकेवलि-
जिणाणं । एग चऊ एग चऊ अट्ठ चऊ दु छक्क-
मुदयंसा ॥ ५९ ॥ चऊ पणवीसा सोलस नव
चत्ताला सया य बाणउई । बत्तीसुत्तर छायाल-
सया मिच्छस्स बंधविही ॥६०॥ अट्ठ सया चउ-
सट्ठी बत्तीससयाइं सासणे भेआ अट्ठावीसाईसुं
सव्वाणऽट्ठहिगछन्नउई ॥ ६१ ॥ इगचत्तिगार
बत्तीस छासय इगतीसिगारनवनउई; । सतरि-
गसि गुतीसचउद, इगारचउसट्ठि मिच्छुदया ।६२।
बत्तीस दुन्नि अट्ठ य बासीइसयायपंच नव
उदया । बारहिआ तेवीसा बावन्निक्कारस सया
य ॥ ६३ ॥ दो छक्कट्ठ चउक्कं पण नव इक्कार
छक्कगं उदया । नेरइआइसु सत्ता ति पंच इक्का-
रस चउक्कं ॥६४॥ इग विगलिंदिअ सगले पण
पंच य अट्ठ बंधठाणाणि । पण छक्किक्कारुदया
पण पण बारस य संताणि ॥ ६५ ॥ इअ कम्म-
पगइठाणाणि, सुट्ठु बंधुदयसंतकम्माणं । गइ-

गाइएहिं अट्ठसु, चउप्पयारेण नेयाणि ॥६६॥
उदयस्सुदीरणाए सामित्ताओ न विज्जइ विसेसो ।
मुत्तण य इगयाल सेसाण सव्वपयडीण ॥६७॥
नाणंतरायदसग दसणनव वेअणिज्जमिच्छत्त ।
सम्मत्त लोभ वेआ-उआणि नवनाम उच्च च
॥ ६८ ॥ तित्थयराहारगविरहिआउ अज्जेइ
सव्वपयडीओ, । मिच्छत्तवेअगो सा-सणोवि
गुणवीससेसाओ ॥ ६९ ॥ छायालसेस मीसो,
अविरयसम्मो तिआलपरिसेसा । तेवन्न देस-
विरिओ, विरओ सगवन्नसेसाओ ।७०॥ इगुण-
ट्ठिमप्पमत्तो बधइ देवाउअस्स इअरोवि । अट्ठा-
वन्नमपुव्वो छप्पन्न वावि छव्वीस ॥ ७१ ॥
बावीसा एगूण बधइ अट्ठारसतमनिअट्टी । सत-
रस सुहुमसरागो सायममोहो सजोगुत्ति ।७२ ।
एसो उ बधसामित्त-ओहो गइआइएसु तहेव ।
ओहाओ साहिज्जइ जत्थ जहा पगइसब्भावो ।७३।
तित्थयरदेवनिरया-उअ च तिसु तिसु गईसु

वोधव्वं । अवसेसा पयडीओ हवंति सव्वासु वि गईसु ॥ ७४ ॥ पढमकसायचउक्कं दंसणतिग सत्तगा वि उवसंता । अविरयसम्मत्ताओ, जाव निअट्टित्ति नायव्वा ॥७५॥ सत्तट्ठ नव य पनरस सोलस अट्ठारसेव गुणवीसा । एगाहि दु चउवीसा पणवीसा वायरे जाण ॥ ७६ ॥ सत्तावीसं सुहुमे अट्ठावीसं च मोहपयडिओ । उवसंतवीअराए उवसंता हुंति नायव्वा ॥७७॥ पढमकसायचउक्कं, इत्तो मिच्छत्तमीससम्मत्तं । अविरयसम्मे देसे पमत्ति अपमत्ति खीअंति ॥ ७८ ॥ अनिअट्टिवायरे थीण गिद्धितिगनिरयतिरिअनामाओ । संखिज्जइमे सेसे तप्पाउग्गाओ खीअंति ॥७९॥ इत्तो हणइ कसाय-ट्ठगंपि पच्छा नपुंसगं इत्थीं । तो नोकसायछक्कं छुहइ संजलणकोहंमि ॥ ८० ॥ पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च छुहइ मायाए । मायं च छुहइ लोहे लोहं सुहुमपि तो हणइ ॥ ८१ ॥ खीणकसायदुचरिमे

निद्द-पयल च हणइ छउमत्थो । आवरणमत-राए, छउमत्थो चरमसमयम्मि ॥ ८२ ॥ देवगइ-सहगयाओ, दुचरमसमयभविअम्मि खीअंति । सविवागेअरनामा, निअगोअपि तत्थेव ॥८३॥ अन्नयर वेयणीअ मणुआउमुचगोअनवनामे । वेएइ अजोगिजिणो, उक्कोसजहन्नमिक्कारा ॥८४॥ मणुअगइजाइतसबायर च 'पज्जत्तसुभग-माइज्ज । जसकित्ती तित्थयर नामस्स हवंति नव एआ ॥ ८५ ॥ तच्चाणुपुव्विसहिआ तेरस भवसिद्धिअस्स चरमम्मि । सतसगमुक्कोस जहन्नय बारस हवंति ॥८६॥ मणुअगइसहगयाओ भव-खित्तविवाग जिअविवागाओ । वेअणिअन्नयरुच्च चरमसमयम्मि खीअंति ॥ ८७ ॥ अहसुइअसयल-जगसिहर-मरुअनिरुवमसहावसिद्धिसुह । अनिह-

णमव्वाबाह तिरयणसारं अणुहवंति ॥ ८८ ॥
दुरहिगम-निउण-परमत्थ रुइरबहुभंगदिट्ठिवा-
याओ । अत्था अणुसरिअव्वा बंधोदयसंतकम्माणं
॥८९॥ जो जत्थ अपडिपुन्नो अत्थो अप्पागमेण
वद्धोत्ति । तं खमिऊण वहुसुआ पूरेऊणं परिक-
हंतु ॥९०॥ गाहग्गं सयरीए, चदमहत्तरमयाणु-
सारीए । टीगाइ निअमिआणं एगूणा होइ नउ-
ईओ ॥ ९१ ॥



:: श्री बृहत् संग्रहणी ::

नमिउ अरिहंताइ, ठिई भवणो-गाहणा य पत्तेय । सुर-नारयाण वुच्छ, नर तिरियाण विणा भवण ॥ १ ॥ उववाय-चवण-विरहं, सुख इग-समइय गमा-गमणे । दसवास सहस्साई, भवणवईण जहन्न ठिइ ॥ २ ॥ चमर बलिसार-महिअ, तदेवीण तु तिन्नि चत्तारि । पलियाइ सड्ढाइ, सेसाण नवनिकायण ॥ ३ ॥ दाहिण दिवड्ढ पलिय, उत्तरओ हुन्नि दुन्नि देसूणा । तदेवी-मद्ध पलिय, देसूण आउ-मुक्कोस ॥ ४ ॥ वतरियाण जहन्न, दस वास सहस्स पलिय-मुक्कोस । देवीण पलियद्ध, पलिय अहिय ससि-रवीण ॥ ५ ॥ लक्खेण सहस्सेण य, वासाण गहाण पलिय-मेसिं । ठिइ अद्ध देवीण, कमेण नक्खत्त ताराण ॥ ६ ॥ पलियद्ध चउभागो, चउ अड भागाहिआउ देवीण । चउजुअले चउ-

भागो, जहन्न-मऽभाग पंचमअे ।। ७ ।। दो साहि सत्त साहिय, दस चउदस सत्तर अयर जा सुक्को । इक्किक्क-महिय मित्तो, जा इगतीसुवरि गेविज्जे ।। ८ ।। तित्तीस-णुत्तरेसु, सोहम्माईसु इमा ठिइ जिट्ठा । सोहम्मे इसाणे, जहन्न ठिइ पलिय महियं च ।।९।। दो साहि सत्त दस चउदस, सत्तर अयराइ जा सहस्सारो तप्परओ इक्किक्क, अहियं जाणुत्तर चउक्के ।। १० ।। इगतीस सागराइं, सव्वट्टे पूण जहन्न ठिइ नत्थि । परिग्गहियाणि-यराणि य, सोहम्मी-साण देवीणं ।। ११ ।। पलियं अहियं च कमा, ठिइ जहन्नाइओ य उक्कोसा । पलियाइं सत्त पन्नास, तह य नव पच-वन्ना य ।।१२।। पण छ चउ चउ अट्ठ य, कमेण पत्तेय-मग्गमहिसीओ । असुर नागाइ वंतर, जोइस कप्प दुगिंदाणं ।। १३ ।। दुसु तेरस दुसु बारस, छ पण चउ चउ दुगे दुगे य चउ । गेविज्ज-णुत्तरे दस, बिसट्ठी पयरा उवरि लोए ।।१४।।

सोहमुक्कोस ठिइ, नियपयर विहत्त इच्छ संगु-
णिश्रो । पयरुक्कोस ठिइश्रो, सव्वत्थ जहन्नश्रो
पलिय ॥१५॥ सुरकप्पठिइ विसेसो, सग पयर
विहत्त इच्छ सगुणिश्रो । हिठिल्ल ठिइ सहिश्रो,
इच्छिय पयरमि उक्कोसा ॥१६॥ कप्पस्स अंत-
पयरे, निय कप्प-वडिंसया विमाणाश्रो । इद
निवासा तेसिं, चउदिसि लोगपालाण ॥१७॥
सोम जमाण सतिभाग, पलिय वरुणस्स दुन्नि
देसूणा । वेसमणे दो पलिया, अेस ठिइ लोग-
पालाण ॥ १८ ॥ असुरा नाग सुवन्ना, विज्जु
अग्गी य दीव उदही अ । दिसि पवण थणिय
दसविह, भवणवइतेसु दुदु इदा ॥ १९ ॥ चमरे
बली अ धरणे, भूयाणंदे य वेणुदेवे य । तत्तो य
वेणुदाली, हरिकंते हरिस्सहे चेव ॥२०॥ अग्गि-
सिह अग्गिमाणव, पुन्न विसिट्ठे तहेव जलकंते ।
जलपह तह अमिअगइ, मियवाहणदाहिणुत्तरश्रो
॥२१॥ वेलंबे य पभंजण, घोस महाघोस ऐसि-

मन्नयरो । जंबुदीवं छत्तं, मेरुं दंडं पहु काउं ।। २२ ।। चउतीसा चउचत्ता, अट्ठतीसा य चत्त पंचण्हं । पन्ना चत्ता कमसो, लक्खा भवणाण दाहिणओ ।। २३ ।। चउ चउ लक्ख विहूणा, तावइया चेव उत्तर दिसाए । सव्वेवि सत्तकोडी, बावत्तरि हुंति लक्खा य ।।२४।। रयणाए हिट्ठु-वरिं, जोयण-सहस्सं विमुत्तुं ते भवणा । जंबुदीव समा तह, संख-मसंखिज्ज वित्थारा ।। २५ ।। चुडामणि फणिगरुडे, वज्जे तह कलस सीह अस्से य । गय मयर वद्धमाणे, असुराईणं मुणसु चिंधे ।। २६ ।। असुरा काला नागु दहि, पंडुरा तह सुवन्न दिसि थणिया । कणगाभ विज्जु सिहि दीव, अरुणा वाउ पियंगु निभा ।। २७ ।। असु-राण वत्थ रत्ता, नागो-दहि विज्जु दीव सिहि नीला । दिसि थणिय सुवन्नाणं, धवला वाउण संझ-रुइ ।। २८ ।। चउ सट्ठि सट्ठि असुरे, छच्च सहस्साइ धरण माईणं । सामाणिया इमेसिं,

चउग्गुणा आयरक्खा य ॥२६॥ रयणाए पढम जोयण, सहस्से हिट्ठुवरिं सय सय विहूणे । वंतरियाणं रम्मा, भोमा नयरा असंखिज्जा ॥ ३० ॥ बाहिं वट्टा अंतो, चउरंसा अहो य कण्णिआयारा । भवणवईण तह वंतराण, इंद भवणाओ नायव्वा ॥ ३१॥ तहिं देवा वंतरिआ, वर तरुणी गीय वाइय सेण । निच्च सुहिया पमुइया, गय पिकाल न याणंति ॥ ३२ ॥ ते जंबुदीव भारह, विदेह सम गुरु जहन्न मज्झिमगा । वंतर पुण अट्ठविहा, पिसाय भूया तहा जक्खा ॥३३॥ रक्खस किंनर किंपुरिसा, महोरगा अट्ठमा य गंधव्वा । दाहिणुत्तर भेया, सोलस तेसि इमे इंदा ॥३४॥ काले य महाकाले सुरुव पडिरुव पुन्नभद्दे य । तह चेव माणिभद्दे, भीमे य तहा महाभीमे ॥३५॥ किनर किंपुरिसे सप्पुरिसा, महापुरिस तहय अइकाये । महाकाय गीयरइ, गीयजसे दुन्नि दुन्नि कमा ॥३६॥ चिध

कलंब सुलसे, वड खट्टंगे असोग चपयए । नागे तुंवरु अ भूए, खट्टंग विवज्जिया रुक्खा ।।३७।। जक्ख पिसाय महोरग, गंधव्व साम किनरा नीला । रक्खस किंपुरिसा विय, धवला भूया पुणो काला ।।३८।। अणपन्नी पणपन्नी, इसिवाइ भूयवाइए चेव । कंदीय महाकंदी, कोहंडे चेव पयंगे य ।। ३६ ।। इय पढम जोयण सए, रयणाए अट्ठ वंतरा अवरे । तेसु इह सोलसिंदा, रुयग अहो दाहिणुत्तरओ ।। ४० ।। संनिहिए सामाणे, धाइ विहाए इसीय इसीवाले । इसर महेसरे विय, हवइ सुवच्छे विसाले य ।। ४१ ।। हासे हासरइ विय, सेए य भवे तहा महासेए । पयंगे पयंगवइ विय, सोलस इंदाण नामाइं ।४२। सामाणियाण चउरो, सहस सोलस य आयरक्खाणं । पत्तेयं सव्वेसिं, वंतरवइ ससि रवीणं च ।। ४३ ।। इंद सम ताय तीसा, परिसतिया रक्ख लोगपाला य । अणिय पइन्ना अभिओगा,

किव्विस दस भवण वेमाणी ॥४४॥ गधव्व नट्ट हय गय, रह भड अणियाणि सव्व इदाण। वेमाणियाण वसहा, महिसा य अहोनिवासीण ॥४५॥ तित्तीस तायतीसा, परिसतिया लोगपाल चत्तारि। अणिआणि सत्त सत्तय, अणियाहिव सव्वइदाण ॥ ४६ ॥ नवर वतर जोइस, इदाण न हुन्ति लोगपालाओ। तायत्तीस-भिहाणा, तियसावि य तेसि न हु हुंति ॥ ४७ ॥ समभूत लाओ अट्ठहि, दसूण जोयण सएहिं आरब्भ। उवरिदसुत्तर जोयण, सयमि चिट्ठन्ति जोइसिया ॥ ४८ ॥ तत्थ रवीदस जोयण असीइ तदुवरि ससी य रिक्खेसु। अह भरणिसाइ उवरि, बहि मूलो भितरे अभिइ ॥ ४६ ॥ तार रवीचद रिक्खा, बहु मुक्का जीव मगल सणिया। सग सय नउय दस असिइ, चउ चउ कमसो तिया चउसु ।५०॥ इक्कारस जोयण सय, इगवीसि-क्कार साहिया कमसो। मेरु अलोगा-बाह,

जोइस चक्कं चरइ ठाइ ।। ५१ ।। अद्ध कविट्ठा-
गारा, फ़लिहमया रम्म जोइस-विमाणा । वंतर
नयरे हितो, संखिज्ज गुणा इमे हुन्ति ।।५२ । नाइं
विमाणाइं पुण, सव्वाइं हुन्ति फालिय-मयाइं ।
दग-फालिह मया पुण, लवणे जे जोइस विमाणा
।। ५३ ।। जोयण-गसट्ठि भागा, छप्पन्न अऽयाल
गाउ दु इग-द्ध । चंदाइ विमाणा-याम, वित्थडा
अद्ध मुच्चत्तं ।। ५४ ।। पणयाल लक्ख जोयण,
नर-खित्तं तत्थिमे सया भमिरा । नरखित्ताउ
वहि पुण, अद्ध-पमाणाठिआ निच्चं ।। ५५ ।।
ससि रवि गह नक्खत्ता, ताराओ हुंति जहुत्तरं
सिग्घा । विवरीया उ महड्ढिअ, विमाण-वहगा
कमेणे-सि ।। ५६ ।। सोलस सोलस अड चउ, दो
सुर सहस्सा पुरओ दाहिणओ । पच्छिम उत्तर
सीहा, हत्थी वसहा हया कमसो । ५७ ।। गह
अट्ठासी नक्खत्त, अडवीसं तार कोडि-कोडीणं ।
छासट्ठि सहस्स नवसय, पणहुत्तरि ऐग ससि

सिन्न ॥५८॥ कोडा कोडी सन्न तर, तु मन्नन्ति खित्त थोवतया । केइ अन्ने चर्सें, -हगुल-माणेण ताराण ॥ ५६ ॥ किण्ह राहु विमाण, निच्च चदेण होइ अविरहिय । चउरगुल-मप्पत्त, हिट्ठा चदस्स त चरेई ॥ ६० ॥ तारस्स य तारस्स य, जबुद्दीवमि अंतर गुरुय । बारस जोयण सहस्सा, दुन्नि सया चेव बीयाला ॥६१॥ निसढो य निलवतो, चत्तारि सय उच्च पच सय कूडा । अद्ध उवरि रिक्खा, चरति उभय-टु बाहाए ॥६२॥ छावट्ठा दुन्नि सया, जहन्न-मेय तु होइ वाघाए । निव्वाघाए गुरु लहु, दो गाउ य घणु सया पंच ॥६३॥ माणुस-नगाओ बाहिं, चदा सूरस्स सूर चदस्स । जोयण सहस्स पन्नास, एगणगा अंतर दिट्ठ ॥ ६४ ॥ सांस ससि रवि रवि साहिय, जोयण लक्खेण अतर होई । रवि अतरिया ससिणो, ससि अतरिया रवि दित्ता ॥ ६५ ॥ बहिया उ माणुसुत्तरओ, चदासूरा अवट्ठि-

उज्जोया । चंदा अभिइ-जुत्ता, सूरा पुण हुन्ति पुस्सेहिं ॥६६॥ उद्धार सागर दुगे, सड्ढे समएहिं तुल्ल दीवुदहि । दुगुणा दुगण पवित्थर, वलयागारा पढम वज्जं ॥ ६७ ॥ पढमो जोयण लक्खं, वट्टो तं वेढिउं ठिआ सेसा । पढमो जंबुदीवो, सयंभूरमणोदही चरमो ॥ ६८ ॥ जंबू घायइ पुक्खर, वारुणीवर खीर घय खोय नंदीसरा । अरुण-रुणुवाय कुंडल, संख रुयग भुयग कुस कुंचा ॥६९॥ पढमे लवणो जलही, बीए कालोय पुक्खराइसु । दीवेसु हुन्ति जलही, दीव-समाणेहिं नामेहिं ॥७०॥ कुरु मंदर आवासा, कूडा नवखत्त चंद सूरा य । अन्नेवि एवमाइ, पसत्थ-वत्थूण जे नामा ॥७१॥ आभरण वत्थ गधे, उप्पलतिलए य पउम निहि रयणे । वासहर दह नइओ, विजया वक्खार कप्पिदा ॥७२॥ तन्नामा दीवुदही, तिपडोयायार हुन्ति अरुणाइ । जंबू-लवणाइया, पत्तेयं ते असखिज्जा ॥७३॥ ताणं-तिम

सूखरा-वभास जलही परन्तु इकिक्का । देवे नागे जक्खे, भूए य सयभूरमणे य ॥७४॥ वारुणीवर खीखरो, घयवर लवणो य हुन्ति, भिन्नरसा । कालोय पुक्खरो-दहि, सयभूरमणो य उदगरसा ॥ ७५ ॥ इक्खुरस सेसजलही, लवणे कालोए चरिमिबहुमच्छा । पण सग दस जोयण सय, तणु कमा थोव सेसेसु ॥७६॥ दो ससि दो रवि पढमे, दुगुणा लवणमि घायइ सडे । बारस ससि बारस रवि तप्पभिइ निदिट्ठा ससिरविणो ॥७७॥ तिगुणा पुव्विल्ल जुया, अणतरा - णतरमि खित्तमि । कालोए बायाला, बिसत्तरी पुक्खर-द्ध मि ॥७८॥ दो ससि दो रविपती, ऐगतरिया छसट्ठि सखाया । मेरु पयाहिणता, माणुस-खित्ते परिअडन्ति । ७६॥ एव गहाइणो वि हु, नवर धुव पासवत्तिणो तारा । त चिय पयाहि-णता, तत्थेव सया परिभमन्ति ॥ ८० ॥ पन्नरस चुलसीइ सय इह ससि-रवि मडलाइ तक्खित्ता ।

जोयण पण-सय दसहिय, भागा अडयाल इग-
सट्ठा ।। ८१ ।। तीसि-गसट्ठा चउरो, इग इग-
सट्ठस्स सत्त भइयस्स । पणतीसं च दु जोयण,
ससि-रविणो मंडलं-तरयं ।। ८२ । मडल दसगं
लवणे, पणगं निसढंमि होइ चंदस्स । मंडल-
अंतर-माणं, जाण पमाणं पुरा कहियं ।।८३।।
पणसट्ठी निसढंमिय, दुन्नि य बाहा दुजोयणं-
तरिया । इगुणवीसं तु सयं, सूरस्स य मंडला
लवणे ।।८४।। ससि रविणो लवणंमिय, जोयण
सय तिन्नि तीस अहियाइं । असीयं तु जोयण
सयं, जंबुदीवंमि पविसन्ति ।। ८५ ।। गहरिक्ख
तार संखं, जत्थे-च्छसि नाउ मुदहि-दीवे वा ।
तस्ससिहि एग-ससिणो, गुण मखं होइ सव्वग्गं
।। ८६ ।। बत्तीस-ट्ठावीसा, बारस अड चउ
विमाण लक्खाइं । पन्नास चत्त छ सहस्स, कमेण
सोहम्माइसु ।।८७।। दुसु सय चउ दुसु सय-तिग,
मिगार सहियं सयं तिगेहिट्ठा । मज्झे सत्तुत्तर

सय, मुवरि तिगे सय-मुवरि पच । ८८ ।। चुलसीइ लक्ख सत्ताणवइ, सहस्सा विमाण तेवीस । सव्वग्ग मुड्ढ लोगंमि, इदया विसट्ठि पयरेसु ।।८९।। चउ दिसि चउ पतिम्रो, वासट्ठि विमाणिया पढमा पयरे । उवरि इक्किक्क हीणा, अणुत्तरे जाव इक्किक्क ।। ९० ।। इदय वट्टा पतीसु, तो कमसो तस चउरसा वट्टा । विविहा पुप्फवकिन्ना, तयतरे मुत्तु पुव्व दिसि ।।९१ । एग देवे दीवे दुवे य नागोदहीसु बोधव्वे । चत्तारि जक्खदीवे, भूय-समुद्दे सु अट्ठेव ।।९२।। सोलस सयभूरमणे, दीवेसु पइट्ठिया य सुरभवणा । इगतीस च विमाणा, सयभूरमणे समुद्दे य ।।९३।। वट्ट वट्टस्सुवरि, तस तसस्स उवरिम होई । चउरसे चउरस, उड्ढ तु विमाण सेढीश्रो ।।९४।। सव्वे वट्ट-विमाणा, एग दुवारा हवन्ति नायव्वा । तिन्नि य तस विमाणे, चत्तारि य हुन्ति चउरसे ।।९५।। पागार-परिक्खित्ता, वट्टविमाणा हवन्ति

सव्वेवि । चउरंस विमाणाणं, चउर्दिसि वेइया होइ ॥ ९६ ॥ जत्तो वट्ट विमाणा, तत्तो तंसस्स वेइया होइ । पागारो बोधव्वो, अवसेसेसु तु पासेसु ॥ ९७ ॥ आवलिय-विमाणाणं, अंतरं नियमसो असखिज्जं । संखिज्ज-मसंखिज्जं, भणियं पुप्फावकिन्नाणं ॥ ९८ ॥ अच्चंत-सुरहि गंधा, फासे नवणीय-मउय सुहफासा । निच्चुज्जेया रम्मा, सयं पहा ते विरायंति ॥९९॥ जे दक्खिणेण इंदा, दाहिणओ आवली मुणेयव्वा जे पुण उत्तर इंदा, उत्तरओ आवली मुणे तेसिं ॥१००॥ पुव्वेण पच्छिमेण य, सामन्ना आवली मुणेयव्वा । जे पुण वट्ट विमाणा, मज्झिल्ला दाहिणल्लाणं ॥१०१॥ पुव्वेण पच्छिमेण य, जे वट्टा ते वि दाहिणिल्लस्स । तंस चउरंसगा पुण, सामन्ना हुन्ति दुण्हं पि ॥१०२॥ पढमं-तिम पयरावलि, विमाण मुह भूमि तस्समासद्धं । पयर गुण-मिटठ कप्पे, सव्वग्गं पुप्फकिन्नियरे

॥ १०३ ॥ इगदिसि-पति विमाणा, तिविभत्ता तच चउरसा वट्टा । तसेसु सेस-मेग, खित्र सेस दुगस्स इक्किक्क ॥१०४॥ तसेसु चउरसेसु य, तो रासि तिगपि चउगुण काउ । वट्टेसु इदय खिव, पयर घण मीलिय कप्पे ॥१०५॥ सत्त-सय सत्तवीसा, चत्तारि-सया य हुन्ति चउनउया । चत्तारि य छासीया, सोहम्मे हुन्ति वट्टाइ ॥१०६। एमेव य ईसाणे नवर वट्टाण होइ नाणत्त । दो सय अट्ठतीसा, सेसा जह चेव सोहम्मे ॥१०७। पुव्वा-वरा छ' लसा, तसा पुण दाहिणुत्तरा बज्झ । अभिन्तर चउरसा, सव्वा-विय कण्ह-राइओ ॥१०८॥ चुलसी असिइ बावत्तरि, सत्तरि सट्ठीय पन्न चत्ताला । तुल सुर तीस वीसा, दस सहस्स आयरक्ख चउगुणिया ॥१०६॥ कप्पेसु य मिय महिसो, वराह सीहा य छगल सालूरा । हय गय भुयग खग्गी, वसहा विडिमाइ चिधाइ ॥११०॥ दुसु तिसु तिसु कप्पेसु, घणुदहि घण-

वाय तदुभयं च कमा। सुर-भवरण-पइट्ठारणं, आगास पइट्ठिया उवरिं ॥१११॥ सत्तावीस सयाइं, पुढवि-पिंडो विमारण-उच्चत्तं। पंच सया कप्प दुगे, पढमे तत्तो य इक्किक्कं ॥११२॥ हायइ पुढवीसु सयं, वड्ढइ भवणेसु दु दु दु कप्पेसु। चउगे नवगे परणगे, तहेव जा-णुत्तरेसु भवे ॥ ११३ ॥ इगवीस सया पुढवी, विमारण-मिक्कारसेव य सयाइं। बत्तीस जोयरण सया, मिलिया व्वत्थ नायव्वा ॥११४॥ परण चउ ति दु वन्न विमाण, सधय दुसु दुसु य जा सहस्सारो। उवरि सिय भवरणवंतर, जोइसियारणं विविह वन्ना ॥११५॥ रविरणो उदय-त्थंतर, चउ नवइ सहस्सपण सय छवीसा। बायाल सट्ठि भागा, ककड-संकंति दियहंमि ॥११६॥ एयंमि पुरणो गुणिए, ति पंच सग नव य होइ कम मारणं। ति-गुणंमि य दो लक्खा, तेसीइ सहस्स पंच सया ॥११७॥ असीइ छ सट्ठि भागा, जोयरण चउ

लक्ख बिसत्तरि सहस्सा । छच्च सया तेत्तीसा, तीस कला पच गुणियमि ॥ ११८ ॥ सत्त गुणे छ लक्खा, इगसट्ठि सहस्स छ सय छासीया । चउपन्न कला तह नव, गुणमि अडलक्ख सड्ढाओ ॥ ११६ ॥ सत्तसया चत्ताला, अट्ठारस कला य इय कमाचउरो । चडा चवला जयणा, वेगा य तहा गइ चउरो ॥१२०॥ इत्थ य गइ चउत्थि, जयणयरि नाम केइ मन्नति । एहि कमेहिं-मिमाहि, गइ हि चउरो सुरा कमसो ॥१२१॥ विक्खभ आयाम, परिहि अब्भितर च वाहिरिय । जुगव मिणति छम्मास, जाव न तहावि ते पाय ॥१२२॥ पावति विमाणाण, केसि पिहु अहव तिगुणयाइए । कम चउगे पत्तेय, चडाइ गइ उ जोइज्जा ॥ १२३ ॥ तिगुणेण कप्प चउगे, पच गुणेण तु अट्ठसु मुणिज्जा । गेविज्जे सत्त गुणेण, नव गुणे-णुत्तर चउक्के ॥१२४॥ पढम पयरमि पढमे, कप्पे उडु नाम इदय विमाण । पणयाल

लक्ख जोयण, लक्खं सव्वुवरि सव्वट्ठं ॥१२५॥ उडु चंद रयय वग्गु, वीरिय वरुणे तहेव आणंदे। बंभे कंचण रुइ रे, चंद अरुणे य वरुणे य ।१२६। वेरुलिय रुयग रुइ रे, अंके फलिहें तहेव तवणि-ज्जे। मेहे अग्धं हलिए, नलिए तह लोहियक्खे य ॥१२७॥ वइरे अंजण वरमाल, रिट्ठदेवे य सोम मंगलए। बलभद्दे चक्क गया, सोवत्थिय णंदि-यावत्तो ॥१२८॥ आभंकरे य गिद्धी, केउ गरुले य होइ बोधव्वे। बभे बंभहिए पुण, बंभुत्तर लंतए चेव ॥१२९॥ महसुक्क सहस्सारे, आणय तह पाणए य बोधव्वे। पुप्फे-लंकार आरण तहा विय अच्चुए चेव ॥१३०॥ सुदंसण सुपडिबद्धे, मणोरमे चेव होइ पढम तिगे। तत्तो य सव्वभद्दे, विसालए सुमणे चेव ॥१३१॥ सोमणसे पीइकरे, आइच्चे चेव होइ तइय तिगे। सव्वट्ठसिद्धि नामे, इंदिया एव बासट्ठी ।१३२। पणयालीसं लक्खा, सीमंतय माणुसं उडु सिवं च। अपयट्ठाणो सव्व-

ट्ठ, जवूदिवो इम लक्ख ॥१३३॥ अहभागा सगपुढवीसु, रज्जु इक्किक्कतहेव सोहम्मे । माहिद लत सहस्सार, अच्चुअ गेविज्ज लोगते ॥१३४॥ सम्मत्त चरण सहिया, सव्व लोग फुसे निरवसेस । सत्त य चउदस भाए, पच य सुय देस विरइए ॥१३५॥ भवण वाण जोइ सोहम्मी, साणे सत्त हत्थ तणु-माण । दु दु दु चउक्के गेविज्जे,-णुत्तरे हाणि इक्किक्क ॥१३६॥ कप्प दुग दु दु दु चउगे, नवगे पणगे य जिट्ठ-ठिइ अयरा । दो सत्त चउद ट्ठारसे, वावीसिगतीस तित्तीसा ॥१३७॥ विवरेताणि क्कुणे, इक्कार-सगा उ पाडिएँ सेसा । हत्थिक्कारस भागा, अयरे अयरे समहियम्मि ॥१३८ । चय पुव्व सरीराओ, कमेण इगुत्तराइ वुड्ढीए । एव ठिइ विसेसा, सणकुमाराइ तणु-माण ॥१३९॥ भवधारणिज्ज एसा, उत्तर वेउव्वि जोयणा लक्ख । गेविज्ज-णुत्तरेसु, उत्तर वेउव्विया नत्थि ॥१४०॥ साहा-

विय वेउव्विय, तणु जहन्ना कमेण पारंभे । अंगुल असंख भागो, अंगुल संखिज्ज भागोय ॥१४१॥ सामन्नेणं चउविह, सुरेसु बारस मुहुत्त उक्कोसा । उववाय विरहकालो, अह भवणाइसु पत्तेयं ॥ १४२ ॥ भवणवण जोइ सोहम्मी, साणेसु मुहुत्त चउवीसं । तो नवदिण वीस मुहु, बारसदिण दस मुहुत्ता य ॥ १४३ ॥ बावीसा सड्ढ दियहा, पणयाल असीइ दिण सयं तत्तो । संखिज्जा दुसु मासा, दुसु वासा तिसु तिगेसु कमा ॥१४४॥ वासाण सया सहस्सा, लक्ख तह चउसु विजयमाइसु । पलिया असंख भागो, सव्वट्ठे संखभागो य ॥१४५। सव्वेसिपि जहन्नो, समओ एमेव चवण विरहो वि । इग दु ति संख मसंख, इग समए हुन्ति य चवंति ॥ १४६ ॥ नर पंचिंदिय तिरिया,-णुप्पत्ती सुरभवे पज्जत्ताणं । अज्झवसाय विसेसा, तेसिं गइ तारतम्मं तु ॥१४७॥ नर तिरि असख जीवी, सव्वे नियमेण

जंति देवेसु । निय आउय सम हीणा-उएसु ईसाण अंतेसु ॥१४८॥ जंति समुच्छिम तिरिया, भवण-वणेसु न जोइमाइसु । जं तेसि उववाओ, पलिया-संखंस आउसु ॥ १४९ ॥ बालतवे पडि-बद्धा, उक्कडरोसा तवेण गारविया । वेरेण य पडिबद्धा, मरिउं असुरेसु जयंति ॥१५०॥ रज्जु-गह-विस भक्खण,-जल-जलण-पवेस-तण्ह छुह-दुहओ । गिरिसिर पडणाउ मुआ, सुहभावा हुंति वंतरिया ॥१५१॥ तावस जा जोइसिया, चरग परिव्वाय बंभलोगो जा । जा सहस्सारो पंचिंदि, तिरिय जा अच्चुओ सड्ढा ॥ १५२ ॥ जइ लिंग मिच्छ दिट्ठी, गेविज्जा जाव जंति उक्कोसं । पय-मवि असद्दहंतो, सुत्तत्थं मिच्छदिट्ठीओ ॥१५३॥ सुत्तं गणहर-रइय, तहेव पत्तेय बुद्ध-रइयं च । सुय-केवलिणा रइयं, अभिन्न-दस-पुव्विणा रइयं ॥१५४॥ छउमत्थ संजयाणं, उववाओ उक्कोसओ य सव्वट्ठे । तेसिं सड्ढाण वि य, जहन्नओ होइ

सोहम्मे ॥१५५॥ लंतंमि चउद पुव्विस्स, ताव-
साहरण वंतरेसु तहा। एसिं उववाय विहि, निय
किरिय ठियाण सव्वोवि ॥ १५६ ॥ वज्जरिसह
नारायं, पढमं वीयं च रिसह नारायं। नाराय-
मद्धनारायं, कीलिया तह य छेवट्ठं ॥१५७॥
ए ए छ संघयणा, रिसहो पट्टो य कीलिया वज्जं।
उभओ मक्कड बंधो, नाराओ होइ विन्नेओ
॥ १५८ ॥ छ गब्भ तिरि नराणं, समुच्छिम
पणिंदि विगल छेवट्ठं। सुर नेरइया एगिंदिया,
य सव्वे असंघयणा ॥१५९॥ छेवट्ठेणं उ गम्मइ,
चउरो जा कप्प कीलियाइसु। चउसु दु दु कप्प
वुड्ढी, पढमेणं जाव सिद्धी वि ॥१६०॥ समचउ-
रंसे नग्गोह, साइ वामण य खुज्ज हुंडेय।
जीवाण छ संठाणा, सव्वत्थ सुलक्खण पढमं
॥१६१॥ नाहीए उवरि बीयं, तइय-महो पिट्ठि
उयर उर वज्ज। सिर गीव पाणि पाए, सुल-
क्खणं तं चउत्थं तु ॥१६२॥ विवरीयं पंचमगं,

सव्वत्थ सुलक्खण भवे छट्ठ । गब्भय नर तिरिय छहा, सुरा समा हुंडया सेसा ॥१६३॥ जति सुरा सखाउ य, गब्भय पज्जत्त मणुय तिरिएसु । पज्जत्तेसु य वायर, भू-दग-पत्तेयग-वणेसु ॥१६४॥ तत्थवि सणकुमार, पभिइ एगिंदिएसु नो जंति । आणय पमुहा चविउ, मणुएसु चेव गच्छन्ति । १६५॥ दो कप्प कायसेवी, दो दो दो फरिस रुव सेहिं । चउरो मणेणु-वरिमा, अप्प वियारा अणंत सुहा॥ १६६ ॥ जं च कामसुह लोए, जं च दिव्व मह सुहं । वीयराय-सुहस्य य, णतभाग पि नग्घई ॥१६७॥ उववाओ देवीण, कप्पदुग जापरओ सहस्सारा । गमणागमण नत्थो, अच्चुय परओ सुराणंपि ॥१६८॥ ति पलिय ति सारतेरस, सारा कप्प दुग तइय लत अहो । किब्बिसिय न हुन्ति उवरि, अच्चुय परओ-भिओगाई ॥१६९॥ अपरिग्गह देवीण, विमाण लक्खा छ हुंति सोहम्मे । पलियाइ समयाहिय,

ठिइ जासि जाव दस पलिया ।।१७०।। ताओ सणंकुमारा, णेवं वड्ढन्ति पलिय दसगेहिं । जा वंभ सुक्क आणय, आरण देवाण पन्नासा ।।१७१।। इसाणे चउ लक्खा, साहिय पलियाइ समय अहिय ठिइ । जा पन्नर पलिय जासि ताओ महिदं देवाणं ।।१७२।। एएण कमेण भवे, समयाहिय पलिय दसग वुड्ढीए । लंत सहस्सार पाणय, अच्चुय देवाण पणपन्ना ।। १७३ ।। किण्हा नीला काउ, तेउ पम्हा य सुक्क लेस्साओ । भवण वण पढम चउतेउ, जोइससुकप्प दुगे तेउ ।।१७४।। कप्प तिय पम्ह लेसा, लताइसु सुक्के-लए हुन्ति सुरा । कणगाभपउमकेसर, वन्ना दुसु तिसु उवरि धवला ।।१७५।। दसवास सहस्साइं, जहन्न-माउं धरंति जे देवा । तेसिं चउत्थाहारो, सत्तहिं थोवेहिं उसासो ।। १७६ ।। आहि वाहि विमुक्कस्स, नीसासूस्सास एगगो । पाणु सत्त इमो थोवो, सोवि सत्त गुणो लवो ।।१७७।। लव

सत्तहत्तरीए, होइ मुहुत्तो इमंमि उसासा । सग-तीस सय तिहुत्तर, तीस गुणा ते अहोरत्ते ॥ १७८ ॥ लक्ख तेरस सहसा, नउयसय अयर सखया देवे । पक्खेहिं उसासो, वास सहस्सेहिं आहारो ॥१७९॥ दसवास सहस्सुवरिं, समयाइ जाव सागर उणं । दिवस मुहुत्त पुहुत्ता, आहारु-सास सेसाणं ॥ १८० ॥ सरीरेण ओयाहारो, तयाइ फासेण लोम आहारो । पक्खेवाहारो पुण, कावलिओ होइ नायव्वो ॥ १८१ ॥ ओयाहारा सव्वे, अपज्जत्त पज्जत्त लोम आहारो । सुर निरय इगिंदि विणा, सेसा भवत्था सपक्खेवा ॥१८२॥ सचित्ता चित्तो-भय, रुवो आहार सव्व तिरि-याणं । सव्व नराणं च तहा, सुर-नेरइयाणं अचितो ॥ १८३ ॥ आभोगा-णाभोगा, सव्वेसिं होइ लोम आहारो । निरयाणं अमणुन्नो, परिण-मइ सुराणं समणुन्नो ॥ १८४ ॥ तहविगल नारयाणं, अंतमुहुत्ता स होइ उक्कोसो । पंचिंदि

तिरि नराणं साहाविश्रो छट्ठ अट्ठमश्रो ॥१८५॥ विग्गह गइ-भावन्ना, केवलिणो समुहया अजोगी य। सिद्ध य अणाहारा, सेसा आहारगा जीवा ॥१८६॥ केसट्ठि मंस नह रोम, रुहिर वस चम्म मुत्त पुरिसेहिं। रहिया निम्मल देहा, सुगंध नीसास गय लेवा ॥१८७॥ अंत मुहुत्तेणं चिय, पज्जत्ता तरुण पुरिस सकासा। सव्वंग भूसणधरा, अजरा निरुया समा देवा ॥ १८८ ॥ अणिमिस नयणा मण, कज्ज साहणा पुप्फ दामअमिलाणा। चउरंगुलेण भूमिं, न छिवन्ति सुरा जिणा बिंति ॥१८९॥ पंचसु जिण कल्लाणेसु, चेव महरिसि तवाणुभावाश्रो। जम्मंतर नेहेण य, आगच्छन्ति सुरा इहयं ॥१९०॥ संकंति दिव्व-पेमा, विसय-पसत्ता-समत्त-कत्तव्वा। अणहीण मणुय कज्जा, नरभव-मसुहं न इति सुरा ।१९१॥ चत्तारि पच जोयण, सयाइ गंधो य मणुय लोगस्स। उड्ढं वच्चइ जेणं, न हु देवा तेण आवन्ति

॥१६२॥ दोकप्प पढम पुढविं, दो दो दो वीय तइयग चउत्थि । चउ उवरिम ओहीए, पासन्ति पंचम पुढवि ॥१६३॥ छट्ठि छ गेविज्जा, सत्तमी-यरे अणुत्तर सुरा उ । किंचूण लोगनालिं, असंख दीवुदहि तिरियं तु ॥१६४॥ बहुअरग उवरि-मगा, उड्ढं सविमाण चूलिय धयाइ । ऊणद्ध सागरे संख, जोयणा तप्पर-मसंखा ॥१६५॥ पणवीस-जोयण लहु, नारय भवण वण जोइ कप्पाणं । गेविज्ज-णुत्तराणय, जहसंख ओहि आगारा ॥ १६६ ॥ तप्पागारे पल्लग, पडहग झल्लरि मुइंग पुप्फ जवे । तिरिय मणुएसु ओहि, नाणाविह संठिओ भणिओ ॥ १६७ ॥ उड्ढ भवण वणाण बहुगो वेमाणियाण हो ओहो । नारय जोइस तिरियं, नर तिरियाणं अणेगविहो ॥१६८॥ इय देवाणं भणियं, ठिइ पमुह नार-याण वुच्छामि । इग तिन्नि सत्त दस सत्तर, अयर बावीस तित्तीसा ॥१६९॥ सत्त य पुढवीसु

ठिइ, जिट्ठो-वरिमाइ हिट्ठ पुढवीए। होइ कमेण कणिट्ठा, दसवास सहस्स पढमाए ॥२००॥ नवइ सम सहस लक्खा, पुव्वाणं कोडी अयर दस भाग। इक्किक्क भाग वुड्ढी, जा अयरं तेरसे पयरे ॥२०१॥ इअ जट्ठ जहन्ना पुण, दस वास सहस्स लक्ख पयर दुगे। सेसेसु उवरि जिट्ठा, अहो कणिट्ठाउ पइ पुढवि ॥२०२॥ उवरि खिइ ठिइ विसेसो, सग पयर विहत्त इच्छ संगुणिओ। उवरिम खिइ ठिइ सहिओ, इच्छिय पयरंमि उक्कोसा ॥२०३। बंधणगइ संठाणा, भेया वन्ना य गंध रस फासा। अगुरु लहु सद्द दसहा, असुहा विय पुग्गला निरए ॥ २०४ ॥ नरया दस विह वेयण, सी उसिह खुह पिवास कंडूहि। परवस्सं जर दाहं, भय सोगं चेव वेयंति ॥२०५॥ सत्तसु खित्तज वियणा, अन्नन्न कयावि पहरणेहि विणा। पहरण कया वि पंचसु, तिसु परमाहम्मिय कयावि ।।२०६। रयणप्पह सक्करपह, वालुयपह पंकपह

य धूमपहा । तमप्हा तमतमप्पहा, कमेण पुढवीण गोत्ताइ ॥२०७॥ घम्मा वंसा सेला, अंजणा रिट्ठा मघा य माघवइ । नामेहिं पुढवीओ, छत्ताइ छत्त संठाणा ॥२०८॥ असीय वत्तीस अडवीस, वीसा अट्ठार सोल अडसहसा । लक्खुवरि पुढवि पिंडो, घणुदहि घणवाय तणुवाया ॥ २०९ ॥ गयण च पइट्ठाणं, वीस सहस्साइ घणुदही पिंडो । घणतणु वायागासा, असंख जोयण जुया पिंडो ॥२१०॥ न फुसंति अलोग, चउदिसंपि पुढवी य वलय संगहिया । रयणाए वलयाणं, छद्ध पचम जोयणं सड्ढ ॥२११॥ विक्खंभो घणउदही, घण तणुवायाण होइ जहसंख । सतिभाग गाउय, गाउय च तह गाउय तिभागो ॥२१२॥ पढम महीवलएसु, खिविज्ज एय कमेण वीयाए । दुति चउ पंच छ गुणं, तइयाइसु तंपि खिव कमसो ॥२१३॥ मज्झे चिय पुढवी अहे, घणुदहि पमुहाणपिंड परिमाणं । भणिय तओ कमेणं, हाय-

इजा वलय परिमाणं ॥२१४॥ तीस पणवीस पन्नरस, दस तिन्नि पणण एग लक्खाइं। पंच य नरया कमसो, चुलसी लक्खाइं सत्तसुवि ।२१५। तेरिक्कारस नव सग, पण तिन्निग पयर सव्वि-गुणवन्ना । सीमंताइ अप्पइ–ठाणंता इंदिया मज्झे ॥२१६॥ तेहिंतो दिसी विदिसं, त्रिणि-गया अट्ठनिरय आवलीया। पढमे पयरे दिसि गुण-वन्न विदिसासु अडयाला ॥२१७॥ बीया-इसु पयरेसु, इग इग हीणा उ हुन्ति पंतीओ। जा सत्तमी मही पयरे, दिसि इक्कक्को विदिसि नत्थि ॥२१८॥ इट्ठ पयरेग दिसि, संख अडगुणा चउविणा सइगसंखा। जहसीमंतय पयरे एगुण नउया सया तिन्नि ॥२१९॥ अपयट्ठाणे पंच उ, पढमो मुह-मंतिमो हवइ भूमी। मुह भूमी समा-सद्धं, पयरगुणं होइ सव्व घणं ॥२२०॥ छन्न-वइ सय तिवन्ना, सत्तसु पुढवीसु आवली निरया। सेस तियासी लक्खा, तिसय सियाला नवइ सहसा

।। २२१ ।। ति सहस्सूचा सव्वे, सख-मसखिज्ज वित्थडायामा। पणयाल लक्ख सीमन्तो, य लक्ख अपइट्ठाणो ।। २२२ ।। छसु हिट्ठोवरि जोयण,- सहस्स बावन्न सड्ड चरिमाए। पुढवीए नरय रहिय- नरया सेसम्मि सव्वासु ।।२२३।। विसहस्सूणा पुढवी, तिसहस गुणिएहिं नियय पयरेहिं। रुणा रुवूण निय पयर, भाइया पत्थ-डंतरय ।।२२४।। पउणट्ठ,धणु छ अगुल, रयणाए देहमाण-मुक्कोस। सेसाणु दुगुण दुगुण, पण धणु सय जाव चरमाए ।।२२५।। रयणाए पढम पयरे, हत्थतिय देहमाण-मणुपयर। छप्पन्न गुल सड्डा, वुड्डी जा तेरसे पुन्न ।।२२६।। ज देह पमाण उवरिमाए,- पुढवीइ अतिमे पयरे। त चिय हिट्ठिय पुढवी, पढम पयरमि बोधव्व ।।२२७।। त चेगुणग सग पयर, भइय बीयाइ पयर वुड्डि भवे। तिकर ति अगुल,करसत्त, अगुला सड्डि गुणवीस ।।२२८।। पण धणु अगुल

वीसं, पनरस घणु दुन्नि हत्थ सड्ढा य । बासट्ठि घणुह सड्ढा, पण पुढवी पयर वुड्ढि इमा ॥२२६॥ इअ साहाविय देहो, उत्तर वेउव्विओ य तद्दु-गुणो । दुविहोवि जहन्न कमा, अंगुल असंख संखंसो ॥२३०॥ सत्तसु चउवीस मुहू, सग पन्नर दिणेग दु चउ छम्मासा । उववाय चवण विरहो, ओहे बारस मुहुत्त गुरु ॥२३१॥ लहुओ दुहावि समओ, संखा पुण सुर समा मुणेयव्वा । संखाउ पज्जत्त पणिदि, तिरि नरा जंति नरएसु ।२३२। मिच्छद्दिट्ठि महारंभ, परिग्गहो तिव्व कोह निस्सीलो । नरयाउअं निबंधइ, पावमइ रुद्द परिणामो ॥ २३३ ॥ असन्नि सरिसिव पक्खी, सीह उरगित्थि जंति जा छट्ठिं । कमसो उक्को-सेणं, सत्तम पुढबि मणुय मच्छा ॥२३४॥ वाला दाढी पक्खी, जलयर नरया-गया उ अइकूरा । जंति पुणो नरएसु, बाहुल्लेणं न उण नियमो ॥२३५॥ दो पढम पुढवि गमणं, छेवट्ठे कीलि-

याइ संघयणे । इक्किक्क पुढवि वुड्ढी, आइ तिलेस्साउ नरएसु ॥२३६॥ दुसु काउ तइयाए, काउ नीलाय नील पंकाए। धूमाए नील किण्हा, दुसु किण्हा हुंति लेस्साओ ॥ २३७ ॥ सुर-नारयाण ताओ, दव्वे लेसा अवट्ठिआ भणिया। भाव परावत्तीए, पुण एसिं हुन्ति छल्लेसा ॥२३८॥ निरउव्वट्टा गब्भय, पज्जत्त सखाउ लद्धि एएसिं। चक्कि हरि जुअल अरिहा, जिण जइ दिसि सम्म पुहवि कमा ॥२३९॥ रयणाए ओहिं गाउअ, चत्तारि अद्ध्ड गुरु लहु कमेण। पइ पुढवि गाउमद्ध, हायइ जा सत्तमि इगद्ध ॥२४०॥ गब्भ नर ति पलियाउ, ति गाउ उक्कोस ते जहन्नेण। मुच्छिम दुहावि अंतमुहू, अंगुल असंख भाग तणु ॥ २४१ ॥ बारस मुहुत्त गब्भे, इयरे चउवीस विरह उक्कोसो। जम्म-मरणेसु समओ, जहन्न सखा सुर समाणा ॥२४२॥ सत्तमि महि नेरइए, तेउ वाउ असंख नर तिरिए। मुत्तूण

सेस जीवा, उप्पज्जंति नरभवंमि ।।२४३।। सुर नेरइएहि चिय, हवंति हरि अरिह चक्कि बल- देवा । चउविह सुर चक्कि बला वेमाणिय हुंति हरि अरिहा ।।२४४।। हरिणो मणुस्स रयणाइं, हुंति नाणुत्तरेहिं देवेहिं । जह संभव-मुववाओ, हय गय एगिंदि रयणाणं ।।२४५।। वाम पमाणं चक्कं, छत्तं दंडं दुहत्थयं चम्मं । बत्तीसंगुल खग्गो, सुवन्नकागिणि चउरंगुलिया ।।२४६।। चउरंगुलो दु अंगुल, -पिहुलो य मणिपुरोहि गय तुरया । सेणावइ गाहावइ, वड्ढ इत्थी चक्कि रयणाइं ।।२४७।। चक्कं धणुह खग्गो, मणी गया तह य होइ वणमाला । संखो सत्त इमाइं, रयणाइं वासुदेवस्स ।।२४८।। संख नरा चउसु गइसु, जंति पंचसुवि पढम संघयणे । इग दुति जा अट्ठसयं, इगसमए जंति ते सिद्धिं ।।२४९।। वीसित्थ दस नपुंसग, पुरिस-ट्ठसयं तु एग सम- एणं । सिज्झइ गिहि अन्न सलिंग, चउ दस अट्ठा-

हिय सयच। २५०॥ गुरु लहु मज्झिम, दो चउ अट्ठसय उड्ढहो तिरियलोए। चउ बावीस-ट्ठसय, दु समुद्दे तिन्नि सेस जले ॥२५१॥ नरय तिरिया-गया दस, नरदेव गइउ वीस अट्ठ-सय। दस रयणा सक्कर वालुयाउ, चउ पकभू दगश्रो ॥ २५२ ॥ छच्च वणस्सइ दस तिरि, तिरित्थी दस मणुय वीस नारीश्रो। असुराइ वतरा दस, पण तद्देवि उ पत्तेय ॥२५३॥ जोइ दस देवी वीस, वेमाणिय-ट्ठसय वीस देवीश्रो। तह पु वेएहिंतो, पुरिसो होउण अट्ठ-सय ॥२५४॥ सेसट्ठ भगएसु दस दस सिज्झन्ति एग समणेण। विरहो छमास गुरुश्रो, लहु समश्रो चवणमिह नत्थि ॥२५५॥ श्रड सग छ पच चउ तिन्नि, दुन्नि इक्को य सिज्झमाणेसु। बत्तीसाइसु समया, निरतर अतर उवरिं। २५६ ॥ बत्तीसा श्रड-याला, सट्ठी बावत्तरी य बोधव्वा। चुलसीइ छन्नवइ, दुरहिय-मट्ठुत्तर सय च ॥२५७॥ पण-

याल लक्ख जोयरणा, विक्खंभा सिद्धसिलफलिह-विमला । तदुवरिग जोयणंते, लोगंतो तत्थ सिद्ध ठिइ ।।२५८।। बावीस सग ति दस वास, सहस गरिण तिदिरण बेइंदियासु । बारस वासुरण पण दिरण, छम्मास तिपलिय ठिइ जिट्ठा ।।२५६।। सण्हा य सुद्ध वालुय, मणोसिला सक्करा य खर पुढवी । इग बार चउद सोलस, ट्ठारस बावीस सम सहसा ।।२६०।। गब्भ भुय जलयरो-भय, गब्भोरग पुव्व कोडि उक्कोसा । गब्भ चउप्पय पक्खिसु, तिपलिय पलिया असखंसो ।२६१।। पुव्वस्स उ परिमाणं सयरिं खलु वास कोडि लक्खाओ । छप्पन्न च सहस्सा, बोधव्वा वास कोडीणं ।।२६२।। सनुच्छि पणिदिथल खयर, उरग भुयग जिट्ठ ठिइ कमसो । वास सहस्सा चुलसी, बिसत्तरि तिपन्न बायाला ।।२६३।। एसा पुढवाइरणं, भवठिइ संपयं तु कायठिइ । चउ एगिंदिसु णेया, उस्सप्पिरणीओ असंखिज्जो ।२६४।

ताओ वणमि अणता, सखिज्जा वास सहस विगलेसु । पंचिदि तिरि नरेसु, सत्तट्ठ भवा उ उक्कोसा ॥२६५॥ सव्वेसिंपी जहन्ना, अंतमुहुत्ता भवे य काये य । जोयण सहस्स-महिय, एगिदिय देह मुक्कोस ॥२६६॥ विति चउरिंदि सरीर, बारस जोयण तिकोस चउकोस । जोयण सहस-पाणिंदिय, ओहे वुच्छ विसेस तु ॥२६७॥ अगुल असख भागो, सुहमनिगोओ असख गुणवाउ । तो अगणि तओ आउ, तत्तो सुहमा भवे पुढवी ॥२६८॥ तो वायर वाउ गणी, आउ पुढवी निगोय अणुक्कममो । पत्तेअवण सरीर, अहिय जोयण सहस्स तु ॥२६९॥ उस्सेहगुल जोयण, सहस्समाणे जलासए नेय । त वल्लि पउम पमुह, अओ पर पुढवी रुव तु ॥२७०॥ बारस जोयण सखो, तिकोस गुम्मीय जोयण भमरो । मुच्छिम चउपय भुय, गुरगगाउ धणु-जोयण-पुहुत्ता ॥२७१॥ गब्भ चउप्पय, छग्गाउयाइ भुयगाउ गाउय

पुहुत्तं। जोयण सहस्स-मुरगा, मच्छा उभये वि य सहस्सं ।। २७२ ।। पक्खि दुग घणु प्पुहुत्तं, सव्वाणं-गुल असंख भाग लहू। विरहो विगल सन्नीण, जम्म मरणे सु अंतमुहू ।।२७३।। गब्भे मुहुत्त वारस, गुरुओ लहु समय संखसुर तुल्ला। अणु समय-मसंखिज्जा, एगिंदिय हुंति य चवंति ।।२७४।। वणकाइओ अणंता इक्किक्का वि जं निगोयाओ। निच्च-मसंखो भोगो, अणंत जीवो चयइ एइ ।।२७५। गोला य असंखिज्जा, असंख निगोयओ हवइ गोलो। इक्किक्कंमि निगोए, अणंत जीवा मुणेयव्वा ।।२७६।। अत्थि अणंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो। उप्पज्जंति चयंति य. पुणो वि तत्थेव तत्थेव ।२७७। सव्वोवि किसलओ खलु. उग्गममाणो अणंतओ भणिओ। सो चेव विवड्डन्तो, होइ परित्तो अणंतो वा ।। २७८ ।। जया मोहोदओ तिव्वो, अन्नाणं खु महब्भयं। पेलवं वेयणीयं तु, तया

एगिदियत्तरण ॥२७९॥ तिरिएसु जंति सखाउ, तिरि नरा जा दुकप्प देवाओ। पज्जत्त सख गब्भय, बायर भू दग परित्तेसु ॥ २८० ॥ तो सहसारंत सुरा, निरया पज्जत्त सख गब्भेसु। सख पणिदिय तिरिया, मरिउ चउसुवि गइसु जन्ति ॥२८१॥ थावर विगला नियमा, सखाउ य तिरि नरेसु गच्छन्ति। विगला लब्भिज्ज विरइ, सम्मपि न तेउवाउ चुया ॥२८२॥ पुढवी दग परित्तवणा, बायर पज्जत्त हुन्ति चउलेसा। गब्भय तिरिय नराण, छल्लेसा तिन्नि सेसाण ॥ २८३ ॥ अतमुहुत्तमि सेसए चेव। लेसाहि परिणयाहि, जीवा वच्चति परलोय ॥२८४॥ तिरि नर आगामि भव, लेस्साए अइगये सुरा-निरया। पुव्व भव लेस्स सेसे, अतमुहुत्ते मरण-मिति ॥२८५॥ अतमुहुत्तठिइओ, तिरिय नराण हवन्ति लेस्साओ। चरिमा नराण पुण नव, वासूणा पुव्वकोडी वि ॥ २८६ ॥ तिरियाण वि

ठिइपमुहं, भणिय-मसेसं पि संपइ वुच्छं। अभि-हिय दार-ब्भहियं, चउगइ जीवाण सामन्नं ॥ २८७ ॥ देवा असंख नरतिरि, इत्थी पुंवेअ गब्भ नर तिरिया। संखाउया ति वेया, नपुंसगा नारयाइआ ॥२८८॥ आयंगुलेण वत्थुं, सरीर-मुस्सेह-अंगुलेण तहा। नग-पुढवि-विमाणाइं, मिणासु पमाणं-गुलेणं तु ॥२८९॥ सत्थेण सुति-क्खेण वि, छित्तुं भित्तुं च जं किर न सक्का। तं परमाणुं सिद्धा, वयंति आइं पमाणाणं ॥२९०॥ परमाणू तसरेणू, रहरेणू वालअग्ग लिक्खा य। जूय जयो अट्ठ गुणो, कमेण उस्सेह-अंगुलयं ॥२९१॥ अंगुल छक्कं पाओ, सो दुगुण विहत्थि सा दुगुण हत्थो। चउहत्थं धणु दुसहस, कोसो ते जोयणं चउरो ॥२९२॥ चउसयगुणं पमाणं, गुल मुस्सेहं-गुलाउ बोधव्वं। उस्सेहं-गुल दुगुणं, वीरस्सायं-गुलं भणियं ॥२९३॥ पुढ-वाइसु पत्तेयं, सगवण पत्तेय णंत दस चउद।

विगले दु दु सुर नारय, तिरि चउ चउ चउदस नरेसु ।। २६४ ।। एगिदिएसु पचमु, वार सगति सत्त अट्ठवीमा य । विगलेमु सत्त मड नव, जल खह चउपह उरग भुयभ्के ।।२६५।। अद्ध तेरस-बारस, दस दस नवग नराम रे निरए । वारस छव्वीस पणवीस, हुन्ति फुल कोडि लक्खाइ ।।२६६।। इग कोडि सत्त नवइ, लक्खा सड्ढा फुलाण कोडीण । सवुड जोणि सुरेगिदि, नारया वियड विगल गब्भुभया ।।२६७।। अवित जोणि सुरनिरय, मीस गब्भेतिभेय सेसाण । सीउसिण निरय सर गब्भ, मीस तेउ सिण सेस तिहा ।।२६८ । हयगब्भ सखवत्ता, जोणी कुमुन्नयाइ जयति । अरिह हरि चक्कि रामा, वसी पत्ताइ सेस नरा ।।२६९।। आउस्म वध कालो, अवाह-कालो य अत समग्रो य । अपवत्तण-णपवत्तण, उवक्कम-णुवक्कमा भणिया ।।३००।। वधन्ति देव नारय, असख नर तिरि छमास सेसाउ ।

परभवियाउ सेसा, निरुवक्कम तिभाग सेसाउ ॥३०१। सोवक्कमाउया पुण सेस तिभागे अहव नवम भागे। सत्तावीसइ मे वा, अंतमुहुत्तं-तिमे वा वि ॥३०२॥ जइमे भागे बंधो, आउस्स भवे अवाह कालो सो। अंते उज्जु गइ इग, समय वक्क चउ पंच समयंता ॥३०३॥ उज्जुगइ पढम समए, परभवियं आउयं तहा-हारो। वक्काइ बीय समए, परभवियाउं उदय-मेइ ॥३०४॥ इग दु ति चउ वक्कासु, दुगाइसमएसु परभवा-हारो। दुग वक्काइसु समया, इग दो तिन्निय अणाहारा ॥३०५॥ बहुकाल वेयणिज्जं, कम्मं अप्पेण जमिह कालेणं। वेइज्जइ जुगवं चिय, उइन्न सव्व-पएसग्गं ॥३०६॥ अपवत्तणिज्ज-मेयं, आउं अहवा असेस-कम्मंपि। बंध समए वि बद्धं, सिढिलं चिय तंजहा जोगं ॥ ३०७ ॥ जं पुण गाढ निकायण, बंधेणं पुव्वमेव किल बद्धं। तं होइ अणपवत्तण, जुग्गं कम वेयणिज्ज फलं

॥३०८॥ उत्तम चरम सरीरा, सुर नेरइया असख नर तिरिया । हुन्ति निरुवक्कमाओ, दुहावि सेसा मुणेयव्वा ॥३०९॥ जेणाउ-मुवक्क-मिज्जइ, अप्प समुत्थेण इयरगेणावि । सो अज्झवसाइ, उवक्कम-णुवक्कमो इयरो ॥३१०॥ अज्झवसाण निमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए । फासे आणापाणू, सत्तविह भिज्जए आउ ।३११। आहार सरीर इदिय, पज्जत्ती आणपाणभास-मणे । चउ पच पच छप्पिय, इग विगला-सन्नि सन्नीण ॥३१२॥ आहार सरीर इदिय, उसास वउ मणो भिनिव्वत्ती । होइ जओ दलियाउ, करण पइ साउ पज्जत्ती ॥३१३॥ पणिदिय तिबलूसा-साउ दसपाण चउ छ सग अट्ठ । इग दुति चउरिंदीण, असन्निसन्नीण नव दस य ॥३१४॥ सखित्ता सघयणी, गुरुतर सघयणि मज्झओ एसा । सिरि सिरि चद मुणिदेण, निम्मिया अप्प पढणट्ठा ॥३१५॥ सखित्तयरी उ

इमा, सरीर-मोगाहणा य संघयणा । सन्ना संठाण कसाय, लेसिंदिय दु समुग्घाया ॥३१६॥ दिट्ठी दंसण नाणे, जोगु-वओगो-ववाय चवण ठिइ । पज्जत्ति किमाहारे, सन्नि गइ आगइ वेए ॥३१७॥ मलहारि हेम सूरीण, सीस लेसेण विरइयं सम्म । संघयणि रयण-मेयं, नंदउ जा वीर जिन तित्थं ॥३१८॥



:: श्री वैराग्यशतकम् ::

संसारंमि असारे, नत्थि सुह वाहि-वेयणा-पउरे। जाणंतो इह जीवो, न कुणइ जिणदेसिय धम्मं ॥ १ ॥ अन्ध कल्ल परं परारिं पुरिसा चिंतंति अत्थसंपत्ति। अंजलिगयं व तोयं, गलंतमाऽऽउं न पिच्छंति ॥२॥ जं कल्ले कायव्वं, तं अज्ज चिय करेह तुरमाणा। बहुविग्घो हु मुहुत्तो, मा अवरण्हं पडिक्खेह ॥३॥ ही संसार-सहावं, चरियं नेहाणु रायरत्ताविं। जे पुव्वण्हे दिट्ठा, ते अवरण्हे न दीसंति ॥४॥ मा सुयह जग्गिअव्वे, पलाइअव्वंमि कीस वीसमेह। तिन्नि जणा अणुलग्गा, रोगो अ जरा अ मच्चु अ ॥ ५ ॥ दिवसनिसा-घडिमालं, आउ-सलिलं जीआणं घित्तूणं। चंदाइच्च-बइल्ला, काल-रहट्टं भमाडंति ॥६॥ सा नत्थि कला तं नत्थि, उसहं तं नत्थि किंपि विन्नाणं। जेण धरिज्जइ काया,

खज्जंती कालसप्पेणं ।। ७ ।। दीहरफणिद-नाले, महिग्रर-केसर दिसा-महदलिल्ले । ओपीअइ कालभमरो, जणमयरंदं पुहविपउभे ।।८।। छायः मिसेण कालो, सयलजीआणं छलं गवेसंतो । पासं कहवि न मुंचइ, ता धम्मे उज्जमं कुणह ।। ९ ।। कालंमि अणाइए, जीवाणं विविहकम्म-वसगाणं । तं नत्थि संविहाणं, संसारे जं न संभवइ ।।१०।। बंधवा सुहिणो सव्वे, पिअमाया पुत्तभारिया । पेअवणाओ निअत्तंति, दाउणं सलिलंजलिं ।। ११ ।। विहडंति सुआ विहडंति, बंधवा वल्लहा य विहडंति । इक्को कहवि न विहडइ, धम्मो रे जीव जिणभणिओ ।।१२।। अड-कम्मपासबद्धो, जीवो ससार चारए ठाइ । अड-कम्मपासमुक्को, आया सिवमंदिरे ठाइ ।।१३।। विहवो सज्जणसंगो, विसयसुहाइं विलासललिआइं । नलिणीदलग्गघोलिर, जललवपरि चंचलं सव्वं ।।१४।। तं कच्छ बलं तं कच्छ जुव्वणं

अगचगिमा कक्खछ । सव्वमइरिणच्च विच्छंहर, दिट्ठ नट्ठ कयतेण ॥१५॥ घणकम्मपासबद्धो, भवनयर चउप्पहेसु विविहाओ । पावइ विडंवणाओ, जीवो को इच्छ सरण मे ॥१६॥ घोरमि गब्भवास, कम्मलजवालयमुइचीभच्छे । वसिओ अणतखुत्तो, जीवो कम्माणुभावेण ॥१७॥ चुलसीइ किर लोए, जोणीण पमुह सयगहस्साइ । इक्किक्कम्मि अ जीवो, अणतखुत्तो समुप्पन्नो ॥ १८ ॥ मायापियबधूहि, ससारत्थेहि पुरिउ लोउ । बहुजोणिनिवासीहि, नय ते ताण च सरण च ॥१९॥ जीयोवाहिविलुत्तो सफरो इव निज्जले तडप्फडई । सयलो वि जणो पच्छइ, को सक्को वेयणाविगमे ॥२०॥ मा जाणसि जीव तुम, पुत्तकलत्ताइ मज्झ सुहहेऊ । निउण बधणमेय, ससारे ससरताण ॥ २१ ॥ जणणी जायइ जाया, जाया माया पिया य पुत्तो य । अणवच्छा ससारे, कम्मवसा सव्वजीवाण ॥ २२ ॥ न सा

जाइ न सा जोणी, न तं ठाणं न तं कुलं। न जाया न मुआ जच्छ, सव्वे जीवा अणंतसो।२३। तं किंपि नत्थि ठाणं, लोए वालग्गकोडिमित्तंपि। जत्थ न जीवा वहुणो, सुहदुक्खपरं परं पत्ता ॥२४॥ सवाओ रिद्धिओ, पत्ता सव्वेवि सयण संबंधा। संसारे ता विरमसु, तत्तो जइ मुणसि अप्पाणं ॥२५॥ एगो बंधइ कम्मं, एगो वहवंध-मरणवस णाइं। विसहइ भवंमि भमडइ, एगु-च्चिअ कम्मवेलविओ ॥ २६ ॥ अन्नो न कुणइ अहियं, हियंपि अप्पा करेइ नहु अन्नो। अप्पकयं-सुहदुक्खं, भुंजसि ता कीस दीणमुहो ॥२७॥ वहुआरंभविढंत, वित्तं विलसंति जीव सयण-गणा। तम्भनियपावकम्मं, अणुहवसि पुणो तुमं चेव ॥२८॥ अह दुक्खिआइ तह भुक्खियाइ जह चिंतिआइ डिभाइ। तह थोवंपि न अप्पा, विचिंतिओ जीव कि भणिमो ॥२९॥ खणभंगुर सरीरं, जीवो अन्नो अ सासय सरुवो। कम्मवसा

मवघो, निव्वघो इच्छ को तुज्झ ॥३०॥ कह आय कह चलिय, तुमपि कह आगओ कह गमिही । अन्नुन्नपि न याणह, जीव कुडु व कओ तुज्झ ।३१। खण भगुरे सरीरे, मणुअभवे अब्भ-पडलसारित्थे। सार इत्तियमेत्त, ज कीरइ सोहणो धम्मो ॥३२॥ जम्मदुक्ख जरादुक्ख, रोगाय मर-णाणि य । अहो दुक्खो हु ससारो, जत्थ कीसति जतुणो ॥३३॥ जाव न इदियहाणी, जाव न जररक्खसी परिप्फुरइ । जाव न रोगविमारा, जाव न मच्चू समुल्लियई ॥३४॥ जह गेहमि पलित्ते, कूव खणिउ न सक्कए कोइ । तह सपत्ते मरणे,धम्मो कह कीरए जीव ।३५। रुवमऽसासय-मेय, विज्जुलयाचवल जए जीअ । सझाणुराग-सरिस खणरमणीअ च तारुन्न ॥३६॥ गयकन्न चचलाओ, लच्छीओ, तिअसचावसारित्थ । विस-यसुह जीवाण, बुज्झसु रे जीव मा मुज्झ ॥३७॥ जह सझाए सउणा, ण सगमो जह पहे अ पहि-

आणं । सयणाणं संजोगो, तहेव खणभंगुरो जीव ॥३८॥ निसाविरामे परिभावयामि, गेह पलित्ते किमऽहं सुयामि । डज्झंतमऽप्पाणमु वक्खयामि, जंधम्मरहिओ दिअहा गमामि ॥३९॥ जाजा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ । अहम्मं कुण-माणस्स, अहला जंति राइओ ॥४०॥ जस्स ऽच्छि मच्चुणा सक्कं, जस्स व ऽच्छि पलायणं । जो जाणे न मरिस्सामि, सोहु कंखे सुए सिया ॥४१॥ दंडकलिअं करित्ता, वच्चंति हु राइओ यदि वसा य । आउस सविल्लंता, गयावि न पुणो नियत्तंति ॥४२॥ जहे ह सीहो व मियं गहाय, मच्चू नरं णेइ हु अंतकाले । न तस्स माया व पिया व भाया, कालमि तंमि ऽसहरा भवंति ॥४३॥ जीअं जलबिंदुसमं, संपत्तीओ तरंगलो-लाओ । सुमिणयसमं च पिम्मं, जं जाणसु तं करिज्झासु ॥ ४४ ॥ संझरागलबुब्बुओवमे, जीविए य जलबिन्दु चंचले । जुव्वणे य नइवग-

सन्निभे, पावजीव किमिय न बुवभसे ॥४५॥ अन्नत्थ सुग्रा अन्नत्थ, रोहिणी परिश्रणोऽवि अन्नत्थ । भूअवलिव्व कुडु व, परिक्करा हयकयतेण ॥४६॥ जीवेण भवे भवे, मिलियाइ देहाइ जाइ ससारे । ताण न सागरेहिं, कीरइ सखा अणतेहिं ॥४७॥ नयणोदयपि तासि, सागरसलिलाओ वहुयर होई । गलिय रुअमाणीण, माऊण अन्नमन्नाण ॥४८॥ ज नरए नेरइया, दुहाइ पावति घोरणताइ । तत्तो अणतगुणिय, निगोअमज्भे दुह होइ ॥४९॥ तमि वि निगोअमज्भे, वासओ रे जीव विविहकम्मवसा । विसहतो तिक्खदुह, अणतपुग्गलपरामट्टे ॥५०॥ निहरीअ कहवि पत्तो, तत्तो मणुअत्तणपि रे जीव । तत्थवि जिणवर धम्मो, पत्तो चिंतामणि सरित्थो ॥५१॥ पत्तोवि तमि रे जीव, कुणमि पमाय तुम तय चेव । जेण भवधकवे, पुणोवि पडिओ दुह लहसि ॥५२॥ चवलद्धो जिणधम्मो, नय अणुचिण्णो

पमायदोसेणं । हा जीव अप्पवेरि अ, सुवहुँ परओ पिसूरिहिसि ॥५३॥ सो अंति ते वराया, पःथा समुवट्ठियम्मि मरणंमि । पावपमायवसेणं, न संचियो जेहिं जिणधम्मो ॥ ५४ ॥ धी धी धी संसारं, देवो मरिऊण जं तिरी होई । मरिऊण रायराया, परिपच्चइ निरयजालाए ॥५५॥ जाइ अणाहो जीवो, दुमस्स पुप्फंव कम्मवायहओ । धणधन्नाहरणाइ, घरसयणकुडुंब मिल्लेवि ।५६। वसियं गिरिसु वसिय, दरासु वसियं समुद्दमज्झंसि । रुक्खग्गेसु य वसियं, संसारं संसरतेणं ॥५७॥ देवो नेरइओत्तिय, कीड पयंगु त्ति माणुसो एसो । रुवस्सी य विरुवो, सुहभागी दुहभागी य ॥५८॥ राउत्ति य दमगुत्ति य, एस सवागुत्ति एस वेयविओ । सामी दासो पुज्जो, खलोत्ति अधणो धणवइत्ति ॥५९॥ नवि इच्छ काइ निअमो, सकम्मविणिविट्ठसरिसकयचिट्ठो । अन्नुन्नरुववेसो, नडुव्व परिअत्तए जीवो ॥६०॥

नरएसु वेग्रणाओ, अणोवमाओ असायबहुलाओ ।
रे जीव तए पत्ता, अणतखुत्तो बहुविहाओ ।६१।
देवत्ते मणुअत्ते, पराभिओगत्तण उवगएण ।
भीसणदुह बहुविह, अणतखुत्तो समणुभूअ ।६२।
तिरियगइ अणुपत्तो, भीममहावेअण अणेगवि
हा । जम्मणमरणरहट्ठे, अणतखुत्तो परिब्भ-
मिओ ।।६३।। जावति केवि दुक्खा, सारीरा
माणसा व ससारे । पत्तो अणत खुत्तो, जीवो
ससारकत्तारे ।.६४।। तण्हा अणतखुत्तो, ससारे
तारिसी तुम आसी । ज पसमेउ सव्वो, दहीण-
मुदय न तिरीज्जा ।। ६५ ।। आसी अणतखुत्तो,
ससारे ते छुहावि तारिसिया । ज पसमेउ सव्वो,
पुग्गलकाओवि न तारिज्जा । ६६ ।। काउणम
ऽणगाइ, जम्मणमरण परियट्टणसयाइ । दुक्केण
माणुसत्त, जइ लहइ जहिच्छियं जीवो ।।६७।।
त तहदुल्लहलभ, विज्जुलयाचचल च मणुयत्त ।
धम्ममि जो विसीयइ सो काउरिसो न सप्पुरिसो

॥६८॥ माणुस्सजम्मे तडि लद्धयंमि, जिणिंद-धम्मो न कओ य-जेणं । तुट्टे गुणे जह धाणुक्क-एणं, हत्था मलेवा य अवस्सतेणं ॥६९॥ रे जीवनिसुणि चंचलसहाव. मिल्हेविणु सयलविव-ब्भभाव । नयभेवपरिग्गह विविहजाल, संसारि-अत्थी सहु इंदयाल ॥७०॥ पियपुत्तमित्त घरघर-णिजाय, इहलोइअ सव्वनियसुहसहाय । नवि-अत्थि कोइ तुह सरणिमुक्क, इकल्लु सहसि तिरिनिरयदुक्क ॥७१॥ कुसग्गे जह ओसबिंदुए, थोवं चिट्ठइ लंवमाणए । एवं मणुआण जीवियं, समयं गोयम मा पमायए ॥७२॥ संबुज्झह किं न वज्झह, संबोहि खलु पिच्च दुल्लहा । नो हू ओवणमंति रइउ, नो सुलहं पुणरवि जीवियं ॥७३॥ डहरा बुड्ढा य पासह, गब्भच्छावि चयंति माणवा । सेणे जह वट्टयं हरे, एवमाऽऽ-क्कयंमि तुट्टइ ॥७४॥ तिहुयणजणंमरणं, दट्ठूण नयंति जे न अप्पाणं । विरमंति न पावाओ, धी

घी घी द्दुसरण ताण ॥७५॥ मामा जपह वहुय, जे वद्धा चिक्कणेहि कम्मेहिं। सव्वेसि तोसि, जायइ, हियोवएसो महाहोसो ॥७६॥ उपदेशो हि मूर्खाणा, प्रकोपाय न शान्तये। पय पान भुजङ्गाना, केवल विपवद्धनम् ।।७७।। कुणसि ममत्व धणसय, णविहवपमुहेसु भ्रणतदुक्खेसु। सिढिलेसि ग्रायरपुण, भ्रणतसुक्खमि मुक्खम्मि ॥७८॥ समारो दुहहेऊ, दुक्खफलो दुसहदुक्खरुवो य। न चयति तपि जीवा, श्रइवद्धा नेहनिग्रालेहिं ।।७९। नियकम्मपवण चलिश्रो, जोवो ससार-काणणे घोरे। का का विडबणाश्रो, न पावए दसहदुक्खाश्रो ॥८०॥ सिसिरमि सोयलानिल, लहरिसहस्सेहिभिन्नघणदेहो। निरियत्तणमिऽरणे, भ्रणतसो निहणम ऽणुपत्तो ॥८१॥ गिम्हाय वसतत्तो, ऽरणे छुहिश्रो पिवासिश्रो वहुसो। सपत्तो तिरियभवे, मरणदुह वहु विसूरतो ।८२। वासासुऽरणमज्झे,गिरिनिज्झरणोदगेहि वज्झतो।

सीया निलइज्झवियो, मओसि तिरियत्तणे वहुसो ॥८३॥ एवं तिग्यि भवेसु, कीसंतो दुक्खसयसहस्सेहिं । वसियो अणंतखुत्तो, जीवो भीसणभवारणे ॥ ८४ ॥ दुट्ठट्ठकम्मपलया, निलपेरिओ भीसणंमिभवरणे । हिडंतो नरएसु वि, अणंतसो जीव पत्तोसि ॥८५॥ सत्तसु नरयमहीसु, वज्झानलदाह सीयवियणासु । वसियो अणंतखुत्तो, विलवंते करुणसद्दे हि ॥८६॥ पियमायसयणरहिओ. दुरंतवाहिहिं पीडिओ वहुसो । मणुअभवे निस्सारे, बिलाविओ किं न तं सरसि ॥८७॥ पवणु व्व गयणमग्गे, अलक्खियो भमइभववणे जीवो । ठाणट्ठाणमि समु, ज्झिऊण धणसयण संघाए ॥ ८८ ॥ विद्धिज्जंता असयं, जम्मजरामरणत्तिक्खकुंतेहिं । दुहमऽणुहवति घोरं, संसारे संसरंत जिआ ॥८९॥ तहवि खणंवि कयावि हु, अन्नाणभुयंगडंकिया जीवा । संसारचारगाओ, नय ओविज्जंति मूढमणा ॥ ९० ॥ कीलसि

कियतवेल, सरीरवा वीइ जत्थ पइममय ।
काप्लरहट्ठघडीहि, सोमिज्जइ जीविय भो ह
। ६१ । रे जीव वुज्झमामु, झमा पमाय करेसिरे-
पाव । किं परलोए गुरुदुक्खभायण, होहिसि
ग्रयाण ॥६२॥ बुज्झसु रे जीव तुम, मामुज्झसि
जिणमयमिनाऊण । जम्हा पुणरवि एसा,
सामग्गी दुल्लहा जीव ॥६३॥ दुलहो पुण जिण-
धम्मो, तुम पमायायरो मुहेसी य। दुसह च
नरयदुक्ख, कह होहिसि त न याणामो ॥६४॥
ग्रथिरेण थिरो समले, ण निम्मलो पावमेण
साहीणो । देहेन जइ विढप्पइ, धम्मो ता किं न
पज्जन ॥६५॥ जह चिंतामणिरयण, सुलह न हु
होइ तुज्झविहवाण । गुणविहववज्जियाण,
जियाण तह धम्मरयणपि ॥ ६६ ॥ जह दिट्ठि-
सजोगो, न होइ जच्चधयाण जीवाण । तह
जिणमयसजोगो, न होइ मिच्छधजीवाण ॥६७॥
पच्चक्कम ऽणतगणे, जिणदधम्मे न दोस लेसोवि ।

तहवि हु अन्नाणंधा, न रमंति कयावि तंमि जिया ॥९८॥ मिच्छे अणंतदोसा, पयडा दीसंति न विय गुणलेसो। तहवियं तं चेव जिया, हि मोहंधा निसेवंति ॥ ९९ ॥ धिद्धि ताण नराणं, विन्नाणे तह गुणेसु कुशलत्तं। सुहसच्चधम्मरयणे, सुपरिक्खं जे न जाणंति ॥१००॥ जिणधम्मोऽयं जीवाणं, अप्पुव्वो कप्प पायवो। सग्गापवग्ग-सुक्खाणं, फलाणं दायगो इमो ॥१०१॥ धम्मो बंधु सुमित्तो य, धम्मो य परमो गुरु। मुक्ख-मग्गपयट्ठाणं, धम्मो परमसंदणो ॥१०२॥ चउ-गइणंत दुहानल, पलित भवकाणणे महाभीमे। सेवसु रे जीव तुमं, जिणवयणं अमिय कुंड समं ॥१०३॥ विसमे भव मरुदेशे, अणंतदुह गिम्ह-ताव संतत्ते। जण धम्म कप्प रुक्खं, सरसु तुमं जीव सिव सुहदं ॥१०४॥ किं बहुणां जिण धम्मे, जइयव्वं जह भवोदहिं घोरं। लहु तरियम ऽणंत सुहं, लहइ जिओ सासयं ठाणं ॥१०५॥

:: श्री वीतराग स्तोत्र ::

। कालिकाल-सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य-विरचित ।

: प्रथम—प्रकाश :

स परात्मा परज्योति परम परमेष्ठिनाम् । आदित्यवर्णंतमस , परस्तादामनन्ति यम् ॥१॥ सर्वेयेनोदमूल्यन्त, समूला क्लेशपादपा । मूर्ध्ना-यस्मै नमस्यन्ति, सुरासुरनरेश्वरा. ॥२॥ प्रावर्त-न्तयतोविद्या , पुरुपार्थ प्रसाधिका. । यस्स ज्ञान-भवद्भाविभूतभावाऽवभासकृत् ॥३॥ यस्मिन्वि-ज्ञानमानन्द, ब्रह्मचैकात्मता गतम् । सश्रद्धेय स च ध्येया, प्रपद्य शरण च तम् ॥४॥ तेनस्या नाथवास्तस्मै, स्पृहयेय समाहित । तत कृतार्थो-भूयास, भवेय तस्यकिङ्करा ॥५॥ तत्र स्तोत्रेण कुर्यां, च पवित्रा स्वा सरस्वतीम् । इद हि भव-कान्तारे, जन्मिना जन्मनः फलम् ॥६॥ क्वाहप-

शोरपि पशुर्वीतरागस्तवः क्व च ? उत्तितीर्षुरं-
ख्यानीं, पद्भ्यां पङ्गुरिवास्म्यतः ।।७।। तथापि
श्रद्धामुग्धोऽहं, नोपालभ्यस्स्खलन्नपि । विशृङ्ख-
लापि वाग्वृत्तिः, श्रद्धधानस्यशोभते ।। ८ ।।
श्रीहेमचन्द्रप्रभवाद्वीतरागस्तवादितः । कुमार-
पालभूपालः, प्राप्नोतु फलमीप्सितम् ।।९।।

॥ इति प्रथमः प्रकाशः ॥



:: द्वितीय—प्रकाश ::

प्रियङ्गुस्फटिकस्वर्ण–पद्मरागाञ्जन प्रभः ।
प्रभो ! तवाधौत शुचिः, कायः कमिवनाक्षिपेत्
।।१।। मंदारदामवन्नित्यमवासित सुगन्धिनि ।
तवाङ्गे भृङ्गतां यान्ति, नेत्राणि सुरयोषिताम्
।। २ ।। दिव्यामृतरसास्वाद–पोषप्रतिहताइव ।
समाविशन्ति ते नाथ ! नाङ्गे रोगोरगव्रजाः

॥ ३ ॥—त्वय्यादर्शतलालीन-प्रतिमाप्रतिरूपके। क्षरत् स्वेदविलीनत्व-कथाऽपि वपुषः कुतः ॥४॥ न केवलं रागमुक्तं, वीतराग! मनस्तव। वपु-स्थितं रक्तमपि, क्षीरधारासहोदरम् ॥५॥ जग-द्विलक्षणं किंवा, तवान्यद्वक्तु मीश्महे? यदविस्र-मबीभत्सं, शुभ्रं मांसमपि प्रभो? ॥६॥ जलस्थल समुद्भूता सत्यज्य सुमनः स्रजः। तव निःश्वास सौरभ्यमनुयान्तिमधुव्रताः ॥ ७ ॥ लोकोत्तर चमत्कार-करी तव भवस्थिति। यतोनाहारनी-हारौ, गोचरौ चर्मचक्षुषाम् ॥८॥

इति द्वितीय प्रकाश।



तृतीय प्रकाश

सर्वाभिमुख्यतो नाथ! तीर्थकृन्नामकर्म-जात। सर्वथा सम्मुखीनस्त्वमानन्दयसियत्प्रजा

।। १ ।। यद्योजनप्रमाणेऽपि, धर्मदेशन सद्मनि। सम्मान्ति कोटिशस्तिर्यग्नदेवाः सपरिच्छदाः।२। तेषामेव स्वस्वभापा परिणाम मनोहरम्। अप्येकरूपं वचनं, यत्रो धर्मावि बोधकृत् ॥३॥ साऽग्रेपियोजनशते, पूर्वोत्पन्नागदाम्बुदा; । यदञ्जसा-विलीयन्ते, त्वद्विहारानिलोर्म्मिभि ॥४॥ नाविर्भवन्ति यद्भूमौ मूपकाः शलभाः शुकाः। क्षणेन-क्षितिपक्षिप्ता, अनीतय इवेतयः ।। ५ ॥ स्त्रीक्षेत्रपद्रादिभवो, यद्वैराग्निः प्रशाम्यति। त्वत्कृपापुष्करावर्त्तवर्षादिवभुवस्तले ।। ६ ।। त्वत्प्रभावे भुविभ्राम्यत्यशिवोच्छेदडिण्डिमे । सम्भवन्ति नयन्नाथ! मारयोभुवनारयः ॥७॥ कामवर्षिणि लोकानां, त्वयि विश्वैक वत्सले। अतिवृष्टिर वृष्टिर्वा, भवेद्यन्नोपतापकृत् ।। ८ ।। स्वराष्ट्रपरराष्ट्रेभ्यो, यत्क्षुद्रोपद्रवा द्रुतम्। विद्रवन्तित्वत्प्रभावात्, सिंहनादादिवद्विपाः ॥६॥ यत्क्षीयते च दुर्भिक्षं, क्षितौ विहरति त्वयि। सर्वाद्भुतप्रभा-

वाद्ये, जङ्गमे कल्पपादपे ॥१०॥ यन्मूर्ध्न पश्चि-मेभागे, जितमार्त्तण्डमण्डलम् । माभूद्वपुर्दु रालोक मितीवोत्पिण्डित महः ॥ ११ ॥ स एष योग साम्राज्य-महिमाविश्वविश्रुत. । कर्मक्षयोत्थो भगवन्कस्यनाश्चर्यकारणम् ॥ १२ ॥ अनन्त कालप्रचितमनन्तमपि सर्वथा । त्वत्तो नान्य कर्मकक्षमुन्मूलयति मूलत ॥ १५ ॥ तथोपाये प्रवृत्तस्त्व, क्रियासमभिहारतः । ययानिच्छन्नु-पयेस्य, परा श्रियमशिश्रिय ॥१४॥ मैत्रीपवित्र-पात्राय, मुदितामोदशालिने । कृपोपेक्षाप्रतीक्ष्याय तुभ्य योगात्मने नमः ॥१५॥

इति तृतीय प्रकाश



चतुर्थ—प्रकाश

मिथ्यादृशा युगान्तार्क', सुदृशाममृताञ्ज-नम् । तिलक तीर्थ कृल्लक्ष्म्या पुरश्चक्रतवैधते

॥ १ ॥ एकोऽयमेव जगति, स्वामीत्याख्यातुमुच्छ्रता। उच्चै रिन्द्रध्वजव्याजात्तर्जनोजंभविद्विषा ॥२॥ यत्रपादोपदंधत्तस्तव तत्र सुरासुराः। मन्ये युगपदाख्यातुं, चतुर्वक्त्रोऽभवद्भवान् ॥ ३ ॥ त्वयिदोषत्रयात्त्रातुं, प्रवृत्ते भुवनत्रयीम् । प्राकारत्रितयं चक्रुस्त्रयो ऽपित्रिदिवौकस: ॥४॥ दान शील तपो भाव भेदाद्धर्म्मं चतुर्विधम्। मन्येयुगपदाख्यातुं, चतुर्वक्त्रोऽभवद्भवान् ॥५॥ अधोमुखा: कण्टका: स्युधार्त्र्यांविहरतस्तव । भवेयु: सम्मुखीना: किंतामसास्तिग्मरोचिष: ।६। केश रोमनखश्मश्रु, तवावस्थितमित्ययम् । वाह्योऽपियोगमहिमा, नाप्तस्तीर्थ करैः परै: ।७। शब्दरूपरससपर्श – गन्धाख्या: पञ्चगोचरा: । भजन्ति प्रातिकूल्यंन, त्वदग्रे तार्किका इव ॥८॥ त्वत्पादावृतव: सर्वे, युगपत्पर्युपासते । आकाल कृतकन्दर्पसाहायक भयादिव । ९॥ सुगन्ध्युदकवर्षेण, दिव्यपुष्पोत्करेण च । भावित्वत्पाद-

सस्पर्शा, पूजयन्ति भुवसुरा ।१०। जगत्प्रतीक्ष्य
त्वायान्ति, पक्षिणोऽपिप्रदक्षिणम् । का गतिर्महता
तेषा त्वयि ये वामवृत्तय. ॥११॥ पञ्चेन्द्रियाणा
दौ। शील्यक्वभवेद्भवदन्तिके ? । एकेन्द्रियोऽपि
यन्मुञ्चत्यनिल। प्रतिकूलताम् ॥१२॥ मूर्ध्नानि-
मन्ति तरवस्त्वन्माहात्म्यचमत्कृता। । तत्कृतार्थं-
शिरस्तेषा, व्यर्थं मिथ्यादृशापुन ।१३। जघन्यतः
कोटिसङ्ख्यास्त्वासेवन्ते सुरासुरा. । भाग्य
सम्भारलभ्येऽर्थे, न मन्दाअप्युदासते.॥१४॥



॥ पञ्चम—प्रकाश-॥

गायन्निवालिविरुतैर् नृत्यन्निवचलैर्दलै । त्वद्-
गुणैरिवरक्तोऽसौ, मोदते चैत्यपादप' ॥ १ ॥
आयोजनसुमनसोऽधस्तान्निक्षिप्तबन्धना । जानु-
दघ्नी। सुमनसो, देशनोर्व्या किरन्ति ते ॥२॥

मालवकैशिकीमुख्यग्रामरागपवित्रितः । तव दिव्योध्वनिः पीतो । हर्षोद्ग्रीवैर्मृगैरपि ।।३।। तवेन्दुधामधवला, चकास्ति चमरावली । हंसालिरिव वक्त्राब्जपरिचर्यापरायणा ।।४।। मृगेन्द्रासनमारूढे, त्वयि तन्वति देशनाम् । श्रोतुं-मृगास्समायान्ति, मृगेन्द्रमिव सेवितुम् ।। ५ ।। भासां चयैः परिवृतो, ज्योत्स्नाभिरिवचन्द्रमाः । चकोराणामिव दृशां, ददासिपरमां मुदम् ।।६।। दुन्दुभिर्विश्व विश्वेश ! पुरोव्योम्निप्रतिध्वनन् । जगत्याप्तेषुते प्राज्यं, साम्राज्यमिवशंसति ।।७।। तवोर्ध्वमूर्ध्वं पुण्यर्द्धिक्रमस ब्रह्मचारिणी । छत्रन्त्रयीत्रिभुवनप्रभुत्वप्रौढिशंसिनी ।। ८ ।। एतां चमत्कारकरीं, प्रातिहार्यश्रियं तव । चित्रीयन्ते न के दृष्ट्वा, नाथ ! मिथ्यादृशोऽपि हि ।।९।।



॥ षष्ठ—प्रकाश ॥

लावण्यपुण्यवपुषि, त्वयि नेत्रामृताञ्जने । माध्यस्थ्यमपि दौ स्थ्याय, किम्पुनर्द्वेषविप्लव ॥ १ ॥ त्वापि प्रतिपक्षोऽस्ति, सोऽपि कोपादिविप्लुत । अनया किंवदन्त्यापि, किं जीवन्ति विवेकिन ॥२॥ विपक्षस्ते विरक्तश्चेत्स त्वमेवाथ रागवान् । न विपक्षो विपक्ष किं खद्योतो द्युतिमालिन ? ॥३॥ स्पृहयन्ति त्वद्योगाय, यत्तेऽपि लवसत्तमा । योगमुद्रादरिद्राणा, परेषा तत्कथैवका ? ॥ ४ ॥ त्वा प्रपद्यामहेनाथ, त्वा स्तुमस्त्वामुपास्महे । त्वत्तो हि न परस्त्राता, किम्ब्रूमः किमु कुर्महे ॥५॥ स्वय मलीम सत्वारै प्रतारणपरै' परै। । वच्यते जगदप्येतत्कस्य पूत्कर्महे पुर ॥६॥ नित्यमुक्तान् जगज्जन्मक्षेमक्षयकृतोद्यमान् । वन्ध्यास्तनन्धयप्रायान्, को देवाश्चेतनः श्रयेत् ॥ ७ ॥ कृतार्थाजठरोपस्थदु स्थितैरपि

दैवतैः । भवादृशान्निह्नुवते, हा हा देवास्तिकाः परे ॥८॥ खपुष्पप्रायमुत्प्रेक्ष्य, किंचिन्मान प्रकल्प्य च । संमान्ति देहे गेहे वा, न गेहे नर्दिनः परे ॥ ६ ॥ कामरागस्नेह रागावीषत्कर निवारणौ । दृष्टिरागस्तु पापीयान्, दुरुच्छेदः सतामपि ॥१०॥ प्रसन्नमास्यं मध्यस्थे, दृशौ लोकम्पृण वचः । इति प्रीतिपदे वाटं, मूढा स्त्वय्यप्युदासते ।११। तिष्ठेद्वायुर्द्रवेद द्रिज्वलेज्जलमपि क्वचित् । तथापि ग्रस्तो रागाद्यै र्नाप्तो भवितुमर्हति ॥ १२ ॥



:: सप्तम—प्रकाश ::

धर्माधर्मौ विना नाङ्ग विनाङ्गेन मुखं कुतः । मुखाद्विना न वक्तृत्वं तच्छास्तारः परे कथम् ? ॥ १ ॥ अदेहस्य जगत्सर्गे प्रवृत्तिरपि

नोचिता । न च प्रयोजन किंचित्स्वातन्त्र्यान्न पराज्ञया ।।२।। क्रीडया चेत्प्रवर्त्तेत रागवान्स्यात्कुमारवत् । कृपयाऽथ सृजेत्तर्हि सुख्येव सकल सृजेत् । ३।। दु ख दौर्गत्य दुर्योनि जन्मादि क्लेश विह्वलम् । जन तु सृजतस्तस्य, कृपालो. का कृपालुता ? ।। ४ ।। कर्मापेक्षस्य चेत्तर्हि न स्वतन्त्रोऽस्मदादिवत् । कर्मजन्ये च वैचित्र्ये किमनेन शिखण्डिना ? ।।५।। अथ स्वभावतो वृत्तिरवितर्क्या महेशितु । परीक्षकाणा तर्ह्येव परीक्षाक्षेपडिण्डम. ।।६।। सर्वभावेपु कर्तृत्व ज्ञातृत्व यदि सम्मतम् । मतंन मन्ति सर्वज्ञा, मुक्ता कायभृतोऽपि च । ७।। सृष्टिवाद कुहेवाकमुन्मुच्येत्यप्रमाणकम् । त्वच्छासनेरमन्ते ते येषा नाथ । प्रसीदसि ।।८।।

—❀—

:: अष्टम—प्रकाश ॥

सत्त्वस्यैकान्तनित्यत्वेकृतनाशा कृतागमौ । स्यातामेकान्तनाशेऽपि, कृतनाशाकृतागमौ ॥१॥ आत्मन्येकान्तनित्ये स्यान्न भोगः सुख दुःखयोः । एकान्तानित्यरूपेऽपि न भोगः सुखदुःखयोः ॥२॥ पुण्यपापे वन्धमोक्षौ, न नित्यैकान्तदर्शने । पुण्य-पापे वन्धमोक्षौ, नानित्यैकान्तदर्शने ॥३॥ क्रमा-क्रमाभ्यांनित्यानां, युज्यतेऽर्थक्रिया नहि । एकान्त क्षणिकत्वेऽपि युज्यतेऽर्थं क्रियानहि ॥४॥ यदातु-नित्यानित्य, स्वरूपतावस्तुनो भवेत् । यथात्थ-भगवन्नैव, तदादोषोऽस्ति कश्चन ॥५॥ गुडो हि कफहेतुः स्यान्नागरं पित्तकारणम् । द्वयात्मनि न दोषोऽस्ति, गुडनागर भेषजे ॥६॥ द्वयं विरुद्धनै-कत्राऽसत्प्रमाणप्रसिद्धितः । विरुद्धवर्ण योगो हि दृष्टो मेचकवस्तुषु ॥ ७ ॥ विज्ञानस्यैकमाकारं, नानाकारकरम्वितम् । इच्छंस्तथागतः प्राज्ञो

नानेकान्त प्रतिक्षिपेत् ॥ ८ ॥ चित्रमेकमनेकच रूपं, प्रामाणिक वदन्। योगोवैशेपिको वापि, नानेकान्त प्रतिक्षिपेन् ॥ ६ ॥ इच्छन्प्रधान सत्वाधै, विरुद्धं गुंम्फित्र गुणैं। साङ्ख्य मख्यावता मुख्यो नानेकान्त प्रतिक्षिपेन् ॥ १० ॥ विमतिस्सम्मतिर्वापि, चार्वाकस्य नमृग्यते। परलोकात्ममोक्षेषु, यस्य मुह्यति शेमुषी ॥११॥ तेनोत्पादव्यवस्थेमसम्भिन्न, गोरसादिवत्। त्वदुपज्ञकृतधिय, प्रपन्नावस्तुतस्तुसत् ॥१२॥



❀ नवम्—प्रकाश ❀

यत्राल्पेनापि कालेन, त्वद्भक्ते फलमाप्यते। कलिकाल स एकोस्तु कृत कृतयुगादिभि ॥१॥ सुषमातोदु षमाया, कृपाफनवतो तव। मेरुतो-मरुभूमो हि श्लाघ्या कल्पतरो स्थिति ॥२॥

श्राद्धः श्रोता सुधीर्वक्तायुज्येयातांयदीशतत् । त्व-
च्छासनस्य साम्राज्यमेकच्छत्रंकलावपि ।। ३ ।।
युगान्तरेऽपि चेन्नाथ ! भवन्त्युच्छृङ्खलाः खलाः ।
वृथैव तर्हि कुप्यामः कलयेवामकेलये ।। ४ ।।
कल्याणसिद्धयै साधीयान्, कलिरेवकषोपलः ।
विनाग्निगन्धमहिमा काकतुण्डस्य नैधते ।।५।।
निशि दीपोऽम्बुधौ द्वीपंमरौशाखीहिमे शिखी ।
कलौ दुरापःप्राप्तोऽयं, त्वत्पादाब्जरजः कणः ।६।
युगान्तरेषुभ्रान्तोऽस्मि त्वद्दर्शन विनाकृतः ।
नमोऽस्तु कलये यत्र, त्वद्दर्शनमजायत ।७।। बहु-
दोषो दोषहीनात्त्वत्तः कलिरशोभता । विषयुक्तो-
विषहरात्फणीन्द्र इव रत्नतः ।।८।।



❀ दशम—प्रकाश ❀

मत्प्रसत्तेस्त्वत्प्रसादस्त्वत्प्रसादादियं पुनः ।
इत्यन्योन्याश्रयंभिन्धिप्रसीद भगवन् ! मयि ।१।

निरीक्षितु रूपलक्ष्मी, सहस्त्राक्षोऽपि न क्षम । स्वामिन् ! सहस्त्रजिह्वोऽपि शक्तो वक्तु न ते गुणान् ॥२॥ सरायाननाथ ! हरसेऽनुत्तर स्वर्गिणामपि । अत परोऽपि कि कोऽपि गुणास्तुत्योऽस्ति वस्तुत ॥ ३ ॥ इद विरुद्ध श्रद्धत्ता कथमश्रद्दधानकः । आनन्द सुख शक्तिश्च, विरक्तिश्च सम त्वयि ॥ ४ ॥ नाथेय घटयमानापि, दुर्घटा घटता कथम् । उपेक्षा सर्व सत्वेषु परमाचोपकारिता ॥ ५ ॥ द्वय विरुद्ध भगवस्तव, नान्यस्य कस्यचित् । निर्ग्रन्थता परा या च या चोच्चैश्चक्रवर्तिता ॥६॥ नारका अपि मोदन्ते, यस्य कल्याणपर्वसु । पवित्र तस्य चारित्र, को वा वर्णयितु क्षम ॥ ७ ॥ शमोऽद्भुतोऽद्भुत रूप, सर्वात्मसु कृपाद्भुता । सर्वाद्भुतनिधीशाय, तुभ्य भगवते नम ॥८॥



❀ एकादश—प्रकाश ❀

निघ्नन्परीषहचमूमुपसर्गान्प्रतिक्षिपन् ।
प्राप्तोऽसिशमसौहित्यं, महतांकापिवैदुषी ॥ १ ॥
अरक्तोभुक्तवान्मुक्तिमद्विष्टोहतवान्द्विषः । अहो
महात्मनांकोऽपि महिमा लोकदुर्लभः ॥ २ ॥
सर्वथानिर्जिगीषेणभीतभीतेन चागसः । त्वया
जगत्त्रयंजिग्ये, महतांकापि चातुरी ॥३॥ दत्तं न
किञ्चित्कस्मैचिन्नात्तंकिञ्चित्कुतश्चन । प्रभुत्वं ते
तथाप्येतत्कला कापिविपश्चिताम् ॥४॥ यद्देह-
स्यापि दानेन, सुकृतंनार्जितं परैः । उदासीनस्य
तन्नाथ ! पादपीठे तवालुठत् ॥ ५ ॥ रागादिषु
नृशसेन, सर्वात्मसु कृपालुना । भीमकान्तगुणेनो-
च्चैः साम्राज्यंसाधित त्वया ॥६॥ सर्वे सर्वात्म-
नाऽन्येषु, दोषास्त्वयि पुनर्गुणाः । स्तुतिस्तवेयं
चेन्मिथ्या, तत्प्रमाणं सभासदः ॥ ७ ॥ महीय-
सामपिमहान्महनीयोमहात्मनाम् । अहो मे स्तु-
वतः, स्वामी स्तुतेर्गोचरमागमत् ॥८॥

ॐ द्वादश—प्रकाश ॐ

पट्वभ्यासादरै पूर्वं तथा वैराग्यमाहर ।
यथेह जन्मन्याजन्म तत्सात्मीभावमागमत् ॥१॥
दुःखहेतेषु वैराग्यं न तथा नाथ ! निस्तुषम् ।
मोक्षोपाय प्रवीणस्य यथाते सुखहेतेषु ॥ २ ॥
विवेकशाणैर्वैराग्यशस्त्रंशात त्वया तथा । यथा-
मोक्षेऽपि तत्साक्षादकुंठित पराक्रमम् ॥३॥ यदा
मरुन्नरेन्द्र श्रीस्त्वय नाथोपभुज्यते । यत्रतत्र
रतिर्नामि, विरक्तत्व तदापि ते ॥ ४ ॥ नित्य
विरक्त कामेभ्यो यदा योगप्रपद्यते । अलमेभिरि-
तिप्राज्य तदा वैराग्यमस्तिते ॥५॥ सुखेदुःखेभवे-
मोक्षेयदौदासीन्यमीशिषे । तदा वैराग्यमेवेति
कुत्र नासि विरागवान् ॥६॥ दुःखगर्भे मोहगर्भे
वैराग्येनिष्ठिता. परे । ज्ञानगर्भंतुवैराग्य त्वय्ये-
कायनता गतम् ॥ ७ ॥ औदासीन्येऽपि सतत
विश्व विश्वोपकारिणे । नमो वैराग्यनिघ्नाय
तायिने परमात्मने ॥८॥

❀ त्रयोदश—प्रकाश ❀

अनाहूतसहायस्त्वं, त्वम कारणवत्सल: । अनभ्यर्थितसाधुस्त्वं, त्वमसम्बन्धबान्धव ।। १ ।। अनक्तस्निग्धमनसममृजोज्ज्वलवाक्पथम् । अधोतामलशीलं त्वांशरण्यंशरणं श्रये ।।२।। अचण्डवीरवृत्तिनाशमिना शमवर्त्तिना । त्वया काममकुट्यन्त कुटिला: कर्मकण्टका: ।।३।। अभवाय महेशायागदाय नरकच्छिदे । अराजसाय ब्रह्मणे कस्मैचिद्भवते नमः ।।४।। अनुक्षितफलोदग्राद निपात गरीयस: । असङ्कल्पितकल्पद्रोस्त्वत्त:फलमवाप्नुयाम ।।५।। असङ्गस्य जनेशस्यनिर्ममस्य कृपात्मन: । मध्यस्थस्य जगत्त्रातुरनङ्कस्तेऽस्मिकिङ्कर: ।।६।। अगोपिते रत्ननिधावव‍ृते कल्पपादपे । अचिन्त्ये चिन्तारत्ने च त्वय्यात्मायंमयार्पित: ।।७।। फलानुध्यानवन्ध्योऽहं, फलमात्रतनुर्भवान् । प्रसीद यत्कृत्यविधौ, किंकर्तव्य जडे मयि ।। ८ ।।

❀ चतुर्दश—प्रकाश ❀

मनोवच कायचेष्टा कष्टा। महत्य सर्वथा।
श्लथत्वेनैवभवतामन शल्य वियोजितम् ॥१॥
सयतानि न चाक्षाणि नैवोच्छृङ्खलितानि च।
इति सम्यक्प्रतिपदा त्वयेन्द्रियजय कृत ॥२॥
योगस्याष्टाङ्गता नून प्रपञ्च: कथमन्यथा।
आबालभावतोप्येष तवसात्म्यमुपेयिवान् ॥३॥
विषयेषुविरामस्ते चिरसहचरेष्वपि। योगे
सात्म्यमदृष्टेऽपि स्वामिन्निदमलौकिकम् ॥ ४ ॥
तथा परेन रज्यन्ते उपकार परे परे। यथाऽप-
कारिणिभवानहो सर्वमलौकिकम् ॥५॥ हिंसका
अप्युपकृता आश्रिता अप्युपेक्षिता। इद चित्र
चरित्र ते के वा पर्यनुयुञ्जताम् ॥ ६ ॥ तथा
समाधौ परमेत्वयात्माविनिवेशित सुखीदु स्यस्मि
नास्मीतियथान प्रतिपन्नवान् ॥ ७ ॥ ध्याताध्येय
तथा ध्यान त्रयमेकात्मता गतम्। इतिते योग-
माहात्म्य कथश्रद्धीयता परै:।

❀ पञ्चदश—प्रकाशः ❀

जगज्जेत्रागुणास्त्रातरन्ये तावत्तवासताम् ।
उदात्तशान्तया जिग्येमुद्रयैव जगत्त्रयी ।१। मेरु-
स्तृणीकृतोमोहात्पयोधिर्गोष्पदीकृतः । गरिष्ठेभ्यो
गरिष्ठो यैःपाप्मभिस्त्वमपोहितः ।। २ ।। च्युत-
श्चिन्तामणिः पाणेस्तेषां लब्धा सुधा मुधा ।
यैस्त्वच्छासनसर्वस्वमज्ञानैर्नात्मसात्कृतम् ।। ३ ।।
यस्त्वय्यपि दधौ दृष्टिमुल्मुकाकारधारिणीम् ।
तमाशुशुक्षणिः साक्षादालप्याल मिदं हि वा ।४।
त्वच्छासनस्य साम्यं ये मन्यन्ते शासनान्तरैः ।
विषेण तुल्यं पीयूष, तेषां हन्त हतात्मनाम् ।।५।।
अनेऽमूकाभूया सुस्ते येषां त्वयिमत्सरः । शुभो-
दर्कायवैकल्यमपिपापेषु कर्मसु ।।६।। तेभ्यो नमो-
ऽञ्जलिरयं तेषां तान्समुपास्महे । त्वच्छासनामृत
रसैर्यैरात्माऽसिच्यतान्वहम् ।। ७ ।। भवे तस्यै
नमोयस्यां तव पादनखांशवः । चिरंचूडामणी-

यन्ते ब्रूमहे किमत परम् ॥ ८ ॥ जन्मवानस्मि धन्योऽस्मि कृतकृत्योस्मि यन्मुहु । जातोऽस्मि त्वद् गुण ग्रामरामणीयकलम्पट ॥९॥



❀ षोडश—प्रकाश ❀

त्वन्मतामृतपानोत्थाइत शमरसोर्मय ।
पराणयन्तिमा नाथ ! परमानन्दसम्पदम् ॥१॥
इतश्चानादिसंस्कारमूर्च्छितो मूर्च्छयत्यलम् ।
रागोरग विषावेगो हताश करवाणि किम् ?
॥२॥ रागाहिगरलाघ्रातोऽकार्यंथत्कर्मवैशमम् ।
तद्वक्तुमप्यशक्तोऽस्मिधिङ्मेप्रच्छन्नपापताम् ।३।
क्षण सक्त क्षण मुक्त क्षण क्रुद्ध क्षण क्षमी ।
मोहाद्यै . क्रोडयैवाह कारित कपिचापलम् ॥४॥
प्राप्यापि तव सम्बोधि मनोवाक्कायकर्मजे ।
दुश्चेष्टितैर्मया नाथ ! शिरसि ज्वालितोऽनलः

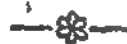
।५। त्वय्यपि त्रातरि त्रातर्यन्मोहादिमलिम्लुचैः ।
रत्नत्रयं मे ह्रियते हताशो हा हतोऽस्मि तत् ।६।
भ्रान्तस्तीर्थानि दृष्टस्त्वं मयैकस्तेषु तारकः ।
तत्तवाङ्घ्रौ विलग्नोऽस्मि नाथ ! तारय तारय
।।७।। भवत्प्रसादेनैवाहमियतीं प्रापितो भुवम् ।
औदासीन्येन नेदानीं तव युक्तमुपेक्षितुम् ।।८।।
ज्ञाता तात त्वमेवैकस्त्वत्तो नान्यः कृपापरः ।
नान्योमतः कृपापात्रमेधि यत्कृत्यकर्मठः ।।९।।



❀ सप्तदश—प्रकाशः ❀

स्वकृतं दुष्कृतं गर्हन् सुकृतं चानुमोदयन् ।
नाथ ! त्वच्चरणौ यामि शरणं शरणोज्झितः
।।१।। मनोवाक्कायजे पापे कृतानुमतिकारितैः ।
मिथ्या मे दुष्कृतं भूयादपुनः क्रिययान्वितम् ।२।
यत्कृतं सुकृतं किंचिद्रत्नत्रितय गोचरम् । तत्सर्व-

मनुमन्येऽहं मार्गमात्रानुसार्यपि ॥ ३ ॥ सर्वेषा-
मर्हदादीनां यो योऽर्हत्त्वादिको गुणः । अनुमोद-
यामि तं तं सर्वं तेषां महात्मनाम् ॥४॥ त्वां
त्वत्फलभूतान्सिद्धांस्त्वच्छासनरतान्मुनीन् । त्व-
च्छासनं च शरणं प्रतिपन्नोऽस्मि भावतः ॥५॥
क्षमयामि सर्वान्सत्त्वान्सर्वे क्षाम्यन्तु ते मयि ।
मैत्र्यस्तु तेषु सर्वेषु त्वदेकशरणस्य मे ॥६॥
एकोऽहं नास्ति मे कश्चिन्न चाहमपि कस्यचित् ।
त्वदङ्घ्रिशरणस्थस्य मम दैन्यं न किञ्चन ॥७॥
यावन्नाप्नोमि पदवीं परां त्वदनुभावजाम् ।
तावन्मयि शरण्यत्वं मा मुञ्च शरणं श्रिते ॥८॥



❀ अष्टादश—प्रकाशः ❀

न परं नाममृद्वेव कठोरमपि किञ्चन ।
विशेषज्ञायविशष्य स्वामिने स्वान्तशुद्धये ॥१॥

न पक्षिपशुसिंहादिवाहनासीन विग्रहः ।
न नैत्रगात्रवक्त्रादि विकार विकृताकृतिः ॥२॥
न शूलचापचक्रादि शस्त्राङ्ककर पल्लवः ।
नाङ्गनाकमनीयाङ्ग परिष्वङ्ग परायणः ॥३॥
न गर्हणीय चरितप्रकम्पित महाजनः ।
न प्रकोप प्रसादादिविडम्बित नरामरः ॥४॥
न जगज्जननस्थेमविनाशविहितादरः ।
न लास्य हास्य गीतादिविप्लवोपप्लुतस्थितिः ।५।
तदेवं सर्वदेवेभ्यस्सर्वथा त्वंविलक्षणः ।
देवत्वेन प्रतिष्ठाप्यः कथं नाम परीक्षकैः ॥६॥
अनुश्रोतः सरत्पर्णतृण काष्ठादियुक्तिमत् ।
प्रतिश्रोतः श्रयद्वस्तु कया युक्त्या प्रतीयताम् ।७।
अथवाऽलंमदबुद्धि परीक्षकपरीक्षणैः ।
ममापि कृतमेतेनवैयात्येन जगत्प्रभो ॥८॥
यदेव सर्व संसारिजन्तु रूप विलक्षणम् ।
परीक्षन्तां कृतधियस्तदेव तव लक्षणम् ॥९॥

क्रोधलोभभयाक्रांत जगदस्माद्विलक्षणः ।
न गोचरोमृदुधियावीतराग ! कथञ्चन ॥१०॥

-❀-

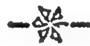
❀ एकोनविंशतितम्—प्रकाश ❀

तव चेतसि वर्तेऽहमिति वार्तापि दुर्लभा ।
मच्चित्ते वर्तसे चेत्त्वमलमन्येन केनचित् ॥१॥
निगृह्यकोपतः कांश्चित् कांश्चित्तुष्ट्यानुगृह्य च ।
प्रतार्यन्ते मृदुधियः प्रलम्भनः परैः परैः ॥२॥
अप्रसन्नात्कथं प्राप्यं फलमेतदसंगतम् ।
चिंतामण्यादयः किं न फलन्त्यपि विचेतनाः ।३।
वीतराग ! सपर्यायास्तवाज्ञापालनं परम् ।
आज्ञाराद्धाविराद्धा च शिवाय च भवाय च ॥४॥
आकालमियमाज्ञा ते हेयोपादेय गोचरा ।
आश्रवः सर्वथा हेय उपादेयश्च संवरः ॥५॥

आश्रवोभवहेतुः स्यात्संवरो मोक्षकारणम् ।
इतीय मार्हती मुष्टिरन्यदस्याः प्रपञ्चनम् ।।६।।

इत्याज्ञाराधनपरा अनन्ताः परिनिर्वृताः ।
निर्वान्ति चान्ये क्वचननिर्वास्यन्ति तथापरे ।७।।

हित्वाप्रसादनादैन्यमेकयैव त्वदाज्ञया ।
सर्वथैव विमुच्यन्ते जन्मिनः कर्मपञ्जरात् ।।८।।



❀ विंशतितम्—प्रकाश ❀

पादपीठलुठन्मूर्ध्नि मयि पादरजस्तव ।
चिरंनिवसतां पुण्यपरमाणुकणोपमम् ।। १ ।।

मदृशौ त्वन्मुखा सक्ते, हर्षबाष्पजलोर्मिभिः ।
अप्रेक्ष्यप्रेक्षणोद्भूतं क्षणात्क्षालयतांमलम् ।।२।।

त्वत्पुरोलुठनैर्भूयान्मद्भालस्य तपस्विनः ।
कृतासेव्यप्रणामस्य प्रायश्चित्तं किणावलिः ।।३।।

ममत्वद्दर्शनोद्भूताश्चिर रोमाञ्च कण्टका ।
दुदन्ता चिरकालोत्थामसद्दर्शनवासनाम् ॥४॥

त्वद्वक्त्रकान्तिज्योत्स्नासु निपीतासु सुधास्विव ।
मदीयैर्लोचनाम्भोजैः प्राप्यतानिर्निमेषता ॥५॥

त्वदास्यलासिनी नेत्रे त्वदुपास्तिकरौ करौ ।
त्वद्गुण श्रोतृणी श्रोत्रे भूयास्तां सर्वदा मम ॥६॥

कुण्ठापियदिसोत्कण्ठा त्वद्गुणग्रहणं प्रति ।
ममैषाभारतीतर्हि स्वस्त्यै तस्यैकिमन्यया ॥७॥

तव प्रेष्योऽस्मिदासोऽस्मि सेवकोऽस्म्यस्मिकिंकर ।
ओमितिप्रतिपद्यस्व नाथ ! नातः परं ब्रुवे ॥८॥

श्री हेमचन्द्र प्रभवाद्वीतरागस्तवादित ।
कुमारपालभूपाल प्राप्नोतु फलमीप्सितम् ॥९॥

—ॐ इति विंशतितम प्रकाश ॐ—



:: श्री तत्त्वार्थाधिगमसूत्रम् ::

❀ प्रथमोऽध्यायः ❀

१. सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः। २ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् । ३. तन्निसर्गादधिगमाद्वा । ४. जीवाजीवाश्रव–बन्ध–संवर–निर्जरा–मोक्षास्तत्त्वम् । ५. नामस्थापनाद्रव्य-भावतस्तन्न्यासः । ६. प्रमाणनयैरधिगमः । ७. निर्देशस्वामित्व–साधनाधिकरण–स्थिति- विधानतः । ८. सत्संख्याक्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्पबहुत्वैश्च । ९. मतिश्रुतावधिमनःपर्यय-केवलानि ज्ञानम् । १०. तत्प्रमाणे । ११. आद्ये परोक्षम् । १२. प्रत्यक्षमन्यत् । १३. मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् । १४. तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् । १५. अवग्रहेहापाय-धारणाः । १६. बहुबहुविधक्षिप्रानिश्रितानुक्त-

ध्रुवाणां सेतराणाम् । १७ अर्थस्य । १८ व्यञ्जनस्यावग्रहः । १९ न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् । २० श्रुतं मतिपूर्वं, द्व्यनेकद्वादशभेदम् । २१ २१ द्विविधोऽवधिः । २२ भवप्रत्ययो नारकदेवानाम् । २३ यथोक्तनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् । २४ ऋजुविपुलमती मनःपर्यायः । २५. विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः । २६ विशुद्धि-क्षेत्र-स्वामि-विषयेभ्योऽवधिमनःपर्याययोः । २७ मति श्रुतयोर्निबन्धः सर्वद्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु । २८ रूपिष्ववधेः । २९ तदनन्तभागे मनःपर्यायस्य । ३० सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य । ३१ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः । ३२ मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च । ३३ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् । ३४ नैगमसंग्रह-व्यवहार र्जुसूत्र-शब्दा नयाः । ३५ आद्यशब्दौ द्वित्रिभेदौ ।

— ❀ —

❀ अथ द्वितीयोऽध्यायः ❀

१. औपशमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिक-पारिणामिकौ च । २. द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् । ३ सम्यक्त्वचारित्रे । ४. ज्ञान-दर्शन-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च ५. ज्ञानाज्ञान-दर्शन-दानादिलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपंचभेदा. सम्यक्त्वचारित्र संयमासंयमाश्च । ६. गति-कषाय-लिंग-मिथ्या-दर्शना-ज्ञाना-संयता-सिद्धत्वलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः । ७. जीवभव्याभव्यत्वादीनि च । ८. उपयोगो लक्षणम् । ९. स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः । १०. संसारिणो मुक्ताश्च । ११. समनस्कामनस्काः । १२. संसारिणस्त्रसस्थावराः । १३. पृथिव्यब्वनस्पतयः स्थावराः । १४. तेजोवायूद्वीन्द्रियादयश्च त्रसाः । १५. पंचेन्द्रियाणि । १६. द्विविधानि । १७. निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रि-

यम् । १८ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् । १९ उपयोग स्पर्शादिषु । २० स्पर्शनरसनघ्राणचक्षु श्रोत्राणि । २१ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तेषामर्थाः । २२ श्रुतमनिन्द्रियस्य । २३ वाय्वन्तानामेकम् । २४ कृमि-पिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि । २५ सज्ञिन समनस्काः । २६ विग्रहगतौ कर्मयोग । २७ अनुश्रेणि गतिः । २८ अविग्रहा जीवस्य । २९ विग्रहवती च ससारिण प्राक् चतुर्भ्यं । ३० एकसमयोऽविग्रहः । ३१ एक द्वौ वाऽनाहारकः । ३२ सम्मूर्च्छनगर्भोपपाता जन्म । ३३ सचित्तशीत-सवृत्ता: सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनय । ३४ जराय्वण्डपोनजाना गर्भ । ३५ नारकदेवानामुपपात । ३६ शेषाणा सम्मूर्च्छनम् । ३७ औदारिकवैक्रियाहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि । ३८ पर पर सूक्ष्मम् । ३९ प्रदेशतोऽसङ्ख्येयगुण प्राक् तैजसात् । ४० अनन्तगुणे परे ।

४१ अप्रतिघाते । ४२ अनादिसम्बन्धे च । ४३ सर्वस्य । ४४ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्याऽऽचतुर्भ्यः । ४५ निरुपभोगमन्त्यम् । ४६ गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यम् । ४७ वैक्रियमौपपातिकम् । ४८ लब्धिप्रत्ययं च । ४९ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं चतुर्दशपूर्वधरस्यैव । ५० नारकसम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि । ५१ न देवाः । ५२ औपपातिक-चरमदेहोत्तमपुरुषाऽसङ्ख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ।



❀ अथ तृतीयोऽध्यायः ❀

१ रत्नशर्करावालुकापंकधूमतमोमहातमःप्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः पृथुतराः । २ तासु नरकाः । ३ नित्याशुभतर-लेश्या-परिणाम-देहवेदना-विक्रियाः । ४ परस्प-

रोदीरितदु खा। ५ सविलष्टासुरोदीरितदु खाश्च प्राक्चतुर्थ्या । ६ तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्-सागरोपमा सत्वाना परा स्थिति । ७ जम्बूद्वीपलवणादय शुभनामानो द्वीपसमुद्रा । ८ द्विर्द्विविष्कम्भा पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतय । ९ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीप । १० तत्र भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावत वर्षा क्षेत्राणि । ११ तद्विभाजिन पूर्वपरायताहिमवन्महा-हिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वता । १२ द्विर्धातकीखण्डे । १३ पुष्करार्धे च । १४ प्राग्मानुषोत्तरान्मनुष्या । भरतैरावत-विदेहा कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्य । १७ नृस्थिती परापरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते । १८ तिर्यग्योनीना च ।



❀ अथ चतुर्थोऽध्यायः ❀

१ देवाश्चतुर्निकायाः । २ तृतीयः पीतलेश्यः । ३ दशाष्टपंचद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः । ४ इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंश-पारिषद्यात्मरक्ष-लोकपालानीक-प्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः । ५ त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः । ६ पूर्वयोर्द्वीन्द्राः । ७ पीतान्तलेश्याः । ८ कायप्रवीचारा आ ऐशानात् । ९ शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचाराद्वयोर्द्वयोः । १० परेऽप्रवीचाराः । ११ भवनवासिनोऽसुर-नागविद्युत्सुपर्णाग्नि–वात – स्तनितोदधि–द्वीपदिक्कु – माराः । १२ व्यन्तराःकिन्नरकिम्पुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः । १३ ज्योतिष्काः सूर्याश्चन्द्रमसो ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च । १४ मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके । १५ तत्कृतः कालविभागः । १६ वहिरवस्थिताः । १७ वैमा-

निका । १८ कल्पोपपन्ना कल्पातीताश्च । १९ उपर्युपरि । २० सौधर्मैशान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्मलोक-लान्तक-महाशुक्र-सहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धे च । २१ स्थिति प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिका । २२ गति-शरीर-परिग्रहाभिमानतो हीना । २३ पीत-पद्म-शुक्ललेश्या द्वि-त्रि-शेषेषु । २४ प्राग्ग्रैवेयकेभ्य कल्पा । २५ ब्रह्मलोकालया लोकान्तिका । २६ सारस्वतादित्यवह्न्यरुण-गर्दतोय-तुषिता-व्याबाध-मरुत (अरिष्टा) । २७ विजयादिषु द्विचरमा । २८ औपपातिकमनुष्येभ्य शेषास्तिर्यग्योनय । २९ स्थिति । ३० भवनेषु दक्षिणार्धाधिपतीना पल्योपममध्यर्धम । ३१ शेषाणा पादोने । ३२ असुरेन्द्रयो सागरोपममधिक च । ३३ सौधर्मादिषु यथाक्रमम् । ३४ सागरोपमे ।

३५ अधिके च। ३६ सप्त सानत्कुमारे। ३७ विशेषत्रि-सप्त-दशैकादश-त्रयोदश-पंचदश-भिरधिकानि च। ३८ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धे च ३९ अपरा पल्योपममधिकं च। ४० सागरोपमे। ४१ अधिके च। ४२ परतः परतः पूर्वा पूर्वानन्तरा। ४३ नारकाणां च द्वितीयादिषु। ४४ दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम्। ४५ भवनेषु च। ४६ व्यन्तराणां च। ४७ परा पल्योपमम्। ४८ ज्योतिष्काणामधिकम्। ४९ ग्रहाणामेकम्। ५० नक्षत्राणामर्धम्। ५१ तारकाणां चतुर्भागः परा जघन्या त्वष्टभागः। ५३ चतुर्भागः शेषाणाम्।

❀ ❀

ॐ अथ पञ्चमोऽध्याय ॐ

१ अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गला. । २ द्रव्याणि जीवाश्च । ३ नित्यावस्थितान्यरूपाणि । ४ रूपिण पुद्गला । ५ आऽऽकाशादेकद्रव्याणि । ६ निष्क्रियाणि च । ७ असंख्येया प्रदेशा धर्माधर्मयो । ८ जीवस्य च । ९ आकाशस्यानन्ता । १० संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम् । ११ नाणो । १२ लोकाकाशेऽवगाह । १३ धर्माधर्मयो कृत्स्ने । १४ एकप्रदेशादिषु भाज्य पुद्गलानाम् । १५ असंख्यभागादिषु जीवानाम् । १६ प्रदेशसंहारविसर्गाभ्या प्रदीपवत् । १७ गतिस्थित्युपग्रहो धर्माधर्मयोरुपकार । १८ आकाशस्यावगाह । १९ शरीरवाङ्मन -प्राणापाना पुद्गलानाम् । २० सुखदु खजीवितमरणोपग्रहाश्च । २१ परस्परोपग्रहो जीवानाम् । २२ वर्तना परिणाम क्रिया परत्वापरत्वे

च कालस्य । २३ स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गला । २४ शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तम-श्छायातपोद्योतवन्तश्च । २५ अणवः स्कन्धाश्च, २६ संघातभेदेभ्य उत्पद्यन्ते । २७ भेदादणुः । २८ भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषाः । २९ उत्पाद-व्यय-ध्रौव्ययुक्तं सत् । ३० तद्भावाव्ययं नित्यम् । ३१ अर्पितानर्पितसिद्धेः । ३२ स्निग्धरुक्षत्वाद्-बन्धः । ३३ न जघन्यगुणानाम् । ३४ गुणसाम्ये सदृशानाम् । ३५ द्व्यधिकादिगुणानां तु । ३६ बन्धे समाधिकौ पारिणामिकौ । ३७ गुणपर्यय-वद् द्रव्यम् । ३८ कालश्चेत्येके । ३९ सोऽनन्त-समयः । ४० द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः । ४१ तद्भावः परिणामः । ४२ अनादिरादिमांश्च । ४३ रूपिष्वादिमान् । ४४ योगोपयोगौ जीवेषु ।

❀ ❀

❀ अथ षष्ठोऽध्याय ❀

१ कायवाङ्मन कर्मयोग । २ स आस्रव ३ शुभ पुण्यस्य । ४ अशुभ पापस्य । ५ सकषायाकषाययो साम्परायिकेर्य्यापथयो । ६ अव्रत-कषायेन्द्रिय-क्रिया पच-चतु.-पच-पचविंशति-सख्या पूर्वस्य भेदा । ७ तीव्रमन्द-ज्ञाताज्ञात-भाववीर्य्याधिकरणविशेषेभ्यस्तद्विशेष । ८ अधिकरण जीवाजीवा । ६ आद्य सरम्भसमारम्भारम्भ-योग-कृतकारितानुमत-कषायविशेषैस्त्रिस्त्रि-स्त्रिश्चतुश्चैकश । १० निर्वर्तनानिक्षेपसयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदा परम् । ११ तत्प्रदोष-निह्नवमात्सर्या-तराया-सादनोपघाता दर्शनावरणयो । १२ दु ख शोक-तापा-क्रन्दन-वध-परिदेवनान्यात्मपरोभयस्थान्यसद्वेद्यस्य । १३ भूत-व्रत्यनुकम्पादान सरागसयमादियोग क्षान्ति. शौचमिति सद्वेद्यस्य । १४ केवलि-श्रुत-सघ-

धर्म-देवावर्णवादो दर्शनमोहस्य। १५ कषायो-
दयात्तीव्रात्मपरिणामश्चारित्रमोहस्य। १६ वह्वा-
रम्भपरिग्रहत्वं च नारकस्यायुषः। १७ माया
तैर्यग्योनस्य। १८ अल्पारम्भपरिग्रहत्वं स्वभाव-
मार्दवार्जवं. च मानुषस्य। १९ नि शीलव्रतत्वं
च सर्वेषाम्। २० सरागसंयम–संयमासंयमा–
कामनिर्जरा-बालतपांसि दैवस्य। २१. योगव-
क्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः। २२ विप-
-रीतं शुभस्य। २३ दर्शनविशुद्धिर्विनयसंपन्नता-
शीलव्रतेष्वनतिचारो–ऽभीक्ष्णं ज्ञानोपयोगसंवेगौ
-शक्तितस्त्यागतपसी संघ-साधुसमाधि-वैयावृत्य-
करणमर्हदाचार्य-बहुश्रुतप्रवचनभक्ति-रावश्यका-
परिहाणि–मार्गप्रभावना – प्रवचनवत्सलत्वमिति
तीर्थंकृत्त्वस्य। २४ परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्-
गुणाच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य। २५ तद्वि-
पर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य। २६ विघ्न-
करणमन्तरायस्य।

❀ अथ सप्तमोऽध्याय ❀

१ हिंसाऽनृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् । २ देशसर्वतोऽणुमहती । ३ तत्स्थैर्यार्थं भावना पञ्च पञ्च । ४ हिंसादिष्विहामुत्र चापायावद्यदर्शनम् । ५ दुःखमेव वा । ६ मैत्रीप्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थ्यानि सत्त्व-गुणाधिक-क्लिश्य-मानाविनयेषु, जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्थम् । ८ प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा । ९ असदभिधानमनृतम् । १० अदत्तादानं स्तेयम् । ११ मैथुनमब्रह्म । १२ मूर्च्छा परिग्रहः । १३ निःशल्यो व्रती । १४ अगार्यनगारश्च । १५ अणुव्रतोऽगारी । १६ दिग्देशानर्थदण्डविरति-सामायिक-पौषधोपवासोपभोगपरिभोगा-तिथिसंविभागव्रतसंपन्नश्च । १७ मारणान्तिकीं संलेखनां जोषिता । १८ शङ्काकाङ्क्षाविचिकित्साऽन्यदृष्टि-प्रशंसा-संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतिचाराः । १९ व्रत-

शीलेषु पंच पंच यथाक्रमम् । २० बन्ध-वध-च्छविच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः । २१ मिथ्योपदेश-रहस्याभ्यान-कुटलेखक्रियान्यासापहारमन्त्रभेदाः । २२ स्तेनप्रयोगतदाहृतादान-विरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मान-प्रतिरूपकव्यवहाराः । २३ परविवाहकरणे-त्वरपरिगृहीता-परिगृहीतागमना-नगक्रीडा-तीव्रकामाभिनिवेशाः । २४ क्षेत्रवास्तु-हिरण्यसुवर्ण-धन-धान्य-दासीदास-कुप्यप्रमाणातिक्रमाः । २५ ऊर्ध्वाधिस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धि-स्मृत्यन्यधर्नानि २६ आनयन-प्रेष्यप्रयोग-शब्द-रूपानुपात-पुद्गल-क्षेपाः । २७ कन्दर्प-कौकुच्य-मौखर्या-समीक्ष्याधिकरणो-पभोगाधिकत्वानि । २८ योगदुष्प्रणिधानानादर-स्मृत्यनुपस्थापनानि । २९ अप्रत्यवेक्षितापमार्जितोत्सर्गादाननिक्षेपसंस्तारोपक्रमणानादर-स्मृत्यनुपस्थापनानि । ३० सचित्त-सबद्ध-संमिश्रा-भिषव-दुष्पक्वाहाराः । ३१ सचित्त-

निक्षेप पिधान-परव्यपदेश-मात्सर्य-कालातिक्रमाः ३२ जीवितमरणाशंसा-मित्रानुराग-सुखानुबन्ध-निदानकरणानि । ३३ अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् । ३४ विधि-द्रव्य-दातृ-पात्रविशेषात्त-द्विशेषः ।



ॐ अथ अष्टमोऽध्याय ॐ

१ मिथ्यादर्शना-विरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्ध-हेतवः । २ सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते । ३ स बन्धः । ४ प्रकृति-स्थित्यनुभावप्रदेशास्तद्विधयः । ५ आद्योज्ञान-दर्शनावरण-वेदनीय-मोहनीयायुष्क-नाम-गोत्रा-न्तरायाः । ६ पंचनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वा-रिंशद्द्विपंचभेदा यथाक्रमम् । ७ मत्यादीनाम् । ८ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रच-

लाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धिवेदनीयानि च । ९ सदसद्वेद्ये । १० दर्शनचारित्रमोहनीय कषायनोकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विषोडशनवभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयानि कषायनोकषायावनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानावरणसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुंनपुंसकवेदाः । ११ नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि । १२ गतिजातिशरीरांगोपांगनिर्माणबन्धनसंघातसंस्थानसहनन–स्पर्शरसगन्धवर्णानु–पूर्व्यगुरुलघूपघातपराघातातपोद्योतोच्छ्वासवि--हायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तस्थिरादेययशांसि सेतराणि तीर्थंकृत्त्वं च । १३ उच्चैर्नीचैश्च । १४ दानादीनाम् । १५ आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः परा स्थितिः । १६ सप्ततिर्मोहनीयस्य । १७ नामगोत्रयोर्विंशतिः । १८ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष्कस्य । १९ अपरा द्वादशमुहूर्त्ता

वेदनीयस्य । २० नामगोत्रयोरष्टौ । २१ शेषाणा-
मन्तर्मुहूर्तम् । २२ विपाकोऽनुभावः । २३ स
यथानाम । २४ ततश्च निर्जरा । २५ नामप्रत्य-
याः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाढस्थिताः
सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः । २६ सद्वेद्य-
सम्यक्त्वहास्य-रति-पुरुषवेद-शुभायु-र्नामगोत्राणि
पुण्यम् ।



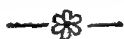
❀ अथ नवमोऽध्यायः ❀

१ आस्रवनिरोधः संवरः । २ स गुप्तिसमिति-
धर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः । ३ तपसा निर्जरा
च । ४ सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः । ५ इर्याभाषैष-
णादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः । ६ उत्तमः क्षमा-
मार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्म-
चर्याणि धर्मः । ७ अनित्याशरणसंसारैकत्वान्य-

त्वाशुचित्वास्रवसंवरनिर्जरालोकवोधिदुर्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः । ८ मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः । ९ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याऽऽक्नोशवधयाचनाऽलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाऽज्ञानादर्शनानि । १० सूक्ष्मसंयरायच्छद्मरथवीतरागयोश्चतुर्दश । ११ एकादश जिने । १२ वादरसंपराये सर्वे । १३ ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने । १४ दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ । १५ चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याऽऽक्नोशयाचनासत्कारपुरस्काराः । १६ वेदनीये शेषाः । १७ एकादयो भाज्या युगपदेकोनविंशतेः । १८ सामायिकच्छेदोपस्थाप्यपरिहारविशुद्धि-सूक्ष्मसंपराय यथाख्यातानि चारित्रम् । १९ अनशनावमौदर्य-वृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासन-कायक्लेशा बाह्यं तपः । २० प्रायश्चित्त-विनय-वैयावृत्त्य स्वा-

ध्याय-व्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् । २१ नवचतुर्दश-पचद्विभेद यथाक्रम प्राग्ध्यानात् । २२ आलोचन-प्रतिक्रमण-तदुभय-विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेद-परिहारोपस्थापनानि । २३ ज्ञानदर्शनचारित्रोपचारा । २४ आचार्योपाध्याय-तपस्वि शैक्षकग्लान-गण कुल सघ साधु समनोज्ञानाम् । २५ वाचना-पृच्छनाऽनुप्रेक्षाऽऽम्नाय धर्मोपदेशा । २६ वाह्याभ्यन्तरोपध्यो । २७ उत्तमसहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानम् । २८ आमुहूर्तात् । २९ आर्त्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि । ३० परे मोक्षहेतू । ३१ आर्तममनोज्ञाना सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहार । ३२ वेदनायाश्च । ३३ विपरीत मनोज्ञानाम् । ३४ निदान च । ३५ तदविरतदेशविरतप्रमत्तसयतानाम् । ३६ हिंसाऽनृत-स्तेय-विषयसरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयो । ३७ आज्ञा ऽपाय-विपाक सस्थान-विचयाय धर्म्मम-प्रमत्तसयतस्य । ३८ उपशान्तक्षीणकषाययोश्च ।

३९ शुक्ले चाद्ये । ४० परे केवलिनः । ४१ पृथक्त्वैकत्ववितर्क–सूक्ष्मक्रियाऽप्रतिपाति व्युपरतक्रियानिवृत्तीनि । ४२ तत्त्र्येककाययोगायोगानाम् । ४३ एकाश्रये सवितर्के पूर्वे । ४४ अविचारं द्वितीयम् । ४५ वितर्कः श्रुतम् । ४६ विचारोऽर्थव्यंजनयोगसंक्रान्तिः । ४७ सम्यग्दृष्टि-श्रावक-विरतानन्तवियोजक–दर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपक–क्षीणमोह–जिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः । ४८ पुलाक–बकुश कुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातका निर्ग्रन्थाः । ४९ संयम श्रुत–प्रतिसेवना–तीर्थ–लिंगलेश्योपपात-स्थान–विकल्पतः साध्याः ।



ॐ अथ दशमोऽध्यायः ॐ

१ मोहक्षयाद् ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् । २ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्याम् ।

३ कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्षः । ४ औपशमिकादिभव्यत्वाभावाच्चान्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्य । ५ तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् । ६ पूर्वप्रयोगादसगत्वाद् बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च तद्गति । ७ क्षेत्र काल-गति-लिंग तीर्थ-चारित्र प्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनान्तर—सख्याल्पबहुत्वत साध्या ।



श्रुतकेवलिश्रीशय्यम्भवसूरिसदृब्ध

श्री दशवैकालिकसूत्र मूलपाठः



१ द्रुमपुष्पिकाध्ययनम्

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो ।
देवा वि त नमसति, जस्स धम्मे सया मणो ।१।

जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं ।
ण य पुप्फं किलामेइ, सो अ पीणेइ अप्पयं ।२।
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ।३।
वयं च वित्ति लब्भामो, न य कोइ उवहम्मइ ।
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा ।४।
महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो,
त्तिबेमि ।५।

[इइ दुमपुप्फियनामपढमं अज्झयणं सम्मत्तं]



२ श्रामण्यपूर्विकाध्ययनम्

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए ।
पए पए विसीअंतो, संकप्पस्स वसं गओ ।१।

वत्थगधमलकार, इत्थीओ सयणाणि अ ।
अच्छंदा जे न भुंजंति, न से चाइत्ति वुच्चइ ।२।
जे अ कंते पिए भोए, लद्धे वि पिट्ठि कुव्वइ ।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चइ ।३।
समाइ पेहाइ परिव्वयतो,
सिआ मणो निस्सरइ बहिद्धा ।
न सा महं नोवि अहंपि तीसे,
इच्चेव ताओ विणइज्ज राग ।४।
आयावयाही, चय सोगमल्ल,
कामे कमाही कमिअ खु दुक्ख ।
छिंदाही दोस, विणइज्ज राग,
एव सुही, होहिसि सपराए ।५।
पक्खंदे जलिअं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ।६।
धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा ।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ।७।

अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणा ।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ।८।

जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारीओ ।
वायाविद्धुव्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ।९।

तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाई सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ।१०।

एवं करंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणिअट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो,
त्तिबेमि ।११।

[इइ सामन्नपुव्वियनाम वीयं अज्झयणं सम्मत्तं]

❀ ❀

३ क्षुल्लकाचाराध्ययनम्

(अनुष्टुब्वृत्तम्)

सजमे सुट्ठियप्पाण, विप्पमुक्काण ताइण ।
तेसिमेअमणाइन्न, निग्गथाण महेसिण ।१।
उद्देसिय कीयगड, नियाग-मभिहडाणि य ।
राइभत्ते सिणाणे य, गधमल्ले य वीयणे ।२।
सनिही गिहिमत्ते अ, रायपिंडे किमिच्छए ।
सवाहणादतपहोयणा अ, सपुच्छणा
देहपलोयणा अ ।३।
अट्ठावए अ नालीए, छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
तेगिच्छ पाहणायाए, समारभ य जोइणो ।४।
सिज्जायरपिंड च, आसदी-पलिअकए ।
गिहतरनिसिज्जा य, गायस्सुवट्टणाणि य ।५।
गिहिणो वेआवडिय, जा य आजीववत्तिया ।
तत्ता निव्वुडभोइत्त, आउरस्सरणाणि य ।६।

मूलए सिंगबेरे य, उच्छुखंडे अनिव्वुडे ।
कंदे मूले य सच्चित्ते, फले बीए य आमए ।७।

सोवच्चले सिंधवे लोणे, रोमालोणे य आमए ।
सामुद्दे पंसुखारे य, कालालोणे य आमए ।८।

धुवणे त्ति वमणे अ, वत्थीकम्म-विरेयणे ।
अंजणे दंतवणे अ, गायाब्भंग-विभूसणे ।६।

सव्वमेयमणाइन्नं, निग्गंथाण महेसिणं ।
संजमंमि अ जुत्ताणं, लहुभूयविहारिणं ।१०।

पंचासवपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु संजया ।
पंचनिग्गहणा धीरा, निग्गंथा उज्जुदंसिणो ।११।

आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा ।
वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया ।१२।

परीसह-रिऊ-दंता, धूअमोहा जिइंदिआ ।
सव्वदुक्ख-प्पहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो ।१३।

तुक्कराइं करित्ताण, दुस्सहाइं सहेत्तु अ ।
केइत्थ देवलोएसु, केइ सिज्झति नीरया ॥१४॥
खवित्ता पुव्वकम्माइ, सजमेण तवेण य ।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुडे
तिबेमि ॥१५॥

[इइ खुड्डियायारकहानाम तइय
अज्झयण सम्मत्त]

**

४ छज्जीवणियज्झयणं [गद्यम्]

सुअ मे आउस ! तेण भगवया एव-मक्खायं । इह खलु छज्जीवणिआनामज्झयण समणेण भगवया । महावीरेण कासवेण पवेइआ, सुअ-क्खाया, सुपन्नत्ता, सेअ मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपन्नत्ती ॥१॥ कयरा खलु सा छज्जीवणिआ नामज्झयण, समणेण भगवया महावीण । कास-वेण पवेइआ, सुअक्खाया सुपन्नत्ती, सेअ मे अहि-

ज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ।।२।। इमा खलु सा छज्जीवणिआ नामज्झयणं, समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेण पवेइआ, सुअक्खाया सुपन्नत्ता, सेअं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ।।३।। तं जहा पुढविकाइआ आउकाइआ, तेउकाइआ, वाउकाइआ, वणस्सइकाइआ तस-काइआ ।।४।। पुढवी चित्तमतमक्खाया, अणेग-जीवा, पुढोसत्ता, अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ।।५।। आउ चित्तमतमक्खाया, अणेगजीवा । पुढोसत्ता, अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ।। ६ ।। तेउ चित्तमंत-मक्खाया अणेगजीवा । पुढोसत्ता, अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं ।।७।। वाउ चित्तमतमक्खाया अणेग-जीवा । पुढोसत्ता, अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ।। ८ ।। वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा । पुढो-सत्ता, अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ।। ९ ।। त जहा अग्गबीआ, मूलबीआ, पोरबीआ, खंधबीआ, बीअरुहा, संमुच्छिमा तणलया, वणस्सइकाइआ

॥१०॥ सचीत्रा, चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा । पुढासत्ता, अन्नत्थ सत्थपरिणएण ॥११॥

से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा, त जहा—अडया पोयया जराउआ रसया ससेइमा समुच्छिमा उब्भिआ उववाइआ, जेसिं केसिं चि पाणाण अभिक्कत पडिक्कत सकुचिअ पसारिअ रुअ भत तसिअ पलाइअ आगइगइविन्नाया जे अ कीडपयगा, जा य कुथुपिपीलिआ, सव्वे बेइदिआ, सव्वे तेइदिआ, सव्वे चउरिंदिआ, सव्वे पचिंदिआ सव्वे तिरिक्खजोणिआ, सव्वे नेरइआ, सव्वे मणुआ, सव्वे देवा, सव्वे पाणा परमाहम्मिआ एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाउ त्ति, पवुच्चइ (सूत्र० १)

इच्चेसिं छण्ह जीवनिकायाण नेव सय दड समारभिज्जा, नेवन्नेहिं दड समारभाविज्जा, दड समारभते वि अन्ने न समणुजाणामि, जाव-

ज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि. करतं पि अन्नं न समणु-जाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि (सूत्र० २)

पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वं भते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहुम वा बायर वा, तसं वा थावरं वा, नेव सय पाणे अइवाइज्जा, नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणामि; जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि. पढमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं १ (सूत्र० ३)

अहावरे दुच्चे भते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! मुसावायं पच्चक्खामि से

कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, नेव सय मुस वइज्जा नेवऽन्नेहिं मुस वायाविज्जा, मुसं वयते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि दुच्चे भते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओमुसावायाओ वेरमण । २ (सूत्र० ४)

अहावरे तच्चे भते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमण, सव्व भते ! अदिन्नादाण पचक्खामि, से गामे वा नगरे वा रण्णे वा अप्प वा बहु वा अणु वा थूल वा चित्तमत वा अचित्तमत वा नेव सय अदिन्न गिण्हिज्जा नेवऽन्नेहिं अदिन्न गिण्हाविज्जा, अदिन्न गिण्हतेवि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि

करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि, तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं । ३ (सूत्र० ५)

अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! मेहुणं पच्चक्खामि, से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणिअं वा नेव सयं मेहुणं सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि, चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं । ४ (सू० ६)

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि, से

अप्प वा बहु वा अणु वा थूल वा चित्तमत वा अचित्तमत वा नेव सय परिग्गह परिगिण्हिज्जा नेवऽन्नेहिं परिग्गह परिगिण्हाविज्जा, परिग्गह परिगिण्हते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ! पचमे भते ! महव्वए उवट्ठिओमि, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण । ४ (सू० ७)

अहावरे छट्ठे भते ! वए राइभोयणाओ वेरमण, सव्व भते ! राइभोयण पच्चक्खामि, से असण वा पाण वा खाइम साइम वा नेव सय राइ भु जिज्जा, नेवऽन्नेहिं राइ भु जाविज्जा राइ भु जते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणु-

जाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि. छट्ठे भंते ! वए उवट्ठिओमि, सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं। ६ (सूत्र० ८) इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राइ-भोअणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठयाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। (सू० ९)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा, एगओ वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा, सिलं वा लेलुं वा, ससरक्खं वा कायं, ससरक्खं वा वत्थं, हत्थेण वा, पाएण वा, कट्ठेण वा किलिंचेण वा अंगुलिआए वा, सिलागाए वा, सिलागहत्थेण वा, न आलिहिज्जा न विलिहिज्जा न घट्टिज्जा न भिंदिज्जा अन्नं न आलिहाविज्जा न विलिहाविज्जा न घट्टाविज्जा न भिंदाविज्जा, अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा

न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतं पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। (सू० १०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिश्रा वा राश्रो वा, एगश्रो वा परिसागश्रो वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से उदग वा श्रोस वा हिमं वा महिअं वा हरतणुगं वा सुद्धोदगं वा उदउल्लं वा कायं उदउल्लं वा वत्थं ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं न आमुसिज्जा न संफुसिज्जा, न आवीलिज्जा न पवीलिज्जा न अक्खोडिज्जा, न पक्खोडिज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा अन्नं न आमुसाविज्जा न संफुसाविज्जा, न आवीलाविज्जा न पवीलाविज्जा, न अक्खोडाविज्जा न पक्खोडाविज्जा, न आयाविज्जा न पयाविज्जा, अन्नं न

आमुसाविज्जा न संफुसाविज्जा, न आवीलाविज्जा न पवीलाविज्जा. न अक्खोडाविज्जा न पक्खोडाविज्जा, न आयाविज्जा न पयाविज्जा, अन्नं आमुसंतं वा संफुसंतं वा, आवीलंत वा पवीलत्तं वा, अक्खोडंत वा पक्खोडंतं वा, आयारतं वा, पयावंतं वा, न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं निविहेणं, मणेणं वायाए काएण, न करेमि न कारवेमि करंतपि अन्नं न समणुजणामि, तस्स भने ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि २ (सूत्र० ११)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा, एगओ वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा, से अगणि वा इंगालं वा मूम्मुरं वा अच्चिं वा जालं वा अलायं वा सुद्धागणि वा उक्कं वा न उजेज्जा न घट्टेज्जा, न भिदेज्जा, न उज्जालेज्जा, न पज्जालेज्जा, न निव्वावेज्जा, अन्नं न

उजावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदाविज्जा न उज्जालाविज्जा (न पज्जालाविज्जा) न निव्वाविज्जा, अन्न उजत वा घट्ट त वा, (भिंदत वा,) उज्जालत वा, (पज्जालत वा) निव्वावत वा न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भते ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि अ पाण वोसिरामि ३(सू॰ १२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा, से सिएण वा, विहुयणेण वा, तालिअटेण वा, पत्तेण वा, पत्तभगेण वा, साहाए वा, साहाभगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुणहत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकण्णेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा काय, बाहिर वावि पुग्गल, न फुमेज्जा, न वीएज्जा, अन्न न फुमावेज्जा न वीआवेज्जा,

अन्नं फुमंत वा वीअंतं वा न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ४ (सूत्र० १३)

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से बीएसु वा बीअपइट्ठेसु वा रूढेसु वा, रूढपइट्ठेसु वा, जाएसु वा, जायपइट्ठेसु वा, हरिएसु वा, हरिअपइट्ठेसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नपइट्टेसु वा, सचित्तेसु वा, सचित्तकोलप-डिनिस्सिएसु वा, न गच्छेज्जा, न चिट्ठेज्जा, न निसीएज्जा, न तुअट्टेज्जा, अन्नं न गच्छावेज्जा, न चिट्ठावेज्जा, न निसीआवेज्जा, न तुअट्टावेज्जा, अन्नं गच्छंतं वा, चिट्ठंतं वा, निसीयंतं वा, तुयट्टंतं वा, न समणुजाणामि, जावज्जीवाए

तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि, करत पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ५ (सूत्र० १४)

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा सजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिया वा राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीड वा पयग वा, कुथु वा पिपीलिअं वा, हत्थसि वा, पायसि वा, बाहुसि वा, ऊरु सि वा उदरसि वा सीससि वा वत्थसि वा, पडिग-हसि वा, कबलसि वा, पायपु छणसि वा रयहर-णसि वा गोच्छगसि वा, उडगसि वा, दडगसि वा, पीढगसि वा, फलगसि वा, सेज्जसि वा, सथारगसि वा, अन्नयरसि वा, तहप्पगारे उवगर-णजाए तओ सजयामेव पडिलेहिअ पडिलेहिअ, पमज्जिअ पमज्जिअ, एगतमवणेज्जा नो सघा-यमावज्जिज्जा ६ (सूत्र० १५ ।

अजयं चरमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥१॥

अजयं चिट्ठमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥२॥

अजयं चिट्ठमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥३॥

अजयं सयमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥४॥

अजयं भुंजमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं तं से होइ कडुअं फलं ॥५॥

अजयं भासमाणो अ, पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥६॥

कहं चरे ? कहं चिट्ठे ? कहमासे ? कहं सए।
कहं भुंजंतो ? भासंतो ?, पावं कम्मं न बंधइ ॥●
जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधइ ॥८॥

सव्वभूयप्पभूग्रस्स, सम्म भूयाइ पासश्रो ।
पिहिग्रासवस्स दतस्स, पावकम्म न बधइ ॥६॥
पढम नाण तयो दया, एव चिट्ठइ सव्वसजए ।
अन्नाणी किं काही ?, किं वा नाहीइ सेग्रपावग ? १०
सोच्चा जाणइ कल्लाण, सोच्चा जाणइ पावग ।
उभय पि जाणइ सोच्चा, ज सेअ त समायरे ॥११॥
जो जीवे वि न याणेइ, अजीवे वि न याणइ ।
जीवा-जीवे अयाणतो, कह सो नाहीइ सजम ॥१२॥
जो जीवे वि वियाणेइ, अजीवे वि वियाणइ ।
जीवाजीवे वियाणतो, सो हु नाहीइ सजम ॥१३॥
जया जीवमजीवे य, दो वि एए वियाणइ ।
तया गइ बहुविह सव्व जीवाण जाणइ ॥१४॥
जया गइ बहुविह, सव्वजीवाण जाणइ ।
तया पुण्ण च पाव च, बध मुक्ख च जाणइ ॥१५॥
जया पुण्ण च पाव च, बध मुक्ख च जाणइ ।
तया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे अ माणुसे ॥१६॥

जया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे अ माणुसे ।
तया चयइ संजोगं, सब्भिंतरबाहिरं ॥१७॥
जया चयइ संजोगं, सब्भिंतरबाहिरं ।
तया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारिअं ॥१८॥
जया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए अणगारिअं ।
तया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ॥१९॥
जया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ।
तया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं ॥२०॥
जया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं ।
तया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ॥२१॥
जया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ।
तया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ॥२२॥
जया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ।
तया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ॥२३॥
जया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ।
तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥२४॥

जया कम्म खवित्ताण, सिद्धि गच्छइ नीरश्रो ।
तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासश्रो ।।२५।।
सुहसायगस्स समणस्स सायाउलगस्स निगामसाइस्स
उच्छोलणापहोअस्स, दुल्लहा सुगइ तारिसगस्स ।२६
तवोगुणपहाणस्स, उज्जुमइ खतिसजमरयस्स ।
परीसहे जिणतस्स, सुलहा सुगइ तारिसगस्स ।।२७
पच्छा वि ते पयाया, खिप्प गच्छति अमरभवणाइ ।
जेसि पिश्रो तवो सजमो अ, खति अ बभचेर च ।।२८।
इच्चेअ छज्जीवणिअ, सम्मद्दिट्ठी सया जए ।
दुल्लह लहित्तु सामन्न, कम्मुणा न विराहेज्जासि
त्तिबेमि ।।२६।।

इइ चउत्थ छज्जीवणिश्रानामज्झयण समत्तं ।। ४

—:*:—

अथपंचमज्झयणं—

पिण्डेसणाए पढमो उद्देसओ.

संपत्ते भिक्खकालम्मि, असंभंतो अमुच्छिओ ।
इमेण कम्मजोगेण, भत्तपाणं गवेसए ॥१॥
से गामे वा नगरे वा, गोअरग्गगओ मुणी ।
चरे मंदमणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेअसा ॥२॥
पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे ।
वज्जंतो बीअहरिआइं, पाणे अ दगमट्टिअं ॥३॥
ओवायं विसमं खाणुं, विजलं परिवज्जए ।
संकमेण न गच्छेज्जा, विज्जमाणे परक्कमे ॥४॥
पवडते व से तत्थ, पक्खलते व संजए ।
हिंसेज्ज पाणभूआइं, तसे अदुव थावरे ॥५॥
तम्हा तेण न गच्छिज्जा, संजए सुसमाहिए ।
सइ अन्नेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे ॥६॥
इंगालं छारिअं रासिं, तुसरासिं च गोमयं ।
ससरक्खेहिं पाएहिं, संजओ तं नइक्कमे ॥७॥

न चरेज्ज वासे वासते, महिआए व पडतिए ।
महावाए व वायते, तिरिच्छसपाइमेसु वा ॥८॥
न चरेज्ज वेससामते, बंभचेरवसाणुए ।
बंभयारिस्स दंतस्स, हुज्जा तत्थ विसोत्तिआ॥ ९॥
अणायणे चरंतस्स, संसग्गीए अभिक्खणं ।
हुज्ज वयाणं पीला, सामन्नंमि अ संसओ ॥१०॥
तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वज्जए वेससामंतं, मुणी एगंतमस्सिए ॥११॥
साणं सूयं गाविं, दित्तं गोणं हयं गयं ।
संडिब्भं कलहं जुद्धं, दूरओ परिवज्जए ॥१२॥
अणुन्नए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले ।
इंदिआइं जहाभागं, दमइत्ता मुणी चरे ॥१३॥
दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो अ गोअरे ।
हसंतो नाभिगच्छिज्जा, कुलं उच्चावयं सया ॥१४
आलोअं थिग्गलं दारं, संधिं दगभवणाणि अ ।
चरंतो न विणिज्झाए, संकट्ठाणं विवज्जए ॥१५॥

रन्नो गिहवइणं च, रहस्सा रक्खिआण य।
संकिलेसकरं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥१६॥

पडिकुट्ठं कुलं न पविसे, मामगं परिवज्जए।
अचिअत्तं कुलं न पविसे, चिअत्तं पविसे कुलं ॥१७

साणी-पावार-पिहिअं, अप्पणा नावपंगुरे।
कवाडं नो पणोल्लेज्जा, ओग्गहंसि अजाइआ ॥१८

गोअरग्गपविट्ठो अ, वच्च-मुत्तं न धारए।
ओगासं फासुअं नच्चा, उणुन्नविअ वोसिरे ॥१९॥

नीअ-दुवारं तमसं, कोट्ठगं परिवज्जए।
अचक्खुविसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा। २०॥

जत्थ पुप्फाइं बीआइं, विप्पइन्नाइं कोट्ठए।
अहुणोवलित्तं उल्लं, दट्ठूणं परिवज्जए ॥२१॥

एलगं दारगं साणं, वच्छगं वा वि कुट्ठए।
उल्लंघिआ न पविसे, विउहित्ताण व संजए ॥२२

असंसत्तं पलोइज्जा, नाईदूरावलोअए।
उप्फुल्लं न विनिज्झाए, निअट्टिज्ज अयंपिरो ॥२३

अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोअरग्ग-गओ मुणी ।
कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मिअं भूमिं परक्कमे ॥२४

तत्थेव पडिलेहिज्जा, भूमिभागं विअक्खणो ।
सिणाणस्स य वच्चस्स संलोगं परिवज्जए ॥२५

दग-मट्टिअ-आयाणे, बीयाणि हरिआणि अ ।
परिज्जतो चिट्ठिज्जा, सव्विंदिअ-समाहिए ॥२६॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहारे पाण-भोअणं ।
अकप्पिअं न गेण्हिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअं ॥२७

आहरंती सिआ तत्थ परिसाडिज्ज भोयणं ।
दिंतिअं पडिआइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२८॥

सम्मद्दमाणी पाणाणि बीआणि हरिआणि अ ।
असंजमकरिं नच्चा, तारिसिं परिवज्जए ॥२९॥

साहट्टु निक्खिवित्ताणं, सच्चित्तं घट्टिआणि अ ।
तहेव समणट्ठाए, उदगं संपणुल्लिआ ॥३०॥

ओगाहइत्ता चलइत्ता आहरे पाण-भोअणं ।
दिंतिअं पडिआइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३१॥

पुरेकम्मेण हत्थेण, दव्वेण भायणेण वा ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥३२॥
(एवं) उदउल्ले ससिणिद्धे, ससरक्खे मट्टिआउसे ।
हरिआले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे ॥३३॥
गेरुअ वन्निअ सेढिअ—
सोरट्ठिअ पिट्ठकुक्कुसकए य ।
उक्किट्ठ-मसंसट्ठे संसट्ठे चेव बोधव्वे ॥३४॥
असंसट्ठेण य हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं न इच्छिज्जा, पच्छाकम्मं जहिं भवे ॥३५
संसट्ठेण य हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा, जं तत्थेसणिअं भवे ॥३६
दुण्हं तु भुंजमाणाणं, एगो तत्थ निमंतए ।
दिज्जमाणं न इच्छिज्जा, छंदं से पडिलेहए ॥३७॥
दुण्हं तु भुंजमाणाणं, दो वि तत्थ निमंतए ।
दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा, जं तत्थेसणिअं भवे ॥३८
गुव्विणीए उवण्णत्थं, विविहं पाण-भोअणं ।
भुंजमाणं विवज्जिज्जा, भुत्तसेसं पडिच्छए ॥३९॥

सिआ य समणट्ठाए, गुव्विणी कालमासिणी ।
उट्ठिआ वा निसीइज्जा, निसन्ना वा पुणुट्ठए ॥४०॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ ।
दितिअ पडिआइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥४१॥
थणग पिज्जेमाणी, दारग वा कुमारिअ ।
त निक्खिवित्तु रोअत, आहारे पाणभोअण ॥४२॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ ।
दितिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥४३॥
ज भवे भत्तपाण तु कप्पाकप्पमि सकिअ ।
दितिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥४४॥
दगवारेण पिहिअ, नीसाए पीढएण वा ।
लोढेण वा वि लेवेण, सिलेसेण वा केणइ ॥४५॥
त च उब्भिदिउ दिज्जा, समणट्ठाए व दावए ।
दितिअ पडिआइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥४६॥
असण पाणग वा वि, खाइम साइम तहा ।
ज जाणिज्जा सुणिज्जा वा, दाणट्ठा पगड इम ॥४७

तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाणं अकप्पिअं ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४८॥
असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, पुण्णट्ठा पगडं इमं ॥४९
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पिअं ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥५०॥
असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, वणिमट्ठा पगडं इमं ॥५१
तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पिअं ।
दितिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५२॥
असणं पाणगं वा वि खाइमं साइम तहा ।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, समणट्ठा पगडं इमं ॥५३
तं भवे भत्तापाणं तु संजयाण अकप्पिअं ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५४॥
उद्देसिअं कीअगडं पूइकम्मं च आहडं ।
अज्झोयर-पामिच्चं, मीसजायं विवज्जए ॥५५॥

उग्गम से अ पुच्छिज्जा, कस्सट्ठा केण वा कड ।
सुच्चा निस्सकिअ सुद्ध , पडिगाहिज्ज सजए ॥५६॥
असण पाणग वा वि, खाइम साइम तहा ।
पुप्फेसु हुज्ज उम्मीस बीएसु हरिएसु वा ॥५७॥
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ ।
दितिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥५८॥
असण पाणग वा वि, खाइम साइम तहा ।
उदगमि हुज्ज निक्खित्त, उत्तिग-पणगेसु वा ॥५९॥
त भवे भत्त-पाण तु, सजयाण अकप्पिअ ।
दितिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥६०॥
असण पाणग वा वि, खाइम साइम तहा ।
तेउम्मि हुज्ज निक्खित्त, त च सघट्टिआ दए ॥६१
त भवे भत्त-पाण तु सजयाण अकप्पिअ ।
दितिअ पडिआइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥६२॥
एव उस्सक्किआ ओसक्किआ,
उज्जालिया पज्जालिआ निव्वाविआ ।

तं च अच्चंबिलं पूइं, नालं तिण्हं विणित्तए ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥७६॥

तं च होज्जा अकामेणं, विमणेण पडिच्छिअं ।
तं अप्पणा न पिबे, नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥

एगंत-मवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिआ ।
जयं परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥८१॥

सिआ य गोयरग्ग-गओ, इच्छिज्जा परिभुत्तुअं ।
कुट्ठगं भित्तिमूलं वा पडिलेहित्ताण फासुअं ॥८२॥

अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छन्नंमि संवुडे ।
हत्थगं संपमज्जित्ता, तत्थ भुंजिज्ज संजए ॥८३॥

तत्थ से भुंजमाणस्स, अट्ठिअं कंटओ सिआ ।
तणकट्ठसक्करं वा वि, अन्नं वा वि तहाविहं ॥८४॥

तं उक्खिवित्तु न निक्खिवे, आसएण न छड्डुए ।
हत्थेण तं गहेऊणं, एगंत-मवक्कमे ॥८५॥

एगंत-मवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिआ ।
जयं परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥८६॥

सिया य भिक्खू इच्छेज्जा, सिज्जमागम्म भुत्तुअं।
सपिंडपायमागम्म, उंडुयं पडिलेहिया ।८७॥
विणएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी ।
इरियावहिय-मायाय, आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥
आभोइत्ताण नीसेसं, अइयारं जहक्कमं ।
गमणागमणे चेव, भत्त-पाणे व संजए ॥८९॥
उज्जुपन्नो अणुव्विग्गो, अव्विक्खित्तेण चेयसा ।
आलोए गुरुसगासे, जं जहा गहिअं भवे ॥९०॥
न सम्ममालोइयं हुज्जा, पुव्विं पच्छा व जं कडं ।
पुणो पडिक्कमे तस्स वोसट्ठो चिंतए इमं ॥९१॥
अहो जिणेहिं असावज्जा वित्ती साहूण देसिया ।
मुक्ख-साहण-हेउस्स, साहू-देहस्स धारणा ॥९२॥
नमुक्कारेण पारित्ता, करित्ता जिणसंथवं ।
सज्झायं पट्ठवित्ताणं, वीसमेज्ज खणं मुणी ॥९३॥
वीसमंतो इमं चिंते, हियमट्ठं लाभमट्ठिओ ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू हुज्जामि तारिओ ॥९४

साहवो तो चिअत्तेणं निमंतिज्ज जहक्कमं ।
जइ तत्थ केइ इच्छिज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुंजए ।।६५
अह कोइ न इच्छिज्जा, तओ भुंजिज्ज एगओ ।
आलोए भायणे साहू, जयं अपरिसाडिअं ।।६६।।
तित्तगं व कडुअं व कसायं,
अंबिलं व महुरं लवणं वा ।
एअ लद्ध-मन्नत्थ-पउत्तं,
महु घयं व भुंजिज्ज संजए ।।६७।।
अरसं विरसं वा वि, सूइअं वा असूइअं ।
उल्लं वा जइ वा सुक्कं, मंथु-कुम्मास-भोअणं ।।६८
उप्पण्णं नाइहीलिज्जा अप्पं वा बहु फासुअं ।
मुहालद्धं मुहाजीवी, भुंजिज्जा दोसवज्जिअं । ६९
दुल्लहा उ मुहादाइ, मुहाजीवीवि दुल्लहा ।
मुहादाइ मुहाजीवी,
दोऽवि गच्छंति सुग्गइं त्तिबेमि ।।१००।।

।। इति पिंडेसणाए पढमो उद्देसो समत्तो ।।

पंचमज्झयणं बीओ उद्देसओ.

पडिग्गह सलिहित्ताण लेवमायाए सजए।
दुगध वा सुगध वा, सव्व भुजे न छड्डुए ॥१॥
सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो य गोयरे ।
अयावयट्ठा भुच्चा ण, जइ तेण न सथरे ॥२॥
तओ कारणसमुप्पन्ने, भत्त पाण गवेसए ।
विहिणा पुव्वउत्ताण, इमेण उत्तरेण य ॥३॥
कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे ।
अकाल च विवज्जिज्जा (त्ता)
काले काल समायरे ॥४॥
अकाले चरसि भिक्खू, काल न पडिलेहसि ।
अप्पाण च किलामेसि सनिवेस च गरिहसि ॥५॥
सइ काले चरे भिक्खू कुज्जा पुरिसकारिअ ।
अलाभुत्ति न सोएज्जा, तवोत्ति अहियासए ॥६॥
तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया ।
त उज्जुअ न गच्छिज्जा, जयमेव परक्कमे ॥७॥

गोयरग्गपविट्ठो अ, न निसीएज्ज कत्थइ ।
कहं च न पवंधिज्जा, चिट्ठित्ताण व संजए ॥८॥
अग्गलं फलिहं दारं, कवाडं वा वि संजए ।
अवलंविआ न चिट्ठिज्जा,गोयरग्ग-गओ मुणी ॥६॥
समणं माहणं वावि, किविणं वा वणीमगं ।
उवसंकमंतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥१०॥
तं अइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खुगोयरे ।
एगंतमवक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठिज्ज संजए ॥११।
वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा ।
अप्पत्तिअं सिआ हुज्जा. लहुत्तं पवयणस्स वा ॥१२।
पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए ।
उवसंकमिज्ज भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥१३।
उप्पलं पउमं वा वि, कुमुअं वा मगदंतिअं ।
अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं, तं च संलुंचिआ दए ॥१४॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥१५॥

उप्पल पउम वा वि, कुमुअ वा मगदंतिअं ।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं, तं च संमद्दिआ दए ॥१६॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥१७॥
सालुयं वा विरालियं कुमुअं उप्पलनालिअं ।
मुणालिअं सासवनालिअं, उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥१८॥
तरुणगं वा पवालं, रुक्खस्स तणगस्स वा ।
अन्नस्स वा वि हरिअस्स, आमगं परिवज्जए ॥१९॥
तरुणिअं वा छिवाडिं, आमिअं भज्जिअं सइं ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥
तहा कोलमणुस्सिन्नं, वेलुअं कासवनालिअं ।
तिलपप्पडगं नीमं, आमगं परिवज्जए ॥२१॥
तहेव चाउलं पिट्ठं, वियडं वा तत्तनिव्वुडं ।
तिलपिट्ठ पूइपिन्नागं, आमगं परिवज्जए ॥२२॥
कविट्ठं माउलिंगं च, मूलगं मूलगत्तिअं ।
आमं असत्थपरिणयं, मणसा वि न पत्थए ॥२३॥

तहेव फलमंथूणि बीअमंथूणि जाणिआ ।
विहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए ॥२४॥

समुआणं चरे भिक्खू, कुलमुच्चावयं सया ।
नीयं कुलमइक्कम्म, ऊसढं नाभिधारए ॥२५॥

अदीणो वित्तिमेसिज्जा, न विसीइज्ज पंडिए ।
अमुच्छिओ भोअणंमि, मायण्णे एसणारए ॥२६॥

बहुं परघरे अत्थि, विविहं खाइम-साइमं ।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे, इच्छा दिज्ज परो न वा ॥२७

सयणासणवत्थं वा, भत्तपाणं व संजए ।
अदितस्स न कुप्पिज्जा पच्चक्खे वि अ दीसओ ।२८।

इत्थिअं पुरिसं वावि, डहरं वा महल्लगं ।
वंदमाणं न जाइज्जा, नो अ णं फरुसं वए ॥२९॥

जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ न समुक्कसे ।
एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिट्ठइ ॥३०॥

सिया एगइओ लध्धुं, लोभेण विणिगूहइ ।
मामेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमायए ॥३१॥

अत्तट्ठा गुरुओ लुद्धो, बहु पावं पकुव्वइ ।
दुत्तोसओ अ सो होइ, निव्वाणं च न गच्छइ ।३२।
सिआ एगइओ लद्धुं, विविहं पाणभोअणं ।
भद्दगं भद्दगं भुच्चा, विवन्नं विरसमाहरे ॥३३॥
जाणंतु ता इमे समणा, आययट्ठी अयं मुणी ।
संतुट्ठो सेवए पंतं, लूहवित्ती सुतोसओ ॥३४॥
पूअणट्ठा जसोकामी, माणसम्माणकामए ।
बहुं पसवइ पावं, मायासल्लं च कुव्वइ ।३५॥
सुरं वा मेरगं वा वि, अन्नं वा मज्जगं रसं ।
ससक्खं न पिवे भिक्खू, जसं सारक्खमप्पणो ॥३६
पियाए एगइओ तेणो, न मे कोइ विआणइ ।
तस्स पस्सह दोसाइं, निअडिं च सुणेह मे ॥३७॥
वड्ढइ सुंडिआ तस्स, मायामोसं च भिक्खुणो ।
अयसो अ अनिव्वाणं, सययं च असाहुआ ॥३८॥
निच्चुव्विग्गो जहा तेणो, अत्तकम्मेहिं दुम्मई ।
तारिसो मरणंते वि, न आराहेइ संवरं ॥३९॥

आयरिए नाराहेइ, समणे आवि तारिसे ।
गिहत्था वि णं गरिहंति जेण जाणंति तारिसं ॥४०

एवं तु अगुणप्पेही, गुणाणं च विवज्जए ।
तारिसो मरणंते वि, नाराहेइ संवर ॥४१॥

तवं कुव्वइ मेहावी, पणीअं वज्जए रसं ।
मज्जप्पमाय–विरओ, तवस्सी अइउक्कसो ॥४२।

तस्स पस्सह कल्लाण, अणेगसाहु–पुइअं ।
विउलं अत्थसंजुत्तं, कित्तइस्सं सुणेह मे ।४३॥

एवं तु स गुणप्पेही, अगुणाणं च विवज्जओ ।
तारिसो मरणंते वि, आराहेइ अ संवरं ॥४४॥

आयरिए आराहेइ, समणे आवि तारिसो ।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥
तवतेणे वयतेणे, रूवतेणे अ जे नरे ।
आयार भावतेणे अ कुव्वइ देवकिव्विसं ॥४६।
लद्धूण वि देवत्तं, उववन्नो देवकिव्विसे ।
तत्था वि से न याणाइ, किं मे किच्चा इमं फलं ॥४७

तत्तो वि से चइत्ताण, लब्भिही एलमूअग ।
नरय तिरिक्खजोणि वा, वोही जत्थ सुदुल्लहा ॥४८

एअ च दोस दट्ठूण, नायपुत्तेण भासिअ ।
अणुमाय पि मेहावी, मायामोस विवज्जए ॥४९॥

सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं,
सजयाण बुद्धाण सगासे ।
तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिइ दिए,
तिव्वलज्जगुणव विहरिज्जासि, त्ति बेमि ॥५०॥

इति पचम पिंडेसणानामज्झयण समत्त

—•—

छट्ठ महाचारकथाऽध्ययनम्

नाणदसणसपन्न, सजमे अ तवे रय ।
गणिमागमसपन्न उज्जाणम्मि समोसढ ॥१॥

रायाणो रायमच्चा य माहणा अदुव खत्तिआ ।
पुच्छति निहुअप्पाणो कह भे आयारगोयरो ? ॥२॥

तेसिं सो निहुओ दंतो, सव्वभूअसुहावहो ।
सिक्खाए सुसमाउत्तो, आयक्खइ विअक्खणो ॥३॥

हंदि धम्मत्थकामाणं. निग्गंथाणं सुणेह मे ।
आयारगोअरं भीमं, सयलं दुरहिट्ठिअं ॥४॥

नन्नत्थ एरिसं वुत्तं, जं लोए परमदुच्चरं ।
विउलट्ठाणभाइस्स, न भूअं न भविस्सइ ॥५॥

सखुड्डगविअत्ताणं, वाहिआणं च जे गुणा ।
अखंडफुडिआ कायव्वा, तं सुणेह जहा तहा ॥६॥

दस अट्ठ य ठाणाइं, जाइं वालोऽवरज्झइ ।
तत्थ अन्नयरे ठाणे, निग्गंथत्ताउ भस्सइ ॥७॥

वयछक्कं कायछक्कं अकप्पो गिहिभायणं ।
पलियंक निसेज्जा य, सिणाणं सोहवज्जणं ॥८॥
तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसिअं ।
अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो ॥९॥
जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा ।
ते जाणमजाणं वा, न हणे नोवि घायए ॥१०॥

सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥११

अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया ।
हिंसगं न मुसं बूया, नोवि अन्नं वयावए ॥१२॥

मुसावाओ उ लोगम्मि, सव्वसाहूहिं गरिहिओ ।
अविस्सासो अ भूआणं, तम्हा मोसं विवज्जए ॥१३

चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं ।
दंतसोहणमित्तं वि, उग्गहंसि अजाइया ॥१४॥

तं अप्पणा न गिण्हंति, नो वि गिण्हावए परं ।
अन्नं वा गिण्हमाणं पि, नाणुजाणंति संजया ॥१५

अबंभचरिअं घोरं पमायं दुरहिट्ठिअं ।
नायरंति मुणी लोए, भेआययण-वज्जिणो ॥१६॥

मूलमेयमहम्मस्स, महादोससमुस्सयं ।
तम्हा मेहुणसंसग्गं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥१७॥

बिडमुब्भेइमं लोणं, तिल्लं सप्पिं च फाणिअं ।
न ते संनिहिमिच्छंति, नायपुत्तवओरया ॥१८॥

लोहस्सेस अणुप्फासे, मन्ने अन्नयरामवि ।
जे सिआ सन्निहिं कामे, गिही पव्वइए न से ।१६।

जं पि वत्थं च पायं वा, कंबलं पायपुंछणं ।
जं पि संजमलज्जट्ठा, धारंति परिहरंति अ ।।२०।।

न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा ।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा ।।२१।।

सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, संरक्खणपरिग्गहे ।
अवि अप्पणोवि देहंमि, नायरंति ममाइयं ।२२।

अहो निच्चं तवोकम्मं, सव्वबुद्धेहिं वण्णिअं ।
जा य लज्जासमा वित्ती, एगभत्तं च भोअणं ।२३।

संतिमे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा ।
जाइं राओ अपासंतो, कहमेसणिअं चरे ।।२४।।

उदउल्लं बीअसंसत्तं, पाणा निवडिया महिं ।
दिआ ताइं विवज्जिज्जा, राओ तत्थ कहं चरे ।२५।

एअं च दोसं दट्ठूण, नायपुत्तेण भासिअं ।
सव्वाहारं न भुंजंति, मणसा वयसा कायसा ।२६

पुढविकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ।२७।
पुढविकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ।२८।
तम्हा एअं विआणित्ता दोसं दुग्गइ वड्ढणं ।
पुढविकायसमारंभं, जावजीवाए वज्जए ॥२९॥
आउकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ॥३०॥
आउकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥३१॥
तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
आउकायसमारंभं, जावजीवाई वज्जए ॥३२॥
जायतेअं न इच्छंति, पावगं जलइत्तए ।
तिक्खमन्नयरं सत्थं, सव्वओ वि दुरासयं ॥३३॥
पाईणं पडिणं वा वि, उड्ढं अणुदिसामवि ।
अहे दाहिणओ वा वि, दहे उत्तरओ वि अ ॥३४॥

भूग्राण–भेस–माघाओ, हव्वावाहो न संसओ ।
तं पइव–पयावट्ठा, संजया किंचि नारभे ॥३५॥

तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं ।
तेउकाय–समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥३६॥

अनिलस्स समारंभं, वुद्धा मन्नंति तारिसं ।
सावज्ज–बहुलं चेअं, नेअं ताइहिं सेविअं ॥३७॥

तालिअंटेण पत्तेण, साहा–विहुअणेण वा ।
न ते वीइउमिच्छंति, वेआवेऊण वा परं ॥३८॥

जं पि वत्थं वा पायं वा, कंबलं पायपुंछणं ।
न ते वायमुईरंति, जयं परिहरंति अ ॥३९॥

तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइ–वड्ढणं ।
वाउकाय-समारंभं जावजीवाए वज्जए ॥४०॥

वणस्सइं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ॥४१॥
वणस्सइं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥४२॥

तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं ।
वणस्सइ-समारंभं, जावजीवाए वज्जए ॥४३॥
तसकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ॥४४॥
तसकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥४५॥
तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं ।
तसकायसमारंभं, जावजीवाइ वज्जए ॥४६॥
जाइं चत्तारिऽभुज्जाइं, इसिणा-हारमाइणि ।
ताइं तु विवज्जंतो, संजमं अणुपालए ॥४७॥
पिंडं सिज्जं च वत्थं च चउत्थं पायमेव य ।
अकप्पिअं न इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअं ॥४८॥
जे निआगं ममायंति, कीअ-मुद्देसि-आहडं ।
वहं ते समणुजाणंति, इइ वुत्तं महेसिणा ॥४९॥
तम्हा असण-पाणाइं कीअ-मुद्देसि-आहडं ।
वज्जयंति ठिअप्पाणो, निग्गंथा धम्मजीविणो ॥५०॥

कंसेसुकंसपाएसु, कुंडभोएसु वा पुणो ।
भुंजतो असण-पाणाइ, आयारा परिभस्सइ ।५१।

सीओदग-समारंभे, मत्तधोअण-छड्डणे, ।
जाइं छन्नंति भूआइं, दिट्ठो तत्थ असंजमो ।५२।

पच्छाकम्मं, पुरेकम्मं सिआ तत्थ न कप्पइ ।
एअमट्ठं न भुंजंति, निग्गंथा गिहि-भायणे ।५३।

आसंदी-पालिअंकेसु, मच- मासालएसु वा ।
अणायरिअ-मज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा ।५४।

नासंदी-पलिअंअकेसु न निसिज्जा न पीढए ।
निग्गंथाऽपडिलेहाए, बुद्ध-वुत्त-महिट्ठगा ।।५५।।

गंभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा ।
आसंदी पलिअंको अ, एअमट्ठं विवज्जिआ ।५६।

गोअरग्ग-पविट्ठस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ ।
इमेरिस-मणायारं, आवज्जइ अबोहिअं ।।५७।।

विवत्ती बंभचेरस्स, पाणाणं च वहे वहो ।
वणीमग-पडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिणं ।।५८।।

अगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थीओ वा वि संकणं ।
कुसीलवड्ढण ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥५९॥
तिण्हमन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ ।
जराए अभिभूअस्स, वाहिअस्स तवस्सिणो ॥६०॥
वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पत्थए ।
वुक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो ॥६१॥
संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलुगासु अ ।
जे अ भिक्खू सिणायंतो, वियडेणुप्पलावए ॥६२॥
तम्हा ते न सिणायंति, सीएण उसिणेण वा ।
जावज्जीवं वयं घोरं, असिणाणमहिट्ठगा ॥६३॥
सिणाणं अदुवा कक्कं, लुद्धं पउमगाणि अ ।
गायस्सुव्वट्टणट्ठाए, नायरंति कयाइ वि ॥६४॥
नगिणस्स वा वि मुंडस्स, दीह-रोम-नहंसिणो ।
मेहुणा उवसंतस्स, किं विभूसाइ कारिअं ॥६५॥
विभूसा वत्तिअं भिक्खू, कम्मं बंधइ चिक्कणं ।
संसार-सायरे घोरे, जेणं पडइ दुरुत्तरे ॥६६॥

विभूसा-वत्तिअं एअं, वुद्धा मन्नंति तारिसं ।
सावज्ज-बहुलं चेअं, नेय ताइहिं सेविअं ॥६७॥

खवंति अप्पाण-ममोहदंसिणो,
तवे रया संजम-अज्जवे गुणे ।
धुणंति पावाइं पुरेकडाइं,
नवाइं पावाइं न ते करंति ॥६८॥

सओवसंता अममा अकिंचणा,
सविज्ज-विज्जाणुगया जसंसिणो ।
उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा,
सिद्धिं विमाणाइं उवेंति ताइणो ।
त्ति बेमि ॥६९॥

इति षष्ठमध्ययनं समाप्तम् ।६।



सुवाक्यशुद्ध्याख्य सप्तम अध्ययनम् ।

चउण्ह खलु भासाण, परिसखाय पन्नव ।
दुण्ह तु विणय सिक्खे दो न भासिज्ज सव्वसो ।।१।
जा अ सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा अ जा मुसा।
जा अ बुद्धेहि णाइण्णा, न त भासिज्ज पन्नव ।२।
असच्चमोस सच्च च, अणवज्ज-मकक्कस ।
समुप्पेह मसदिद्ध, गिर भासिज्ज पन्नव ।।३।।
एअ च अट्ठमन्न वा, ज तु नामेइ सासय ।
स भास सच्चमोस पि, त पि धीरो विवज्जए ।।४।
वितह पि तहामुत्ति, ज गिर भासए नरो ।
तम्हा सो पुट्ठो पावेण, किं पुण जो मुस वए ? ।५।
तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुग वा णे भविस्सइ ।
अह वा ण करिस्सामि, एसो वा ण करिस्सइ ।।६।।
एवमाइ उ जा भासा, एसकालम्मि सकिया ।
सपयाइममट्ठे वा, त पि धीरो विवज्जए ।।७।।

अइअंमि अ कालंमि, पच्चुप्पन्नमणागए ।
जमट्ठं तु न जाणिज्जा, एवमेअं त्ति नो वए ।।८।।
अइअंमि अ कालंमि, पच्चुप्पन्नमणागए ।
जत्थ संका भवे तं तु, एवमेअं ति नो वए ।।९।।
अइअंमि अ कालंमि, पच्चुप्पन्नमणागए ।
निस्संकिअं भवे जं तु, एवमेअं वि निद्दिसे ।।१०।।
तहेव फरुसा भासा, गुरुभूओवघाइणी ।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो ।।११।
तहेव काणं काणेत्ति, पंडगं पंडगे त्ति वा ।
वाहिअं वा वि रोगित्ति, तेणं चोरे त्ति नो वए ।।१२।
एएणऽन्नेण अट्ठेणं, परो जेणुवहम्मइ ।
आयार-भाव-दोसन्नू, न तं भासिज्ज पन्नवं ।।१३।
तहेव होले गोलित्ति, साणे वा वसुलि त्ति अ ।
दुमए दूहए वा वि, नेवं भासिज्ज पन्नवं ।।१४।।
अज्जिए पज्जिए वा वि, अम्मो माउसिउत्ति अ ।
पिउस्सिए भायणिज्जत्ति, धूए नत्तुणिअत्ति अ ।।१५।

हले हलित्ति अन्नित्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि ।
हाल्ने, गोले वसुलित्ति, इत्थिअं नेवमालवे ॥१६॥
नामधिज्जेण णं बूआ, इत्थीगुत्तेण वा पुणो ।
जहारिह-मभिगिज्झ, आलविज्ज लविज्ज वा ।१७।
अज्जए पज्जए वा वि, बप्पो चुल्लपिउ त्ति अ ।
माउलो भाइणिज्जत्ति, पुत्ते नत्तुणिअ त्ति अ ।१८।
हे हो हलि त्ति अन्नित्ति, भट्टे सामिअ गोमिए ।
होल गोल वसुलि त्ति, पुरिसं नेव-मालवे ॥१६॥
नामधिज्जेण बूआ, पुरिसगुत्तेण वा पुणो ।
जहारिह-मभिगिज्झ, आलविज्ज लविज्ज वा ।२०।
पंचिदिआण पाणाण, एस इत्थी अयं पुमं ।
जाव णं न विजाणिज्जा, ताव जाइत्ति आलवे ।२१।
तहेव माणुसं पसुं, पक्खि वा वि सरीसिवं ।
थूले पमेइले वज्झे, पाइमे त्ति अ नो वए ॥२२॥
परिवूढ त्ति णं बूआ, बूआ उवचिअ त्ति अ ।
संजाए पीणिए वा वि, महाकायत्ति आलवे ॥२३॥

तहेव गाओ दुज्झाओ, दम्मा गोरहग त्ति अ।
वाहिमा रहजोगि त्ति नेवं भासिज्ज पन्नवं ॥२४॥

जुवं गवित्ति णं बूआ, धेणु रसदय त्ति अ।
रहस्से महल्लए वा वि, वए संवहणि त्ति अ ।२५।

तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि अ।
रुक्खा महल्ल पेहाए, नेवं भासिज्ज पन्नवं ॥२६॥

अलं पासाय-खंभाणं, तोरणाणं गिहाण अ।
फलिहग्गल-नावाणं, अलं उदग-दोणिणं ॥२७॥

पीढए चंगबेरे अ, नंगले मइयं सिआ।
जंतलट्ठा व नामी वा, गंडिआ व अलं सिआ ।२८।

आसणं सयण जाणं, हुज्जा वा किंचुवस्सए।
भूओवघाइणि भासं, नेव भासिज्ज पन्नवं ॥२९॥

तहेव गंतुमुज्जाण, पव्वयाणि वणाणि अ।
रुक्खा महल्ल पेहाए, एवं भासिज्ज पन्नवं ॥३०॥
जाइमंता इमे रुक्खा, दीहवट्टा महालया।
पयायसाला विडिमा, वए दरिसणि त्ति अ ॥३१॥

तहा फलाइं पक्काइं, पायखज्जाइं नो वए ।
वेलोइयाइं टालाइं वेहिमाइं त्ति नो वए ॥३२॥
असथडा इमे अंबा, बहुनिव्वडिमा फला ।
वइज्ज बहु सभूआ, भूअरूव त्ति वा पुणो ॥३३॥
तहेवोसहिओ पक्काओ नीलिआओ छवीइ अ ।
लाइमा भज्जमाउ त्ति, पिहुखज्ज त्ति नो वए ।३४।
रूढा बहुसभूआ, थिरा ओसढा वि -अ ।
गब्भिआओ, पसूआओ, ससाराउ त्ति आलवे ।३५।
तहेव सखडिं नच्चा, किच्चं कज्ज ति नो वए ।
तेणगं वावि वज्झित्ति, सुतित्थि त्ति अ आवगा ।३६।
सखडिं संखडिं बूआ, पणिअट्ठं ति तेणगं ।
बहुसमाणि तित्थाणि, आवगाण विआगरे ॥३७॥
तहा नइओ पुण्णाओ, कायतिज्ज त्ति नो वए ।
नावाहि तारिमाओ त्ति, पाणिपिज्ज त्ति नो वए।३८
बहुवाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा ।
बहुवित्थडोदगा यावि, एवं भासिज्ज पन्नवं ॥३९॥

(काव्यम्)

तहेव सावज्जणुमोअणी गिरा,
ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।
से कोह लोह भय हास माणवो,
न हासमाणो वि गिरं वइज्जा ॥५४॥
सुवक्कसुद्धि समुपेहिआ मुणी,
गिरं च दुट्ठ परिवज्जए सया ।
मिअं अदुट्ठं अणुवीइ भासए,
सयाण मज्जे लहइ पसंसणं ॥५५॥
भासाइ दोसे अ गुणे अ जाणिआ,
तीसे अ दुट्ठे परिवज्जए सया ।
छसु संजए सामणिए सया जए,
वइज्ज बुद्धे हिअमाणुलोमिअं ॥५६॥
परिक्खभासी सुसमाहि-इंदिए,
चउक्कसाया-वगए अणिस्सिए ।
स निद्धुणें धुतमलं पुरेकडं,
आराहए लोगमिणं तहा परं ति बेमि ।५७।
॥ इति सुवक्कसुद्धीनामं सत्तममज्झयणं समत्तं ॥

८ आचारप्रणिधिनामकमध्ययनम्

आयार प्पणिहिं लध्धु, जहा कायव्व भिक्खुणा ।
त भे उदाहरिस्सामि, अणुपुव्वि सुणेह मे ॥१॥
पुढवी–दग अगणिमारुअ, तण–रुक्ख–सबीयगा ।
तसा अ पाणा जीव त्ति, इइ वुत्त महेसिणा ।२।
तेसिं अच्छण–जोएण, निच्च होअव्वय सिआ ।
मणसा काय–वक्केण, एव हवइ सजए ॥३॥
पुढविं भित्तिं सिल, लेलु नेव भिंदे न सलिहे ।
तिविहेण करण–जोएण, सजमे सुसमाहिए ॥४॥
सुद्धपुढवीए न निसी, ससरक्खमि अ आसणे ।
पमज्जित्तु निसीइज्जा जाइत्ता जस्स उग्गह ।५।
सीओदग न सेविज्जा, सिलावुट्ठ हिमाणि अ ।
उसिणोदग तत्त–फासुअ, पडिगाहिज्ज सजए ।६।
उदउल्ल अप्पणो काय नेव पु छे न सलिहे ।
समुप्पेह तहाभूअ नो ण सघट्टए मुणी ॥७॥

इंगालं अगणिं अच्चि, अलायं वा सजोइअं ।
न उंजिज्जा न घट्टिज्जा, नो णं निव्वावए मुणी ॥८॥
तालिअंटेख पत्तेण, साहाए–विहुयणेण वा ।
न वीइज्ज अप्पणो कायं, बाहिरं वा वि पुग्गलं ॥९॥
तणरुक्ख न छिंदिज्जा, फलं मूलं च कस्सइ ।
आमगं विविहं बीअं, मणसा वि न पत्थए ॥१०॥
गहणेसु न चिट्ठिज्जा, बीएसु हरिएसु वा ।
उदगंमि तहा निच्चं, उत्तिग–पणगेसु वा ॥११॥
तसे पाणे न हिंसिज्जा, वाया अदुव कम्मुणा ।
उवरओ सव्वभूएसु, पासेज्ज विविहं जगं ॥१२॥
अट्ठ सुहुमाइं पेहाए, जाइं जाणित्तु संजए ।
दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा ॥१३॥
कयराइं अट्ठ सुहुमाइं, जाइं पुच्छिज्ज संजए ।
इमाइं ताइं मेहावी, आइक्खिज्ज विअक्खणे ॥१४॥
सिणेहं पुप्फसुहुमं च, पाणुत्तिगं तहेव य ।
पणगं बीअ-हरिअं च, अंडसुहुमं च अट्ठमं ॥१५॥

एवमेआणि जाणित्ता, सव्वभावेण संजए ।
अप्पमत्तो जए निच्चं, सव्विंदिअ-समाहिए ॥१६॥

धुवं च पडिलेहिज्जा, जोगसा पायकंबलं ।
सिज्ज-मुच्चारभूमिं च, संथारं अदुवासणं ॥१७॥

उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाण-जल्लिअं ।
फासुअं पडिलेहित्ता, परिट्ठाविज्ज संजए ॥१८॥

पविसित्तु परागारं पाणट्ठा भोअणस्स वा ।
जयं चिट्ठे मिअं भासे न य रूवेसु मणं करे ॥१९॥

बहुं सुणेहि कन्नेहिं, बहुं अच्छीहिं पेच्छइ ।
न य दिट्ठं सुअं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ ।२०।

सुअं वा जई वा दिट्ठं न लविज्जोवघाइअं ।
न य केणइ उवाएण, गिहिजोगं समायरे ॥२१॥

निट्ठाणं रसनिज्जूढं, भद्दगं पावगं ति वा ।
पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा, लाभालाभं न निद्दिसे ।२२।

न य भोअणम्मि गिद्धो, चरे उंछं अयंपिरो ।
अफासुअं न भुंजिज्जा, कीय-मुद्देसि-आहडं ॥२३॥

संनिहिं चक्कुफ्विज्जा, अणुमायं पि संजए ।
मुहाजीवी असंबद्धे, हविज्ज जगनिस्सिए ॥२४॥

लूहवित्ती सुसंतुट्ठे, अप्पिच्छे सुहरे सिआ ।
आसुरत्तं न गच्छिज्जा, सुच्चा णं जिण-सासणं ।२५।

कन्नसुक्खेहिं सद्देहिं, पेमं नाभिनिवेसए ।
दारुणं कक्कसं फासं, काएण अहिआसए ॥२६॥

खुहं पिवासं दुस्सिज्जं, सो-उण्ह अरइं भयं ।
अहिआसे अवहिओ, देहदुक्खं महाफलं ॥२७॥

अत्थंगयंमि आइच्चे पुरत्था अ अणुग्गए ।
आहार-माइयं सव्वं, मणसावि न पत्थए ॥२८॥

अतिंतिणे अचवले, अ-पभासी मिआसणे ।
हविज्ज उअरे दंते, थोवं लद्धुं न खिसए ॥२९॥

न वाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुक्कसे ।
सुअलाभे न मज्जिज्जा, जच्चा-तवस्सि-वुद्धिए ।३०।
से जाणमजाणं वा, कट्टु अहम्मिअं पयं ।
संवरे खिप्पमप्पाणं, बीअं तं न समायरे ॥३१॥

अणायर परक्कम, नेव गूहे न निन्हवे ।
सुइ सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए ॥३२॥
अमोह वयण कुज्जा, आयरिअस्स महप्पणो ।
त परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥३३॥
अधुव जीविअ नच्चा, सिद्धिमग्ग विआणिआ ।
विणिअट्टेज्ज भोगेसु आउ परिमिअमप्पणो ।३४।
बल थाम च पेहाए, सद्धा-मारुग्ग-मप्पणो ।
खित्त काल च विन्नाय, तहप्पाण निजु जए ।३५।
जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढइ । -
जाविंदिआ न हायंति. ताव धम्म समायरे ।३६।
कोह माण च माय च, लोभ च पाव-वड्ढण ।
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छतो हिअ-मप्पणो ।३७।
कोहो पीइ पणासेइ, माणो विणय-नासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्व-विणासणो ३८
उवसमेण हणे कोह, माण मद्दवया जिणे ।
माय अज्जव-भावेण, लोभ सतोसओ जिणे ।३९।

कोहो अ माणो अ अणिग्गहीआ,
माया अ लोभो अ पवड्ढमाणा ।
चत्तारि एए कसिणा कसाया,
सिंचन्ति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥४०॥
रायणिएसु विणयं पउंजे,
धुवसीलयं सययं न हावइज्जा ।
कुम्मुव्व अल्लीण-पलीण-गुत्तो,
परक्कमिज्जा तव-संजमंमि ॥४१॥
निद्दं च न बहु मन्निज्जा, सप्पहासं विवज्जए ।
मिहो कहाहिं न रमे, सज्झायंमि रओ सया ।४२।
जोगं च समणधम्मम्मि, जुंजे अणलसो धुवं ।
जुत्तो अ समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं ।४३।
इहलोग-पारत्त-हिअं, जेणं गच्छइ सुग्गइं ।
वहुस्सुअं पज्जुवासिज्जा,
पुच्छिज्जत्थविणिच्छयं ॥ ४४ ॥
हत्थं पायं च कायं च पणिहाय जिइंदिए ।
अल्लीण-गुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी ।४५।

न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न य उरु समासिज्ज चिट्ठिज्जा गुरुणतिए ।४६।
अपुच्छिओ न भासिज्जा, भासमाणस्स अंतरा ।
पिट्ठिमंस न खाइज्जा मायामोसं विवज्जए ।४७।
अप्पत्तिअं जेण सिआ, आसु कुप्पिज्ज वा परो ।
सव्वसो तं न भासिज्जा, भासं अहिअगामिणि ।४८।
दिट्ठं मिअं असंदिद्धं, पडिपुन्नं विअं जिअं ।
अयपिर-मणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं ॥४६॥
आयार-पन्नत्ति-धरं, दिट्ठिवाय-महिज्जगं ।
वायविक्खलिअं नच्चा, न तं उवहसे मुणी ॥५०॥
नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंत-भेसजं ।
गिहिणो तं न आइक्खे, भूआहिगरणं पयं ॥५१॥
अन्नट्ठं पगडं लयणं, भइज्ज सयणासणं ।
उच्चारभूमि-संपन्नं, इत्थी-पसु-विवज्जिअं ॥५२॥
विवित्ता अ भवे सिज्जा नारीणं न लवे कहं ।
गिहि-संथवं न कुज्जा, कुज्जा साहूहिं संथवं ।५३।

जहा कुक्कुड-पोअस्स, निच्चं कुललओ भयं ।
एवं खु बंभयारिस्स, इत्थी-विग्गहओ भयं ॥५४॥

चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सु-अलंकिअं ।
भक्खरं पिव दट्ठूणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥५५॥

हत्थ-पाय-पडिच्छिन्नं, कन्न-नास विगप्पिअं ।
अवि वाससयं नारिं बंभयारी विवज्जए ॥५६॥

विभूसा इत्थि-संसग्गो, पणीअं रसभोअणं ।
नरस्सत्त-गवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥५७॥

अंग-पच्चंग-संठाणं, चारुल्लविअ-पेहिअं ।
इत्थीणं तं न निज्झाए, कामराग-विवड्ढणं ।५८।

विसएसु मणुन्नेसु, पेमं नाभिनिवेसए ।
अणिच्चं तेसिं विन्नाय, परिणामं पुग्गलाण य ।५९।

पुग्गलाणं परीणामं, तेसि नच्चा जहा तहा ।
विणीअ-तण्हो विहरे, सीइभूएण अप्पणा ।६०।
जाइ सद्धाइ निक्खंतो, परिआय-ट्ठाणमुत्तमं ।
तमेव अणुपालिज्जा, गुणे आयरिअसंमए ॥६१॥

तव चिम सजमजोगय च,
सज्झायजोग च सया अहिट्ठिए ।
सुरे व सेणाइ समत्त माउहे,
अलमप्पणो होइ अल परेसि ॥६२॥

सज्झायसज्झाणरयस्स ताइणो,
अपावभावस्स तवे रयस्स ।
विसुज्झइ ज सि मल पुरेकड,
समीरिअ रुप्पमल व जोइणा ॥६३॥

से तारिसे दुक्खसहे जिइ दिए,
सुएण जुत्ते अममे अकिंचण ।
विरायइ कम्मघणमि अवगए,
कसिणब्भपुडावगमे व चदिमे त्ति बेमि ॥६४॥

इति आयारपणिहीनाममट्ठममज्झयण समत्त ।



९ विनयसमाधिनामाध्ययने प्रथमोद्देशकः।

थभा व कोहा मयप्पमाया,
गुरुसगासे विणयं न सिक्खे
सो चेव उ तस्स अभूइभावो,
फलं व कीअस्स वहाय होइ ॥ १ ॥

जे आवि मंदित्ति, गुरुं विइत्ता,
डहरे इमे अप्पसुअ त्ति नच्चा।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा,
करंति आसायणं ते गुरूणं ॥ २ ॥

पगइइ मंदा वि भवंति एगे,
डहरा वि अ जे सुअवुद्धोववेआ।
आयारमंता गुणसुट्ठिअप्पा,
जे हीलिआ सिहिरिव भास कुज्जा ॥३॥

जे आवि नागं डहरं ति नच्चा,
आसायए से अहिआय होइ,

एवायरिअं पि हु हीलयंतो,
निगच्छइ जाइपहं खु मंदो ॥ ४ ॥
आसिविसो या वि परं सुरुट्ठो,
किं जीवनासाउ परं नु कुज्जा ।
आयरिअपाया पुण अप्पसन्ना,
अबोहि-आसायण नत्थि मुक्खो ॥५॥
जो पावगं जलिअ मवक्कमिज्जा,
आसीविसं वा वि हु कोवइज्जा ।
जो वा विसं खायइ जीविअट्ठी,
एसोव-मासायणया गुरुणं ॥ ६ ॥
सिया हु से पावय नो डहेज्जा,
आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
सिया विसं हालहलं न मारे,
न यावि मोक्खो गुरु-हीलणाए ॥७॥
जो पव्वयं सिरसा भेत्तु-मिच्छे,
सुत्तं व सीहं पडिबोहइज्जा ।

जो वा दए सत्ति-अग्गे पहारं,
एसोव—मासायणया गुरूणं ॥८॥
सिया हु सीसेण गिरिं पि भिन्दे,
सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
सिया न भिन्दिज्ज व सत्ति अग्गं,
न यावि मोक्खो गुरु-हीलणाए ॥९॥
आयरिय-पाया पुण अप्पसन्ना,
अबोहि आसायण नत्थि मुक्खो ।
तम्हा अणाबाह—सुहाभिकंखी,
गुरुप्पसाया-भिमुहो रमेज्जा ॥१०॥
जहाहिअग्गी जलणं नमंसे,
नाणाहुइ—मन्त-पया-भिसित्तं ।
एवायरियं उवचिट्ठएज्जा,
अणन्तनाणोवगओ वि सन्तो ॥११॥
जस्सन्तिए धम्मपयाइ सिक्खे,
तस्सन्तिए वेणइय पउजे ।

सक्कारए सिरसा पंजलिओ,
काय-गिरा 'भो' मणसा य निच्चं ॥१२॥

लज्जा दया संजम बंभचेरं,
कल्लाण-भागिस्स विसोहि-ठाणं ।
जे मे गुरू सययमणुसासयन्ति,
तेऽहं गुरू सययं पूययामि ॥१३॥

जहा निसन्ते तवणच्चिमाली,
पभासइ केवल-भारहं तु ।
एवायरिओ सुय-सील-बुद्धिए,
विरायइ सुरमज्झे व इन्दो ॥१४॥

जहा ससी कोमुइ-जोग-जुत्तो,
नक्खत्त-तारागण-परिवुडप्पा ।
खे सोहइ विमले अब्भमुक्के,
एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥१५॥

महागरा आयरिया महेसी,
समाहि-जोगे सुय-सील-बुद्धिए ।

सम्पाविउ—कामे अणुत्तराइं,
आराहए तोसइ धम्म-कामो ॥१६॥
सुच्चाण मेहावि—सुभासियाइं,
सुस्सूसए आयारिअप्पमत्तो ।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे,
से पावइ सिद्धिमणुत्तरं ति बेमि ।१७।

इति विणयसमाहीए पढमो उद्देसो समत्तो. १



९ विनयसमाध्यध्ययने द्वितीयउद्देशः २ ।

मूलाउ खन्धप्पभवो दुमस्स,
खन्धाउ पच्छा समुवेन्ति साहा ।
साहप्पसहा विरुहन्ति पत्ता,
तओ से पुप्फं च फलं रसो य ॥१॥
एवं धम्मस्स विणओ, मूलं परमो से मुक्खो ।
जेण कित्ति सुअं सिग्घं, नीसेसं चाभिगच्छइ ॥२॥

जे य चण्डे मिए थद्धे, दुव्वाइ नियडी सढे ।
वुज्झइ से अविणीयप्पा, कट्ठ सोयगय जहा ॥३॥
विणयम्मि जो उवाएण चोइओ कुप्पइ नरो ।
दिव्व सा सिरिमिज्जन्ति, दडेण पडिसेहए ॥४॥
तहेव अविणीअप्पा, उववज्झा हया गया ।
दीसन्ति दुहमेहन्ता, आभिओग-मुवट्ठिया ॥५॥
तहेव सुविणीअप्पा, उववज्झा हया गया ।
दीसन्ति सुहमेहन्ता, इड्ढि पत्ता महायसा ॥६॥
तहेव अविणीअप्पा, लोगसि नर-नारिओ ।
दीसन्ति दुहमेहन्ता, छाया विगलितेन्दिया ॥७॥
दण्ड-सत्थ-परिजुण्णा असब्भ-वयणेहि य ।
कलुणा विवन्न-छन्दा, खुप्पिवासा परिगया ॥८॥
तहेव सुविणिअप्पा, लोगसि नरनारिओ ।
दीसन्ति दुहमेहन्ता, इड्ढि पत्ता महायसा ॥९॥
तहेव अविणीअप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा ।
दीसन्ति दुहमेहन्ता, आभिओग-मुवट्ठिया ॥१०॥

तहेव सुविणीअप्पा, देवा जक्खा अ गुज्झगा ।
दीसन्ति सुहमेहन्ता, इड्ढि पत्ता महायसा ॥११॥
जे आयरिय-उवज्झायाणं, सुस्सूसा-वयणंकरा ।
तेसिं सिक्खा पवड्ढन्ति, जलसित्ता इव पायवा ।१२।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा नेउणियाणि य ।
गिहिणो उवभोगट्ठा, इह लोगस्स कारणा ॥१३॥
जेण बन्धं वहं घोरं, परिआवं च दारुणं ।
सिक्खमाणा नियच्छन्ति, जुत्ता ते ललिइन्दिआ ।१४
तेऽवि तं गुरुं पूयन्ति, तस्स सिप्पस्स कारणा ।
सक्कारन्ति नमंसन्ति, तुट्ठा निद्देसवत्तिणो ॥१५॥
किं पुण गेण जे सुअग्गाही, अणन्त-हियकामए ।
आयरिया जं वए भिक्खू, तम्हा तं नाइवत्तए ।१६।
नीअं सेज्जं गइ ठाणं, नीयं च आसणाणि य ।
नीयं च पाए वन्दिज्जा, नीयं कुज्जा य अंजलिं ।१७।
संघट्टइत्ता काएणं, तहा उवहिणामवि ।
'खमेह अवराहं मे' वइज्ज 'न पुण' त्ति अ ॥१८॥

दुग्गओ वा पओएण, चोइओ वहइ रहं ।
एवं दुबुद्धि किच्चाणं, वुत्तोवुत्तो पकुव्वइ ॥१९॥
आलवन्ते लवन्ते वा, न निसिज्जाइ पडिस्सुणे ।
मुत्तूण आसणं धीरो, सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥२०॥
कालं छन्दोवयारं च, पडिलेहित्ताण हेउहिं ।
तेण तेण उवाएण, तं तं संपडिवायए ॥२१॥
विवत्ती अविणीयस्स, सम्पत्ती विणियस्स य ।
जस्सेयं दुहओ नायं, सिक्खं से अभिगच्छइ ॥२२॥
जे आवि चण्डे मइ-इड्ढि-गारवे,
पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे ।
अदिट्ठ-धम्मे विणए अकोविए,
असंविभागी न हु तस्स मुक्खो ॥२३॥
निद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं,
सुयत्थ-धम्मा विणयम्मि कोविया ।
तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं,
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गयं त्तिबेमि ।२४।
इति विणयसमाहिअज्झयणे बीओ उद्देसो समत्तो

९ विनयसमाध्ययने तृतीय उद्देशः ३।

आयरियं अग्गि-मिवाहिअग्गी,
सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्जा।
आलोइयं इंगिअमेव नच्चा,
जो छन्दमाराहयइ स पुज्जो ॥ १ ॥
आयारमट्ठा विणयं पउंजे,
सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं।
जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो,
गुरुं तु नासाययइ स पुज्जो ॥ २ ॥
राइणिएसु विणयं पउंजे,
डहरा वि य जे परियाय-जेट्ठा।
नियत्तणे वट्टइ सच्चवाइ,
ओवायवं वक्करे स पुज्जो ॥ ३ ॥
अन्नायउंछं चरइ विसुद्धं,
जवणट्ठया समुयाणं च निच्चं।

अलद्धुय नो परिदेवइज्जा,
लद्धु न विकत्थयइ स पुज्जो ॥ ४ ॥
संथार-सेज्जाऽऽसण-भत्तपाणे,
अप्पिच्छया अइलाभे वि सन्ते ।
जो एवमप्पाणभितोसएज्जा,
संतोस-पाहन्न-रए स पुज्जो ॥ ५ ॥
सक्का सहेउ आसाइ कंटया,
अओमया उच्छहया नरेण ।
अणासए जो उ सहिज्ज कंटए,
वइमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥
मुहुत्त-दुक्खा उ हवन्ति कंटया,
अओमया ते वि तओ सु-उद्धरा ।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि,
वेराणुबन्धीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥
समावयन्ता वयणाभिघाया,
कण्णगया दुम्मणियं जणन्ति, ।

धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे,
जिइन्दिए जो सहइ स पुज्जो ॥ ८ ॥
अवण्णवायं च परम्मुहस्स,
पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं।
ओहारणिं अप्पियकारिणिं च,
भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥९॥
अलोलुए अक्कुहए अमाइ,
अपिसुणे यावि अदीणवित्ती।
नो भावए नो विय भावियप्पा,
अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥१०॥
गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू,
गेण्हाहि साहु-गुण मुंचऽसाहू।
वियाणिया अप्पग—मप्पएणं,
जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥११॥
तहेव डहरं वा महल्लगं वा,
इत्थि पुमं पव्वइयं गिहिं वा।

नो हीलए नोऽवि य खिसएज्जा,
थभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥१२॥
जे माणिया सययं माणयन्ति,
जत्तेण कन्नं न निवेसयन्ति ।
ते माणए माणरिहे तवस्सी,
जिइन्दिए सच्चरए स पुज्जो ॥१३॥
तेसिं गुरूणं गुणसायराणं,
सोच्चाण मेहावी सुभासियाइं ।
चरे मुणी पंच-रए तिगुत्तो,
चउक्कसाया-वगए स पुज्जो ॥१४॥
गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी,
जिणमय-निउणे अभिगम-कुसले ।
धुणिय रयमलं पुरेकडं,
भासुर-मउलं गइं गय, त्तिवेमि ॥१५॥

इति विणयसमाहिअज्झयणे तईओ उद्देसो समत्तो ।



९ विनयसमाध्ययने चतुर्थ उद्देशः

सुयं मे आउसं! तेण भगवया एवमक्खायं, इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं चत्तारि विणय-समाहिट्ठाणा पन्नत्ता कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं चत्तारि विणय-समाहिट्ठाणा पन्नत्ता ?

'इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं चत्तारि विणय-समाहिट्ठाणा पन्नत्ता, तं जहा-विणय समाही, सुय-समाही, तवसमाही, आयारसमाही, विणए सुए अ तवे, आयारे निच्च पंडिया। अभि-रामयन्ति अप्पाणं, जे भवंति जिइन्दिया ॥१॥

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ, तं जहा-अणुसासिज्जन्तो सुस्सूसइ १, सम्मं संपडिवज्जइ २, वेयमाराहइ ३, न य भवइ अत्तसम्पग्गहिए ४, चउत्थं पयं भवइ, भवइ य एत्थ सिलोगो।

पेहेइ हियाणुसासण,
सुस्सूसइ त च पुणो अहिट्ठिए ।
न य माण-मएण मज्जइ
विणय--समाही--आययट्ठिए ॥२॥

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ, त जहा-सुय मे भविस्सइति अज्झाइव्व भवइ १, एगग्गचित्तो भविस्सामित्ति अज्झाइयव्व भवइ २, अप्पाण ठावइस्सामित्ति अज्झाइयव्व भवइ ३, ठिओ पर ठावइस्सामित्ति अज्झाइयव्व भवइ ४, चउत्थ पय भवइ,भवइ य एत्थ सिलोगो ।

नाणमेगग्गचित्तो य, ठिओ य ठावइ पर ।
सुयाणि य अहिज्जित्ता, रओ सुय-समाहिए ।३।

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ त जहा नोइहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा १, नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा २, नो कित्ति-वण्ण-सद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा ३, नन्नत्थ

निज्जरट्ठयाए तव-महिट्ठिज्जा ४। चउत्थं पयं भवइ भवइ-य एत्थ सिलोगो।

विविहगुण-तवो-रए य निच्चं,
भवइ निरासए निज्जरट्ठिए।
तवसा धुणइ पुराण-पावगं,
जुत्तो सया तव-समाहिए ॥ ४ ॥

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ, तं जहा-नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा १, नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा २, नो कित्ति वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा ३, नन्नत्थ अरिहन्तेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठिज्जा, ४ चउत्थं पयं भवइ, भवइ य एत्थ सिलोगो।

जिणवयण--रए अतिन्तिणे,
पडिपुण्णायय--माययट्ठिए।
आयारसमाहि--संवुडे,
भवइ य दन्ते भाव-सन्धए ॥ ५ ॥

अभिगम चउरो समाहिओ,
सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ ।
विउल-हिय-सुहावह पुणो
कुव्वइ सो पय--खेममप्पणो ६।
जाइमरणाओ मुच्चइ,
इत्थत्थ च चयइ सव्वसो।
सिद्धे वा भवइ सासए,
देवे वा अप्परए महड्ढिए त्तिबेमि ॥७॥

इति विणयसमाहीए चउत्थो उद्देसो समत्तो ४।

१० सभिक्खुअध्ययनम्.

निक्खम्ममाणाइ य बुद्धवयणे, निच्च चित्त-समाहिओ हविज्जा। इत्थीण वस न यावि गच्छे, वन्त नो पडियायइ जे स भिक्खू, १. पुढवि न खणे न खणावए, सीओदग न पिए न पियावए। अगणिसत्थ जहा सुनिसिअ, त न जले न जलावए

जे स भिक्खू. २. अनिलेण न वीए न वीयावए, हरियाणि न छिन्दे न छिन्दावए। बीयाणि सया विवज्जयन्तो, सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्खू ३. वहणं तस थावराण होइ, पुढवि तण-कट्ठ-निस्सियाणं तम्हा उद्देसियं न भुंजे, नो वि पए न पयावए जे स भिक्खू ४, रोइयनायपुत्त-वयणे, अत्तसमे मन्नेज्ज छप्पि काए, पंच न फासे महव्वयाइं, पंचासव-संवरए जे स भिक्खू ५, चत्तारि वमे सया कसाए, धुवजोगी हविज्ज बुद्धवयणे, अहणे निज्जाय रूवरयए, गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ६. सम्मद्दिट्ठि सया अमूढे, अत्थि हु नाणे तव संजमे अ, तवसा धुणइ पुराण-पावगं, मण-वय-काय-सुसंवुडे जे स भिक्खू ७, तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइम साइम-साइम लभित्ता, होही अट्ठो सुए परे वा, तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ८, तहेव असणं पाणगं वा खाइम-साइमं लभित्ता, छन्दिय साहम्मिआण भुंजे,

भोच्चा सज्झाय-रए य जे स भिक्खू ६, न य वुग्गहियं कहं कहेज्जा, न य कुप्पे निहुइन्दिए पसन्ते सजमे धुवं जोगेण जुत्ते, उवसन्ते अविहेडए जे स भिक्खू १०, जो सहइ हु गाम-कण्टए, अक्कोस-पहार-तज्जणाओ य। भय--भेरव--सद्द-सप्पहासे, सम-सुह-दुक्ख-सहे य जे स भिक्खू ११. पडिमं पडिवज्जिया मसाणे, नो भायए भयभेरवाइं दिअस्स। विविहगुण-तवो-रए य निच्चं, न सरीरं चाभिकखइ जे स भिक्खू, १२ असइं वोसट्ठ चत्तदेहे, अक्कुट्ठे व हए व लूसिए वा। पुढवि समे मुणी हविज्जा अनियाणे अकोउहल्ले जे स भिक्खू १३ अभिभूय काएण परीसहाइं, समुद्धरे जाइ-पहाओ अप्पयं विइत्तु जाइ-मरणं महब्भयं, तवे रए सामणिए जे स भिक्खू १४. हत्थ-सजए पायसजए-वायसजए सजइन्दिए। अज्झप्प-रए सुसमाहियप्पा, सुत्तत्थं च वियाणइ जे स भिक्खू १५, उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे, अन्नाय उछ

पुल निप्पुलाए। कय–विक्कय सन्निहिओ विरए, सव्वसंगावगए य जे स भिक्खू १६. अलोल-भिक्खू न रसेसु गिध्धे, उंछ चरे जीविय नाभिकंखे। इड्ढि च सक्कारणपूयणं च, चए ठियप्पा अणिहे जे स भिक्खू १७. न परं वएज्जासि 'अयं कुसीले', जेणन्न कुप्पेज्ज न तं वएज्जा। जाणिय पत्तेयं पुण्णपाव, अत्ताण न समुक्कसे जे स भिक्खू. १८, न जाइमत्ता नय रूवमत्तो, न लाभमत्ते न सुएण मत्ते। मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता, धम्मज्झाणरए य जे स भिक्खू. १९. पवेयए अज्जपयं महामुणी, धम्मे ठिओ ठावयइ परंपि। निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं, न यावि हास कुहए जे स भिक्खू २०. तं देहवासं असुइं असासयं, सया चए निच्च हियट्ठियप्पा। छिन्दित्तु जाइमरणस्स बंधणं, उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं ति बेमि. २१।

इइ सभिक्खू अज्झयणं दससं समत्तं १०

१ श्री दशवैकालिके प्रथमा चूलिका.

इह खलु भो पव्वइएण उप्पन्नदुक्खेण संजमे अरइसमावन्नचित्तेण ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएण चेव हयरस्सिगयंकुसपोयपडागाभूआइं इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं संपडिलेहिअव्वाइं भवंति, तं जहाह भो दुस्समाए दुप्पजीवी १, लहुसगा इत्तरिआ गिहीणं कामभोगा २, भुज्जो अ साइबहुला मणुस्सा ३, इमे अ दुक्खे न चिरकालोवट्ठाइ भविस्सइ ४ ओमजणपुरक्कारे ५, वंतस्स य पडिआयणं ६, अहरगइ वासोवसंपया ७, दुल्लहे खलु भो गिहीणं धम्मे गिहवासमज्झे वसंताणं ८, आयंके से वहाय होइ ९, संकप्पे से वहाय होइ १०, सोवक्केसे गिहवासे, निरुवक्केसे परिआए ११, बंधे गिहवासे, मुक्खे परिआए १२, सावज्जे गिहवासे, अणवज्जे परिआए १३, बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा १४, पत्तेअं पुन्नपाव

१५. अणिच्चे खलु भो मणुआण जीविए कुसग्ग-जलबिंदुचंचले १६. बहुं च खलु भो पावं कम्मं पगड १७ पावाणं च खलु कडाण कम्माणं पुव्वि दुच्चिन्नाणं दुप्पडिकंताणं वेइत्ता नत्थि अवेइत्ता तवसा वा झोसइत्ता १८, अट्ठारसमं पयं भवइ, भवइ अ इत्थ सिलोगो ।

जया य चयइ धम्मं, अणज्जो भोगकारणा ।
से तत्थ मुच्छिए बाले, आयइं नावबुज्झह ॥१॥

जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छम ।
सव्व-धम्मपरिब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ ॥२॥

जया अ वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवंदिमो ।
देवया व चुआ ठाणा, स पच्छा परितप्पइ ॥३॥

जया अ पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो ।
राया व रज्जपब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ ॥४॥

जया अ माणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो ।
सिट्ठिव्व-कव्वडे छूढो, स पच्छा परितप्पइ ॥५॥

जया अ थेरओ होइ, समइक्कतजुव्वणो ।
मच्छु व्व गलं गिलित्ता, स पच्छा परितप्पइ ॥६॥
जया अ कुकुडस्स, कुतत्तीहिं विहम्मइ ।
हत्थी व बंधणे बद्धो, स पच्छा परितप्पइ ॥७॥
पुत्तदारपरीकिन्नो, मोहसंताणसंतओ ।
पंकोसन्नो जहा नागो, स पच्छा परितप्पइ ॥८॥
अज्ज अहं गणी हुंतो, भाविअप्पा बहुस्सुओ ।
जइऽहं रमंतो परिआए, सामन्ने जिणदेसिए ।९।
देवलोगसमाणो अ, परिआओ महेसिण ।
रयाण अरयाण च, महानरयसारिसो ।१०।
अमरोवम जाणिअ सुक्खमुत्तम, रयाणपरिआइ तहाऽरयाण, निरओवम जाणिअ दुक्खमुत्तमं, रमिज्ज तम्हा परिआइ पंडिए ११ ।

धम्माउ भट्ठ सिरिओ अवेय, जन्नग्गि विज्झाअमिव-ऽप्पतेअ, हीलंति ण दुव्विहिअ कुसीला, दाढुद्धिअ घोरविस व नाग १२, इहेव धम्मो अयसो अकित्ती, दुन्नामधिज्ज च पिहुज्जण-

मि, चुअस्स धम्माउ अहम्मसेविणो संभिन्नवित्तस्स य हिट्ठओ गइ १३, भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेअसा, तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं. गइं च गच्छे अणहिज्जिअं दुहं, बोही अ से नो सुलहा पुणो पुणो. १४, इमस्स ता नेरइअस्स जंतुणो, दुहोवणीअस्स किलेसवत्तिणो। पलिओवमं झिज्जइ सागरोवमं, किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं. १५, न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सइ, असासया भोगपिवास जंतुणो। न चे सरीरेण इमेणऽविस्सइ. अविस्सइ जीविअ-पज्जवेण मे. १६, जस्सेवमप्पा उ हविज्ज निच्छिओ, चइज्ज देहं न हु धम्मसासणं। तं तारिसं नो पइलंति इंदिआ, उविंतवाया व सुदंसणं गिरिं. १७, इच्चेव संपस्सिअ बुद्धिमं नरो, आयं उवायं विविहं विआणिआ। काएण वाया अदु माणसेणं, तिगुत्तिगुत्तो जिणवयण-महिट्ठिजासि. त्ति बेमि ॥१८॥

इइ सिरिदसवेयालिए रइवक्का पढमा चूला समत्ता १.

श्री दशवैकालिके द्वितीया चूलिका.

चूलिअ तु पवक्खामि, सुअ केवलि-भासिअ । ज सुणित्तु सुपुण्णाण, धम्मे उप्पज्जए मई ॥१॥ अणुसोअ- पट्ठिअ--बहुजणमि, पडिसोअ -लद्ध-लक्खेण । पडिसोअमेव अप्पा, दायव्वो होउ-कामेण ॥२॥ अणुसोअसुहो लोओ, पडिसोओ आसवो सुविहिआण । अणुसोओ ससारो, पडि-सोओ तस्स उत्तारो ॥३॥ तम्हा आयार-परक्क-मेण, सवर-समाहि-बहुलेण । चरिआ गुणा अ नियमा अ, हुति साहूण दट्ठव्वा ॥४॥ अनिएअ वासो समुआण-चरिआ, अन्नाय-उ छ पइरिक्कया य । अप्पोवही कलहविवज्जणा अ, विहारचरिआ इसिण पसत्था ॥५॥ आइन्न-ओमाण-विवज्जणा अ । ओसन्न-दिट्ठाहडभत्तपाणे । ससट्ठ-कप्पेण चरिज्ज भिक्खू, तज्जाय-ससट्ठ जइ जइज्जा ॥६॥ अमज्जमसासि अमच्छरीआ, अभिक्खण निव्विगइ

गया अ। अभिक्खणं काउस्सगकारी,सज्झायजोगे पयओ हविज्जा ॥७॥ न पडिन्नविज्जा सयणासणाइं। सिज्जं निसिज्जं तह भत्तपाणं, गामे कुले वा नगरे व देसे, ममत्तभावं न कहिं पि कुज्जा ॥८॥ गिहिणो वेआवडिअं न कुज्जा. अभिवायण-वंदण पूअणं पूअणं वा। असंकिलिट्ठेहिं समं वसिज्जा, मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी। ९॥ न या लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहिअं वा गुणओ समं वा। इक्को वि पावाइं विवज्जयंतो विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥ संवच्छरं वा वि परं पमाणं, बीअं च वासं न तहिं वसिज्जा। सुत्तस्स मग्गेण चरिज्ज भिक्खू, सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ११, जो पुव्वरत्तावररत्तकाले, संपिक्खए अप्पग-मप्पगेणं, किं मे कडं च मे किच्चसेसं, किं सक्कणिज्जं न समायरामि १२, किं मे परो पासइ किं च अप्पा, किं वाहं खलिअं न विवज्जयामि, इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो, अणागय नो पडिबंध

कुज्जा १३, जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं काएण वाया अदु माणसेण, तत्थेव धीरो पडिसाहरिज्जा आइन्नओ खिप्पमिव खलीण १४, जस्सेरिसा जोग जिइन्दिअस्स धिइमओ सप्पुरिसस्स निच्च, तमाहु लोए पडिवुद्धजीवी, सो जीअइ सजम-जीविएण १५, अप्पा खलु सयय रक्खिअव्वो, सव्विदिएहिं सुसमाहिएहिं, अरक्खिओ जाइपह उवेइ, सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ त्ति वेमि १६

सिरिदसवेआलिओ बीआ चूला समत्ता २,

इइ दसवेआलिअ मूलसुत्त समत्त

साधु-साध्वी योग्य आवश्यक क्रियानां सूत्रो

नमो अरिहंताणं

नमो अरिहंताण, नमो सिद्धाण, नमो आय-रियाण, नमो उवज्झायाण, नमो लोए सव्वसाहूण, एसो पंच-नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मगलाण च सव्वेसि पढम हवइ मगल ।

श्री करेमि भंते

करेमि भंते सामाइयं, सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि. जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि. तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि ठामि

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो, कओ, काइओ, वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो,उम्मग्गो अकप्पो,अकरणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचितिओ,अणायारो अणिच्छिअव्वो,असमण-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ते, सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पचण्हं महव्वयाणं, छण्ह जीवनिकायाणं, सत्तण्ह पिंडेसणाणं अट्ठण्हं पवयणमाऊणं, नवण्हं बंभचेरगुत्तीणं, दसविहे

समणधम्मे, समणाण जोगाण, ज खडिय ज विराहिय तस्स मिच्छा मि दुक्कड ।

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! देवसिअ आलोउ ? इच्छ, आलोएमि, जो मे देवसिओ अइआरो कओ० बाकी उपर प्रमाणे ।

इच्छामि पडिक्कमिउ जो मे राइओ अइआरो कओ० बाकि उपर प्रमाणे ।

दैवसिक अतिचार

ठाणे कमणे चकमणे, आउत्ते अणाउत्ते, हरियकाय सघट्टे, बीयकायसघट्टे थावरकायसघट्टे, देहरे उपासरे बाहिर भूमि जावता आवता पृथ्वीकाय अप्काय तेउकाय वाउकाय वनस्पतिकाय, बेइन्द्री तेइन्द्री चौरिन्द्री पचेन्द्री जीव प्रति सघट्ट परिताप उपद्रव उपजाव्यो, देहरे उपासरे जावता आवता निसीहि आवस्सहि कहेवी वीसारी गुरुतणो वचन तहत्ति करी सद्दह्यो नही, मात्रो

अविधे परिठव्यो, जो कोइ दिवस संबंधि पाप दोष लाग्यो होय ते सव्वे मन वचन कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

रात्रिक अतिचार

संथारा उवट्टणकी आउट्टणकी परिअट्टणकी पसारणकी छप्पइया संघट्टणकी अचकुखू विसयकायकी, रात्रि संबंधी पाप दोष लाग्यो अहट्ट दोहट्ट चिन्तव्यो, आर्त्तरौद्रध्यान ध्यायो. धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायो नहीं. संथारो पाछो वालतां, मात्रो अविधे परिठवतां जो कोइ रात्रि-संबंधी पाप दोष लाग्यो होय ते सव्वे मन वचन कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

श्रमणसूत्र.

नमो अरिहंताणं॰ करेमि भंते सामाइअं॰ चत्तारि मंगलं॰ इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ इच्छामि पडिक्कमिउं इरिआवहिआए॰

इच्छामि पडिक्कमिउ पगामसिज्जाए निगामसिज्जाए सथारा उव्वट्टण एपरिअट्टणाए आउटणाए पसारणाए छप्पइय सघट्टणाएकूइए व ककराइए छीए जभाइए आमोसे ससरक्खामासे आउलमाउलाए सोअणवत्तिग्राए इत्थीविप्परिआसिआए दिट्ठीविप्परिआसिआए मणविप्परिआसिआए पाणभोअणविप्परिआसिआए जो मे देवसिओ अइआरो कओ, तस्स मिच्छा मि दुक्कड. पडिक्कमामि गोअरचरिआए भिक्खायरिआए उग्घाड-कवाड उग्घाडणयाए साणा-वच्छा-दारा-सघट्टणाए मडी पाहुडिआए बलि पाहुडिआए ठवणापाहुडिआए सकिए सहसागारिए अणेसणाए पाणेमणाए पाणभोअणाए बीअभोअणाए हरिअभोअणाए पच्छेकम्मिआए पुरेकम्मिआए अदिट्ठहडाए दगससट्ठहडाए रयससट्ठहडाए पारिसाडणिआए पारिट्ठावणिआए ओहासणभिक्खाए ज उग्गमेण उप्पायणेसणाए अपरिसुद्ध परिग्गहिअ परिभुत्त वा ज न

परिट्ठविअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं. पडिक्कमामि चाउक्कालं सज्झायस्स अकरणयाए, उभओ कालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए दुप्पडिलेहणाए अप्पमज्जणाए दुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मे देवसिओ अइयारो कओ, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं. पडिक्कमामि एगविहे असंजमे पडिक्कमामि दोहि बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं, पडिक्कमामि तिहिं दंडेहिं मणदडेणं, वयदंडेणं कायदंडेण, पडिक्कमामि तिहि गुत्तीहिं मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए, पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेण नियाणसल्लेणं मिच्छादंसणसल्लेणं पडिक्कमामि तिहि गारवेहिं इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेण, पडि० तिहिं विराहणाहि नाणविराहणाए दंसणविराहणाए चरित्तविराहणाए, पडि० चउहिं कसाएहिं कोहकसाएणं, माणकसाएणं मायाकसाएणं लोभकसाएणं पडि० चउहिं आहारसन्नाए भयसन्नाए

मेहुणसन्नाए परिग्गहसन्नाए, पडि० चउहिं विकहाहिं इत्थिकहाए भत्तकहाए देसकहाए, रायकहाए, पडि० चउहिं झाणेहिं अट्टेण झाणेण, रुद्देण, झाणेण, धम्मेण झाणेण, सुक्केण झाणेण, पडि० पचहिं किरिआहिं काइआए अहिगरणिआए पाउसिआए पारितावणिआए पाणाइवायकिरिआए, पडि० पचहिं कामगुणहिं सद्दण रूवेण रसेण गधेण फासेण, पडि० पचहिं महव्वएहिं पाणाइवायओ वेरमण, मुसावायाओ वेरमण, अदिन्नादाणाओ वेरमण, मेहुणाओ वेरमण, परिग्गहाओ वेरमण, पडिक्कमामि पचहिं समिईहिं इरियासमिइए, भासासमिइए एसणासमिइए आयाणभडमत्तनिक्खेवणासमिइए उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपरिट्ठावणिआसमिइए, पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएण आउक्काएण तेउकाएण, वाउकाएण वणस्सइकाएण, पडिक्कमामि छहिं लेसाहिं किण्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए

तेउलेसाए पम्हलेसाए सुक्कलेसाए. पडिक्कमामि सत्तहिं भयठाणेहि अट्ठहि मयठाणेहिं, नवहिं बंभचेरगुत्तीहि, दसविहे समणधम्मे इगारसहिं उवासगपडिमाहिं, वारसहिं भिक्खुपडिमाहि तेरसहिं किरिआठाणेहिं, चउदसहि भूअगामेहिं, पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं, सोलसहि गाहासोलसएहिं, सत्तरसविहे असजमे, अट्ठारसविहे अबंभे, एगूणवीसाए नायज्झयणेहि वीसाए असमाहिट्ठाणेहि, इक्कवीसाए सबलेहिं बावीसाए परीसहेहिं, तेवीसाए सुअगडज्झयणेहि चउवीसाए देवेहिं, पणवीसाए भावणाहिं, छव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेहिं सत्तावीसाए अणगारगुणेहिं, अट्ठावीसाए आयारप्पकप्पेहिं, एगूणतीसाए पावसुअप्पसंगेहिं, तीसाए मोहणीअठाणेहि, इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं, वत्तीसाए जोगसंगहेहिं तित्तीसाए आसायणाए, अरिहंताणं आसायणा, १ सिद्धाणं आसायणए, २ आयरिआणं आसायणाए, ३ उव-

ज्झायाण आसायणाए, ४ साहूण आसायणाए, ५ साहुणीण असायणाए, ६ सावयाण आसायणाए, ७ साविग्राण आसायणाए, ८ देवाण आसायणाए ९ देवीण आसायणाए १ इहलोगस्स आसायणाए, ११ परलोगस्स आसायणाए, १२ केवलिपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए, १३ सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स आसायणाए, १४ सव्वपाण-भूअजीवसत्ताण आसायणाए १५ कालस्स आसायणाए १६ सुअस्स आसायणाए, १७ सुअदेवयाए आसायणाए, १८ वायणायरिअस्स आसायणाए, १९ ज वाइद्ध, २० वच्चामेलिअ, २१ हीणक्खर २२ अच्चक्खर, २३ पयहीण, २४ विणयहीण, २५ घोसहीण, २६ जोगहीण २७ सुट्ठुदिन्न, २८ दुट्ठुपडिच्छिअ, २९ अकाले कओ सज्झाओ, ३० काले न कओ सज्झाओ, ३१ असज्झा(इ)ए सज्झाइअ, ३२ सज्झा(इ)ए न सज्झाइअ, ३३ तस्स मिच्छामि दुक्कडं, नमो चउवीसाए तित्थ-

यराणं उसभाइमहावीरपज्जवसाणाणं, इणमेव निग्गथं पावयणं सच्च अणुत्तरं, केवलिअं, पडिपुन्न नेआउअं, संसुद्ध, सल्लगत्तणं, सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं, निज्जाणमग्गं, निव्वाणमग्गं, अवितहमविसंधि सव्वदुक्खप्पहीणमग्गं, इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति, वुज्झंति मुच्चंति, परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करंति, तं धम्मं सद्दहामि पत्तिआमि रोएमि फासेमि पालेमि अणुपालेमि; तं धम्मं सद्दहंतो पत्तिअंतो, रोअंतो फासंतो, पालतो, अणुपालंतो, तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए, विरओ मि विराहणाए, असंजमं परिआणामि, संजमं उवसंपज्जामि, अबंभं परिआणामि, बंभं उवसंपज्जामि, अकप्पं अरिआणामि; कप्पं उवसंपज्जामि, अन्नाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं परिआणामि; किरिअं उवसंपज्जामि, मिच्छत्तं परिआणामि, सम्मत्तं उवसंपज्जामि, अबोहिं परिआणामि, वोहिं उवसंपज्जामि

अमग्ग परिआणामि, मग्गं उवसंपज्जामि, जं संभरामि, जं च न संभरामि, जं पडिक्कमामि, जं च न पडिक्कमामि, तस्स सव्वस्स *देवसिअस्स अइआरस्स पडिक्कमामि, समणो हं संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, अनिआणो, दिट्ठि संपन्नो, मायामोसविवज्जिओ, अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मभूमिसु जावंत केवि साहू, रयहरण-गुच्छ-पडिग्गह-धारा, पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससहस्ससीलंगधारा अक्खुयायार-चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि। खामेमि सव्वजीवे सव्वे जीवा खमंतु मे मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥१॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं, तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥२॥

* राइ वखते 'राइअस्स' अने पक्खी वखते 'पक्खीअस्स' इत्यादि बोलवु ।

इति श्री यति प्रतिक्रमण सूत्रम्,

पाक्षिक अतिचार

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य विरियमि, आयरण आयारो, इय एसो पंचहा भणिओ, १ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हु मन वचन कायाए करी मच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह य निन्हवणे, वंजण अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो, २ ज्ञान कालवेलामांहे पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो नहि, अकाले पढ्यो विनयहीन बहुमानहीन योगोपधानहीन पढ्यो, अनेरा कन्हे पढ्यो, अनेरो गुरु कह्यो, देववांदण वांदणे पडिक्कमणे सज्झाय करता

पढता गुणतां कूडो अक्षर काने मात्रे आगलो ओछो भण्यो गुण्यो, सूत्रार्थ तदुभय कूडा कह्या, काजो अणउद्धर्यो, दांडो अणपडिलेह्यो, वसति अणशोध्या, अणपवेया, असज्झाय अणोज्झा काल-वेलामांहि श्री दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत पढ्यो, गुण्यो परावर्त्यो अविधिए योगोपधान कीधां कराव्यां ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, [1]ठवणी, कवली, नोकारवाली, सापडा, सापडी, [2]दस्तरी वही, कागल ए ओलीआ प्रत्ये पग लाग्यो, थुंक लाग्यो थुंके करी अक्षर भांज्यो, ज्ञानवंत प्रत्ये प्रद्वेष मत्सर चह्यो, अंतराय अवज्ञा आशातना

---

१ पानाना रक्षणनुं साधन, (ते लाकडी, कागळनी गलीमां उपर लुगडुं सीवीने बनावाय छे) २ पाना राखवाने माटे बे पूठाने जोडीने करेलुं साधन, ३ टीपणा प्रकारे सजेला कागलना चीटा

कीधी, कुणहि प्रत्ये तोतडो बोबडो देखी हस्यो, वितर्क्यो, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पांचे ज्ञानतणी असद्दहणा आशातना कीधी, ज्ञानाचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥ २ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार—निस्संकिअ निक्कंखिअ निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ, उववूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ. २, देव, गुरु, धर्मतणे विषे निस्संकपणुं न कीधुं, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं. धर्म संबधीआ फलतणे विषे निस्संदेह बुद्धि धरी नहीं, साधु साध्वीतणी निंदा जुगुप्सा कीधी, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं, संघमांहि गुणवंततणी अनुपबृंहणा कीधी, अस्थिरीकरण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति निपजावी, तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, साधारणद्रव्य भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराधे विणास्यो विणसंतो उवेख्यो, छती शक्तिए सार-

सभाल न कीधी, ठवणारिय हाथथकी पाड्या, पडिलेहवा विसार्या, जिनभवनतणी चोराशी आशातना गुरु प्रत्ये तेत्रीश आशातना कीधी होय, दर्शनाचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ३ ॥

चारित्राचारे आठ अतिचार पणिहाण जोगजुत्ता, पचहिं समिइहिं तीहिं गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो अट्ठविहो होइ नायव्वो, ४ इर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति आदानभंडमत्तनिक्षेपणासमिति उच्चार पासवणखेल जल्ल सिंघाण पारिट्ठापनिकासमिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति ए अष्ट प्रवचनमाता रुडीपरे पाली नहीं, साधुतणे धर्म सदैव, श्रावकतणे धर्म सामायिक, पोसह लीधे जे काइ खंडना विराधना कीधी होय, चारित्राचार विषइओ, अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ५ ॥

विशेषतः चारित्राचारे तपोधनतणे धर्म वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं, पलिअंक-निसिज्जाए, सिणाणं सोभवज्जणं ॥ ६ ॥

व्रत षट्के, पहिले महाव्रते प्राणातिपात सूक्ष्म बादर त्रस थावर जीवतणी विराधना हुइ, बीजे महाव्रते क्रोध लोभ भय हास्य लगे जुठु बोल्या, त्रीजे अदत्तादानविरमण महाव्रते सामीजीवादत्तं तित्थयरअदत्तं तहेव य गुरुहिं, एवमदत्तं चउहा, पण्णत्तं वीयराएहिं, १. स्वामी अदत्त, जीव अदत्त, तीर्थंकर अदत्त, गुरु अदत्त, ए चतुर्विध अदत्तादानमांहि जे कांइ अदत्त परिभोगव्युं, चोथे महाव्रते वसहिकहनिसिज्जिंदिय, कुड्डितरपुव्वकीलिए पणिए, अइमायाहारविभूसणा य, नव बंभचेरगुत्तीओ, १. ए नववाडी सूधी पाली नहीं, सुहणे स्वप्नांतरे दृष्टिविपर्यास हुओ, पांचमे महाव्रते धर्मोपगरणने विषे इच्छा मूर्च्छा गृद्धि आसक्ति धरी, अधिको उपगरण

वावर्यो पर्व तिथिए पडिलेहवो विसार्यो, छट्ठे रात्रिभोजन विरमण व्रते असूरो भात पाणी कीधो, छारोद्‌गार आव्यो, पात्र पात्र +वधे तक्रादिकनो छांटो लाग्यो, गरडचो रह्यो, लेप तेल औषधादिक तणो सनिधि रह्यो अतिमात्राए आहार लीधो, ए छए व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अति० ॥ ७ ॥

कायषट्‌के, गामतणे पइसारे नीसारे पग पडिलेहवा विसार्या माटी मीठु खडी धावडा अरणेटो पाषाणतणी चातरी उपर पग आव्यो, अप्काय वाघारी फूसणा हुवा, विहरवा गया, * उलखो ढाल्यो, लोटो ढोल्यो, काचा पाणीतणा छांटा लाग्या, तेउकाय बीज दीवातणी उजेही

+झोली,

* होकानु पाणी जेमां रखाय छे ते अथवा पात्र विशेष ।

हुइ, वाउकाय उघाडे मुखे बोल्या, महावाय वाजतां (वातां) कपडां कांबलीतणा छेडा साचव्या नहीं फुंक दीधो, वनस्पतिकाय नील-फुल सेवाल थड फल फूल वृक्ष शाखा प्रशाखा-तणा संघट्ट परतपर निरंतर हुवा, त्रसकाय बेइंद्री तेइंद्री चउरिंद्री पंचेन्द्री काग बग उडाव्या, ढोर त्रासव्यां, बालक वीहराव्यां, षट्काय विषइत्रो अनेरो जे कोइ अति० ॥ ८ ॥

अकल्पनीय सिज्जा वस्त्र पात्र पिंड परिभोगव्यो, सिज्जातरतणो पिंड परिभोगव्यो, उपयोग कीधा पाखे विहर्यो, धात्रीदोष त्रसबीजसंसक्त पूर्वकर्म्म पश्चात्कर्म उद्गम उत्पादना दोष चिंतव्या नही. गृहस्थतणो भाजन भांज्यो, फोड्यो, वली पाछो आप्यो नही, सूतां संथारिया उत्तरपट्टो, टलतो अधिको उपगरण वावर्यो, देशतः स्नान कीधुं, मुखे भीनो हाथ लगाड्यो, सर्वतः स्नानतणी वांच्छा कीधी, शरीरतणो मेल फेड्यो, केश रोम

नख समार्या, अनेरी काइ राढाविभूषा कीधी, अकल्पनीय पिडादि विपइग्रो अनेरो जे कोइ अति० ॥ ६ ॥

आवस्सयसज्झाए, पडिलेहणज्झाणभिक्खऽ-भत्तट्ठे आगमणे निग्गमणे, ठाणे निसीअणे तुअट्टे, १ आवश्यक उभयकाल व्याक्षिप्त चित्तपणे पडिक्कमणु कीधो पडिक्कमणामाहि उघ आवी, बेठा पडिक्कमणु कीधु, दिवस प्रत्ये चार वार सज्झाय सात वार चैत्यवंदन न कीधा, पडिलेहण आघी पाछी भणावी, अस्तव्यस्त कीधी, आर्त्तध्यान रौद्र-ध्यान ध्याया, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्याया नही गोचरी गया बेंतालीश दोष उपजता चिंतव्या नहीं, प्राच दोष मडलीतणा टाल्य नही, छती शक्तिए पर्वतिथिए उपवासादिक तप कीधो नही, देहरा उपासरामांहि पेसतां निसीहि, नीसरता आवस्सही कहेवी विसारी इच्छामिच्छादिक दशविध चक्र-वाल सामाचारी साचवी नहि गुरुतणो वचन तहत्ति

करी पडिवज्यो नहि अपराध आव्यां मिच्छामि दुक्कडं दीधां नहि, स्थानके रहेतां हरियकाय बीयकाय कीडीतणां नगरा शोध्या नहीं ओघो मुहपत्ति चोलपट्टो संघटचा, स्त्री–तिर्यञ्चतणा संघट्ट अनंतर परंपर हुवा वडाप्रते पसाओ करी, लहुडां (लघु) प्रते इच्छाकार इत्यादिक विनय साचव्यो नहीं. साधुसामाचारी विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणता अजाणतां हुओ होय, ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ १० ॥

इति साधु अतिचार संपूण

पाक्षिक सूत्र

तित्थंकरे अ तित्थे, अतित्थसिद्धे अ तित्थसिद्धे अ । सिद्धे जिणे रिसी महरिसी य नाणं च वंदामि ॥१॥ जे अ इम गुणरयण-सायरमविरहिऊण तिण्णसंसारा । ते मंगलं करित्ता अहमवि आराहणाभिमुहो ॥ २ ॥

मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मो अ। खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥३॥ लोअम्मि संजया जं, करिंति परमरिसिदेसिअमु-धार। अहमवि उवट्ठिओ तं, महव्वय-उच्चारण काउं ॥४॥

से किं तं महव्वयउच्चारणा? महव्वयउच्चारणा पंचविहा पण्णत्ता, राइभोअणवेरमण छट्ठा, तं जहा-सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥१॥ सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥२॥ सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥३॥ सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥४॥ सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥५॥ सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥

तत्थ खलु पढमे भंते! महव्वए पाणाइ-वायाओ वेरमणं, सव्वं भंते! पाणाइवायं पच्च-क्खामि, से सुहुमं वा बायरं वा, तसं वा थावरं वा, नेव सयं पाणे अइवाएज्जा, नेवन्नेहिं पाणे

अइवायाविज्जा, पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामी अप्पाणं वेसिरामि। से पाणाइवाए चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं पाणाइवाए छसु जीवनिकाएसु, खित्तओ णं पाणाइवाए सव्वलोए, कालओ णं पाणाइवाए दिआ वा राओ वा, भावओ णं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपिय मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवन्निअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्ति(अ)स्स

कुक्खीसबलस्स निरग्गिसरणस्स सपक्खालिग्रस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिग्रस्स निव्विग्रारस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स ग्रसनिहिसचयस्स ग्रविसवाइग्रस्स ससारपारगामिग्रस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स,पुव्वि ग्रनाणयाए ग्रसवणयाए ग्रबोहि(ग्रा)एग्रणभिगमेण ग्रभिगमेण वा पमाएण रागदोसपडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मदयाए किड्डयाए तिगारवगुरु(ग्र)याए चउक्कसाग्रोवगएण पचिदिग्रवसट्टेण पडिपुन्नभारियाए सायासुक्खमणुपालयतेण इह वा भवे ग्रन्नेसु वा भवग्गहणेसु पाणाइवाग्रो कग्रो वा, काराविग्रो वा कीरतो वा परेहि समणुन्नाग्रो, त निदामि गरिहामि तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण, ग्रइग्र निदामि, पडुप्पन्न सवरेमि, ग्रणागय, पच्चक्खामि सव्व पाणाइवाय जावज्जीवाए ग्रणिस्सिग्रो ह नेव सय पाणे ग्रइवाइज्जा, नेवन्नेहि पाणे ग्रइवायाविज्जा, पाणे

अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा(णामि)। तं जहा–अरिहंतसक्खिअं, सिद्धसक्खिअं, साहुसक्खिअं, देवसक्खिअं, अप्पसक्खिअं, एवं हवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु पाणाइवायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए अणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं, अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, पढमे भंते महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ १ ॥

ग्रहावरे दोच्चे भंते ! महव्वए मुसावा-याम्रो वेरमणं, सव्वं भंते ! मुसावायं पच्चक्खामि, से कोहा वा १. लोहा वा २ भया वा ३ हासा वा ४ नेव सयं मुसं वएज्जा, नेवन्नेहिं मुसं वायावेज्जा, मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, करंतं पि ग्रन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि ग्रप्पाणं वोसिरामि। से मुसावाए चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा दव्वग्रो १. खित्तग्रो २ कालग्रो ३ भावग्रो ४. दव्वग्रो णं मुसावाए सव्वदव्वेसु, खित्तग्रोणं मुसावाए लोए वा ग्रलोए वा, कालग्रोणं मुसावाए दिग्रा वा राग्रो वा, भावग्रो णं मुसावाए रागेण वा दोसेण वा, जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स ग्रहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स ग्रहिरण्णसोवन्नियस्स उवसमपभवस्स

नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्ति (अ स्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स सपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहियस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमण-पज्जवसाणफलस्स पुव्वि अन्नाणयाए असवणयाए अबोहि(आ)ए अणभिगमेणं अभिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव-गरु(अ)याए चउक्कसाओवगएणं पंचिदिओवसट्टेणं पडुप्पन्नभारियाए सायासुक्खमणुपालयंतेण इहं वा भवे, अन्नेसु वा भवग्गहणेसु, मुसावाओ भासिओ वा भासाविओ वा, भासिज्जंतो वा परेहि समणुन्नाओ, तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए अइअं निंदामि, पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं, जावज्जीवाए अणि-

म्मिसाश्रो ह नेव सयं मुसं वएज्जा, नेवन्नेहिं मुसं वायाविज्जा, मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा (णामि) तं जहा अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं एवं हवइ भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे दिश्रा वा राश्रो वा, एगश्रो वा परिसागश्रो वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु मुसावायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए श्राणुगामिए पारगामिए सव्वेंसि पाणाणं सव्वेंसि भूयाणं सव्वेंसि जीवाणं सव्वेंसि सत्ताणं श्रदुक्खणयाए श्रसोश्रणयाए श्रजूरणयाए श्रतिप्पणयाए श्रपीडणयाए श्रपरिश्रावणयाए श्रणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्ति कट्टु उवसंपज्जि-

त्ताणं विहरामि, दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ।। २ ।।

अहावरे तच्चे भंते! महव्वए आदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्व भंते! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, से गामे वा नगरे वा अरण्णे वा, अप्पं वा बहुं वा, अणु वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा, नेवन्नेहिं अदिण्णं गिण्हाविज्जा, अदिण्णं गिण्हते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहमि अप्पाणं वोसिरामि। से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं अदिन्नादाणे गामे वा नगरे वा अरण्णे वा, कालओ णं आदिन्नादाणे दिआ वा राओ वा भावओ

णं आदिण्णादाणे रागेण वा दोसेण वा ज मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णिअस्स उवसमपभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्ति(अ)स्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहि(आ)ए अणभिगमेण अभिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचिंदिओवसट्टेण, पडुप्पन्नभारियाए सायासुक्खमणुपालयंतेण इहं वा भवे, अन्नेसु वा भवग्गहणेसु, अदिण्णादाणं गहिअं वा गाहाविअं वा घिप्पंतं वा परेहिं

समणुन्नायं, तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, अइअं निंदामि, पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चक्खामि सव्वं अदिन्नादाणं जावज्जीवाए अणिस्सिओ हं नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा(णामि), तं जहा–अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअ अप्पसक्खिअं, एवं भवइ भिक्खु वा भिक्खुणी वा, संजय–विरय पडिहय–पच्चकखायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्तोवा जागरमाणे वा, एस खलु अदिन्नादाणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरि-

साणुचिण्णे परमरिसिदेसिए पसत्थे, त दुक्खक्ख याए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए ससारुत्तारणाए ति कट्टु उवसपज्जित्ताण विहरामि, तच्चे भते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण ॥३॥

अहावरे चउत्थे भते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमण, सव्व भते ! मेहुण पच्चक्खामि । से दिव्व वा माणुस वा तिरिक्खजोणिअ वा नेव सय मेहुण सेविज्जा, नेवन्नेहि मेहुण सेवाविज्जा, मेहुण सेवतेवि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि, न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भते ! पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि । से मेहुणे चउव्विहे पन्नत्ते, त जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओ ण मेहुणे रूवेसु वा रूवसहगएसु वा, खित्तओ ण मेहुणे उड्ढलोए वा अहोलोए

वा तिरियलोए वा, कालओ णं मेहुणे दिआ वा राओ वा, भावओ णं मेहुणे रागेण वा दोसेण वा, जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अहिंसा-लक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्प-हाणस्स अहिरन्नसोवन्निअस्स उवसमपभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्ति-(अ)स्स कुक्खीसंवलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खा-लिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआ-रस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइअस्स संसारपारगा-मिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहि(आ)ए अणभिग-मेणं अभिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव-गरु(अ)याए चउक्कसाओवगएणं पंचिंदिओवस-ट्टेण पडुप्पन्नभारियाए सायासुक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे, अन्नेसु वा भवग्गणेसु मेहुणं सेविअं

वा सेवाविअ वा सेविज्जंत वा परेहिं समणुन्नाय, तं निंदामि गरिहामि, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, अइयं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिओ हं नेव सयं मेहुणं सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तं जहा-अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं, एवं हवइ भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पडिहय पच्चक्खाय-पावकम्मे दिआ वा राओ वा, एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु मेहुणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए अणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे

महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे, तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए ससारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपजित्ताणं विहरामि, चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥ ४ ॥

अहावरे पचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि, से अप्पं वा वहुं वा, अणुं वा थूलं वा, चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा, नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा, परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। से परिग्गहे चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं परिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु

दव्वेसु, खित्तश्रो ण परिग्गहे ×सव्वलोए कालश्रो ण परिग्गहे दिश्रा वा राश्रो वा, भावश्रो ण परिग्गहे अप्पग्घे वा महग्घे वा, रागेण वा दोसेण वा, ज मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स श्रहिंसालक्खणस्स सचाहिट्ठिश्रस्स विणयमूलस्स खतिप्पहाणस्स श्रहिरण्णसोवन्निश्रस्स उवसमपभवस्स नवबम्भचेरगुत्तस्स श्रपयमाणस्स भिक्खावित्ति(श्र)स्स कुक्खीसबलस्स निरग्गिसरणस्स सपक्खालिग्रस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिश्रस्स निव्विश्रारस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स श्रसनिहिसचयस्स श्रविसवाइग्रस्स ससारपारगामिश्रस्स निव्वाणगमण-पज्जवसाणफलस्स पुव्वि श्रन्नाणयाए असवणयाए श्रबोहिश्राए श्रणभिगमेण श्रभिगमेण वा पमाएण रागदोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मदयाए किड्ड-

---

+ लोए वा श्रलोए वा इति वा पाठः

याए तिगारवगुरु(अ)याए चउक्कसाओवगएणं पंचिदिओवसट्टेणं पडुप्पन्नभारियाए सायासुक्ख-मणुपालयंतेणं इह वा भवे अन्नेसु वा भवग्गह-णेसु, परिग्गहो गहिओ वा गाहाविओ वा घिप्पंतो वा परेहिं समणुन्नाओ, तं निंदामि, गरिहामि, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइअं निंदामि, पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं-परिग्गहं, जावज्जीवाए अणिस्सिओ हं नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा, नेवन्नेहि परिग्गहं परि-गिण्हाविज्जा परिग्गहं परिगिण्हते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा(णामि) तं जहा अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्प-सक्खिअं, एव हवइ भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे दिआ वा राओ वा, एगओ वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु परिग्गहस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए अणुगामिए पारगामिए

सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे. तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, पंचमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राइभोअणाओ, वेरमणं, सव्वं भंते ! राइभोअणं पच्चक्खामि, से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेव सयं राइं भुंजिज्जा, नेवन्नेहिं राइं भुंजाविज्जा, राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसि-

रामि, से राइभोअणे चउव्विहे पन्नत्तो, तं जहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं राइभोअणे असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा खित्तओ णं राइभोअणे समयखित्ते, कालओ णं राइभोअणे दिया वा राओ वा, भावओ णं राइभोअणे तित्ते वा कडुए वा कसाए वा अंबिले वा महुरे वा लवणे वा रागेण वा दोसेण वा, जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसा-लक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंति-प्पहाणस्स अहिरण्णसोवन्निअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खा-वित्ति(अ)स्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्वि-आरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइअस्स संसारपार-गामिअस्स निव्वाणगमण-पज्जवसाणफलस्स पुव्वि अन्नाणयाए असवणयाए अबोहि(आ)ए

अणभिगमेण अभिगमेण वा पमाएण रागदोस-पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मदयाए किड्डयाए तिगारवगर(अ)याए चउक्कसाओवगएण पंचिंदिओवसट्टेण पडुपन्नभारिआए सायासुक्खमणुपालयंतेण इह वा भवे, अन्नेसु वा भवग्गहणेसु, राइभोअण भुत्तं वा भुंजाविअं वा, भुंजंतं वा परेहिं समणुन्नायं, तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएणं, अइअं निंदामि पडुपन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चक्खामि सव्वं राइभोअणं जावज्जीवाए अणिस्सिओ हं नेव सयं राइं भुंजिज्जा नेवन्नेहिं राइं भुंजाविज्जा राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा।(णामि) तं जहा-अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं-अप्पसक्खिअं, एवं हवइ भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे दिआ वा राओ वा, एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस

खलु राइभोअणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्से-
सिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं
सव्वेसिं भूआणं सव्वेसि जोवाणं सव्वेसि सत्ताणं
अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्प-
णयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए
महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परम-
रिसिदेसिए पसत्थे, ते दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए
मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु
उवसंपज्जित्ताणं विहरामि. छट्ठे भंते ! वए
उवट्ठिओमि सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं ॥६।

इच्चेइआइं पंचमहव्वयाइं राइभोअणवेर-
मणछट्ठाइं अत्तहिअट्ठयाए उवसंपज्जित्ताणं
विहरामि ।

अप्पसत्था य जे जोगा, परिणामा य दारुणा ।
पाणाइवायस्स वेरमणे, एस वुत्तो अइक्कमे ॥१॥
तिव्वरागा व जा भासा, तिव्वदोसा तहेव य ।
वायस्स वेरमणे, एस वुत्तो अइक्कमे ॥२॥

उग्गहं च अजाइत्ता, अविदिन्ने य उग्गहे।
अदिन्नादाणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥३॥
सद्दा रूवा रसा गंधा-फासाणं पवियारणा।
मेहुणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥४॥
इच्छा मुच्छा य गेही य, कंखा लोभे य दारुणे।
परिग्गहस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥५॥
अइमत्ते अ आहारे सूरखित्तंमि संकिए।
राइभोअणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥६॥
दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे।
पढमं वयमणुरक्खे, विरया मो पाणाइवायाओ ॥७॥
दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे।
बीअं वयमणुरक्खे विरया मो मुसावायाओ ॥८॥
दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे।
तइअं वयमणुरक्खे, विरया मो अदिन्नादाणाओ ॥९॥
दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे।
चउत्थं वयमणुरक्खे, विरया मो मेहुणाओ ॥१०॥

दंसणनाणचरित्तो, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे ।
पंचमं वयमणुरक्खे, विरया मो परिग्गहाओ ।११।
दंसणनाणचरित्तो, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे ।
छट्ठं वयमणुरक्खे, विरया मो राइभोअणाओ ।१२।
आलयविहारसमिओ,जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे ।
पढमं वयमणुरक्खे, विरया मो पाणाइवायाओ।१३।
आलयविहारसमिओ,जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे ।
बीअं वयमणुरक्खे, विरया मो मुसावायाओ ।१४।
आलयविहारसमिओ,जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे ।
तइअं वयमणुरक्खे, विरया मो अदिन्नादाणाओ ।१५
आलयविहारसमिओ,जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे ।
चउत्थ वयमणुरक्खे विरया मो मेहुणाओ ।।१६।।
आलयविहारसमिओ,जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे ।
पंचमं वयमणुरक्खे, विरया मो परिग्गहाओ ।१७।
आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो समणधम्मे ।
छट्ठं वयमणुरक्खे, विरया मो राइभोअणाओ ।१८।

आलयविहारसमिओ,जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे ।
तिविहेण अप्पमत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥१६॥

सावज्जजोगमेगं, मिच्छत्तं एगमेव अन्नाणं ।
परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥२०॥

अणवज्जजोगमेगं, सम्मत्तं एगमेव नाणं तु ।
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥२१॥

दो चेव रागदोसे, दुन्नि य झाणाइं अट्टरुद्दाइं ।
परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥२२॥

दुविहं चरित्तधम्मं, दुन्नि य झाणाइं धम्मसुक्काइं ।
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥२३॥

किण्हा नीला काऊ तिन्नि य लेसाओ अप्पसत्थाओ ।
परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥२४॥

तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि य लेसाओ सुप्पसत्थाओ ।
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥२५॥

मणसा मणसच्चविऊ वायासच्चेण करणसच्चेण ।
तिविहेण वि सच्चविऊ, रक्खामि महव्वए पंच ॥२६॥

चत्तारिय दुहसिज्जा, चउरो सन्ना तहा कसाया य।
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥२७॥
चत्तारि य सुहसिज्ज़ा, चउव्विहं संवरं समाहिज्ज।
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥२८॥
पंचेव य कामगुणे, पंचेव व अण्हवे महादोसे।
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥२९॥
पंचिदियसंवरणं तहेव, पंचविहमेव सज्झाय।
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥३०॥
छज्जीवनिकायवहं, छप्पिय भासाउ अप्पसत्थाओ।
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥३१॥
छव्विहमब्भितरयं, बज्भं पि य छव्विह तवोकम्मे।
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥३२॥
सत्त य भयठाणाइं सत्तविह चेव नाणविब्भंगं।
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥३३॥
पिंडेसण पाणेसण, उग्गह सत्तिक्कया महज्झयणा।
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥३४॥

अट्ठ य मयठाणाइं, अट्ठ य कम्माइं तेसिं बंधं च ।
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥३५॥
अट्ठ य पवयणमाया, दिट्ठा अट्ठविहनिट्ठिअट्ठेहिं ।
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥३६॥
नव पावनिआणाइं, संसारत्था य नवविहा जीवा ।
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥३७॥
नव बंभचेरगुत्तो, दुनवविहं बंभचेरपरिसुद्धं ।
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥३८॥
उवघायं च दसविहं, असंवरं तह य संकिलेसं च ।
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥३९॥
सच्चसमाहिट्ठाणे, दस चेव दसाओ समणधम्मं च ।
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥४०॥
आसायणं च सव्वं तिगुणं इक्कारस विवज्जंतो ।
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥४१॥
एवं तिदंडविरओ, तिगरणसुद्धो तिसल्लनीसल्लो ।
तिविहेण पडिक्कंतो, रक्खामि महव्वए पंच ॥४२॥

इच्चेअं महव्वय-उच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइबल ववसाओ साहणट्ठो पावनिवारणं निकायणा भावविसोही पडागाहरणं निज्जूहणाराहणा गुणाणं संवरजोगो पसत्थज्झाणोवउत्तया जुत्तया य नाणे परमट्ठो उत्तमट्ठो, एस खलु तित्थंकरेहिं रइरागदोसमहणेहिं देसिओ पवयणस्स सारो छज्जीवनिकायसंजमं उवएसिअं तेलुक्कसक्कयं ठाणं अब्भुवगया नमो त्थु ते सिद्ध-बुद्ध मुत्त-निरय-निस्संग माण मूरण-गुण-रयणसायरमणंतमप्पमेअ नमो त्थु ते महइमहावीरवद्धमाणसामिस्स, नमो त्थु ते अरहओ. नमो त्थु ते भगवओ त्ति कट्टु, एसा खलु महव्वय-उच्चारणा कया, इच्छामो सुत्तकित्तणं काउं, नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइअं छव्विहमावस्सयं भगवंतं, तं जहा सामाइअं १, चउवीसत्थो २, वंदणय ३, पडिक्कमणं ४, काउस्सग्गो ५, पच्चक्खाणं ६, सव्वेहिं पि एअम्मि छव्विहे आवस्सए

भगवते ससुत्ते सम्रत्थे सगथे सनिजुत्तिए ससगहणिए जे गुणा वा भावा वा अरिहंतेहिं भगवतेहिं पण्णत्ता वा परूविआ वा ते भावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो, ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तिअतेहिं रोअतेहिं फासतेहिं पालतेहिं अणुपालतेहिं, अतोपक्खस्स ज वाइअ पढिअ परिअट्टिअ पुच्छिअं अणुपेहिअ अणुपालिअ त दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए ससारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसपाज्जत्ताण विहरामि, अतोपक्खस्स ज न वाइअ, न पढिअ, न परिअट्टिअ न पुच्छिअ, नाणुपेहिअ, नाणुपालिअ, सते बले, सते वीरिए सते पुरिसकारपरक्कमे, तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निदामो गरिहामो बिउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिह तवाकम्म पायच्छित्त पडिवज्जामो, तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

नमो तेसिं समासमणाण जेहिं इम वाइअ अगबाहिर उक्कलिअ भगवंत त जहा-दसवे-

आलिअं १, कप्पिआकप्पिअं २, चुल्लकप्पसुअं ३, महाकप्पसुअं ४, ओवाइअं ५, रायप्पसेणिअं ६, जीवाभिगमो ७, पण्णवणा ८, महापन्नवणा ९, नंदी १०, अणुओगदाराइं ११, देविंदत्थओ १२, तंदुलविआलिअं १३, चंदाविज्झयं १४, पमायप्पमायं १५, पोरिसिमंडलं १६, मंडलप्पवेसो १७, गणिविज्ज १८, विज्जाचरणविणिच्छओ १९, झाणविभत्ती २०, अणाविभत्ती मरण-विभत्ति २१, आयविसोहि २२, संलेहणासुअं २३, वीयरायसुअं २४, विहारकप्पो २५, चरण-विसोहि २६, आउरपच्चक्खाणं २७, महापच्चक्खाणं २८, सव्वेहिं पि एअम्मि अंगबाहिरे उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सनिज्जुत्तिए ससंग-हणिए जे गुणा वा भावा वा अरिहंतेहिं भगवं-तेहिं पन्नत्ता वा परूविआ वा, ते भावे सद्दहामो पत्तिआमो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो, ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तिअंतेहिं रोअंतेहिं फासंतेहिं

पालतेहिं अणुपालतेहिं अतोपक्खस्स ज वाइअ पढिअ परिअट्ठिअ पुच्छिअ अणुपेहिअ अणुपालिअ त दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए ससारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसपज्जित्ता ण विहरामि, अतोपक्खस्स ज न वाइअ, न पढिअ, न पुच्छिअ, नाणुपेहिअ नाणुपालिअ, सते बले सते वीरिए, सते पुरिसकारपरक्कमे, तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिह तवोकम्म पायच्छित्त पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

नमो तेसिं खमासमणाण जेहिं इम वाइअ अगवाहिर कालिअ भगवत त जहा-उत्तरज्झयणाइं १, दसाओ २, कप्पो ३, ववहारो ४, इसिभासिआइ ५, निसीह ६, महानिसीह ७, जबूद्दीवपन्नत्ती ८, सूरपन्नत्ती ९, चदपन्नत्ती १०, दीवसागरपन्नत्ती ११, खुड्डियाविमाणपविभत्ती

१२, महल्लिआविमाणपविभत्ती १३, अंगचूलिआए १४, वग्गचूलिआए १५, विवाहचूलिआए १६, अरुणोववाए १७, वरुणोववाए १८, गरुलोववाए १९, (धरणोववाए) वेसमणोववाए २०, वेलंधरोववाए २१, देविंदोववाए २२, उट्ठाणसुए २३, समुट्ठाणसुए २४, नागपरिआवलिआणं २५, निरियावलिआणं २६, कप्पिआणं २७, कप्पवडिसयाणं २८, पुप्फिआणं २९, पुप्फचूलिआणं ३०, (वण्हिआणं) वण्हिदसाणं ३१, आसीविसभावणाणं ३२, दिट्ठिविसभावणाणं ३३, चारण (सुमिण) भावणाणं ३४, महासुमिणभावणाणं ३५, तेअग्गिनिसग्गाणं ३६, सव्वेहिं पि एअम्मि अंगबाहिरे कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सनिज्जुत्तिए ससंगहणिए जे गुणा वा भावा वा अरिहंतेहि भगवंतेहि पन्नत्ता वा परूविआ वा, ते भावे सद्दहामो पत्तिआमो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तिअंतेहिं

रोअतेहिं फासतेहिं पालतेहिं अणुपालतेहिं अतोप-क्खस्स ज वाइअ, पढिअ परिअट्टिअ पुच्छिअ अणुपेहिअ अणुपालिअ त दुक्खक्खयाए कम्म-क्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसपज्जित्ताण विहरामि अतोप-क्खस्स ज न वाइअ न पढिअ न परिअट्टिअ न पुच्छिअ नाणुपेहिअ नाणुपालिअ, सते बले सते वीरिए सते पुरिसकारपरक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिह तवोकम्म पायच्छित्त पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

नमो तेसिं खमासमणाण जेहिं इम वाइअ दुवालसग गणिपिडग भगवत, त जहा-आयारो १, सूअगडो २, ठाण ३, समवाओ ४, विवाह-पन्नत्ती ५, नायाधम्मकहाओ ६, उवासगदसाओ ७, अतगडदसाओ ८, अणुत्तरोववाइअदसाओ ९,

पण्हावागरणं १०, विवागसुअं ११, दिट्ठिवाओ १२, सव्वेहिं पि एअंमि दुवालसंगे गणिपिडगे भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सणिज्जुत्तिए ससंगहणिए जे गुणा वा भावा वा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूविआ वा, ते भावे सद्दहामो पत्तिआमो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ते भावे सद्दहंतेहि पत्तिअंतेहि रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स जं वाइअं पढिअं परिअट्टिअं पुच्छिअं अणुपेहिअं अणुपालिअं तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसपज्जित्ता णं विहरामि । अंतोपक्खस्स ज न वाइअं न पढिअं न परिअट्टिअं न पुच्छिअं नाणुपेहिअं नाणुपालिअं संते बले संते वीरिए संते पुरिसकारपरक्कमे, तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो

अकरणेयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्म पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइअं दुवालसंगं गणिपिडगं भगवंतं तं जहा सम्मं काएणं फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टंति. सम्मं आणाए आराहंति. अहं च नाराहेमि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१०॥

सुअदेवया भगवई, नाणावरणीअकम्मसंघायं। तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे भत्ती ॥१॥

श्री पाक्षिक खामणां।

इच्छामि खमासमणो! पिअं च जं भे, हट्ठाणं तुट्ठाणं, अप्पायंकाणं, अभग्गजोगाणं। सुसीलाणं सुव्वयाणं, सायरियउवज्झायाणं, नाणेणं, दंसणेणं, चरित्तेणं, तवसा अप्पाणं भावेमाणाणं, बहुसुभेण भे दिवसो पोसहो पक्खो

वइक्कंतो । अन्नो य भे कल्लाणेणं पज्जुवट्ठिओ, सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि १ (गुरुवाक्यम्) तुब्भेहिं समं ।

इच्छामि खमासमणो ! पुव्वि चेइआइं वंदित्ता, नमंसित्ता, तुब्भण्हं पायमूले विहरमाणेणं, जे केइ बहुदेवसिया साहुणो दिट्ठा समाणा वा वसमाणा वा वसमाणा वा गामाणुगामं दूइज्जमाणा वा, राइणिया संपुच्छिंति, ओमराइणिया वदंति, अज्जया वंदंति, अज्जियाओ वंदंति, सावया वंदंति सावियाओ वंदंति, अहंपि निस्सल्लो निक्कसाओ त्ति कट्टु सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि. १ (गुरुवाक्यम्) अहममि वंदावेमि चेइआइं ।

इच्छामि खमासमणो ! उवट्ठिओहं, (अब्भुट्ठिओहं) तुब्भण्हं, संतिअं, अहाकप्पं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पायपुच्छणं वा,

(रयहरण वा) अक्खर वा पय वा गाह वा, सिलोग वा (सिलोगद्ध वा) अट्ठ वा, हेउ वा, पसिण वा, वागरण वा, तुब्भेहिं दिण्ण, मए अविणएण पडिच्छिअ, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ३ ॥ (गुरुवाक्यम्) आयरियसतिअ ।

इच्छामि खमासमणो! अहमपुव्वाइ, कयाइ च मे, किइकम्माइ, आयारमतरे, विणयमतरे, सेहिओ सेहाविओ, सगहिओ, उवग्गहिआ, सारिओ, वारिओ, चोइओ, पडिचोइओ, चिअत्ता मे पडिचोयणा, (अब्भुट्ठिओह) उवट्ठिओह, तुब्भण्ह तवतेयसिरीए इमाओ चाउरतससारकतारओ, साहट्टु नित्थरिस्सामि त्ति कट्टु, सिरसा मणसा मत्थएण वदामि ।
(गुरु-वाक्यम्) नित्थारगपारगा होह ।

॥ इति श्री पाक्षिक खमणा समाप्त ॥

गोडी पार्श्वजिन वृद्ध स्तवन

॥ दोहा ॥

वाणी ब्रह्मावादिनी, जागे जग विख्यात ।
पास तणा गुण गावतां, मुज मुख वसज्यो मात ! ॥१
नारंगे अणहिलपुरे, अहमदाबादे पास ।
गोडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ।.२॥
शुभ वेला शुभ दिन घडी, मुहुरत एक मंडाण ।
प्रतिमा ते इह पासनी, थइ प्रतिष्ठा जाण ॥३॥

॥ ढाल ॥

गुणहि विश ला मंगलीक माला, वामानो सुत साचो जी । धण कण कंचण मणि माणक दे, गोडोनो धणी जाचो जी ॥ गु० ४ ॥ अणहिलपुर पाटण माहे प्रतिमा, तुरक तणे घर हुंती जी । अश्वनी भूमि अश्वनी पीड़ा, अश्वनी वाल विगूती जी ॥ गु० ५ ॥ जागंता जक्ष जेहने कहिये, सुहणो तुरकने आपे जी । पास जिणेसर

केरी प्रतिमा, सेवक तुझ सतापे जी गु० ॥ ६ ॥
प्रह ऊठीने परगट करजे, मेघा गोठीने देजे जी।
अधिको म लेजे ओछो म लेजे, टक्का पाचसे लेजे
जी ॥ गु० ७ ॥ नहिं आपीस तो मारीस मुरडीस, मोरवध वधास्ये जी। पुत्र कलत्र धन हय
हाथी तुझ, लच्छी धणी घर जास्ये जी। गु० ८॥
मारगे पहिलो तुझने मिलस्ये, सारथवाह जे
गोठी जी। निलवट टीलो चोखा चेह्यो, वस्तु
वहे तसु पोठी जी ॥ गु० ६ ॥

॥ दोहा ॥

मनमु बीहनो तुरकडो, माने वचन प्रमाण।
बीबीने सूहणा तणो, समभावे सहिनाण ॥ १० ॥
बीबी बोले तुरकने, बडा देव है कोय। अब
सताव परगट करो नहींतर मारे सोय ॥ ११ ॥
पाछली रात परोडीये, पहिली बाधे पाज। सुहणा
मांहे सेठने, समझावे जक्षराज ॥ १२ ॥

॥ ढाल ॥

एम कही जक्ष आयो राते, सारथवाहने सुहणे जी। पास तणी प्रतिमा तुं लेजे, लेतो मत धूणे जी॥ एम० १३॥ पांचसे टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी। जतन करी पहुंचाडे थानक, प्रतिमा गुण संभारू जी॥ एम० ॥ १४॥ तुझने होसी बहु फलदायक, भाई गोठी! सुणजे जी। पूजीस प्रणमीश तेहना पाया, प्रह ऊठीने थुणजे जी ॥ एम० १५ ॥ सुहणो देईने सुर चाल्यो, अपणे थानक पहुंतो जी। पाटण मांहे सारथवाह, हींडे तुरकने जोतो जी॥ एम० ॥ १६ ॥ तुरके जातां दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडे जी। संकेत पहुंतो जाणि, बोलावे बहु लाडे जी ॥ एम० १७ ॥ मुझ घर प्रतिमा तुझने आपुं, पास जिणेसर केरो जी। पांचसे टक्का जो मुझ आपे, मोल न मांगुं फेरी जी ॥ एम० ॥ १८ ॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुंतो

रगे जी । केसर चंदन मृगमद घोली, विधिसु पूजा रगे जी ॥ एम० १९ ॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते माहि प्रतिमा राखे जी । अनुक्रमे आव्या परिकर माहे, पीसधने सुर साखे जी ॥ एम० २० ॥ उच्छव दिन दिन अधिको थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी । ठाम ठामना दरसण करवा, आवे लोक प्रभातो जी ॥ एम० २१ ॥

॥ दोहा ॥

इक दिन देखे अवधिसु, परिकर पुरनो भग । जतन करू प्रतिमा तणो, तीरथ अछे अमग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठने, थल अटवी उज्जाड । महिमा थास्ये अति घणो, प्रतिमा तिहा पहुचाड ॥ २३ ॥ कुशल खेम तिहा अछे, तुमने मुजने जाणि । थाका छोडी काम कर, करतो म फरि सकाणि ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥

पास मनोरथ पूरा करे. वाहण एक वृषभ जोतरे। परिकरथी परियाणो करे, एक थल चढि बीजो ऊतरे ॥ २५ ॥ बारे कोस आव्या जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले। गोठी मनह विमासण थई, पास भुवन मंडावुं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, कटको कोइ न दीसे पाहाण। देवल पास जिणेसर तणो, मंडावुं किम गरथे विणो ॥ २७ ॥ जल विण श्रीसंघ रहिस्ये किहां, सिलावटो किम आवे इहां। चिंतातुर थयो निद्रा लहे, जक्षराज आवीने कहे ॥ २८ ॥ गुंहली ऊपर नांणो जिहां, गरथ घणो जाणीजे तिहां। स्वस्तिक सोपारीने ठाणि, पाहाण तणी उलटस्ये खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जुओ, अमृत जल नीसरसी कूओ। खारा कूवा तणो इह सहिनाण, भूमि पड्यो छे नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो

सीरोही वसे, कोढ पराभवियो किसमिसे । तिहा थकी तु इहा आणजे सत्य वचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गाठीनो मन थिर थापियो, सिलावटने सुहणो दियो । रोग गमीने पूरू आस, पास तणो मडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन माहे मान्यो ते वेण, हेम वरण देसाड्यो नेण । गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटने गया तेडवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे भूरमो, जीमे खीर मांह घृत चूरमो । मडे घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थम थम कीधो पूतली, नाटक कोतुक करतो रली । रगमडप रलियामणो रसे, जोता मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समो मडे मावास । दिवस विचारो इरो मन्यो, ततखिण देयल ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेलावास, पञ्चासण बेठा श्रीपास । महिमा मोटो मेरु समान, एकल मिल सगरे रहे थान ॥३७॥ यात पुराणी मे सांभली,

स्तवन मांहि सूधी सांकली । गोठी तणा गोत-
रीया अच्छे, यात्रा करीने परणे पछे ॥३८॥

॥ होहा ॥

विघन विडारन यक्ष जगि तेहनो अकल सरूप ।
प्रीत करे श्रीसंघने, देखाडे निज रूप ॥३६॥
गिरुओ गोडी पास जिन, आपे अरथ भंडार ।
सांनिध करे श्रीसंघने आशा पूरणहार ॥४०॥
नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार ।
मारग चूका मानवी, वाट दिखावण हार ॥४१॥

॥ ढाल ॥

वरण अढार तणो लहे भोग, विघन निवारे टाले रोग । पवित्र थइ समरे जे जाप, टाले सघलां पाप संताप ॥४२॥ निरधनने घरे धननो सूत, आपे अपुत्रीयाने पुत्र । कायरने सुरापण धरे, पार उतारे लच्छी वरे ॥४३॥ दुर्भागीने दे सोभाग, पग विहूणाने आपे पग । ठाम नहीं

तेहने द्ये ठाम, मन वछित पूरे अभिराम ॥४४॥
निराधारने द्ये आधार, भवसायर ऊतारे पार।
आरतीयाली आरत भग, धरे ध्यान ते लहे सुरग
॥ ४५ ॥ समर्था सहाय दिये यक्षराज, तेहना
मोटा अछे दिवाज। बुद्धि हीणने बुद्धि प्रकाश,
गू गाने द्ये वचन विलाश ॥ ४६ ॥ दुखियाने
सुखनो दातार, मत्र भजण रजण अवतार।
बधन तूटे बेडी तणा, श्रीपार्श्व नाम अक्षर
समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपे, विस्वानर विकराल।
हस्ति यूथ दूरे टले, दुर्द र सिंह सियाल ॥४८॥
चोर तणा भय चूकवे, विष अमृत उडकार।
विषधरनो विष ऊतरे, सग्रामे जयकार ॥४९॥
रोग सोग दारिद्र दु ख, दोहग दूर पलाय।
परमेसर श्रीपासनो, महिमा मत्र जपाय ॥५०॥

॥ कडखानी चाल ॥

उंजितु उंजितु उंज उपसम धरी, ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीपार्श्व अक्षर जपंते । भूत ने प्रेत झोटिंग व्यंतर सुरा, उपसमे वार इकवीस गुणंते ॥ उंजितु. ५१ ॥ दुर्द्धरा रोगसोगा जरा जंतुने, ताव एकांतरा दुत्तपंते । गर्भबंधन व्रणं सर्प विच्छू विषं, चालिका बालमेवा झखंते ॥ उंजितु० ॥५२॥ साइणी डाइणी रोहणी रंकणी, छोटका मोटका दोस हुंते । दाढ उंदर तणी कोल नोला तणी, श्वान सीयाल विकराल दंते ॥ उंजितु० ॥५३॥ धरणेंद्र पद्मावती समर शोभावती, वाट आघाट अटवी अटंते । लखमी लोंदु मिले सुजस वेलाउले, सयल आशा फले मन हसंते उंजितु० ॥५४॥ अष्ट महाभय हरे कान पीडा टले, ऊतरे सूल सीसग भणंते । वदत वर प्रीतिसु "प्रीतिविमल" प्रभु, श्रीपास जिण नाम अभिराम मंते ॥ उंजितु० ५५ ॥

॥ कलश ॥

तपगच्छनायक मुक्तदायक श्री विजयसेन सूरीश्वरो, तसपाट उदायचले उदयो विजयदेव सुहंकरो। इम थुण्यो गोडीपास जिनवर "प्रीति-विमल" जयकरो, भणे गणे [भाविक शुद्ध भावे] तस घर मगल जयकरो ॥ ५६ ॥

– २ –

ईश प्रार्थना

(तर्ज -रघुपति राघव राजाराम,
पतित पावन सीताराम)

ओ३म् अर्हं नम है महावीर, शासन नायक गुण गभीर। त्रिशला नन्दन श्री महावीर, शासन नायक गुण गभीर ॥ १ ॥ घर-घर वर्ते मगल माल, हो त्रिशला के नन्दन लाल। काटो कर्मों की तुम जाल, शरणे आये हैं रखवाल ॥ २ ॥ जय-जय शान्तिनाथ भगवान, पतित तुम

हो स्वाम । मन वंछित देवो अभिराम, विश्व-शांति का अविचल धाम ॥ ३ ॥ सद् बुद्धि देना भगवान, करना मेरा तुम कल्याण । जिन अरिहंत तुम्हारा नाम, वीतराग पद पाये स्वाम ॥ ४ ॥ जय-जय हो जिनवर भगवान, संघ के नायक गुणमणि खान । जय-जय हो हरि पुज्य प्रधान, कांतिसागर गावे गुण गान ॥ ५ ॥

卐

संकट मोचन इकतीसा

॥ दोहा ॥

श्री गुरु देव दयाल को, मन में ध्यान लगा ।
अष्ट सिद्धि नवनिद्धि मिले, मनवांछित फल पाव ॥

॥ चौपाई ॥

श्री गुरु चरण शरण में आयो, देख दरस मन अति सुख पायो। दत्त नाम दुःख भंजन हारा, बिजली पात्र तले धरनारा ॥१॥ उपशम रसका

कन्द चढ़ावे, जो तुमरे फल निश्चय पावे। दत्त सम्पत्ति दातार दयालु, निज भक्तन के हैं प्रतिपालु ॥२॥ बावन बीर किये वश भारी, तुम साहिब जगमें जयकारी। जोगणी चौसठ वशकर लीनी, विद्या गोयो प्रगट कीनी ॥३॥ पाच पीर साधे बलकारी पच नदी पंजाब मझारी। मन्धी को मार्ग तुम खोली, गूगो को दे दिनी बोली ॥४॥ गुरु वल्लभ के पाट विराजो, सुदिन मे सूरज सम साजे। उसमे नाम तुम्हारो कहिये, परमित सुर तरसम सुख लहिये ॥५॥ एहु देव मेरे गुरु देवा, सुनी जन मुनि जन करते सेवा। तुम सम और देव नही कोई, जो मेरे हितकारक होई ॥६॥ तुम हो सुरतरु वछित दाता, मैं निश दिन गुरुके गुण गाता। पारब्रह्म गुरु हो परमेश्वर, अलख निरजन तुम जगदीश्वर ॥७॥ तुम गुरुनाम सदा सुख दाता, जपत पाप कोटि कट जाता। कृपा तुम्हारी जिन पर होई, दुःख काहू

नहीं पावे सोई ।।८।। अभयदान दाता सुखकारी, परमातम पूरण ब्रह्मचारी । महाशक्ति बल बुद्धि-विधाता, मैं गुरु नित उठ तुम्हें मनाता तुम्हारी महिमा है अति भारी, टूटी नांव नई कर डारी । देश देश में थम्भ तुम्हारा, संघ सकल के हो रखवाला ।।१०।। सर्व सिद्धि निधी मंगल के दाता, देवपरी सब शीश नमाता । सोमवार पूनम सुखकारी, गुरु दर्शन आवे नर-नारी ।।११।। गुरु लछने को किया विचारा, श्राविका रुप जोगणी धारा । कीली उज्जयिनी मझधारा, गुरु गुण अगणित किया विचारा ।।१२।। हो प्रसन्न दीने वरदाना, सात जो पसरे मही दरम्याना । युग प्रधान पद जन हितकारा, अंबढ मान चूर्ण कर डाला ।।१३।। मात अम्बिका प्रकट भवानी, मन्त्र कलाधारी गुरु ज्ञानी । मुगल पूत को तुरंत जिलाया, लाखों जनकों जैन बनाया ।। १४ ।। दिल्ली में पतशाह बुलावे, गुरु

अहिंसा ध्वज फहरावे। भादो चवदस स्वर्ग सिधारे सेवक जन के संकट टारे ॥१५॥ पूजे दिल्ली में ध्यावे संकट नहीं सपने में आवे। ऐसे दादा साहब मेरे, हम चाकर चरणन के चेरे ॥१६॥ निशदिन भैरूं गोरे काले, हाजिर हुकम खड़े रखवाले। कुशल करण लीनो अवतारा, सद्गुरु मेरे सानिधकारा ॥१७॥ डूबती जहाज भक्त की तारी पक्षी रूप धर्यो हितकारी। सघ अचभा मन में लावे, गुरु तब शुभ व्याख्यान में हाल सुनावे ॥१८॥ गुरु वाणी सुन सब हरखावे, गुरु भवतारण तरण कहावे। समय सुन्दर की पननदी में, फटगई जहाज नई की छिनमें ॥१९॥ अब है सद्गुरु मोरी वारी, मुझ सम पतित न और भिखारी। श्री जिनचन्द्रसूरि महाराजा, चौरासी गच्छ के सिरताजा ॥२०॥ अकबर का अमल छुड़ायो, अमावस को चान्द उगायो। भट्टारकपद नाम धरावे, जय जय जय गुणि जन

गावे ॥ २१ ॥ लक्ष्मी लीला करती आवे, भूखा भोजन आन खिलावे। प्यासे भक्त को नीर पिलावे, जलधर उण वेला में आवे ॥ २२ ॥ अमृत जैसा जल बरसावे, कभी काल नहीं पड़ने पावे ॥२३॥ चामर युगल ढुले सुखकारी, छत्र किरणीया शोभा भारी। राजा राणा शीश नमावे, देव परी सवही गुण गावे ॥२४॥ पूरब पश्चिम दक्षिण तांई, उत्तर सर्व दिशा के मांही। जोत जागती सदा तुम्हारी, कल्पतरू सद्‌गुरु गुणधारी ॥२५॥ विजय इन्द्रसूरी सूरीश्वर राजे, छड़ीदार सेवक संग साजे, जो यह गुरु इकतीसा गावे, सुन्दर लक्ष्मी लीला पावे ॥२६॥ जो यह पाठ करें चितलाई, सतगुरु उनके सदा सहाई। बार एक सौ आठ जो गावे, राजदण्ड बन्धन कट जावे ॥२७॥ संवत आठ दोय हजारा, आसो तेरस शुक्कर वारा। शुभ मुहरत वर सिंह लगन में, पूरण कीनो बैठ मगन में ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

सद्गुरु का स्मरण करे, धरे सदा जो ध्यान ।
प्रात उठो पहिले पढ़े, होई कोटि कल्याण ॥२६॥
सुनो रतन चिंतामणि, सद्गुरु देव महान् ।
वन्दन श्री गोपाल का, लीजे विनय विधान ॥३०॥
चरण शरण में मैं रहूं, रखियो मेरा ध्यान ।
भूल चूक माफी करो, हे मेरे भगवान ॥३१॥



सकलार्हत् चैत्यवंदन

सकलार्हत्प्रतिष्ठान-माधष्ठानं   शिवश्रिय: ॥
भूर्भुवःस्वस्त्रयीशान-मार्हन्त्यं प्रणिदध्महे ॥१॥
नामाकृति द्रव्य भावै:, पुनतस्त्रिजगज्जनम्,
क्षेत्रे काले च सर्वस्मिन्नर्हतः समुपास्महे ॥२॥
आदिमं पृथिवीनाथ-मादिमं निष्परिग्रहम्,
आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषभस्वामिनं स्तुम: ।३।
अर्हत मजितं विश्व,-कमलाकर-भास्करं,
अम्लान-केवला दर्शी-संक्रान्त जगतं श्तुवे ॥४॥
विश्वभव्यजनाराम,-कुल्या तुल्या जयंति ता: ॥
देश ना-समये वाच:, श्रीसंभव-जगत्पते ॥५॥
अनेकांत-मतांभोधि,-समुल्लासन-चंद्रमा: ॥
दधादमंदमानंदं, भगवान भिनंदन: ॥६॥
धुसत्किरीट-शाणा ग्रो-त्तो जितां घ्रि नखावलि: ॥
भगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानि व: ।७।
पद्मप्रभ प्रभोर्देह-भास: पुष्णंतु व: श्रियम्,
अंतरंगारि-मथने, कोपाटोपादिवाईणा: ॥८॥

श्रीसुपार्श्व जिनेंद्राय, महेंद्र महिताध्रये,
नमश्चतुर्वर्ण सघ-गगना-भोग-भास्वते ॥६॥
चद्रप्रभ-प्रभोश्चद्र-मरीचि-निचयोज्ज्वला,
मूर्त्ति-र्मूर्त्त सितध्यान,-निर्मितेव श्रियेऽस्तु व ।१०
करामल कवद्विश्व, कलयन् केवल श्रिया,
अचित्य-महात्म्य निधि सुविधिर्बोधयेऽस्तु व. ।११
सत्वानां परमानद-कदोद्भेद-नवाबुद.,
स्याद्वादामृत-निस्यदी, शीतल. पातु वो जिन. ।१२
भवरोगार्त्त-जतूना,-मगदकार दर्शन,
नि श्रेयस-श्रीरमण श्रेयांस श्रेयसेऽस्तु व। ।१३।
विश्वोपकारकीभूत—तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः,
सुरासुरनरै पूज्यो, वासुपूज्य पुनातु व । १४॥
विमलस्वामिनो वाच, कतक-क्षोद-सोदरा।,
जयति त्रिजगच्चेतो-जलनैर्मल्य हेतव ॥१५॥
स्वयभू-रमण स्पर्द्धि, करुणा रस वारिणा,
अनत जिदनर्ता व, प्रयच्छतु सुख श्रियम् ॥१६॥